साधना व्रत है न फल की
कामना किंचित्....

नीराजन

पं. दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय, कानपुर

सत्र : २००४.२००५

आराध्य देव

प्रवनउँ पवनकुमार, खल बन पावक ज्ञान घन।
जासु हृदय आगार, बसहिं राम सर चाप धर।।

नीराजन

पं० दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय, कानपुर

वार्षिक पत्रिका : २००४-२००५

संरक्षक

श्री ओमशङ्कर त्रिपाठी

संपादक

श्रीमती शारदा राव

(अंग्रेजी प्रभाग)

संपादक

श्री दुर्गेश वाजपेयी

(हिन्दी प्रभाग)

संकल्प

पं० दीनदयाल उपाध्याय जिस कार्य के लिये जन्मे, जिये और जूझे, इसी के लिये हौतात्म्य स्वीकार कर उन्होंने अपना जीवन-व्रत पूर्ण कर लिया। पण्डित जी को सच्ची श्रद्धांजलि यही है कि हम उनके रक्त की एक-एक बूँद को अपने माथे का चन्दन बनाकर ध्येय पथ पर अग्रसर हों। उनकी चिता से निकली एक-एक चिन्गारी को हृदय में धारण कर परिश्रम की पराकाष्ठा और प्रयत्नों की परिसीमा करें। इस दधीचि की अस्थियों का वज्र बनाकर आधुनिक वृत्तासुरों पर टूट पड़ें और पवित्र भूमि को निष्कंटक बनाएँ।

— श्री अटल बिहारी बाजपेयी
20/10/1991

अनुक्रमणिका

क्र०	रचना	रचनाकार	पृष्ठ सं०
१.	अपनी बात	श्री दुर्गेश वाजपेयी (सम्पादक)	१
२.	वार्षिक आख्या	— —	३
३.	ऐसा जादू किया किसी ने	श्री ओमशंकर जी त्रिपाठी (प्रधानाचार्य)	८
४.	सकारात्मक सोच	अंकुर कटियार	९
५.	वार्षिकोत्सव : विद्यालय का त्योहार	शान्तनु गुप्त	१०
६.	राष्ट्रभाषा हिन्दी	ऋषभ तिवारी	१२
७.	आध्यात्मिक रेखागणित	श्री सुभाष शर्माजी (आचार्य)	१३
८.	बात अभी अधूरी है	प्रतीक भारद्वाज	१४
९.	परिवर्तन	डॉ० मनोज शुक्ल (आचार्य)	१५
१०.	श्री रामचरितमानस के नारी पात्र	रोहित ओमर	१७
११.	कर बुरा तो हो बुरा	अंकुर सचान	१९
१२.	जवानी क्यों पड़ी परती	विपिन वर्मा	२०
१३.	भारत प्यारा देश हमारा	आनन्द बाबू	२१
१४.	वृक्षों की फरियाद	मोहित मिश्र	२१
१५.	दीपक रजनी का गुलाम है	अनिल कुमार	२२
१६.	मेरे कतिपय छन्द	श्री दुर्गेश वाजपेयी (आचार्य)	२३
१७.	दोहे	अष्टम के छात्र	२६
१८.	हम भी लिख सकते हैं भाई	राजगौरव कटियार	२७
१९.	चौपाई बच्चे लिखते हैं	अष्टम के छात्र	२८
२०.	चौपाई हम भी लिखते हैं	सप्तम के छात्र	३०
२१.	परीक्षा साफल्य चूर्ण	निखिल श्रीवास्तव	३२
२२.	अन्तरिक्ष विज्ञान	पीयूष त्रिवेदी	३३
२३.	होने लगा प्रकाश	अर्पण श्रीवास्तव	३३
२४.	दीनदयालजी की उदारता	अनुराग मिश्र	३४
२५.	भारत प्यारा देश हमारा	आलोक शुक्ल	३५
२६.	भारत की महिमा गायेंगे	शशांक सुनार	३५
२७.	नीति के नवीन दोहे	दिलीप कुमार	३६
२८.	दोहे	अष्टम कक्षा के छात्र	३७
२९.	चौपाइयाँ	अष्टम कक्षा के छात्र	३७
३०.	हमारा स्काउट शिविर	रणविजय	३८
३१.	परोपकार	घनश्याम सिंह	३९
३२.	जिन्दगी क्या है	धीरज पाण्डेय	४०
३३.	वीर मच्छर	उत्कर्ष गुप्त	४१
३४.	नेता का रासायनिक विश्लेषण	अनिमेष गुप्त	४२
३५.	सतयुग का सपना	दिव्यांश त्रिपाठी	४३
३६.	आह्वान	सुयश मधुर	४४
३७.	हम सब समान हैं	आदेश मिश्र	४५

३८.	सन्त स्वभाव	गौरव द्विवेदी	४५
३९.	साहित्य और समाज का परस्पर सम्बंध	अंकुर दीक्षित	४६
४०.	तुम हमारे बीच नहीं हो	अजय सिंह यादव	४७
४१.	प्राकृतिक आपदा	सौरभ द्विवेदी	४७
४२.	झूठ बोलने का फल	रजत शुक्ल	४८
४३.	जानलेवा हो सकता है मलेरिया	उत्कर्ष गुप्त	४९
४४.	कुछ महापुरुषों की सूक्तियाँ	अभिनव वर्मा	४९
४५.	ब्लैक होल	दृश्यमुनि चाकमा	५०
४६.	सर्दी का असर	दीपेन्द्र श्रीवास्तव	५१
४७.	भारतीया संस्कृतिः	अभिजित शुक्ल	५२
४८.	अटल का अल्टीमेटम	आलोक कुमार सिंह	५३
४९.	समय समय की बात	शिवम श्रीवास्तव	५४
५०.	पक्षी की चाह	अभय प्रताप सिंह	५५
५१.	सच्चा मनुष्य	अविनाश अवस्थी	५६
५२.	मंजिल	अंकुर सचान	५६
५३.	कविता पर कविता	अभय चतुर्वेदी	५७
५४.	शान्ति से जीना दुश्वार है	प्रशान्त गुप्त	५७
५५.	गुटका खाओ इनाम पाओ	गौरव शुक्ल	५८
५६.	हमारा संकल्प	अनुराग श्रीवास्तव	५८
५७.	वैज्ञानिकस्य चमत्कारः	संकल्प त्रिवेदी	५९
५८.	सदाचारः एव जीवनः	संजीव कुमार शुक्ल	६०
५९.	हास्य कणिका	पारस गुप्त	६०
६०.	बन्दर और कलन्दर	भारद्वाज विवेक	६१
६१.	मिठाई भरा पत्र	शुभंकर रंजन	६१
६२.	विद्याधनं सर्व धनं प्रधानं	तरुण कुमार	६२
६३.	विद्यार्थी जीवनम्	अंकित झा	६३
६४.	जो मिटा दे धरा का अँधेरा	अभय सिंह	६४
६५.	परिश्रम ही सफलता की कुंजी है	सुयश मधुर	६४
६६.	संस्कृत में व्यवहार के शब्द	संजीव शुक्ल	६५
६७.	अपना–अपना भाग्य	– –	६६
६८.	पं० दीनदयाल निबंध प्रतियोगिता के परिणाम	– –	६७
६९.	पं० दीनदयाल उपाध्याय एक संघर्षपूर्ण जीवन यात्रा	अभिषेक शुक्ल	६८
७०.	एकात्म मानववाद : एक परिपूर्ण जीवन दर्शन	प्रशान्त अवस्थी	७२
७१.	भारतीय संस्कृति में अर्थ	रोहित ओमर	७६
७२.	स्वामी विवेकानन्द का समाज दर्शन	रोहित कुमार सिंह	७९
७३.	चिन्तन चरित्र और व्यवहार	श्वेतांक सिंह	८१
७४.	संयुक्त राष्ट्रसंघ की प्रासंगिकता पर प्रश्नचिह्न	महेन्द्र कुमार	८२
७५.	क्षमा	पीयूष त्रिवेदी	८३
७६.	कर्मशीलता का वरदान	अंशुमान प्रकाश	८४
७७.	अवांछित अतिथि से मुक्ति की युक्ति	अंशुमान प्रकाश	८५
७८.	जैसी करनी वैसी भरनी	अभिनव अग्निहोत्री	८६
७९.	दीनदयाल जी एवं वर्तमान राजनीति	पद्म जी ओमर	८७

८०. मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम में विद्यमान गुण	कुश पोरवाल	८८
८१. बिल्ली की भूख	आलोक रंजन	८६
८२. अजीब पंखा	वरुण कुमार	८६
८३. राजनीति : एक मखौल	रवीन्द्र प्रताप सिंह	६०
८४. डॉ० जगदीश चन्द्र बसु	मोनित मयंक	६०
८५. सत्संगतिः	पीयूष त्रिवेदी	६१
८६. रामायण व महाभारत के प्रमुख स्त्री पात्र	अभिजित शुक्ल	६२
८७. जागो सृजन के देवता	अभिषेक शर्मा	६३
८८. जनता के सेवक	सुमित कक्कड़	६४
८६. सुनामी का कहर	प्रणव त्रिपाठी	६५
६०. कितनी प्यारी है गौरैया	कपिल देव तिवारी	६६
६१. मैं उस देश का बेटा हूँ	अर्पित पोरवाल	६७
६२. संकल्प	शिवम शर्मा	६८
६३. भारत माँ और भारत बेटा	कुश पोरवाल	६६
६४. जो जैसा करता है वैसा ही पाता है	प्रियांशु मिश्र	१००
६५. आठ सिद्धियाँ	नीराजक	१०१
६६. शिक्षाप्रद प्रसंग	निशान्त सिंह	१०१
६७. परिश्रमी कछुआ और बदमाश बन्दर	दिव्यांशु दीक्षित	१०२
६८. ऐसे थे सावरकर	शिवम अग्रवाल	१०३
६६. मनोहर लाल	अभय प्रताप सिंह	१०४
१००. अजीबो गरीब किन्तु सत्य	निशान्त सिंह	१०५
१०१. गंगा मेरे लिये ही नहीं बहती	शैलेश त्रिवेदी	१०५
१०२. किससे क्या शिक्षा मिलती है	मयंक वाजपेयी	१०६
१०३. धन की सीमा	मयंक वाजपेयी	१०६
१०४. सच बनाम झूठ	अभिनव अग्निहोत्री	१०७
१०५. गायत्री महिमा	मयंक मिश्र	१०८
१०६. बरगद और बेल	राजीव प्रताप सिंह	१०८
१०७. शिक्षक आचार्य गुरु एवं सद्गुरु	शशांक तिवारी	१०६
१०८. समाज के आइने में शिक्षार्थी	आशीष यादव	११०
१०६. सफलता के सिद्धान्त	अंकित झा	१११
११०. सबसे महान कौन	कुशाग्र कृष्णन	११२
१११. सफलता का रहस्य	निमिष दास	११२
११२. आधुनिक शब्दावली	कुशाग्र कृष्णन	११३
११३. शिक्षाप्रद लघुकथा	निशान्त सिंह	११३
११४. खोटी अठन्नी	मोहित मिश्र	११४
११५. पंडित जी का आना	अंकित पटेल	११५
११६. संकल्प शक्ति का महत्व	दिव्यांशु त्रिपाठी	११६
११७. किशोर भारती	– –	११७
११८. बाल भारती	– –	११८
११६. छात्रावास के छात्र पदाधिकारी	– –	११६
१२०. बहुरंगी संसार	श्री दुर्गेश वाजपेयी (आचार्य)	१२०

English Section

1.	Editorial	Sharda Rao	2
2.	The Value of Time	Mayank Shashi	3
3.	Leo Tolstoy	Jogendra Singh	3
4.	Success Alphabet	Ankit Patel	4
5.	Decline of Civilization	Saurabh Katiyar	5
6.	Quality	Sudhanshu Kishore	5
7.	Rabindra Nath Tagore's Poetry	Vibhu Pandey	6
8.	My School	Abhay Chaturvedi	7
9.	Pledge	Nikhil Tripathi	7
10.	My Goel in Life	Indrajeet Vishwakarma	8
11.	Geographical Epithets	Brijesh Shukla	8
12.	Atri And Hindutva	Prashant Mishra	9
13.	The ABC's of Happiness	Ravi Bhushan Singh	10
14.	Humility	Kushagra Krishanan	10
15.	Tsunami of 2004	Anil Kumar	11
16.	The Need of Leisure	Himanshu Bhushan	11
17.	Value of Character	Amit Gautam	12
18.	An Ideal Teacher	Amit Gautam	12
19.	Definition of Friendship	Sumit Kakkar	13
20.	History	Padam Jee Omar	13
21.	The Powerhouse of India : Rashtrapati Bhavan	Ayush Mishra	14
22.	Character	Ankur Katiyar	15
23.	Where There Is A Will, There's A Way	Ankur Katiyar	15
24.	The Internet	Rohit Katiyar	16
25.	Who is to be Blamed for the Present Condition of India ?	Ravindra Pratap Singh	17
26.	Life	Ankur Kushwaha	17
27.	Value of Time	Abhay Singh Sengar	18
28.	Hostel Life	Jeet Singh Arya	18
29.	Indiscipline Among the Student	Vivek Kumar Sharma	19
30.	Summer Jobs	Abhay Chatruvedi	20
31.	A Poem of Grammar	Anil Kumar Tripathi	22
32.	A Teachers Words can Change One's Life	Ankur Kushwaha	23
33.	Mathematics		24
34.	History and Importance of English	Abhay Chatruvedi	26
35.	They Lived by the Sea, and Died by It	Mahendra Kumar	27
36.	Dont Depend on Fate	Shantanu Gupta	28
37.	India's Remote Satellite Programme	Shobit Kishore	28
38.	A True Friend	Shwetank Dixit	29
39.	Blessings of Poetry	G.P. Verma (Teacher)	30
40.	Unification of India and Pakistan a dream or a necessity !	Sharda Rao (Teacher)	33
41.	Philately	Vibhas Mishra	31
42.	हाईस्कूल परीक्षा – २००५ में प्रविष्ट छात्र	--	34
43.	इण्टरमीडिएट परीक्षा – २००५ में प्रविष्ट छात्र	--	36
44.	हमारा आचार्य कुल	--	38

सम्पादकीय

अपनी बात

— दुर्गेश वाजपेयी

रहीम बड़े उम्दा कवि थे। उन्होंने जो कुछ भी लिखा है वह इस संसार का सत्य है। यदि हमारा जीवन सदा सुख, ऐश्वर्य और शांति से परिपूर्ण होगा तो हमको संघर्षों से मिलने वाले अनुभव न प्राप्त हो सकेंगे। रहीम बेशक अनुभव–सिद्ध, ज्ञानवृद्ध और भावज्ञ थे, वे लिखते हैं –

''पावस देखि रहीम मन, कोइल साधै मौन।
अब दादुर वक्ता भये, हमको पूछत कौन।।''

यदि आप यह दोहा पढ़कर बड़ी लापरवाही के साथ रहीम को खारिज करते हैं तो मैं उनसे भी बड़े और सबसे बड़े कवि तुलसीदास का दोहा उद्धृत करता हूँ –

तुलसी पावस के समय, धरी कोकिलन मौन।
अब तो दादुर बोलिहैं, हमैं पूछिहै कौन।।

इन दो बड़े कवियों की एक जैसी अनुभूतियाँ ही किसी समय हुई होंगी ये दो कवि ही नहीं लगभग जितने भी श्रेष्ठ कवि हुए हैं उनको अपने समय में जमाने से चोट मिली, फिर उन्होंने अपने अन्तर्यामी को जगाया और अन्तर्यात्रा पर निकल गये। इस अन्तर्यात्रा में जो यात्री जितनी दूर तक और जितनी अधिक कुशलता के साथ गया वह उतना ही महान माना गया, मृत्यु के बाद पूजा भी गया। रहीम और तुलसी ही नहीं, सूरदास, रैदास, प्रसाद, निराला और महादेवी सभी का यही हाल रहा। इन सभी ने बहिर्यात्रा नहीं अन्तर्यात्रा की थी। किसी कवि ने लिखा है –

''जितनी तपन सही कुन्दन ने, उतना ही द्युतिमान हो गया।
जितनी पीर पचाई जिसने, वह उतना इन्सान हो गया।।
युग–युग का दुःख पीकर, तुलसी का राघव भगवान हो गया।।

जो स्वर्ण जितना अग्नि में तपता है उसी अनुपात में उसमें चमक आती है। उसी तरह से जो मनुष्य जितना अधिक संघर्षें और पीड़ाओं से सीखता है, वह उतना ही अधिक निखरता जाता है। सांसारिक सन्दर्भों में यह निखार दूसरा है और अन्तःकरण का निखार कुछ और ही दिव्य और भव्य होता है।

अब तुलसी के उपर्युक्त दोहे को देखें जिसमें वे कहते हैं कि कोयलों ने वर्षा ऋतु में मौन धारण कर लिया है क्योंकि अब मेढकों और टोड इत्यादि स्थूल जलचरों का प्राबल्य, प्राधान्यं और आधिक्य है।

''कोकिल ! यापय दिवसान् तावद् विरसान् करीलविटपेषु
यावन्मिलदलिमालः कोऽपि रसालः समुल्लसति।।

कविवर बिहारीलाल लिखते हैं –

बसै बुराई जासु तनु, ताही कौ सनमान।
भलो–भलो कहि छाँड़िये, खोटे ग्रह जपु दान।।

किसी समय बिहारी जैसे प्रतिभावान कवि, विद्वान के होते हुए राजा जयसिंह ने किसी अयोग्य और दुराचारी को सम्मानित किया होगा तभी उनका हृदय इस प्रकार से उद्वेलित हुआ होगा। इसी प्रकार अनेक अनुभवों से गुजरते हुए वे लिखते हैं – ''फूल्यो अनफूल्यो भयो, गँवई–गाँव गुलाब''। गुलाब जैसा महत्त्वपूर्ण और सुगंधित पुष्प वहीं महत्त्व पाता है जहाँ उसको समझने वाले लोग होते हैं। असंस्कारित और पिछड़े गाँवों में गुलाब

का खिलना या न खिलना एक जैसा ही होता है, इसलिए वे गुलाब जैसे लोगों को संकेत देते हैं कि गाँव–गँवई में तुम्हारी विशेषता का भला क्या मान होगा ?

महादेवी, प्रसाद और निराला का साहित्य इस प्रकार के अनुभवों से भरा हुआ है। यहाँ तक कि विश्वविख्यात बंगला कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर लिखते हैं –

"तोमार घोरे साथी
तोमार जोले बाती
आमार तोरे राती
आमार तोरे तारा।"

बँगला छन्दांशार्थ है कि "एक पथिक ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे किनारे चलता जा रहा है और उस पथिक से ब्रह्मपुत्र कहती है कि – तुम्हारे पुलिन अच्छे हैं, हमारा जल विमल है। तुम चलते हुए थक जाओगे फिर विश्राम करोगे परन्तु मुझे अनन्तकाल तक चलते ही रहना है। तुम्हारा लक्ष्य तुम्हें सुदूर दिख रहा है, वहाँ तुम्हारा एक साथी है जो तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा होगा और वहाँ पर दीपक भी जल रहा होगा परन्तु मेरी सहचरी तो सिर्फ ये निविड़–निशा है और ये दूर चमकते तारे हैं।

भला नदी भी कहीं बोलती है ? – ये तो रवीन्द्र का मन बोल रहा था।

लेकिन 'नीराजन' के सम्पादकीय में इन बातों का क्या तुक है ? लगता है विषय से कुछ भटकाव है। लेकिन यह बहाव है इस बहाव से तट कटते हैं तो कटें। कथनार्थ यह है कि आज का समय प्रतिकूलताओं, चुनौतियों और अँधेरों से भरा हुआ है। जो हम विद्यालय परिवेश में पढ़ और सुन रहे हैं वह आदर्श है, सच्चाई है। यह सच आज अस्तित्व के संकट से जूझ रहा है। अनय और अधर्म की अर्गला में आज का राम बेबस बंदी है। राम के रामत्व को जगाने की आवश्यकता है। देश के हनुमान को जगाने की जरूरत है। रावण अभी मारा नहीं गया है, न ही लंका का दहन हुआ है। भ्रष्टाचार–जलधि का अभी शोषण होना बाकी है। नल और नीलों से हम क्या उम्मीद करें जिनकी निष्ठाएँ कमीशन खाने में हैं। ये नल–नील आज के अभियन्ता हैं। आज के केवट पद रज लेकर संतुष्ट रहने वाले नहीं है। गौतम से अभिशप्त अहल्याओं की दशा चिन्तनीय है। आवश्यकता है परिवर्तन की, आवश्यकता है उत्कर्ष की, जरूरत है नकाबों के नोचने की लाज़मी है सच को जिन्दा रखना।

नीराजन का सत्र २००४–०५ का अंक प्रस्तुत करते हुए हम प्रमुदित हैं। सर्वाधिक आनन्द का विषय यह है कि अष्टम तथा नवम कक्षा के छात्रों ने छन्दबद्ध रचनाएँ लिखी हैं जिनमें दोहा और चौपाई प्रमुख हैं। सभी छात्र जिनकी चौपाइयाँ इस पत्रिका में प्रकाशित हो रही हैं, वे प्रशंस्य हैं। इस वय में लयबद्ध, प्रवाह और प्रभाव से परिपूर्ण चौपाइयाँ लिखना एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। माननीय प्रधानाचार्य जी ने पत्रिका के प्रकाशन की विशेष रूप से चिन्ता की है। आद्योपान्त सभी घटकों की वे चिन्ता किया करते है, वे प्रणम्य हैं। विद्यालय प्रबंध समिति के सचिव माननीय श्री वीरेन्द्र जीत सिंह जी एक सहृदय, सरल, मृदुभाषी, साहित्य मर्मज्ञ तथा हम सभी की चिन्ता करने वाले सत्पुरुष हैं। हम लोग तो समाज सेवा की बातें ही करते हैं परन्तु हमारे श्री यतीन्द्र जीतसिंह जी ने तो प्रत्यक्ष कर दिखाया है। माँ सुशीला वात्सल्य मन्दिर के रूप में उन्होंने एक ऐसा प्रकल्प खड़ा किया है जिसमें असहाय साधनहीन बच्चों को अच्छा आवास, भोजन, वस्त्र, खेलकूद मनोरंजन ही नहीं बल्कि वात्सल्य भी दिया जाता है। श्री यतीन्द्रजीत सिंह को स्वयं मैं उन बच्चों के साथ खेलते या खिलाते हुए देखता हूँ तो मैं सोचता हूँ कि क्या वे सचमुच यती हैं।

नीराजन के आँग्ल–प्रभाग की सम्पादक शारदा दीदी ने पत्रिका के समय से छपने में विशेष योगदान किया है। इसके साथ ही विद्यालय के समस्त आचार्य महानुभावों के प्रति भी मैं आभार व्यक्त करता हूँ।

✷

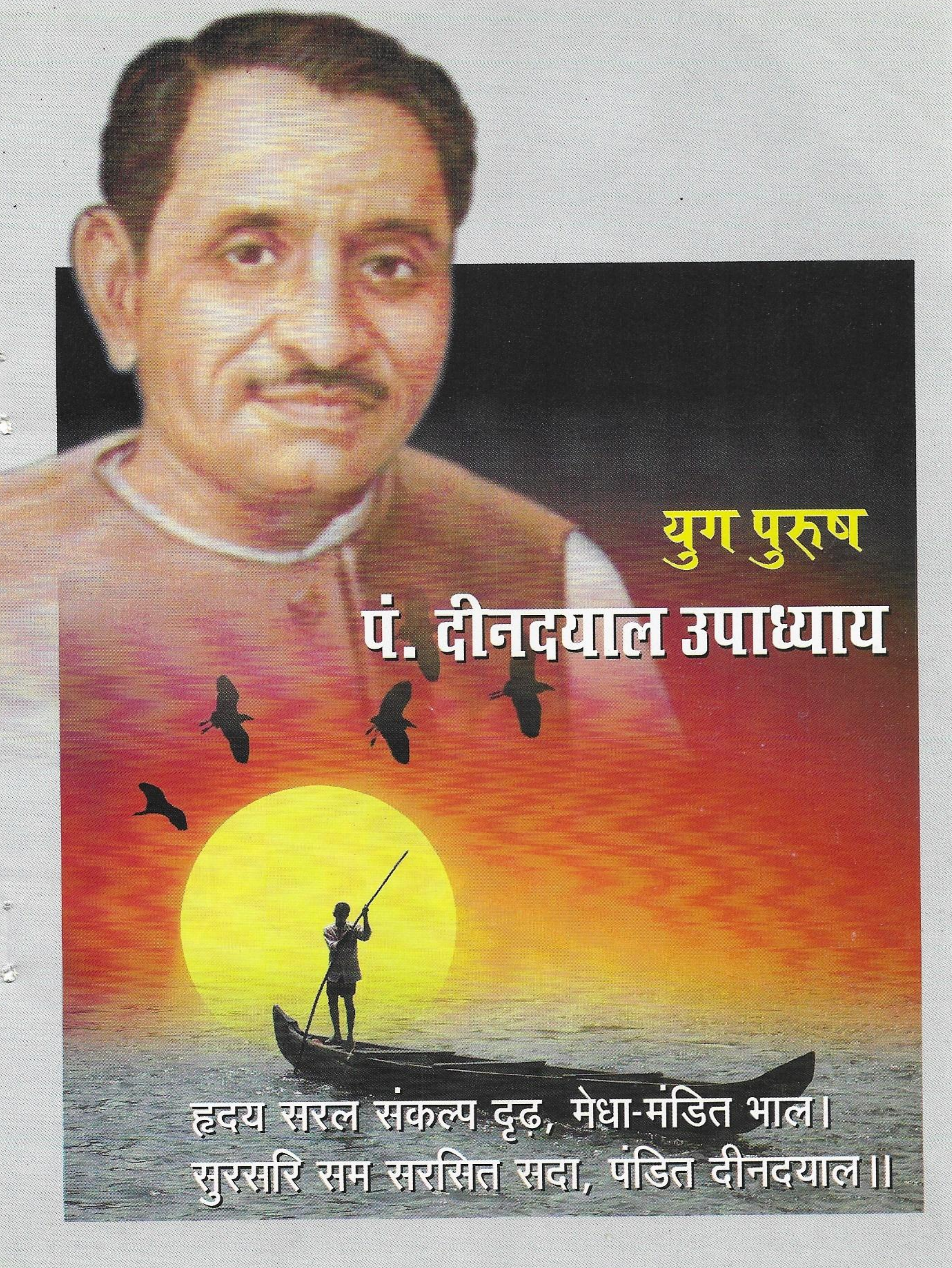
युग पुरुष
पं. दीनदयाल उपाध्याय
हृदय सरल संकल्प दृढ़, मेधा-मंडित भाल।
सुरसरि सम सरसित सदा, पंडित दीनदयाल।।

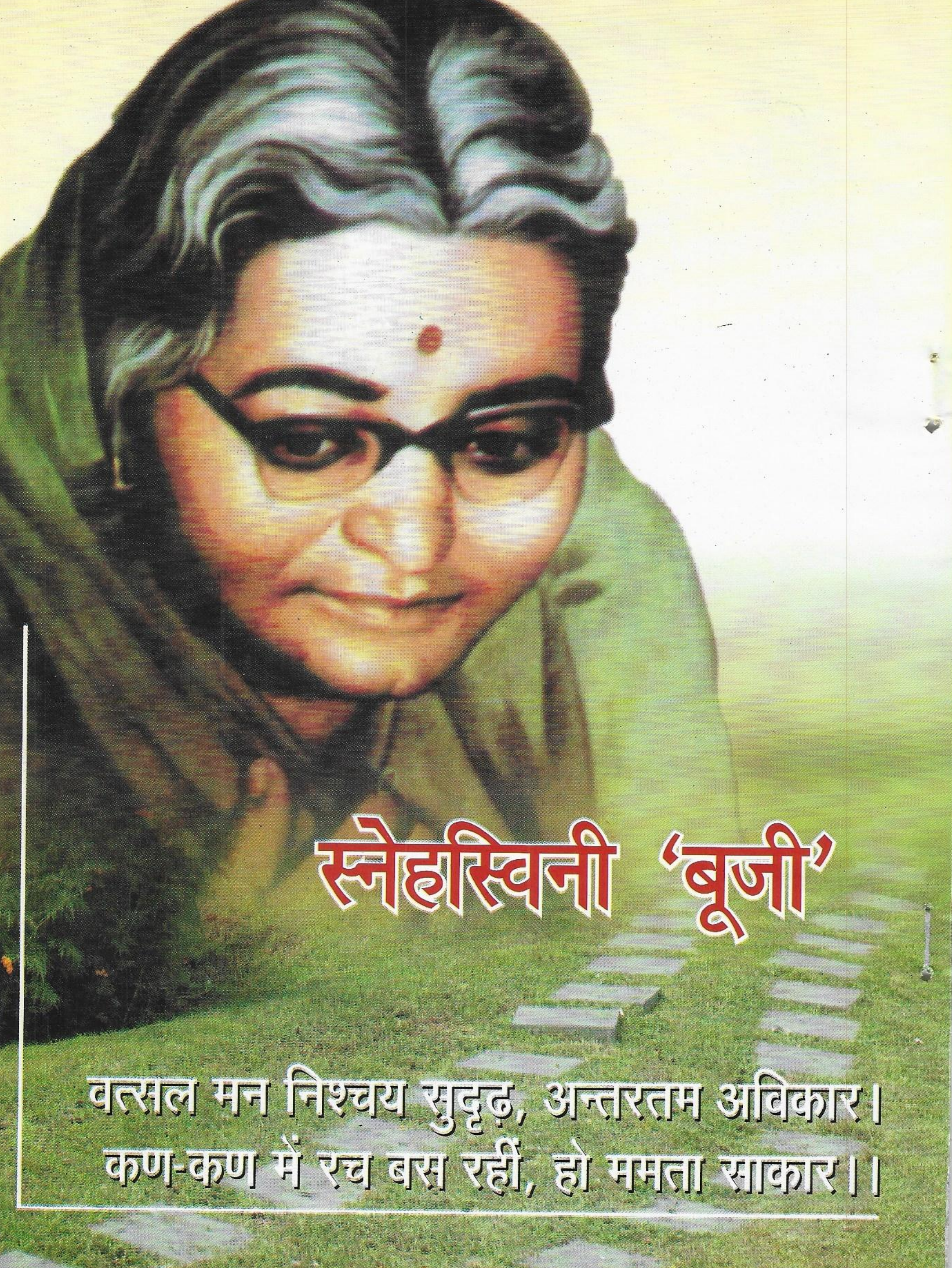
स्नेहस्विनी 'बूजी'
वत्सल मन निश्चय सुदृढ़, अन्तरतम अविकार।
कण-कण में रच बस रहीं, हो ममता साकार।।

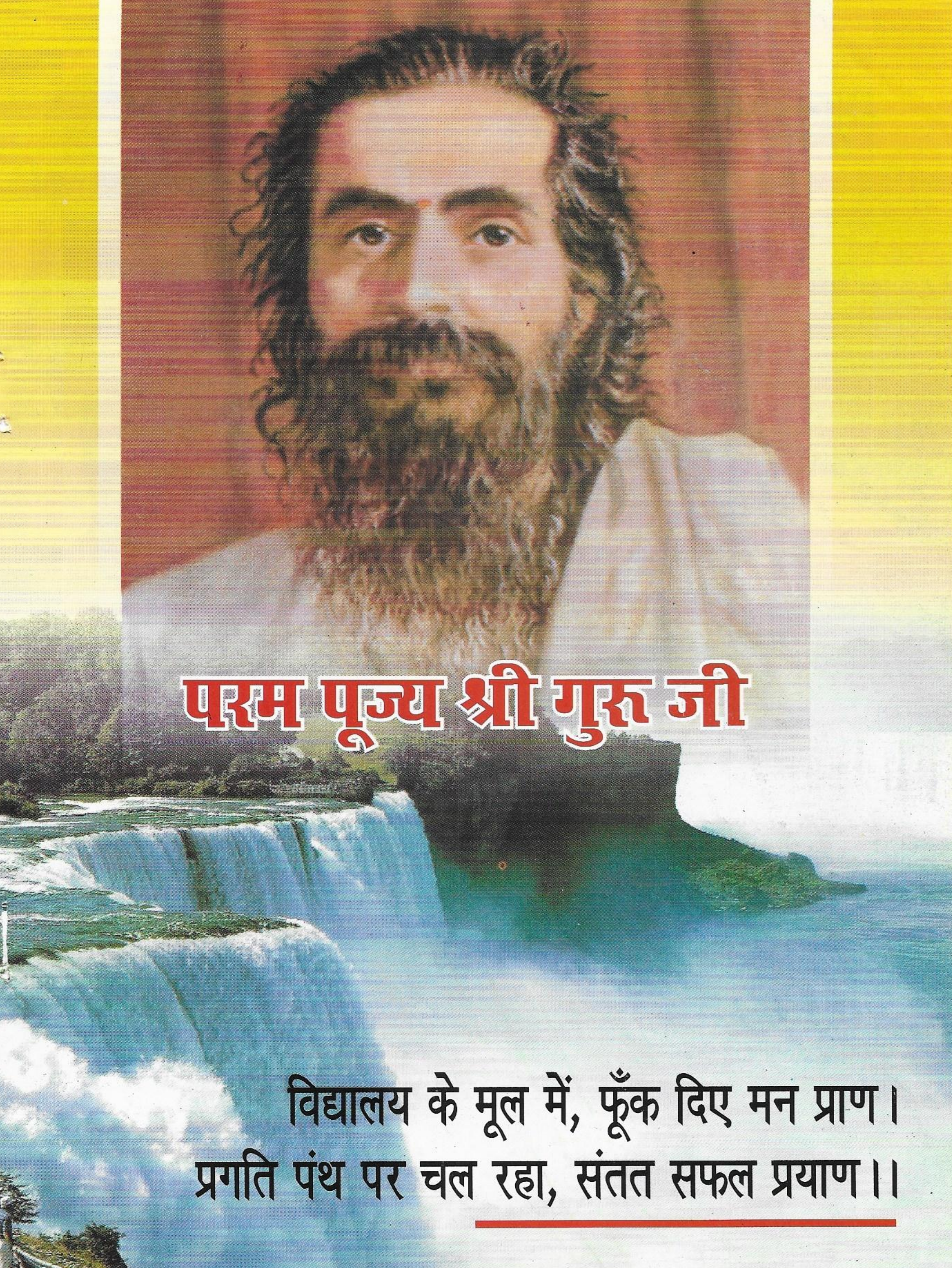
परम पूज्य श्री गुरु जी
विद्यालय के मूल में, फूँक दिए मन प्राण।
प्रगति पंथ पर चल रहा, संतत सफल प्रयाण।।

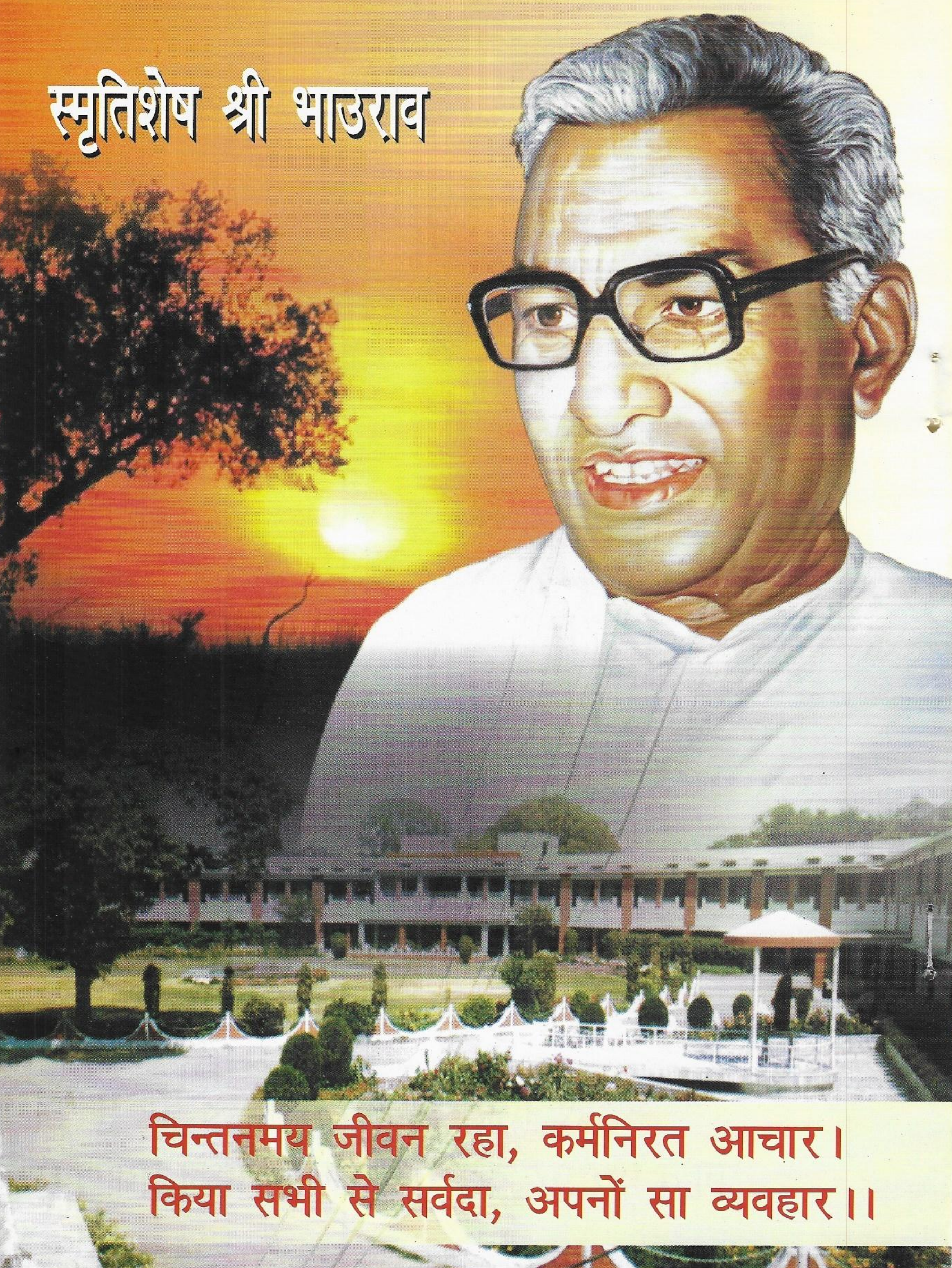
स्मृतिशेष श्री भाऊराव
चिन्तनमय जीवन रहा, कर्मनिरत आचार।
किया सभी से सर्वदा, अपनों सा व्यवहार।।

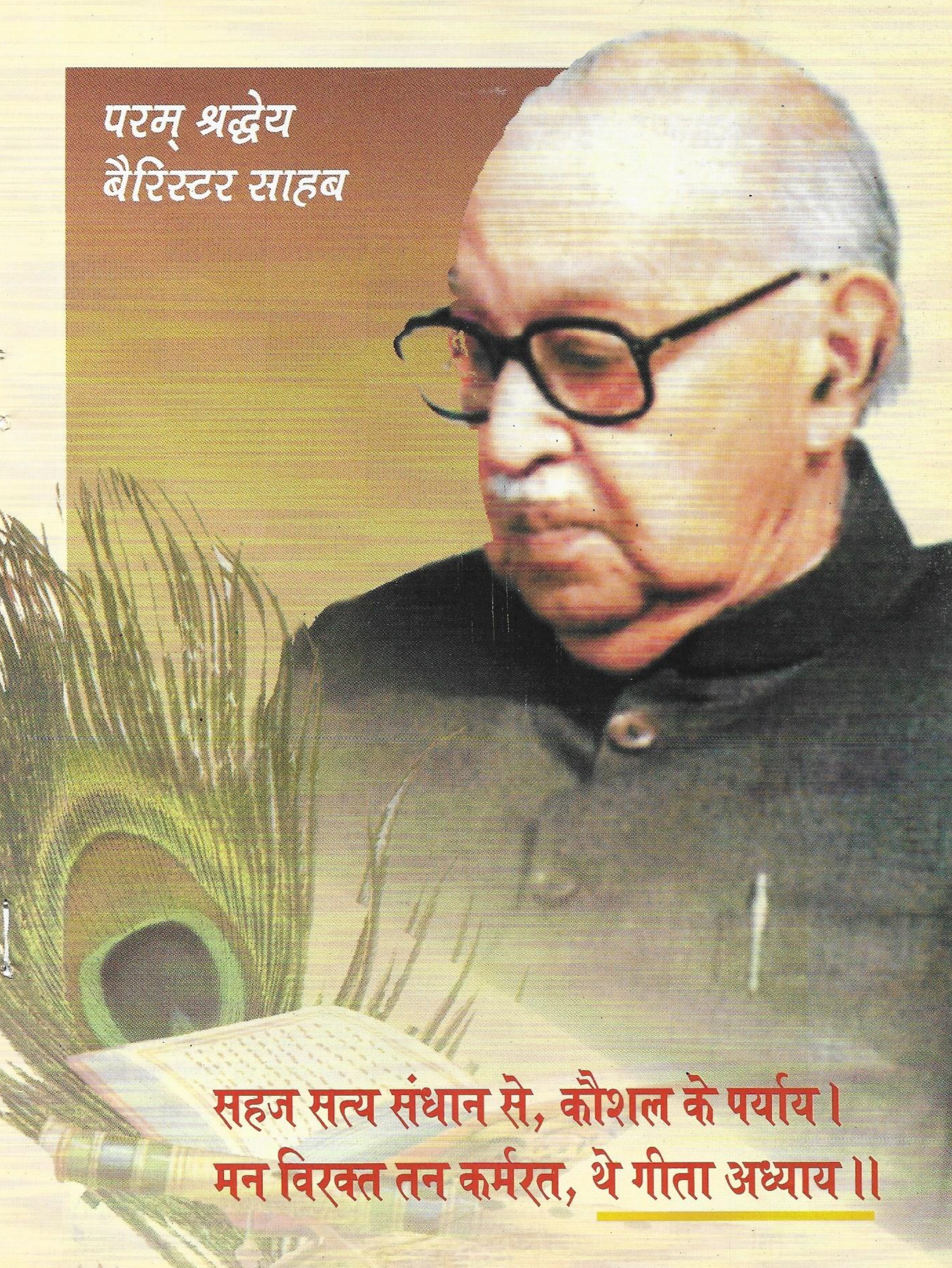
परम् श्रद्धेय
बैरिस्टर साहब
सहज सत्य संधान से, कौशल के पर्याय।
मन विरक्त तन कर्मरत, थे गीता अध्याय ।।

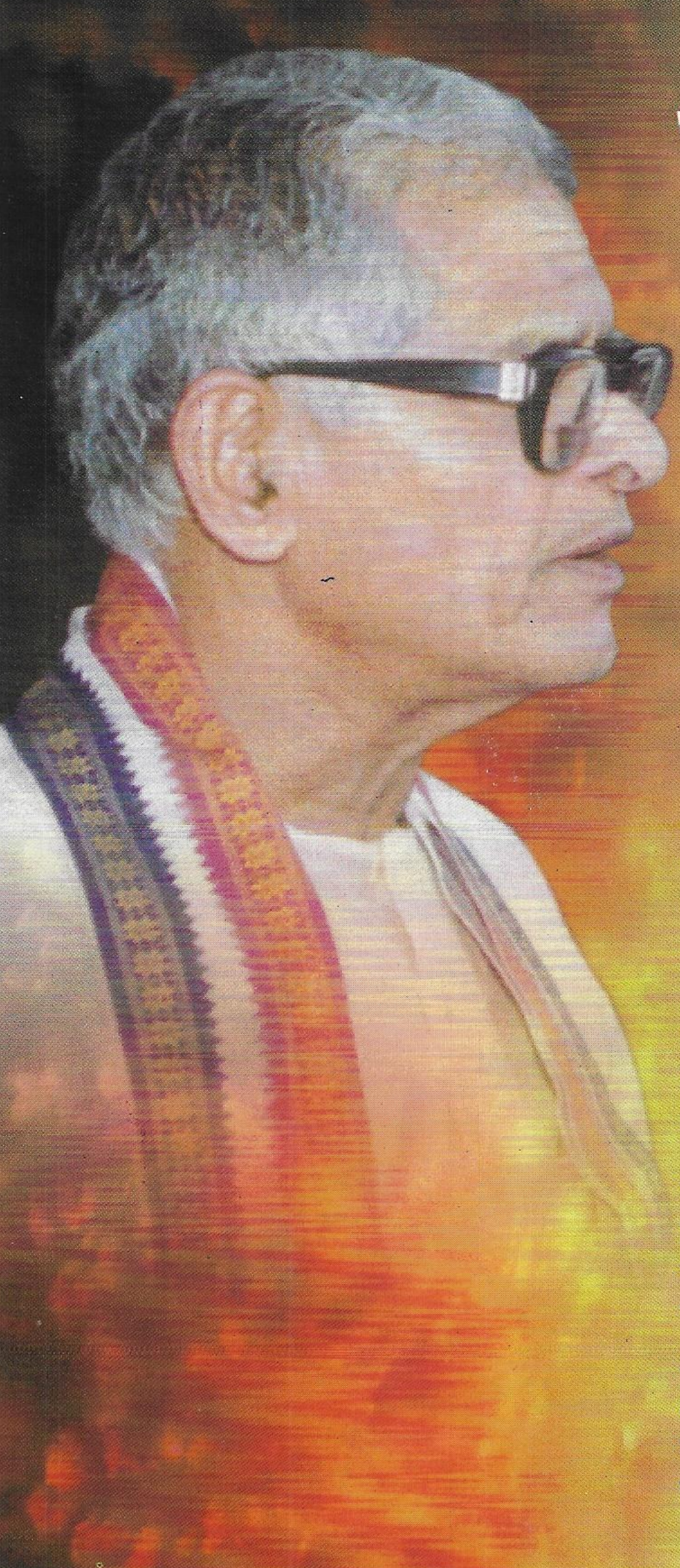

गोलोकवासी श्री विष्णुकान्त जी शास्त्री की पुनीत स्मृति में

जिये जिन्दगी जूझ कर शौर्य व्रत ले
तिरस्कृत किये दैन्य अथवा पलायन
किया राम का काम अभिराम अनुपम
असुर वृत्तियों के अनोखे विलायन।

अमर देववाणी सरल सौम्य भाषा
न क्षणभर कभी घेर पाई निराशा।
समुत्कर्ष निश्रेयशस् ध्येय निष्ठा।
सदादर्श की प्रेरणा या कि आशा।

रहे कर्म-पर्याय धर्मावलम्बी
गिरा ज्ञान के साधनामय तपस्वी
विमल तन गहन मन प्रखर दिव्य मेधा
तपः पूत जीवन यशस्वी मनस्वी।

कोमल से खिले कीच में भी सदा ही
न पद का अहं या विपद की निराशा
सदा सत्य का साथ पाया निभाया
न मन को कभी दी सुखों की दिलासा।

अमर थे अमर हो अमर ही रहोगे
अमर ज्ञानमय यज्ञ के होम से तुम
यशः काय पर्याय दिवत्व के, फिर
उगो व्योम में जगमगो सोम से तुम।

— श्री ओम शंकर त्रिपाठी

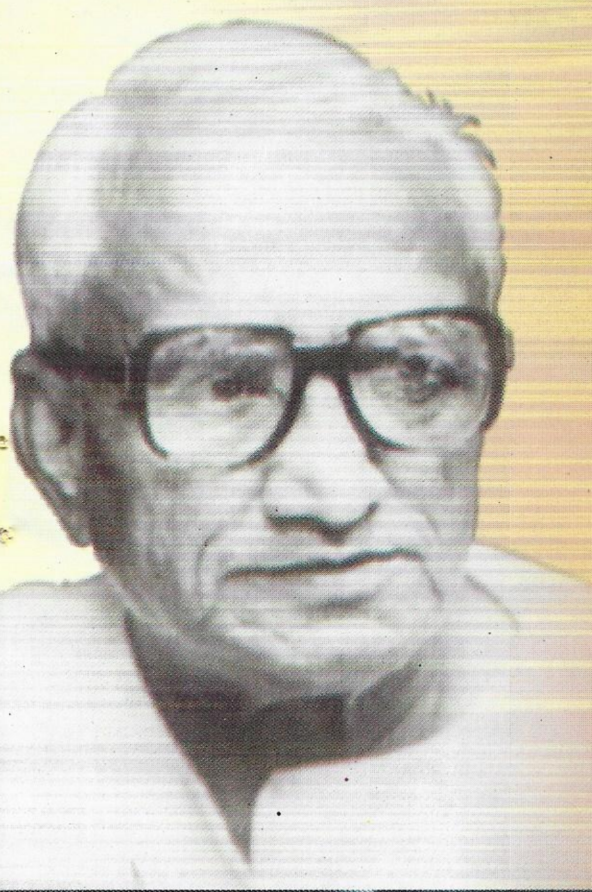

ब्रह्मलीन श्री दत्तोपन्त जी ठेंगड़ी की स्मृति में

सद्धर्म मर्म की अमर ध्वजा के वाहक शिव संकल्पवान
संदीप्त शौर्य, शुचि सरल तितिक्षा के विग्रह शुभ महीयान
ओ वीर तपस्वी तेजस्वी दृढ़व्रती मनस्वी धर्मप्राण
भारत माता के अमर पुत्र दृढ़ राष्ट्र भाव के शुभ विहान
स्वीकारो चन्दन, धूप, पुष्प नीराजन यह
दो मुझको भी अपनी साधना तपोधनता
भर दो विश्वास भुजाओं में गति चरणों में
देखो स्वर्गस्थ राष्ट्र का कीर्तिकेतु तनता।

श्री ओम शंकर त्रिपाठी

पूज्य चरण श्री शिवशरण शर्मा जी

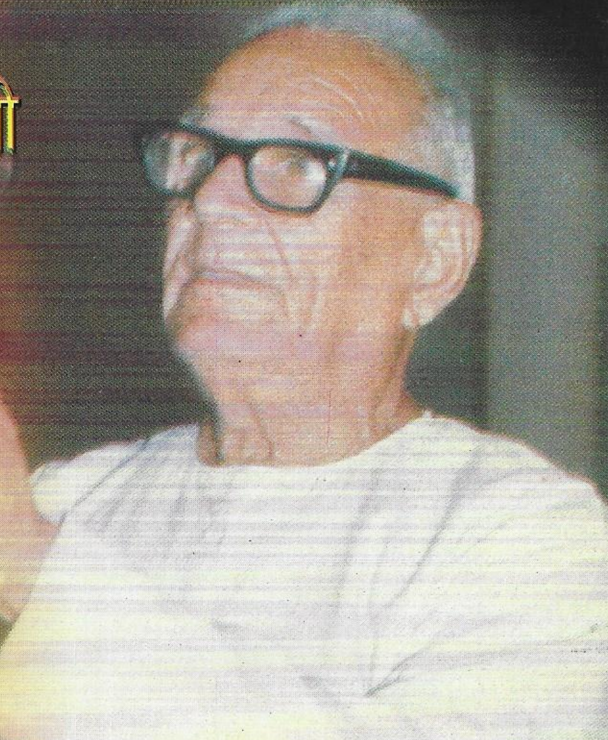

कामना वह्नि की चिनगारी छू न सकी
थाहते रहे साधना - सिंधु को आजीवन
प्रभु के समक्ष भी मौन अयाचित रहे सदा।
उस अनुरागी वैरागी को शत-शत वन्दन।

श्री ओम शंकर त्रिपाठी

माँ सुशीला वात्सल्य मंदिर
यह सेवा है साधना तपस्या जीवन की
जग-यश हित करने वाला नहीं दिखावा है
कण-कण पर बोई यहाँ भावना ममता की
सेवा-व्रत स्वत्व-समर्पण बिना छलावा है।

(श्री ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामण्डल, कानपुर द्वारा संचालित)

पं० दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय

कानपुर 208002

E-mail:pddusdv@yahoo.com

वार्षिक आख्या २००३–२००४

स्थापना :– तेरा वैभव अमर रहे माँ, हम दिन चार रहें न रहें का जीवन–मंत्र लेकर चलने वाले आर्ष परम्परा के ध्वजवाहक युग–दधीचि पं० दीनदयाल उपाध्याय ने भारत माता के चरणों में अपना जीवन न्योछावर कर दिया था। सामान्य जनमानस के लिए यह वाक्य एक रुढ़ शब्दावली हो सकती है, किन्तु हम उनके वंशज अपनी पूरी आस्था के साथ कहते है कि पण्डित जी का जीवन हमारे राष्ट्र की अनुपम थाती है और उनकी साधना देश का जीवन्त इतिहास है।

वास्तव में यह विद्यालय उनके आदर्शों को मूर्त रूप देने का शपथ–पत्र है। इसका एक–एक अक्षर अंकित करने का महत्त्वपूर्ण कार्य जिन महनीय पुरुषों ने किया, उनमें इस विद्यालय की कल्पना–मूर्ति गढ़ने वाले मौन तपस्वी पूज्य भाऊराव, इसकी आधारशिला रखने वाले युगद्रष्टा परम पूज्य श्री गुरुजी, भव्य भवन को मूर्त रूप देने वाली त्यागमयी मूर्ति ममतामयी बूजी और इसकी कंचन–काया में प्राण भरने वाले निष्काम कर्मयोगी माननीय बैरिस्टर साहब सदा ही स्मरणीय रहेंगे। विद्यालय के पूर्व अध्यक्ष ब्रह्मलीन प्राचार्य श्री शिवशरण शर्मा का व्रती जीवन और संकल्प सिद्ध अध्यवसाय जहाँ हमारे लिये सतत प्रेरणा है वहीं पूज्य श्री इन्द्रजीत जैन की उदारता हमारा संबल।

संवत् २०२६ की गुरुपूर्णिमा (१८ जुलाई १६७०) के पावन पर्व से प्रारम्भ अपना यह विद्यालय आज अपना चौंतीसवाँ बसन्त मना रहा है।

इस विद्यालय के कल्पना–शिल्प का आधार उदात्त तथा प्रारुप जाग्रत विवेक है। हमारा लक्ष्य यह भी है कि जिन देशद्रोहियों के घिनौने षड्यंत्र तथा सत्ता की गर्हित लिप्सा के कारण पण्डित जी की क्रूर हत्या की गयी, उन विषैले विचारों को आमूल समाप्त कर दिया जाये और ऐसे विष–वृक्ष फिर कभी न पनपें, इसकी सुनिश्चित व्यवस्था भी की जाये।

पं० दीनदयाल जी भारत, भारती और भारतीयता के मूर्तिमान स्वरूप थे। इस विद्यालय के प्रयोग और परिणाम उनकी इसी भावना की प्रतिकृति हैं। विद्यालय द्वारा संस्कारित दृढ़ इच्छा– शक्ति सम्पन्न आदर्शप्राण पीढ़ी शनैः शनैः समाज को अपने अस्तित्व का बोध कराने लगी है। अतः हम विश्वासपूर्वक कह सकते हैं कि ब्रिटिश दासता के काल से चली आ रही पब्लिक स्कूलों की भ्रामक चकाचौंक से सर्वथा अलग यह विद्यालय भारतीय संस्कारों की पुनर्स्थापना में एक सुस्पष्ट, गतिमान, तेजोदीप्त और प्रभावी उपक्रम है तथा वर्तमान व्यावसायिक प्रलिप्सु कर्दम में एक उन्नत–अडिग शैल–शृंग।

कलेवर –

षष्ठ कक्षा के मात्र २४ छात्रों से प्रारम्भ होकर निरन्तर प्रगति करता हुआ यह विद्यालय आज विज्ञान वर्ग में मान्यता प्राप्त पूर्ण विकसित इण्टरमीडिएट विद्यालय है।

जिस भूमि पर यह विद्यालय स्थित है, वह श्री ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामण्डल द्वारा प्रदत्त है। महामण्डल

की इस उदारताा का विद्यालय चिर ऋणी रहेगा। प्रारम्भिक अर्धचन्द्राकार दुमंजिले भव्य भवन का निर्माण श्रद्धेया बूजी ने अपने नितान्त व्यक्तिगत साधनों से करवाया, जो अपने में एक महिमामय उद्धरण है। आवश्यकतानुसार धीरे–धीरे इस भवन का विस्तार तथा अन्य भवनों का भी निर्माण होता गया यथा विज्ञानवीथी, भाऊराव–भवन, नरेन्द्र–निवास छात्रावास, प्राचार्य–आवास, माधव–स्मृति क्रीड़ा–परिसर व प्रेक्षागार तथा आचार्य और कर्मचारी आवास आदि।

वर्तमान समय में लगभग ७५०० वर्ग फीट का एक भव्य विशालकक्ष बनकर तैयार हो चुका है। इसके लिये विद्यालय विद्वान सांसद श्री नरेन्द्र मोहनजी का आभारी है कि उन्होंने कृपापूर्वक अपनी सांसद निधि से पच्चीस लाख रुपये का अनुदान देकर विद्यालय परिवार को कृतार्थ किया है।

इस समय षष्ठ से द्वादश तक ७ कक्षाओं के १६ अनुभागों में छात्रों की संख्या ७६१ है। इनमें से २२१ छात्रावासीय हैं जो कि विद्यालय के ऊपरी खण्ड, पीछे भाऊराव–भवन तथा नरेन्द्र–निवास में रहते हैं। इनमें उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों के साथ ही उत्तरांचल, बिहार, झारखंड, बंगाल, मध्यप्रदेश तथा अरुणांचल प्रदेश के छात्र भी हैं, जिनके भोजन, स्वास्थ्य, स्वाध्याय, अनुशासन आदि की चिन्ता विद्यालय–परिसर में ही निवास करने वाले सुयोग्य आचार्यों द्वारा की जाती है। वास्तव में हमारी अभिलाषा इस विद्यालय को पूर्णरूपेण आवासीय विद्यालय बनाने की है, जिससे अपना सुचिंतित व्यक्ति–निर्माण का कार्य हम और अधिक प्रभावी ढंग से कर सकें।

विद्यालय में पढ़ाने वाले आचार्यों की संख्या प्रधानाचार्य सहित वर्तमान समय में २८ हैं। लगभग सभी प्रशिक्षित परास्नातक है।

विद्यालय के पास लगभग एक लाख रुपये से अधिक मूल्य की १५००० से अधिक पुस्तकों से सम्पन्न पुस्तकालय भी है। वाचनालय में ६ दैनिक, ३ साप्ताहिक तथा १० मासिक पत्र–पत्रिकायें आती हैं। मुख्य समाचार, सुभाषित, सामान्य ज्ञान इत्यादि श्याम–पटों पर लिखे जाते हैं।

इस विद्यालय को शासन द्वारा विशिष्ट विद्यालय के रूप में कुछ विशेषताओं के आधार पर ही मान्यता दी गयी थी, जिनमें छात्रों पर व्यक्तिगत ध्यान प्रमुख है। इसी विशेषता के प्रति सचेत रह कर हम विद्यालय के छात्रों का समग्र विकास करने में सफल भी है।

शैक्षिक उपलब्धियाँ

परिषदीय परीक्षाएँ

विद्यालय की दशम कक्षा का प्रथम दल १६७५ में तथा द्वादश का प्रथम तल १६८१ में उत्तर प्रदेश की माध्यमिक शिक्षा परिषद की परीक्षा में सम्मिलित हुआ। परीक्षा–परिणाम प्रारम्भ से अत्युत्तम रहा है। प्रदेश में सर्वोत्कृष्ट परिणामों के आधार पर ही शासन विगत वर्षों से विद्यालय को इण्टरमीडिएट का सर्वश्रेष्ठ विद्यालय घोषित कर रहा है। वर्ष २००४ का परीक्षा–परिणाम निम्नांकित है –

वर्ष – २००४

	दशम	द्वादश
कुल छात्र	१३३	११६
उत्तीर्ण	१३३	११६
ससम्मान	४१	२०
प्रथम श्रेणी	८२	६२
द्वितीय श्रेणी	१०	०४
तृतीय श्रेणी	००	००

अद्यतन समेकित (Cumulative)

	दशम (३० वर्षों का)		द्वादश (२४ वर्षों का)	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
कुल छात्र	२६६१	—	२२२२	—
उत्तीर्ण	२६७५	६६.४०	२२०५	६६.२३
ससम्मान	१००६	३७.६७	५०३	२२.६३
प्रथम श्रेणी	१३२८	४८.३४	१३३४	६०.०३
द्वितीय श्रेणी	०३२	११.८१	३६३	१६.३३
तृतीय श्रेणी	००१०	००.३७	०५	००.२४
प्रदेश में स्थान	१०५ (लगभग ४%)		८४ (लगभग ४%)	

अन्य महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ :–

१. चि० सचिन गुप्ता (द्वादश कक्षा) ने क्षेत्रीय गणित ओलम्पियाड (R.M.O.) में प्रदेश में पंचम स्थान प्राप्त किया।

२. चि० अनुनय गुप्त ने बी०एच०यू० मेडिकल प्रवेश परीक्षा में अखिल भारतीय स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त कर विद्यालय का गौरव बढ़ाया।

प्रतियोगी परीक्षाएँ

इंजीनियरिंग, मेडिकल तथा प्रशासनिक प्रतियोगी परीक्षाओं में विद्यालय के छात्रों की सफलता का गौरवशाली अध्याय भी प्रथम बैच से ही प्रारम्भ हो गया था। गत वर्ष की उपलब्धियाँ इस प्रकार है :–

जे०ई०ई०/संयुक्त प्रवेश परीक्षा (आई०आई०टी०, मर्चेण्ट नेवी तथा धनबाद खनन महाविद्यालय हेतु) २७
यू०पी०टी०यू०/(क्षेत्रीय अभियान्त्रिकी विद्यालय) १३०
कुल (इंजीनियरिंग) में चयनित १५७
सी०बी०एस०सी० (मेडिकल) प्रवेश परीक्षा में चयनित ०२
सी०पी०एम०टी०/संयुक्त चिकित्सा प्रवेश परीक्षा (मेडिकल कॉलेजों हेतु) चयनित ०५
बी०एच०यू० (मेडिकल) प्रवेश परीक्षा ०२

प्रशासनिक सेवा की प्राथमिक परीक्षा में तीन छात्र चि० विशाल द्विवेदी (B.Tech), चि० तपन कुमार सिंह (B.Tech), और चि० दिव्य मिश्र (SCRA), अपने प्रथम प्रयास में ही सफल हुए।

NDA और CDS के माध्यम से सेना में पहुँचे हुए लगभग ३५ सैन्य अधिकारी और संघ लोक सेवा आयोग से चयनित लगभग २० प्रशासनिक अधिकारी विद्यालय से प्राप्त संस्कारों एवं जीवन के उदात्त आदर्शों का प्रकटीकरण करते हुए आगे बढ़ रहे हैं। विशेष बात यह है कि इन सबके विद्यालय से सतत् जीवन्त सम्बन्ध बने हुए हैं।

शिक्षा विभाग द्वारा संचालित 'एकीकृत छात्रवृत्ति' तथा 'राष्ट्रीय प्रतिभा खोज' परीक्षाओं में भी हमारे छात्र कीर्तिमान स्थापित करते आ रहे हैं।

विद्या भारती द्वारा संचालित 'संस्कृति ज्ञान परीक्षा' तथा हिन्दी समिति की 'हिन्दी ज्ञान परीक्षा' में भी अपने छात्र प्रति वर्ष शत प्रतिशत सफलता पाते हैं। श्री ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामण्डल द्वारा आयोजित मानस तथा गीता परीक्षाओं में अपने विद्यालय को सदैव महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त होता है।

छात्रवृत्तियाँ

शासन द्वारा स्वीकृत छात्रवृत्तियों का वर्तमान सत्र का विवरण है –

१. राष्ट्रीय प्रतिभा छात्रवृत्ति ०१ २. राष्ट्रीय योग्यता छात्रवृत्ति २२
३. एकीकृत तथा अन्य ६१

इसके अतिरिक्त हमारे अनेक छात्र अन्य स्रोतों से भी छात्रवृत्ति पा रहे हैं। इन छात्रवृत्तियों के दाता महानुभावों तथा न्यासों/संस्थाओं के नाम निम्नांकित हैं। हम इनके प्रति आभार व्यक्त करते हैं –

पं० दीनदयाल उपाध्याय शिक्षा समिति, श्री जयनारायण चेरिटेबल ट्रस्ट, श्रीमती सरस्वती देवी एवं श्री हरि मोहन गर्ग छात्रवृत्ति, श्रीमती सावित्री अग्रवाल, श्री कन्हैयालाल गोपालदास अग्रवाल, श्री इन्द्रजीत जैन स्मारक छात्रवृत्ति, श्री प्रेम नारायण जी सोमानी, इंडिया जापान सोसाइटी, श्री हरि भार्गव ट्रस्ट, श्रीमती प्रेमा गुप्ता छात्रवृत्ति, श्रीमती भाग्यवती त्रिपाठी द्वारा श्री रवीन्द्रनाथ त्रिपाठी, पाण्डुनगर, कानपुर, श्रीमती संजना मित्तल तथा पूर्व छात्र चि० प्रवीण भागवत, चि० संदीप मेहरोत्रा और चि० हृदयेश गुप्त। कुल मिलाकर ३२ छात्र इन सभी न्यासों और संस्थाओं के द्वारा लाभान्वित हो रहे हैं।

विद्यालय के पूर्व छात्र स्व० गुरुवर शरण अवस्थी की स्मृति में उत्कृष्ट अभिनेता छात्र को पुरस्कार दिया जाता है। यह स्थायी पुरस्कार उनके पिता डॉ० सन्त शरण अवस्थी ने प्रारम्भ किया था।

पाठ्येतर गतिविधियाँ

खेल–कूद व शारीरिक शिक्षा

विद्यालय में शारीरिक शिक्षा की भी व्यवस्थित योजना है। सामूहिकता की भावना विकसित करने हेतु योगासन व समता पर विशेष ध्यान दिया जाता है। साथ ही अपने सीमित साधनों में हमने खो–खो, कबड्डी, वॉलीबॉल, टेबिल टेनिस तथा बॉक्सिंग जैसे खेलों में पर्याप्त कौशल प्रदर्शित किया है। राज्य सब जूनियर मुक्केबाजी प्रतियोगिता वर्ष २००३–२००४ में ०६ छात्रों ने मंडल का प्रतिनिधित्व किया। जिसमें चि० मानस भारद्वाज ने स्वर्ण पदक तथा दिलीप गुप्त एवं एस०एम० गौरव ने कांस्य पदक प्राप्त किया।

विद्यालय में सैनिक शिक्षा को भी महत्व दिया जाता है। इस दृष्टि से राष्ट्रीय कैडेट कोर (एन०सी०सी०) की वरिष्ठ तथा कनिष्ठ इकाइयाँ विद्यालय में सफलतापूर्वक चलायी जा रही हैं। इनके प्रभारी विद्यालय के ही आचार्य हैं।

घर के सुरक्षित व सुविधाभोगी वातावरण से निकलकर छात्र स्वावलम्बन एवं कठोर जीवनचर्या का अभ्यास करते हुए देश का प्रत्यक्ष अध्ययन करें, इस दृष्टि से विद्यालय के छात्र प्रायः प्रतिवर्ष ही देशदर्शन हेतु जाते रहते हैं। इस योजना के अंतर्गत अपने छात्र देशदर्शन हेतु देश के लगभग सभी कोनों में जा चुके हैं। विजयादशमी अवकाश में देश–दर्शन का एक दल इस वर्ष भी जायेगा।

नैतिक शिक्षा

हमारी समय–सारणी में नित्य प्रातः मानस, गीता आदि ग्रंथों के शिक्षाप्रद अंशों से युक्त प्रार्थना के बाद सदाचार बेला का प्रावधान है, जिसमें पूर्व निर्धारित आचार्य कथा, जीवनी आदि के माध्यम से छात्रा को आदर्श जीवन का पाठ पढ़ाते हैं। छात्रों में सर्वगुण–सम्पन्न व्यक्तित्व की स्थापना के प्रोत्साहन हेतु नियत मापदंडों पर खरा उतरने वाले सर्वश्रेष्ठ छात्र को विद्यालय–रत्न पुरस्कार दिये जाने की भी योजना है।

समग्र व्यक्तित्व विकास

निर्भीक–सुचारु अभिव्यक्ति, उत्तरदायित्व तथा नेतृत्व भावना छात्रों की मानसिकता का अनिवार्य अंग बने, इस दृष्टि से विद्यालय में तीन संस्थाएँ कार्य करती हैं – अष्टम कक्षा तक बाल–भारती, नवम–दशम में किशोर–भारती और एकादश–द्वादश में तरुण भारती – जिनके अंतर्गत छात्र विद्यालय के विविध सामूहिक कार्यक्रमों का संचालन करते हैं। छात्रावास में भी विभिन्न पदों पर नियुक्त छात्र निर्णय–प्रक्रिया तथा छात्रावास–संचालन में गंभीर भूमिका निभाते हैं।

विद्यालय के बाहर नगर, जनपद, प्रदेश स्तरों पर आयोजित वाद–विवाद, लेखन, ललित कला प्रतियोगिताओं में विद्यालय के छात्र लगातार भाग लेकर प्रतिष्ठा पाते रहते हैं।

कम्प्यूटर शिक्षण

विद्यालय का कम्प्यूटर–विभाग सुव्यवस्थित और आधुनिकतम सुविधाओं से सुसम्पन्न है। सॉफ्टवेयर के

माध्यम से कम्प्यूटरों पर ही पूर्ण अध्यापन तथा स्वनिर्मित सॉफ्टवेयर द्वारा ऑन–लाइन परीक्षा हमारी विशिष्टता है। इसके साथ ही हमने अपने विद्यालय में छात्रों की प्रवेश–प्रक्रिया को भी कम्प्यूटरीकृत कर दिया है। प्रवेश–परीक्षा का परिणाम भी विगत तीन वर्षों से इण्टरनेट पर जारी किया जाने लगा है।

युगभारती

बाल, किशोर और तरुण–भारती की शृंखला में अगली कड़ी है युग–भारती अर्थात् विद्यालय के पूर्व छात्रों की संस्था। जिस उदात्त लक्ष्य की प्राप्ति हेतु इस विद्यालय की स्थापना की गयी थी, उसकी पूर्ति हेतु यह अनिवार्य था कि दशम या द्वादश उत्तीर्ण करने को ही छात्र का विद्यालय के साथ सम्बन्धों की समाप्ति न माना जाये, इसीलिए बहुत पहले ही पूर्व छात्रों की संख्या के रूप में संविधान, कार्यकारिणी इत्यादि के साथ तरुण–भारती की स्थापना हो गयी थी, जो कि अब युग–भारती के नाम से पंजीकृत हो चुकी है। युग–भारती ने अपने शिविरों, ग्राम–संपर्क–योजनाओं एवं संचार–साधनों के प्रसार आदि से समाज को अपनी लगन और निष्ठा का परिचय दिया है।

पूर्व छात्रों का विद्यालय से यह जुड़ाव विद्यालय की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है और समाज के लिये एक अनुकरणीय उदाहरण भी।

प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी कल दिनांक २६ (रविवार) को प्रातः १० बजे से युग–भारती का वार्षिक अधिवेशन नवीन विशाल–कक्ष में हो रहा है।

माँ सुशीला वात्सल्य मंदिर

विद्यालय द्वारा प्रारम्भ हो रहा यह एक पावन प्रकल्प है, जिसका उद्देश्य समाज के सुविधा–वंचित शिशुओं को जीवन की आवश्यक सुविधाओं के साथ पालन–पोषण तथा समुचित अध्ययन की व्यवस्था करना है।

इसके लिये विद्यालय के दाहिने पार्श्व में वी०एस०एस०डी० महाविद्यालय के अनुग्रह से प्राप्त भूमि पर एक भव्य भवन निर्मित हो चुका है। युग–भारती के ही एक सक्रिय सदस्य (पूर्व छात्र) के द्वारा इस महत्वपूर्ण कार्य के लिये पूरा व्यय भार वहन करने का अनुकरणीय संकल्प लिया गया है। भविष्य में इस वात्सल्य मंदिर के द्वारा पालित–पोषित एवं मार्गदर्शित छात्रों का यशस्वी जीवन समाज के लिये भी अनुकरणीय उदाहरण बन सकेगा, इसी विश्वास के साथ विद्यालय का यह पावन प्रकल्प २३ सितम्बर से प्रारंभ हो चुका है। इस सेवाभावी पावन प्रकल्प में आप सबके सक्रिय सहयोग की अपेक्षा है।

भारतीय चिंतन में शिक्षा का उद्देश्य विषय का कक्षा–शिक्षण मात्र नहीं, अपितु व्यक्ति–निर्माण के माध्यम से समाज–जागरण माना गया है। समाज का प्रज्ञा–प्रवाह अवरूद्ध होना भी स्वाभाविक है, अतः आदर्श स्थिति यह होगी कि विद्यालय समाज को ऐसे सुयोग्य नागरिक प्रदान करे जो समस्त सामाजिक विकृतियों से अछूते रह कर अपनी तेजस्विता से निरंतर नवजीवन का संचार करते हुए इस जीवन–प्रवाह की निरन्तरता बनाए रखें। दुर्भाग्यवश आज अधिसंख्य शिक्षा संस्थान इस उद्देश्य को पूरा नहीं कर पा रहे हैं। ऐसे में युग–भारती के सहयोग से विद्यालय की प्रभावी भूमिका निश्चय ही भारत के स्वर्णिम भविष्य की दिशा में एक आश्वस्ति है।

अंत में ईश्वर से प्रार्थना है कि छात्रों में राष्ट्रनिष्ठा से परिपूर्ण समाजोन्मुखी व्यक्तित्व के उत्कर्ष में आप सभी बंधुओं का सहयोग हमें निरंतर मिलता रहे।

✳

राम का आदर्श गीता ज्ञान का निष्कर्ष लेकर बढ़ चलो साथी अभी गहरा अंधेरा है।
विश्रवा का वंश अंधक वंश का अवतंस सुख से मुस्कुराता है, छिपा तम में सवेरा है।

ऐसा जादू किया किसी ने ...

– श्री ओमशंकर त्रिपाठी
प्रधानाचार्य

आज आडम्बर और प्रदर्शन का युग है। तथाकथित समाजसेवा और धार्मिक कार्यक्रमों का भी प्रचार और प्रदर्शन होता है। धर्म पर अर्थ हावी हो गया है। त्याग या तो शब्दकोश का शब्द है या फिर थोथे प्रवचनों का, आचरण में न तो त्याग है न ही न्याय। कभी इस प्रकार के वाह्याडम्बरों का विरोध कबीर ने किया था, कुछ वैसा ही भाव प्रधानाचार्य जी की कविता से ध्वनित होता है। – संपादक

धन साधन सुविधा के वन में हर घर का इन्सान खो गया।
ऐसा जादू किया किसी ने पूरा देश मसान हो गया।।

सम्बन्धों की रस्म अदाई
हूल रही भीतर तनहाई।।
धर्म अर्थ के हुआ हवाले।
सच पर जड़े हुए हैं ताले।।
सुख के लिए स्वत्व का तर्पण,
दैनिक कर्म विधान हो गया।।१।।
ऐसा जादू ....

भाषा, भूषा वेश पराया।
प्रेम और आवेश पराया।।
घर के चूल्हे हुए विरागी।
माँ का दूध हो गया दागी।।
'त्याग' कोष का शब्द,
देश का चिन्तन अर्थ प्रधान हो गया।।२।।
ऐसा जादू ....

ध्यान योग आयात हो रहा।
स्वत्व लुप्त चैतन्य सो रहा।
स्वारथ पगी प्रवचनी भाषा।
बदल गई तप की परिभाषा।
सत्य सनातन सदाचरण का,
आज नया अभिधान हो गया।।३।।
ऐसा जादू ....

प्रेम वासना का प्रहरी है।
मानवता अंधी – बहरी है।
बचा नहीं कुछ अपना जैसा।
काबिज हुआ सभी पर पैसा।
आकर घिरी अमावस,
लेकिन कहते लोग विहान हो गया।।४।।

ऐसा जादू ....

बेवश लोक, तन्त्र है हावी।
भय से काँप रहा है भावी।।
पेट हो गया पूरा जीवन।
दूषित हुआ प्रगति का चिन्तन।।
कैसे कहूँ देश का अपना,
अलग स्वतन्त्र विधान हो गया।।५।।

ऐसा जादू ....

✷

सकारात्मक सोच

– अंकुर कटियार
नवम 'ख'

- कोई भी काम केवल तब तक कठिन होता है, जब तक हम उन्हें सरल करने का साहस नहीं दिखाते।
- अपने बोझ को कम करने के लिए भार न कम करें बल्कि अपनी पीठ को ज्यादा मजबूत करने की कोशिश करनी चाहिए।
- हमें इस बात पर गर्वित नहीं होना चाहिए कि हम कभी असफल नहीं हुए, बल्कि असफलताओं के दौर से हर बार उबर जाने पर गर्व करना चाहिए।
- ज्ञान पाने का पहला कदम है शांत रहना, दूसरा सुनना, तीसरा याद रखना, चौथा अमल में लाना और पाँचवाँ उसे दूसरों को सिखलाना।
- असफलता दोबारा शुरू करने के लिए एक नया मौका होती है, इस बार अधिक चतुराई से हम वह कार्य करें।
- इस दुनियाा में कुछ भी अच्छा या बुरा नहीं, ये सब हमारी सोच का नतीजा है।
- हमें ध्यान रखना चाहिए कि हमारी बातचीत के माध्यम से व्यक्ति को समझा जाता है, क्योंकि माना जाता है कि वाणी व्यक्ति का आइना होती है।
- जीवन में आने वाला कल बहुत महत्वपूर्ण होता है। इसे हम जैसा बनाना चाहें, बना सकते हैं। इस विश्वास से कि बीते कल से हमने जरूर कुछ सीखा होगा।

वार्षिकोत्सव : विद्यालय का त्योहार

– शान्तनु गुप्त
द्वादश 'क'
अध्यक्ष, साहित्य परिषद, (तरुण भारती)

जैसे हिन्दू भाइयों को दीपावली का, मुस्लिम भाइयों को ईद का और सिख भाइयों को प्रकाशोत्सव का बेसब्री से इंतजार होता है ठीक वैसी ही उत्कण्ठा, उल्लास दीनदयाल विद्यालय के विद्यार्थियों, आचार्यों तथा कर्मचारियों को विद्यालय के वार्षिकोत्सव के समय होता है। यह समय होता है सभी की मेधा, प्रज्ञा, कला, परिश्रम और ज्ञान के सामूहिक प्रदर्शन का। हमारा वार्षिकोत्सव हमारे भीतर उत्साह, उल्लास और प्रेरणा का संचार करता है। १८ जुलाई १६७० को स्थापित इस विद्यालय ने इस बार अपना ३४वाँ वार्षिकोत्सव मनाया।

परम्परागत रूप से इस वर्ष भी वार्षिकोत्सव का प्रारम्भ अभिभावक गोष्ठी के आयोजन के साथ हुआ। अभिभावक सम्मेलन मे विभिन्न अभिभावकों ने अपनी समस्याएँ एवं सुझाव रखे। विद्यालय की प्रबन्धकारिणी समिति के सचिव मा० श्री वीरेन्द्र जी की उपस्थिति में विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री ओमशंकर त्रिपाठी जी ने उन सभी समस्याओं का समाधान किया तथा इस बात पर जोर दिया कि अभिभावक को छात्र से कम मोह करना चाहिए तथा उसकी सभी गतिविधियों पर ध्यान देना चाहिये ताकि छात्र का सम्पूर्ण विकास विधिवत् हो सके। वार्षिकोत्सव के दूसरे चरण के रूप में अन्तर–विद्यालयीय गण – गीत गायन प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। इसमें नगर के अनेक प्रतिष्ठित विद्यालयों के छात्रों भाग लिया। छात्र तथा छात्रा वर्ग की प्रतियोगिताएँ अलग – अलग हुई। कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्यालय की प्रबन्धकारिणी समिति के माननीय सचिव श्री वीरेन्द्र जीत सिंह जी ने की, जो कि स्वंय एक प्रख्यात समाज सेवक तथा प्रखर चिन्तक है। पूरा वातावरण संगीतमय था। स्वर और ताल की लहरें उठ रहीं थीं, भावनाओं का तट था और संगीत सिंधु के अनन्त छोर से राष्ट्रीयता का मरीचिमाली झाँक रहा था। छात्र वर्ग में सरस्वती ज्ञान मन्दिर, इन्द्रानगर के विद्यार्थियों को प्रथम जुगल देवी सरस्वती विद्यामन्दिर, दीनदयाल नगर के छात्रों को द्वितीय तथा पं० दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय, नबाबगंज, के छात्रों को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। इसी प्रतियोगिता के छात्रा वर्ग में सरस्वती ज्ञान मन्दिर, इन्द्रा नगर की छात्राओं को प्रथम, जुगलदेवी सरस्वती विद्या मन्दिर एवं पटेल शिक्षा सदन जू० हा० स्कूल की छात्राओं को संयुक्त रूप से द्वितीय स्थान तथा तृतीय स्थान श्री सनातन धर्म गर्ल्स इण्टर कालेज, कौशलपुरी की छात्राओं को प्राप्त हुआ। इस अवसर पर मा० सचिव श्री वीरेन्द्र जीत सिंह जी ने कहा कि हम अध्यापकों को ही नये युग का सूत्रपात करना है और माध्यम होंगे ये बच्चे। इसीलिए हमें समाज से सांस्कृतिक प्रदूषण को पूर्णरूपेण हटाना होगा।

वार्षिकोत्सव के तृतीय दिन मुख्य कार्यक्रम छात्रों द्वारा प्रस्तुत किये गये। मुख्य अतिथि के रूप में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख माननीय श्री श्रीकान्त जोशी जी उपस्थित थे। विद्यालय वेश में सजे छात्रों ने समस्त अभ्यागत महोदयों का योगाभ्यास प्रदर्शन कर ध्यानाकर्षण किया। कदम – से – कदम मिलाकर चलते हुए मानवन्दना के लिए बढ़ते एन० सी० सी० के पथिकों और तरूण भारती के मंत्री भैया अखिल त्रिपाठी के द्वारा कार्यक्रम का साहित्यिक भाषा में संचालन एक दिव्य तथा अलौकिक वातावरण की सृष्टि कर रहा था। मा० श्रीकान्त जोशी जी ने विभिन्न प्रतियोगिताओं के स्थान प्राप्तकर्ता छात्रों को सम्मानित कर उत्साहित भी किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि जी ने पण्डित जी के सम्पूर्ण जीवन – वृत्त पर प्रकाश डाला तथा उनके श्रेष्ठ गुणों को धारण करने के लिए प्रेरित किया।

वार्षिकोत्सव के चौथे दिन विद्यालय के पूर्व छात्रों की संस्था 'युग – भारती' के वार्षिक अधिवेशन का

आयोजन हुआ। इस कार्यक्रम में मुख्याभ्यागत प्रख्यात विचारक एवं प्रखर चिन्तक माननीय श्री गोविन्दाचार्य जी थे। इस अधिवेशन में युग – भारती के समस्त सदस्यों ने एक – दूसरे से मिलन किया तथा भोजन भी किया।

श्री गोविन्दाचार्य जी ने "स्वदेशी स्वभाषा तथा स्वाबलम्बन ही देश की उन्नति का एकमेव मार्ग है" विषय पर अपने विचार रखे। संध्या समय विद्यालय के वार्षिक सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुए। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में योद्धा साहित्यकार एवं पत्रकार पद्मश्री वचनेश त्रिपाठी 'साहित्येन्दु' जी उपस्थित थे। इस उपलक्ष्य पर 'युग–दर्शन' नामक नाटक का मंचन भी हुआ। नाटक का अभ्यास कई दिनों से चल रहा था जिसमें निर्देशक की मुख्य भूमिका निभाई थी श्री बालेश्वर शर्मा जी तथा आचार्या श्रीमती शारदा राव जी ने। इस नाटक में सन् १८५७ से लेकर १६४७ तक चले विभिन्न क्रान्तिकारी आन्दोलनों की सच्चाई को झाँकियों के माध्यम से प्रदर्शन किया गया। इस नाटक में मणिशंकर अययर की ढंग से खिचाई हुई साथ ही अर्जुन सिंह के द्वारा इतिहास की पुस्तकों में कराये गये परिवर्तनों का विरोध भी किया गया। इस नाटक के प्रारम्भिक दृश्यों में 'कालचक्र' के अभिनय में चि० शान्तनु गुप्त ने अत्यन्त सराहनीय भूमिका का निर्वाहन किया। इसके अतिरिक्त विवेक कश्यप, शोभित खरे, सौरभ त्रिपाठी, प्रत्यूष प्राञ्जल, सौरभ त्रिपाठी आदि ने भी प्रशंसनीय अभिनय किया। इस नाटक मे संगीत निर्देशन का कार्य रघुनाथ सिंह तथा प्रकाश व्यवस्था का कार्य सिद्धार्थ सौरभ ने किया। इस अवसर पर वचनेश जी ने कहा कि संस्कृति देश की आत्मा होती है। मदरसों में पढ़ाया जा रहा है कि ये मुल्क हमारे बादशाहों का था, अंग्रेजों ने इसे हमसे छीना और अब हमको इसे दार–उल–इस्लाम बनाना है। इस अवसर पर अभिनय के क्षेत्र में दिये जाने विशेष 'गुरूवरशरण अवस्थी पुरूस्कार' से चि० कृतिवास शर्मा को सुभाष चन्द्र बोस की भूमिका के लिये पुरस्कृत किया गया।

पाँचवें दिन विद्यालय में अन्तर विद्यालयीय वाद – विवाद प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। इस वाद–विवाद प्रतियोगिता का विषय था – 'स्वदेशी, स्वभाषा, स्वबलाम्बन राष्ट्रोन्नति का एकमेव मार्ग है।" इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि की भूमिका में मण्डलीय विकास आयुक्त, श्री राजेश्वर दयाल खरे जी उपस्थित रहे। यह प्रतियोगिता छात्र तथा छात्रा वर्ग की अलग–अलग थी जिसमें नगर के १६ विद्यालयों के विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया। निर्णायक मण्डल में डॉ० रमा मिश्रा (पूर्व प्राचार्य दयानन्द महिला प्रशिक्षण संस्थान), डॉ० मनोरमा खन्ना (विभागाध्यक्ष, सनातन धर्म कालेज) थे। प्रतियोगिता में विषय के पक्ष में दीनदयाल विद्यालय के प्रतिभागी चि० शोभित खरे ने कहा कि – "प्रकृति का नियम है कि हम स्व के आधार पर ही विकसित होते हैं पर का प्रभाव हमारी आवश्यकता तो हो सकता है अनिवार्यता कदापि नहीं। हमें सोचना होगा कि 'वयं राष्ट्रे जागृयाम्' का उद्घोष करने वाला ऋषित्व आखिर क्यों लिप्सा की मायामयी चादर ओढ़े गहरी मूर्च्छा मे सो रहा है।" इसी विषय के विपक्ष में दीनदयाल विद्यालय के चि० अखिल त्रिपाठी ने कहा कि "धरती बड़ी कठोर होती है, वह हमको दाना तभी देती है जब हम उसको अपने पौरूष से मथकर अपने तन का पसीना और बुद्धि के उपाय बोते हैं। कल्पनाएँ और भावनाएँ यदि हमारे अस्तित्व की रक्षा कर सकतीं तो आज से ५००० वर्ष पूर्व वाला आर्यावर्त एक छोटे से भूखण्ड के रूप में 'इंडिया' नाम धारण करके जीवित रहने को विवश न होता। इस प्रतियोगिता के छात्र वर्ग में विद्यालय के चि० शोभित खरे तथा चि० अखिल त्रिपाठी को क्रमशः प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ तथा तृतीय स्थान विद्युत परिषद इंटर कालेज के छात्र चि० अभय सिंह चौहान को प्राप्त हुआ।

विद्यालय की परिपाटी के अनुसार शील्ड द्वितीय स्थान प्राप्तकर्ता टीम, सरदार पटेल इंटर कालेज के छात्रों को प्रदान की गयी। छात्रा वर्ग में प्रथम स्थान श्री सनातन धर्म बालिका की छात्रा कु० प्रियंका मिश्रा ने द्वितीय तथा तृतीय स्थान शीलिंग हाउस की छात्राओं कु० प्राची दीक्षित तथा पल्लवी गर्ग ने प्राप्त किया। टीम रूप मे श्री सनातन धर्म बालिका विद्यालय प्रथम स्थान मिला और उसने शील्ड पर भी कब्जा जमाया। लगातार तीन वर्षों से शील्ड जीतने का कारनामा करने वाले श्री सनातन धर्म बालिका विद्यालय को यह शील्ड स्थायी रूप से प्रदान कर दी गयी। इस अवसर पर श्री राजेश्वर दयाल खरे जी ने कहा कि "अंग्रेजी को हमें मात्र एक भाषा के रूप मे पढ़ना चाहिए, इससे अधिक कुछ नहीं।"

वार्षिकोत्सव की अन्तिम कड़ी के रूप में कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ। इसकी अध्यक्षता ओजस्वी कविताओं के धनी कविवर श्री ओमशंकर त्रिपाठी जी ने की।

इस कवि गोष्ठी के संचालन का भार हास्य–व्यंग्य विद्या के कवि श्रवण शुक्ल जी के कंधों पर था। कवि सम्मेलन में पं० धर्मपाल अवस्थी जी, सुमन दुबे जी, राघवेन्द्र जी तथा कवयित्री शशि जी आदि ने विद्यालय के विशाल कक्ष में साक्षात् वाग्देवी का अवतरण अपने छन्दों के सोपानों से किया। छात्र कवियों ने भी अपनी कविताओं का पाठन कर श्रेष्ठ कवियों तथा माँ शारदा से आशीर्वाद प्राप्त किया।

कवि सम्मेलन के साथ ही वार्षिकोत्सव का प्रेरक एवं रोचक समापन हो गया तथा वार्षिकोत्सव अपने समाप्त होने की प्रतीक्षात्मक पीड़ा भी हमको दे गया।

राष्ट्रभाषा हिन्दी

– ऋषभ तिवारी
नवम 'ग'

भाषा अभिव्यक्ति का प्रमुख व महत्वपूर्ण साधन है। संसार के विभिन्न जीव–जंतु अपने भावों–विचारों को व्यक्त करने की चेष्टाएँ करते हैं। परन्तु मनुष्य ही एक ऐसा भाग्यशाली प्राणी है जो भाषा के माध्यम से अपने भावों एवं विचारों को व्यक्त करने में समर्थ है।

राष्ट्रभाषा से तात्पर्य जनता की भाषा से है। राष्ट्रभाषा वह भाषा है जिसका व्यवहार एक प्रदेश वालों से दूसरे प्रदेश के निवासियों से संपर्क बनाये रखने के लिये करते हैं।

मनुष्य अपनी भावनाओं को अपनी भाषा के द्वारा ही व्यक्त करता है। राष्ट्र को स्थिर बनाये रखने के लिये राष्ट्रभाषा हिन्दी एक प्रमुख माध्यम है।

संविधान निर्माण करते समय यह प्रश्न उठा था कि किस भाषा को राष्ट्र भाषा बनाया जाये। अंग्रेजों ने अंग्रेजी को राष्ट्रभाषा बनाया परन्तु अंग्रेजी समझने वाले व्यक्तियों की संख्या समस्त भारत में केवल दो प्रतिशत थीं। इधर हिंदी संपूर्ण देश में बोली तथा समझी जाने वाली भाषा के रूप में प्रचलित हो गयी। हिंदी एक व्यवहार के रूप में सारे विश्व में प्रचलित हो गयी। अन्य प्रान्तीय भाषायें मानक होते हुए भी संपूर्ण भारत में प्रचलित नहीं है। देश में राष्ट्रीय एकता का संचार हिन्दी के द्वारा ही हुआ फलस्वरूप हिन्दी राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित हो सकीं। हिंदी संसार की सबसे सरल, सुकोमल एवं वैज्ञानिक भाषा है। वस्तुस्थिति यह है कि हिन्दी को उचित स्थान दिलाने का आग्रह समस्त प्रादेशिक भाषाओं को भी उचित स्थान दिलाकर रहेगा। हिन्दी के विकास के मार्ग में जो बाधा आयी है उसे दूर करना चाहिये। देवनागरी लिपि पूर्णतः वैज्ञानिक लिपि है। उसमें वर्णमाला शिरोरेखा कठिन लगती है। केन्द्रीय सरकार मे हिंदी निदेशालय की स्थापना करके हिंदी के विकास के कार्य की गति प्रदान की है।

हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है। इसकी उन्नति हमारी उन्नति है, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने कहा है –

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटै न हिय को सूल"।।

१४ सितंबर १६४६ ई० को संविधान सभा के ३२४ सदस्यों में से ने हिंदी की भारतीय गणतंत्र की राजभाषा बनाने के पक्ष में मत दिया। व्यापक राष्ट्रीय हित में उन्होंने प्रादेशिक भावना का त्याग कर दिया। शरीर से स्वतन्त्र होने पर भी हम मन से अंग्रेजों के गुलाम हैं। बिना अपनी भाषा को अपनायें किसी भी राष्ट्र के लिये किसी क्षेत्र में कोई उल्लेखनीय योगदान संभव नहीं है। बिना राष्ट्र की आराधना के और बिना राष्ट्रभाषा के सम्मान के कोई भी राष्ट्र गौरव का अधिकारी नहीं बनता।

आध्यात्मिक रेखागणित

– श्री सुभाष शर्मा
आचार्य

आचार्य श्री सुभाष जी की यह कविता जीवन–दर्शन को रेखागणित के माध्यम से व्यक्त करने का प्रयास है। बीज और बिन्दु सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होते हैं। बीज में ही वटत्व निहित होता और बिन्दु में ही सम्पूर्ण विस्तार घनीभूत हो चुका होता है। "यत्पिण्डे तत्ब्रह्माण्डे" – जो पिण्ड में है, वही ब्रह्माण्ड में है। जैसे इलेक्ट्रॉन नाभिक का चक्कर लगा रहा है उसी प्रकार से पृथ्वी सूर्य का चक्कर लगा रही है। यह एक प्रतीकात्मक, लाक्षणिक, दार्शनिक तथा प्रशंस्य रचना है। **– सम्पादक**

एक बिन्दु जो अस्तित्व का बोध कराता है,
जीवन्त चेतना से, धरा पर उतर आता है।
भुजाओं और कोणों के संतुलन से त्रिभुज का नामी होता है।
एकात्म चेतना से समदूरस्थ बिन्दु संगामी होता है।
यह बिन्दु कभी आँसू कभी शबनम का बोध कराता है।
और कभी स्वाती की बूँद बन, सीप के मुँह में चला जाता है।
इसका समुच्चय नयी परिभाषा का ज्ञान कराता है।
गतिशीलता के पाँव पाकर, बिन्दु रेखा बन जाता है।
रेखा वक्रता व सरलता की साँसों से अनन्त तक जाती है।
फिर खण्डित होकर आकृतियों का इतिहास बनाती है।
गणना के भौतिक विवादों में, इतनी उलझ जाती है कि,
स्वयं सत्य सिद्धान्त रेखाओं का गणित कहलाती है।
आध्यात्मिक दूरी तक गति करने वाला बिन्दु, पुण्य की परिधि बनाता है।
तब केन्द्र रूपी मन स्थिर अवस्था में आ जाता है।
दुर्विचारों की स्पर्श रेखायें, नतीजों पर निर्भर होती हैं।
आकृतियाँ हँसती हैं, जीवन्त चेतनायें रोती हैं।
वक्र रेखाओं का गणित, अँधेरे में भटक जाता है।
और अतीत का इतिहास, पत्थरों की रेखाओं में सिमट जाता है।
ज्योतिष का आलेखन सत्य होते हुए, असत्य समझ में आता है।
उसके मनोहारी कोणों पर इंसान, प्रतिपल ठगा जाता है।
भाग्य की रेखायें अदृश्य होकर अभेद हो जाती हैं।
जीवन के हवन कुण्ड तक जाकर, स्वयं वेद हो जाती है।

सत्–चित और आनन्द के बीच रेखा बन्धन बन जाती है।
जो इंसान को मृग मरीची तपते रेगिस्तान में भटकाती है।
अनन्त रूप लिए जब रचनायें पावन हो जाती हैं,
तो बिम्ब व प्रतिबिम्ब सहित उस बिन्दु में समा जाती हैं।
फिर दसों दिशाओं से ओऽम् शान्ति की ध्वनि आती है,
और जीवात्मा परमात्मा में समा जाती हैं।

✷

बात अभी अधूरी है

– प्रतीक भारद्वाज
दशम 'ग'

*जब तक मन में दुविधा रहती है तब तक हम सफल नहीं हो सकते हैं। सफलता समर्पण चाहती है साथ ही संशयमुक्ति भी। – **संपादक***

मैं लक्ष्य की ऊँचाई को नापता हूँ
वह दूर है मुझसे बहुत
फिर लक्ष्य के लिये सीढ़ी की मजबूती देखता हूँ
कहीं वह कमजोर तो नहीं
यदि वह कमजोर है, तो
मेरा चढ़ना व्यर्थ है
यदि मैं चढूँगा नहीं, तो
मेरा जीवन व्यर्थ है
यदि मैं उस पर चढ़ गया
और लक्ष्य के निकट पहुँच भी गया, तो
कहीं सीढ़ी फिसल न जाये, इसका डर है
यदि सीढ़ी फिसल गयी, तो
मैं गिर जाऊँगा
फिर कभी न उठ पाऊँगा
इसलिए बात अभी अधूरी है
बात अभी अधूरी है।

✷

परिवर्तन

– **डॉ० मनोज शुक्ल**
(आचार्य)

परिवर्तन ही जीवन है। कहते हैं भगवान शिव ने एक नृत्य प्रतिपादित किया था जिसे उनके शिष्य तुण्डुमुनि ने सीख लिया था और वही ताण्डव के नाम से प्रसिद्ध हुआ। एक ऐसा नृत्य जिसमें कोई विशेष रस नहीं भाव भी नहीं, परन्तु जड़ता के दुर्वार आकर्षण को छिन्न करके चैतन्य की अनुभूति का अद्भुत उल्लास है उसमें। जड़ता मृत्यु है, जो जमा वो समझो मरा। ताल का पानी गंदा और गंगा का जल–धवल, विमल। आचार्य श्री मनोज जी की यह कविता यह सिद्ध करती है कि परिवर्तन शाश्वत नियम है और परिवर्तन में ही आनन्द है। कविता का विषय दार्शनिक तथा भाषा संस्कृतोन्मुख सरल हिन्दी है। कविता में प्रवाह है, तुक मैत्री है तथा छठे चरण में बड़ा सुन्दर बिम्ब विधान तथा नाद सौन्दर्य है। यद्यपि कविता में कुछ स्थानों पर लयभंग है परन्तु उसे मैंने अनगढ़ शिवलिंग की भाँति यों ही नीराजन में प्रस्तुत कर दिया है। – **संपादक**

परिवर्तन है मानव जीवन, शाश्वत नियम सदा परिवर्तन।
प्रकृति नटी का नित्य निरन्तर, चलता रहता है परिवर्तन।।
धरती में होती है हलचल, और कभी सागर है उफनता।
कभी शीत की मार भयानक, और कभी है अधिक उष्णता।।
कभी चक्रवाती तूफानों की, विकराल दशा है दिखती।
और कभी मेघों की धारा, प्रलय रूप ही है लगती।।
भू जल नभ अन्तरिक्ष आदि में, होता रहता है परिवर्तन।
प्रकृति नटी का नित्य निरन्तर, चलता रहता है परिवर्तन।।

कभी सूर्य की तेज तपन से, प्राणी तन हैं जलते रहते।
कभी सोम की सुधा किरण से, जड़ चेतन है सिंचते रहते।।
कभी अग्नि की प्रबल ज्वाल भी, तन को सुखकर है लगती।
मन्द–मन्द भी आँच अग्नि की, कभी दुःखकर सी दिखती।।
धरकर वेष शीत का मानव, फिर उसका करता परिवर्तन।
प्रकृति नटी का नित्य निरन्तर, चलता रहता है परिवर्तन।।

कभी चित्त में सतयुग होता, और कभी कलियुग आ जाता।
नरता–पशुता के द्वन्द्वों में, मानव चित्त उलझ ही जाता।।
कभी दैव सम्पदा प्रबल हो, सत्कर्मों में नर लग पाता।

हो आसुरी सम्पदा के वश, कभी नाश अपना कर जाता।।
क्षण–क्षण में मतवाले मन का, होता रहता है परिवर्तन।
प्रकृति नटी का नित्य निरन्तर, चलता रहता है परिवर्तन।।

कभी शिशुपने से कुमार में, फिर पौगण्ड अवस्था जाती।
किलक किशोर बाद में यौवन, अन्त में वृद्धावस्था आती।।
कभी फूल महकें बगिया के, और कभी पतझड़ होता।
कभी जन्म पर बजे बधाई, कभी मृत्यु पर जन–जन रोता।।
देह त्याग नव देह सृजन ही, आत्मा का है पट परिवर्तन।
प्रकृति नटी का नित्य निरन्तर, चलता रहता है परिवर्तन।।

निशा बीत गई उषा आती, फिर प्रभात का हो आना।
सूर्योदय के सुखद क्षणों में, नक्षत्रों का निज घर जाना।।
मोती जैसी ओस की बूँदें, शोभा छिटकाती जो भू पर।
स्वर्णमयी किरणें सूरज की, दिखलाती प्रभाव उन पर।।
ले प्रभात से सन्धि काल तक, दिन का होता है परिवर्तन।
प्रकृति नटी का नित्य निरन्तर, चलता रहता है परिवर्तन।।

वासन्ती बयार में कोकिल, कुहू–कुहू है गीत सुनाती।
और कभी सावन फुहार में, दादुर धुनि चहुँ ओर सुहाती।।
कभी झींगुरों की शहनाई, जन–जन के मन को है हरती।
और कभी मयूर नर्तन से, अनुपम शोभित होती धरती।।
कभी निरभ्र गगनमण्डल है, और कभी उसका परिवर्तन।
प्रकृति नटी का नित्य निरन्तर, चलता रहता है परिवर्तन।।

परिवर्तन आनन्द जगत् का, परिवर्तन सुख साधन है।
परिवर्तन मानव प्रवृत्ति है, परिवर्तन मंगल भाजन है।।
परिवर्तन से जीवन पथ भी, सुगम सहज हो जाता है।
परिवर्तन से जीव सदा ही, ब्रह्मरूप पा जाता है।।
युग–युग से अब तक जीवन में, होता आया है परिवर्तन।
प्रकृति नटी का नित्य निरन्तर, चलता रहता है परिवर्तन।।

✵

श्रीराम चरित मानस के नारी - पात्र

– रोहित ओमर
दशम 'क'

सन्त कवि तुलसीदास ने नारी जाति के लिये बहुत आदर भाव प्रकट किया है। पार्वती, अनुसुइया, कौशल्या, सीता, ग्रामवधू आदि की चरित्र रेखा पवित्र तथा धर्मपूर्ण विचारों से निर्मित हुई है। कुछ आलोचकों का कथन है कि तुलसीदास जी ने नारी जाति की निन्दा की तथा उन्हें ढोर– गँवार कोटि में रखा परन्तु यदि मानस पर निष्पक्ष दृष्टि डाली जाय, तो विदित होगा कि नारी के प्रति भर्त्सना के ऐसे प्रमाण उसी समय उपस्थित किये गये जब नारी ने धर्म विरोधी आचरण किये।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने तुलसीदास के नारी निन्दा के प्रसंगों को अर्थवाद के अन्तर्गत लाकर उनके ऊपर आरोपित नारी निन्दा के दोष के परिहार्य करने का प्रयास किया है। शुक्ल जी का मत है कि युग–व्यापक और विराग तथा तप की भावना के कारण तुलसी ने नारी के उस रूप का विरोध किया है जो तप तथा निवृत्ति में बाध क है।

हमारा विषय है – श्री रामचरित मानस के नारी पात्र। अतएव मानस के स्त्री पात्रों के विषय में संक्षिप्त विवेचन करेंगे।

पार्वती – पार्वती श्रीरामचरित मानस में तपस्या की प्रतीक हैं। हिमालय पार्वती के पिता हैं। वे पार्वती का विवाह विष्णु से करना चाहते हैं। परन्तु पार्वती का अनुराग तो शंकर जी के प्रति ही था। पार्वती शिव को पति रूप में स्वीकार कर चुकी थीं। पूर्व जन्म में पार्वती सती थीं जो दक्ष प्रजापति के यज्ञ (योगाग्नि) में भस्म हो गयी थीं। वे ही पार्वती मैना तथा हिमालय के यहाँ पुत्री रूप में उत्पन्न हुई थीं। हिमालय पार्वती को विष्णु को सौंपना चाहते हैं। परन्तु पार्वती अपनी सखियों के साथ वन में भाग गयीं। जहाँ नदी तट पर शिव प्राप्ति के लिये उन्होंने घोर तप किया। सप्तर्षियों तथा शिव ने उनकी विकट परीक्षा ली। सप्तर्षियों ने शिव के प्रति अरुचि उत्पन्न करने का प्रयास किया। पार्वती ने उल्टे उन्हीं पर शिव के महत्त्व को न जानने का आरोप लगा दिया। गोस्वामी जी के शब्दों में इस प्रसंग मे दो चौपाइयाँ बड़े महत्व की हैं।

'जो तप करई कुमारि तुम्हारी
भाविहुं मेटि सकै त्रिपुरारी।

यहाँ त्रिपुरारी शंकर के महत्त्व को स्पष्ट किया गया है। दूसरी ओर शंकर की इस विशिष्टता के कारण तथा पूर्व जन्म के मरणकालिक संकल्प के कारण शिव को ही वर रूप में प्राप्त करने का अपरिहार्य आग्रह था। उन्होंने स्पष्ट कहा –

'जन्म कोटि लगि रगरि हमारी
वरहुँ शम्भु नतु रहहुँ कुमारी।

शतरूपा – श्रीरामचरित मानस में शतरूपा एक ओर तो ऐतिहासिक पात्र हैं जो स्वयम्भू मनु की पत्नी मानी जाती हैं। आध्यात्मिक दृष्टि से विविध रूपों को धारण करने वाली वे माया की प्रतीक हैं। इसलिये उनका नाम शतरूपा है अर्थात् सैकड़ों रूपों को धारण करने वाली शतरूपा माया। श्रीमदभगवत में मनु और शतरूपा स्वयं ही पितामह ब्रह्मा जी के शरीर के दक्षिणांग मनु तथा वामांग शतरूपा है।

सीता – संस्कृत में सीता का अर्थ होता है कर्षण करने वाले हल की नोक। रावण तथा रावणवंशी राक्षस ऋषियों, मुनियों को आतंकित करते थे, धार्मिक कार्यों में विध्वंस करते थे तथा ऋषियों से कर के रूप में रक्त लेते

थे। एक बार ऋषियों का यही रक्त कुम्भ में भरकर खेत में जमीन के अन्दर गाड़ दिया गया। अकाल पड़ने पर आकाशवाणी हुई कि यदि राजा जनक सोने के हल से कर्षण करें तो वर्षा हो सकती है। राजा जनक ने सोने के हल से कर्षण किया, हल की नोक उस रक्त वाले कुम्भ से जा टकराई तथा सीता का जन्म हुआ। ऋषियों के रक्त से जन्मी सीता रावण तथा उनके वंश के नाश का कारण बनी। रामचरितमानस में सीता एक आदर्श नारी पात्र हैं, सीता जनक की दुलारी हैं, एक आदर्श पुत्रवधू हैं, कौशल्या की आँखों का तारा हैं, राम से असीम प्रेम करने वाली पतिव्रता पत्नी हैं तथा अपने हृदयांश लव और कुश को प्राणाधिक वात्सल्य लुटाने वाली ममतामयी माँ है। सीता में सुन्दरता, शील, विनम्रता कर्तव्य परायणता, धर्म निष्ठा, सम्मान, प्रेम तथा वात्सल्य सब कुछ एक साथ ही संश्लिष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है।

कौशल्या – कौशल्या करुणानिधान, सत्यशील तथ सौंदर्य के पुंजीभूत रूप दाशरथि श्रीराम की ममता मयी माँ है वे श्रीराम को प्राणों से भी अधिक प्यारी तथा शांति की प्रतीक हैं। वे पति सेवा मे रत रहने वाली पूरे परिवार की चिंता करने वाली हैं।

कैकेयी – श्रीरामचरित मानस में भरत की माता कैकेयी ही एक ऐसी पात्र हैं, जिनकी तुलसीदास ने कटु आलोचना की है और निस्सन्देह जो श्रीराम का विरोध करने वाला हो जाये, तो तुलसी या कोई भी रामभक्त उसकी आलोचना ही करेगा। दशरथ की पहली पत्नी तथा भरत की माता कैकेयी ने जब यह देखा कि दशरथ राम का राज्याभिषेक करने जा रहे हैं, तो मन्थरा के षड्यन्त्रों से प्रेरित होकर कैकेयी ने राम को चौदह वर्ष के वनवास तथा भरत के राज्याभिषेक का वर माँग लिया। कैकेयी की यही जिद दशरथ के प्राणान्त का कारण बनी और ननिहाल से लौटने पर स्वयं कैकेयी के पुत्र भरत ने भी अपनी माँ की आलोचना की और राजसिंहासन लेने से इन्कार कर दिया।

सुमित्रा – "सुष्ठु मित्राणि यस्या सा सुमित्रा" अर्थात् जिसके सुन्दर मित्र हों, वह सुमित्रा है। लक्ष्मण और शत्रुघ्न की माता तथा दशरथ की पत्नी सुमित्रा शान्ति और अशान्ति के दो ध्रुवों के बीच समन्वय स्थापित करने का प्रयत्न करती हुई दिखाई देती हैं। कौशल्या जहाँ परम शान्त हैं, वहीं कैकेयी अत्यन्त उग्र और हठ करने वाली हैं। सुमित्रा शान्त, सहृदय तथा निर्विकारी हैं। वे अपने पुत्र को भगवान श्रीराम के साथ वन भेज देती हैं। तथा दूसरे पुत्र शत्रुघ्न को भरत की सेवा में अयोध्या में ही रहने को कह देती हैं। इस प्रकार सुमित्रा मधुर वाणी से युक्त, सौम्य, शान्त तथा सन्तुलन स्थापित करने वाली हैं।

अहल्या – अहल्या गौतम ऋषि की पत्नी थीं उनके साथ इन्द्र ने छल किया था। इस दुराचरण से कुपित होकर गौतम ऋषि ने अहल्या को अभिशप्त कर दिया था और वे पत्थर हो गयी थीं। पत्थर होने का अर्थ वास्तव में यह है कि उनकी इंद्रियाँ शिथिल हो गयी थीं, उनकी चेतना शून्यवत् हो गयी थीं और वे पश्चाताप की अग्नि में जल रही थीं। प्रभु श्रीराम ने उनका उद्धार किया। अहिल्या श्रीरामचरितमानस में गौतम ऋषि से अभिशप्त तथा इन्द्र के द्वारा छली हुई एक ऐसी नारी हैं जिनका वास्तव में कोई दोष नहीं है। अकारण ही पीड़ा तथा अपेक्षा उनके हिस्से में दी गयी है।

उर्मिला – अर्मिला लक्ष्मण की पत्नी हैं। वे पतिव्रता तथा शान्त स्वभाव वाली हैं। लक्ष्मण के वन चले जाने के बाद चौदह वर्षों तक बिना पति के वे कौशल्या, कैकेयी तथा सुमित्रा के साथ पूरे भाव के साथ रहीं।

माण्डवी तथा श्रुतकीर्ति – माण्डवी भरत की पत्नी थीं तथा श्रुतकीर्ति शत्रुघ्न की पत्नी थीं। इनके विषय में रामचरितमानस में कोई विस्तार से उल्लेख नहीं है। सारांश इतना ही है कि माण्डवी तथा श्रुतकीर्ति पतिव्रता, शान्त, सौम्य तथा सेवा भाव से युक्त थीं।

शबरी – शबरी राम की अन्यतम भक्त थीं। उसमें रामभक्ति की भावनाओं का ज्वार इतना प्रबल था कि वह वाह्य लोकाचार को भुला बैठती है। वह अपने नाथ करुणानिधान राम जी को अपने जूठे बेर इसलिये खिलाती है ताकि वह पहले जाँच ले कि बेर मीठे हैं या नहीं। राम तो भक्तों की भावनाओं को समझने तथा आदर करने वाले हैं। इसलिये बड़े भक्ति के साथ, बड़े प्रेम के साथ श्रीराम शबरी के जूठे बेरों का आस्वादन करते हैं। कुल मिलाकर शबरी भक्ति तथा प्रेम की प्रतीक हैं।

सुरसा – पवन पुत्र हनुमान जिस समय प्रभु श्रीराम के कार्य से लंका जा रहे थे तो सुरसा ने उनके मार्ग को रोका। सुरसा वास्तव में वासना की प्रतीक है। इस वासना को विवेक के द्वारा जीता जा सकता है। नैष्ठिक ब्रह्मचारी, आंजनेय ने प्रभु कार्य में अथवा लक्ष्य में बाधक सुरसा रूपी वासना को जीत लिया था तथा अपने मार्ग में आगे बढ़ गये थे।

मन्दोदरी – मन्दोदरी रावण की पत्नी थी। राक्षसकुल में होने के बाद भी उसका विवेक जाग्रत था। वह बार–बार रावण को राम की शरण में जाने तथा सीता को मुक्त करने का आग्रह करती थी परन्तु रावण उसकी एक न सुनता था। संस्कृत में कहा गया है –

"मन्दम् उदरं यस्याः सा मन्दोदरी।"

अर्थात् जिसका उदर मन्द है तथा बुद्धि प्रखर है, वह मन्दोदरी है। मन्दोदरी का नाम पंच कन्याओं में भी लिया जाता है।

त्रिजटा – लंका में जब सीता जी को रावण ने अशोक वाटिका में बन्दी बनाकर रखा था, तो त्रिजटा नाम की राक्षसी को वहाँ का मुख्य रक्षक नियुक्त किया गया था। राक्षसी होने के बाद भी वह रामभक्त थी तथा सीता जी से भी अनुराग रखती थी। जिस प्रकार सर्पों के मध्य चन्दन अपनी शीतलता नहीं छोड़ता है, उसी प्रकार त्रिजटा ने भी राक्षसकुल के मध्य अपनी भक्ति को जीवित रखा था।

✵

लघुकथा

कर बुरा तो हो बुरा

– अंकुर सचान
सप्तम "क"

किसी समय की बात है। एक पराक्रमी राजा था। उसके राज्य में हरियाली थी। वह केवल आधा कर लेता था। उसी दरबार में दो तांत्रिक थे दोनों बहुत ही बहुत बदमाश थे। वे राजा को मारने की कोशिश किया करते थे।

एक बार दोनों ने मिलकर एक मीनार बनाई। उसमें एक मंत्र फूंक दिया। वह मीनार रात को उठती थी, और सुबह नीचे आ जाती थी। उनमें से एक राजा के पास गया और बोला, "राजन ! यहां से दक्षिण–पश्चिम में एक मीनार है जो शाम को ऊपर उठती है और सुबह नीचे आ जाती है। राजा ने उसमे बैठने का निश्चय किया।

अगले दिन शाम को सब दरबारियों और प्रजा की उपस्थिति में वह उस मीनार पर चढ़ा मीनार ऊपर उठने लगी और ठंड बढ़ने लगी और अन्त तक राजा का निधन हो गया और जब मीनार नीचे उतरी तो वहां से राजा गायब था। लोगों ने सोंचा शायद राजा मर गया हो।

दोनों तांत्रिकों ने मिलकर राज्य को हड़प लिया। दोनों लड़ने लगे कि कौन राजा बने ? तभी एक देवदूत प्रकट हुआ और दोनों को लड़ने से रोकते हुए बोला, "रुको ! तुम दोनों क्यों लड़ रहे हो ? मैं एक उपाय बताता हूं। सुनो ! "यहां से ४०० कोस दूरी पर एक पौधा है। उसमें ही तुम दोनों का जीवन है जो उस पौधों को सबसे पहले लायेगा वही राजा बनेगा परन्तु एक शर्त है अगर वो पौधा टूट गया तो राजा पुनः जीवित हो जायेगा।" यह कहते ही देवदूत चला गया। दोनों निकल पड़े एक दक्षिण से गया और दूसरा उत्तर से। वे दोनों बराबर उसी पौधे के पास पहुँचे और उस पौधे को खींचने लगे, वह पौधा दो भागों मे बँट गया और राजा जीवित हो गया। राजा ने उन दोनों को ढुँढ़वाया परन्तु वे नहीं मिले। राजा ने उस पेड़ को उठाया और उसके दो से चार भाग कर दिये। तभी एक चीख सुनाई दी। जो उन दोनों तांत्रिकों की थी।

✵

जवानी क्यों पड़ी परती

– विपिन वर्मा
एकादश 'क'

चि० विपिन की इस कविता में प्रभाव, प्रवाह तथा भरपूर ओजस्विता, गेयता और सरलता है। इसका एक कारण यह भी है कि इसको स्वयं श्रीमान् ओमशंकरजी ने संशोधित किया है। **–संपादक**

है अचल हिमालय की पुकार
बहती गंगा की धवल धार
सागर का गर्जन भरा ज्वार
कहता रिपु का सिर लो उतार ।।१।।

बनो फिर शौर्य की ज्वाला
उठाओ हाथ में भाला
लिखो इतिहास बलिदानी
पिला दो शत्रु को पानी ।।२।।

न सत्ता की तरफ दौड़ो
महत्ता का भरम तोड़ो
चलाओ क्रान्ति की आँधी
बनों युग के सफल गाँधी ।।३।।

न समझो तुम अकेले हो
स्वयं भरपूर मेले हो
इरादा कर बढ़ो आगे
अँधेरा देखकर भागे ।।४।।

ढहाना है अधर्मों को
मिटाना है कुकर्मों को
[illegible]ाना देश का गौरव
[illegible]टाना काल का रौरव ।।५।।

सुनो क्या कह रही धरती
जवानी क्यों पड़ी परती
पुलक जागो उठो वीरों
गुँजाओ नभ समर धीरो ।।६।।

कहीं पंजाब का परचम
चमकता खड्ग हो चमचम
चढ़ी हो शान रजपूती
बजे सीमान्त पर तूती ।।७।।

अटल हिमनग बुलाता है
यहाँ सागर लहराता है
चलो साथी बढ़ो साथी
उठाओ धनुष लो भाथी ।।८।।

न पनपें पाप के अंकुर
सभी थल पुण्य के स्वर सुर
न धीरज को कभी खोना
विफलता पर नहीं रोना ।।९।।

✷

भारत प्यारा देश हमारा

– आनन्द बाबू
नवम 'क'

भारत प्यारा देश हमारा,
हम इसकी संतान।
जब–जब आते संकट इस पर,
हम होते कुर्बान।।

मस्तक बनकर खड़ा हिमालय,
गाता गौरव गान।
गंगा यमुना का संगम है,
वेदों में है ज्ञान।।

धर्म यहाँ सूरज – सा चमके,
नित्य बढ़ाये मान ।
सूर कबीरा मीरा तुलसी,
कृष्ण भक्त रसखान।।

कोई हुआ न दानी दधीचि सा,
दी अस्थियाँ दान।
महाभारत की कथा निराली,
बताती गीता ज्ञान।।

राजवंश में सूर्यवंश के,
प्रतापी राजा राम।
फैल गया उजियारा जिनका,
हुआ चतुर्दिश यशगान।।

✷

वृक्षों की फरियाद

– मोहित मिश्र
नवम 'क'

वृक्षों के कारण ही हम जीवित हैं। ये हमको प्राणवायु देते हैं और कार्बन डाइ ऑक्साइड ले लेते हैं। आज मनुष्य लगातार पैसों के लिये पेड़ों को काटता जा रहा है, जो चिंतनीय है। वृक्षों की आह सुनते चि० मोहित को देखें। – ***संपादक***

क्यों कर रहे हो मुझे बरबाद
है मेरी एक छोटी सी फरियाद।।

हम न रहे तो तुम जी नहीं पाओगे।
अनाज, पानी और जीवन को तरस जाओगे।।

न पहुँचाओ मुझे कष्ट।
तुम स्वयं ही हो जाओगे नष्ट।।

इसलिए तो हम कहते हैं हमें बचा लो।
कुल्हाड़ी फेंक, गले से लगा लो।।

क्यों पैदा करते हो जहरीली हवा।
जीवन भर लेनी पड़ेगी तुम्हें दवा।।

जहरीली हवा हम पी जाते हैं।
तुम्हारे भविष्य को बचाते हैं।

इसलिए न करो अपना जीवन बरबाद।
है मेरी एक छोटी सी फरियाद।।

✷

सर सूखे पंछी उड़ैं, और सरन समाहिं।
दीन मीन बिन पच्छ के, कछु रहीम कहँ जाहिं।

दीपक रजनी का गुलाम है

– अनिल कुमार
दशम 'ग'

*चि० अनिल कुमार की साहित्य में रुचि है और वे प्रकृत्या शांत और चिन्तनशील हैं। अनिल ने कई कविताएँ लिखी हैं जो भाव की दृष्टि से अच्छी किन्तु शिल्प की दृष्टि से अभी अनगढ़ हैं। सतत् पढ़ने और लिखने से वे स्वयं को विकसित कर सकते हैं। **–संपादक***

सच्चाई पर चलने वाला
आज जेल में बन्दी है।
भारत की यह न्याय–व्यवस्था
आज हो गयी अन्धी है।।

अंधकार से लड़ने वाला
दीपक रजनी का गुलाम है।
कर्मनिष्ठ सब हुए उपेक्षित
चमचों का ही बड़ा नाम है।।

जाने क्या है हुआ देश को
हर ओर अंधेरा छाया है।
थके हुए हैं राम और
छायी रावण की माया है।।

द्वापर, त्रेता गुजर गए
कलियुग का प्रादुर्भाव हुआ।
ईश्वर के "मनुज शरीरा" पर
नया प्रश्नाघात हुआ।।

यह अनर्थ सम्पन्न हुआ तो
धरती का स्वरूप बदल जाएगा।
राम निकाले जायेंगे मन से,
रावण पूजा जाएगा।।

राम राज्य की कल्पना क्या
कल्पनामात्र रह जाएगी ?
क्या अच्छाई पराजित होगी
बुराई विजय दिवस मनाएगी ?

क्या वीर सपूतों की आज
खाली पड़ी रहेगी अवली ?
क्या बचा नहीं पाएगा कोई
कश्ती जो है डूब चली ?

निर्लोभी, निस्वार्थी, समाजसेवी पर
कष्टों का कहर क्यों टूट पड़ा ?
हे ! जगपालक विधाता तू
क्यों देख रहा अन्याय खड़ा ?

मेरे कतिपय छन्द

– दुर्गेश वाजपेयी
आचार्य

कविता में गेयता का जो तत्त्व होता है वह छन्द के कारण होता है। छन्दों में वर्णों, मात्राओं, यति, गति, लय, तुक इत्यादि की एक निश्चित व्यवस्था होती है। छन्दों को ही वृत्त भी कहते हैं। मुख्य रूप से छन्द दो प्रकार के होते हैं। **१. वर्णिक छन्द** :– इनमें वर्णों की संख्या, गण इत्यादि की निश्चित व्यवस्था होती है। **२. मात्रिक छन्द** :– इनमें मात्राओं की संख्या निश्चित होती है।

वर्णिक तथा मात्रिक छन्दों के सैकड़ों भेद होते हैं। यहाँ मैं विद्यार्थियों के लिए कुछ अपने रचे हुए छन्द लिख रहा हूँ, साथ ही उनकी परिभाषाएँ भी लिख रहा हूँ। यद्यपि पिंगल शास्त्र बड़ा व्यापक है और उस पर बहुत कुछ विस्तार से लिखा जा सकता है परन्तु अब न तो विस्तार से लिखने का समय बच रहा है न ही पत्रिका के इतने पृष्ठ ही अवशिष्ट हैं। यदि छन्दों के विषय में विस्तार से लिखना प्रारंभ किया तो कई छात्रों की रचनाएँ शहीद हो सकती हैं। इसलिये –

१. दोहा :– यह एक अर्द्धसममात्रिक छन्द है। इसमें चार चरण होते हैं। प्रथम तथा तृतीय चरण में तेरह–तेरह तथा द्वितीय और चतुर्थ चरण में ग्यारह–ग्यारह मात्राएँ होती हैं। अन्त में एक गुरु और एक लघु वर्ण के क्रमशः आने की व्यवस्था होती है।

विद्यालय के छात्र ये, दोहा लिखें विचार।
सफल यत्न होता दिखा, बही काव्य–रस–धार।

२. चौपाई :– यह एक सममात्रिक छन्द है। इसमें चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में सोलह मात्राएँ होती हैं तथा अन्त में दो गुरु वर्णों का आना शुभ माना जाता है।

। । । । ऽ । । ऽ । । ऽ ऽ = **१६ मात्राएँ**

* मनुज नहीं कुछ भी करता है।
सब कुछ ईश्वर से चलता है।
जो खुद को कर्ता समझे हैं।
दुनियादारी में उलझे हैं।।

. . . .

* राम नहीं उनको मिलते हैं।
नहीं सुमन सूखे खिलते हैं।
अहंकार को जो पाले हैं।
उन्हें लाँघने को नाले हैं।।

हरिगीतिका :– इस छन्द में चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में २८ मात्राएँ होती हैं। प्रत्येक चरण में १६ तथा १२ मात्राओं पर यति होती है। चरणान्त में एक लघु तथा एक गुरु वर्ण के क्रमशः आने की व्यवस्था होती है।

ऽ ऽ । ऽ ऽ ऽ । ऽ । । ऽ । ऽ । । ऽ । ऽ = **२८ मात्राएँ**

श्री राम जी रक्षा करो हम, भक्त हैं बस आपके।
आया समय कलिकाल का है, भाव बढ़ते पाप के।।

संसार का साफल्य सच से, दूर है प्रभु ! क्या करें ?
विश्वास का संकट घनेरा, आप मन का भ्रम हरें।।

इन्द्रवज्रा :– इस वर्णिक छन्द में चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में ग्यारह वर्ण होते हैं जिनमें तगण तगण, जगण, गुरु गुरु का क्रम होता है।

S S I S S I I S I S S = ११ वर्ण

माता यशोदा डरने लगी थीं।
राधा बिचारी कँपने लगी थी।।
दामा सुदामा दुबके खड़े थे।
वे कालिया से नद में लड़े थे।।

उपेन्द्रवज्रा :– इस वर्णिक छन्द में चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में ग्यारह वर्ण होते हैं जिनमें जगण, तगण, जगण, गुरु, गुरु का क्रम होता है।

I S I S S I I S I S S = ११ वर्ण

कभी न बोलो अपमानकारी।
न बैन बोलो उपहासकारी।
न बोलना तो फिर भी चलेगा।
बुरा सुनाना न कभी फलेगा।।

सुन्दरी सवैया :– इस वर्णिक छन्द में चार चरण और प्रत्येक चरण में ८ सगण और एक गुरु के क्रम से २५ वर्ण होते है। १२ और १३ वर्णों पर यति होती है।

I I S I I S I I S I I S I I S I S I S I I S I I S S

कबहूँ मग में रघुबीर मिलैं, सँग मातु सिय हमरो दुख हारैं।
उनके पद पंकज माथ धरे दुनिया भर के सब लोभ बिसारैं।।
दृग–आँसुन की जलधारन से हम पाँय पुनीत सप्रेम पखारै।
करि वृष्टि सनेह सुधारस की दुर्गेश कबौं अवधेश निहारैं।।

बसन्ततिलका :– चार चरणों के इस वर्णिक छन्द में तगण, भगण, जगण जगण, गुरु–गुरु के क्रम से १४ वर्ण होते हैं।

S S I S I I I S I I S I S S = १४ वर्ण

संसार में अमर होकर कौन आया।
अन्याय से धन मिले वह व्यर्थ माया।।
यूँ तो बड़ा कठिन है सच को निभाना।
दीपों करो इस अमावस में उजाला।।

मालिनी :– चार चरणों के इस वर्णिक छन्द में दो नगण, एक मगण, और दो यगण के क्रम से १५ वर्ण होते हैं तथा आठ और सात वर्णों पर यति होती है। –

हृदय विमल गंगा सा करो शुभ्रगाता।
कलुष सब हरो तारो हमें हे सुमाता।।

कविवर तुलसी की भाँति ज्ञानी बना दो।

सुखकर प्रिय वाणी को हमारी बना दो।।

विद्युल्लेखा छंद (गायत्री जाति) :– छः अक्षरों वाले छन्द गायत्री जाति में आते हैं। विद्युल्लेखा छन्द में चार चरण होते हैं और प्रत्येक चरण में दो मगण होते हैं।

ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ = ०६ **वर्ण**

गंगा की धारा सी।
चंदा सी तारा सी।।
माता मेरी प्यारी।
धानी धारे सारी।।

सोमराजी छंद :– इस छंद में चार चरण और प्रत्येक चरण में दो यगण होते हैं।

। ऽ ऽ । ऽ ऽ **= दो यगण = ०६ वर्ण**

महादेव शंभू।
करो दूर दंभू।।
बनाओ दुलारा।
हमें दो सहारा।।

अनुष्टप् छन्द :– यह वैदिक छन्द है तथा रामायण, महाभारत, पुराण, स्मृतिग्रंथ तथा रामचरित मानस में इस छन्द का प्रयोग हुआ है। इसमें चार चरण होते हैं, प्रत्येक्र चरण में आठ वर्ण होते हैं। प्रत्येक चरण का पाँचवाँ वर्ण लघु तथा प्रत्येक चरण का छठा वर्ण दीर्घ होता है। प्रथम तथा तृतीय चरण में सातवाँ वर्ण गुरु तथा द्वितीय और चतुर्थ चरण में सातवाँ वर्ण लघु होता है। शेष वर्णों पर बंधन नहीं है।

(i) सारे विघ्न हरो माता
है कौन राह रोकता।
सदया तुम हो भोली
पूज्या जनक की सुता।।

(ii) सर्व विघ्नहरा माता
देहि मां वीरता सदा।
जनकस्य सुता सीता
ज्ञानापि देहि वरदे।।

(ii) धवला विमला गङ्गा
निसृता गोमुखात् सदा
शुद्धं करोति या चित्तं
सा गङ्गा कल्मषापहा।।

✵

दोहे

ये सभी अष्टम 'क' कक्षा के छात्र हैं और इन्होंने दोहे लिखे हैं। कुछ दोहों में प्रथम पंक्ति मेरे द्वारा दी गयी थी कुछ पूर्णतः विद्यार्थियों ने बिना प्राथमिक चरण दिये ही लिखे हैं। **– सम्पादक**

जो पत्थर की नाव से, कर दे सागर पार।
रघुपति के ही हाथ है, जीवन की पतवार।।

– आदर्श बाजपेयी

जो पत्थर की नाव से, कर दे सागर पार।
वही स्रष्टा परमात्मा, जग का पालनहार।।

– शशांक पाण्डेय

जो पत्थर की नाव से, कर दे सागर पार।
होगा व्यक्ति महान वह, पार करे मझधार।।

– अंकुर श्रीवास्तव

जो पत्थर की नाव से, कर दे सागर पार।
दूर करे संकट सभी, सबके पालनहार।।

– विश्वास गुप्त

जो पत्थर की नाव से, कर दे सागर पार।
वह प्रियतम भगवान का, वही गले का हार।।

– राहुल सिंह

जो पत्थर की नाव से, कर दे सागर पार।
इस नश्वर संसार के, तुम हो तारनहार।।

– सुमित यादव

जो पत्थर की नाव से, कर दे सागर पार।
वह ही है संसार का, अनुपम पालनहार।।

– अभिनव अग्निहोत्री

जो पत्थर की नाव से, कर दे सागर पार।
ईश्वर का है भक्त वह, जो करता है प्यार।।

– अमरेन्द्र सिंह

ईश्वर ही सब कुछ रचे, वही है खेवनहार।
जाओ उनकी शरण में, हो जाए उद्धार।।

– उत्कर्ष गुप्त

उसके रूप अनेक हैं, वह है खेवनहार।
हम सब उसके भक्त हैं, वही करे उद्धार।।

– अमित तिवारी

वही सृष्टा परमात्मा, जग का पालनहार।
जिससे यह संसार है, वह जग का आधार।।

– शशांक पाण्डेय

ईश्वर ही सब कुछ करे, है वह खेवनहार।
नित्य करो उसको नमन, जिससे हो उद्धार।।

– पीयूष कुशवाहा

जो पत्थर की नाव से, कर दे सागर पार।
है सच्चा मानव वही, दुष्ट न आये द्वार।।

– आशीष पाण्डेय

संन्यासी का कर्म है, सबको देना ज्ञान।
तभी सार्थक जन्म है, मिट जाए अज्ञान।।

– सुयश मधुर

सच्चा मानव वही है, जो करता है प्यार।
लेता कुछ भी है नहीं, मरने को तैयार।।

– अर्पित पोरवाल

वसुधा का सम्पूर्ण जो, करता है उद्धार।
वह निरुपम परमात्मा, जग का है आधार।।

– अपूर्व त्रिपाठी

हमारा वार्षिकोत्सव

वार्षिकोत्सव के मुख्य कार्यक्रम के मुख्याभ्यागत श्री श्रीकान्त जी जोशी, विद्यालय के सचिव मा. श्री वीरेन्द्र जी तथा प्रधानाचार्य जी के साथ कार्यक्रम स्थल की ओर गमन करते हुए।

पं. दीनदयाल उपाध्याय की मूर्ति पर पुष्पार्पण के बाद मा० जोशी जी, डा. ज्ञान चन्द्र अग्रवाल, मुल्लू बाबू, लाहोटी जी व प्रधानाचार्य जी

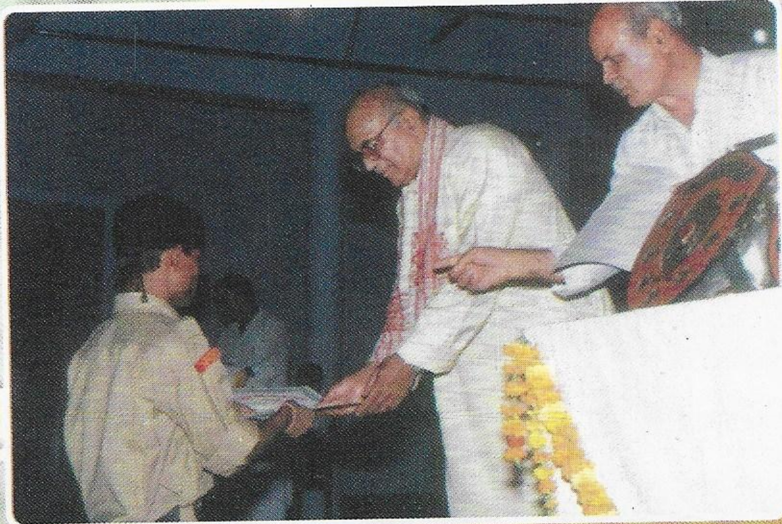

पुरस्कार वितरण करते हुए मा० श्री श्रीकान्त जी जोशी

समूह गायन प्रतियोगिता में विद्यालय के छात्र
(चि. अभय, निमिष, दीप सिंह, विभू, अलौकिक, अंकित, क्षितिज, व अर्पण)

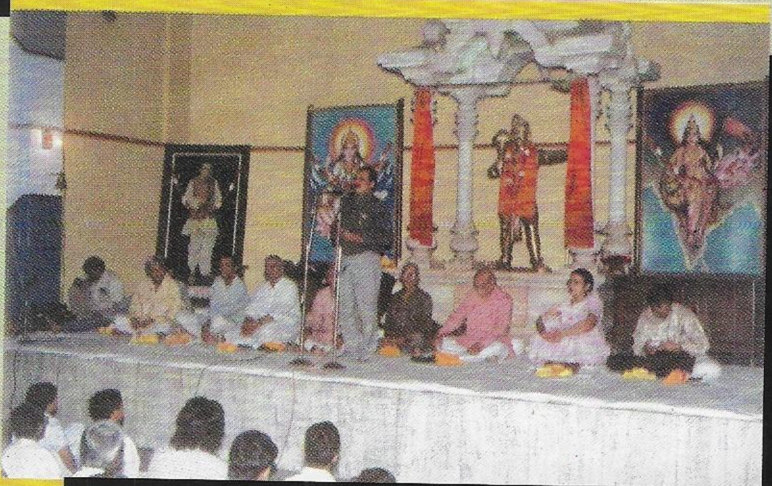

विद्यालय के कवि सम्मेलन में श्री धर्मपाल अवस्थी, श्री सुमन दुबे, काका बैसवारी, डा. शशि, श्री राघेवन्द्र, सनकी जी, प्रधानाचार्य जी व अन्य

विद्यालय में हुई अन्तर विद्यालयीय समूह गायन प्रतियोगिता में विभिन्न विद्यालयों ने भाग लिया।

हम भी लिख सकते हैं भाई

– राजगौरव कटियार, नवम 'क'

चि० राजगौरव नवम 'क' कक्षा के एक मेधावी छात्र हैं। इनका लेख भी सुन्दर है। जिस दिन इस कक्षा में मैंने चौपाई लिखना सिखाया उसके अगले दिन ही इन्होंने ये चौपाइयाँ लिखकर मुझे दीं। इनमें आवश्यक संशोधन किये गये हैं। अब ये छान्दसिक दृष्टि से तो शुद्ध हैं ही इनका भाव भी ऊँचा है। **– सम्पादक**

कविता करना सीख रहे हैं
पक्षी उड़ना सीख रहे हैं।
कलम पकड़ हम लिखना चाहें
पंख खोलकर उड़ना चाहें।।

हम आगे ही बढ़ना चाहें
पार गगन के जाना चाहें।
क्षितिज पारकर जाना चाहें
कभी न वापस आना चाहें।।

भाव नए मन में आते हैं
वही व्यक्त हम कर जाते हैं।
भाव पिरोकर रचना चाहें
काव्य सृजन हम करना चाहें।।

जो कुछ भी है प्रकट हमारे
वही सबद हैं यहाँ उतारे।
नभचर से प्रेरित हम होते
रोज नई कविता रच देते।।

अभी हमारी उम्र नहीं है
कविता लिखना सरल नहीं है।
पर कोशिश में कौन बुराई
हम भी लिख सकते हैं भाई।।

हम इसके अभ्यस्त नहीं हैं
मन पीड़ा से त्रस्त नहीं है।
भाव दिलों के व्यक्त करेंगे
वही छन्द में गठित करेंगे।।

अनुभव हमको अधिक नहीं है
शब्द ज्ञान भी अधिक नहीं है
कविता का विस्तार विशाला
महाप्राण थे एक निराला ।।

नभ मंडल की सुन्दर काया
मौन घटा फिर काली छाया।
इस छाया को दूर करेंगे
कृष्ण घटा को श्वेत करेंगे।।

चौपाई बच्चे लिखते हैं

अष्टम कक्षा के छात्रों को मैंने दोहा और चौपाई छन्दों के विषय में बताया और लिखना सिखाया। पहले वे एक प्रारंभिक पंक्ति देने पर लिखते थे परन्तु अब वे बिना सहारे के लिखते हैं। इन विद्यार्थियों ने चौपाई की लय को पकड़ लिया है और उसकी व्यवस्था भी इन्हें मालूम है। चौपाई एक सममात्रिक छन्द है, जिसमें चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में सोलह मात्राएँ होती हैं तथा अन्त में दो गुरु वर्णों का आना शुभ माना जाता है। मैं आह्लादित हूँ कि मेरे प्रिय विद्यार्थियों ने तुलसी के छन्द में भावों और कल्पनाओं का गूँथना सीखा है। इनकी चौपाइयों पर मैं एक चौपाई कहना चाहूँगा –

चौपाई बच्चे लिखते हैं।
शब्द सुमन सुन्दर चुनते हैं।
अष्टम् कक्षा में पढ़ते हैं।
वाणी का विग्रह गढ़ते हैं।

– सम्पादक

१. तनया गिरीश की कहते हैं,
त्रिपथगामिनी भी कहते हैं,
पूजा उसकी हम करते हैं,
गंगा जिसको हम कहते हैं।

– अभिनव अग्निहोत्री

२. खग–अंडज चह–चहा रहे है,
गेहूँ–जौ लहलहा रहे हैं।
शिशु छोटे कह–कहा रहे हैं,
ऋतुराज़ सुख बरसा रहे हैं।।

– अभिनव अग्निहोत्री

३. भारत प्यारा देश हमारा,
हमको यह प्राणों से प्यारा,
रक्षा इसी धर्म हमारा,
यह है ईश्वर का गलियारा।।

– अभिनव अग्निहोत्री

४. भारत प्यारा देश हमारा,
बीता इसमें जीवन सारा।
देवों ने अवतार लिया है,
इस धरती को धन्य किया है।

– अमरेन्द्र सिंह

५. दुनिया की रचना करते हैं,
झोली जो सबकी भरते हैं।
भोले वह भगवान हमारे,
हमको वे प्राणों से प्यारे।।

– अमित तिवारी

६. भारत प्यारा देश हमारा,
सारी दुनिया से है न्यारा।
हरी–भरी है धरा हमारी।
हमको यह प्राणों से प्यारी।।

– अपूर्व त्रिपाठी

७. भारत प्यारा देश हमारा।
हमको प्राणों से भी प्यारा।।
इसकी शान न जाने पाये।
चाहे कष्ट हजारों आयें।।

– आशीष पाण्डेय

८. भारत प्यारा देश हमारा,
इस जग में है सबसे प्यारा।
जन्म यहाँ पर हमने पाया,
जीवन को है सफल बनाया।

– आशीष पाण्डेय

९. भारत प्यारा देश हमारा।
ये है प्राणों से भी प्यारा।।
जो पीता है इसका पानी।
बन जाता वह इसका सानी।।

— अंकुर श्रीवास्तव

१०. भारत प्यारा देश हमारा।
जिससे जग को मिला सहारा।।
पुण्य पुरातन धरा यहाँ की।
वीरों की है भूमि जहाँ की।।

— शशांक पाण्डेय

११. भारत प्यारा देश हमारा,
है यह प्राणों से भी प्यारा।
ईश्वर ने अवतार लिया है,
इस धरती को धन्य किया है।।

— राहुल सिंह

१२. कविता लिखना सीख रहे हैं,
पक्षी उड़ना सीख रहे हैं।
लालिमा क्षितिज पर छायी है,
नव चिन्तन धारा आयी है।।

— अभिषेक शर्मा

१३. भारत प्यारा देश हमारा,
हमको यह प्राणों से प्यारा।
सोने की चिड़िया कहलाता,
दुनिया में है पूजा जाता।।

— पीयूष कुशवाहा

१४. भारत प्यारा देश हमारा,
प्राणों से ज्यादा है प्यारा।
रामायण सा ग्रंथ यहाँ है,
गंगा जैसी नदी कहाँ है।।

—पीयूष कुशवाहा

१५. भारत प्यारा देश हमारा,
प्राणों से ज्यादा है प्यारा।
इसमें अर्पित जीवन सारा,
ऐसा प्यारा देश हमारा।।

— पीयूष कुशवाहा

१६. भारत प्यारा देश हमारा,
ये सारी दुनिया से न्यारा।
राम कृष्ण की धरा यहीं है,
मेरी माता तुल्य मही है।।

—उत्कर्ष गुप्त

१७. गंगा—यमुना की धारा है,
पूरा जग इससे हारा है।
जगद्गुरु यह कहलाता है,
दुनिया में पूजा जाता है।।

—उत्कर्ष गुप्त

१८. भारत प्यारा देश हमारा,
गंगा की बहती रस धारा।
है यह वीरों का गलियारा,
देख इसे पुलकित जग सारा।।

— रणविजय

१९. मार्ग मित्रता का अपनाया,
दुश्मन को भी राह दिखाया।
दीन दुःखी सबको अपनाता,
देश हमारा भारत माता।।

— रणविजय

२०. कविता करना सीख रहे हैं,
पक्षी उड़ना सीख रहे हैं।
पीछे हमें नहीं चलना है,
जीवन में कुछ तो करना है।

—सुधांशु श्रीवास्तव

२१. फूल डाल पर खिल जाते हैं,
छन्द हमारे मिल जाते हैं।
संघर्षों में जो जीते हैं,
नहीं कभी रहते रीते हैं।।

— प्रशांत कुमार

२२. भारत प्यारा देश हमारा,
प्राणों से है हमको प्यारा।
रक्षा में मर मिट सकते हैं,
कुर्बानी हम दे सकते हैं।।

— प्रशांत कुमार

२३. गंगा निर्मल नदी यहाँ की,
पावन करती देह जहाँ की।
देशों में भारत है न्यारा,
ये हमको प्राणों से प्यारा।।

— प्रशांत कुमार

२४. हमको यह प्राणों से प्यारा,
रक्षा इसकी धर्म हमारा।
जग में है ये सबसे न्यारा,
ये मेरी आँखों का तारा।।

—प्रशान्त कुमार

२५. भारत प्यारा देश हमारा,
सब देशों से है ये न्यारा।
हम करते हैं इसकी पूजा,
इसकी तरह कोई न दूजा।।

—विश्वास गुप्त

२६. भारत प्यारा देश हमारा,
है दुनिया में सबसे न्यारा।
शस्य श्यामला धरा हमारी,
है हमको प्राणों से प्यारी।।

—विश्वदीप

२७. इसने हमको धन्य किया है,
इसने हमको जन्म दिया है।
पाप क्लेश को दूर किया है,
राम—कृष्ण को जन्म दिया है।।

—विश्वदीप

२८. चिड़िया सोने की कहलाता,
सदा हमारा मान बढ़ाता।
भारत प्यारा देश हमारा,
मेरी आँखों का उजियारा।।

—सुमित यादव

चौपाई हम भी लिखते हैं

कविता रचने की प्रतिभा सभी को नहीं मिलती है यह ईश्वरीय वरदान है। जिनको कविता की प्रतिभा मिलती भी है वे सभी छन्दबद्ध कविता लिखने में समर्थ नहीं होते। मैंने सप्तम कक्षा के छात्रों को छन्दों के विषय में बताया और उन्हें चौपाई का साँचा दिया; धीरे—धीरे वे सभी सहज चौपाइयाँ रचने लगे जो स्वयं में एक बड़ी उपलब्धि हैं। — **संपादक**

चौपाई हम भी लिखते हैं।
सबसे आगे ही बढ़ते हैं।
तूफानों से टकरायेंगे।
नया मार्ग हम अपनायेंगे।।

पर उपकारी बनना चाहें।
प्रेम सभी से करना चाहें।
मानवता का पाठ पढ़ाना।
ईश भक्ति में रत हो जाना।।

—आदर्श तिवारी

गंगा कल—कल छल बहती है।
शीतल निर्मल जल देती है।
भारत को पावन करती है।
सारे पापों को हरती है।

—निशांत सिंह

गंगा कल—कल छल बहती है।
हिम पिघलाकर जल लाती है।
चाँदी सी बिखराकर रेती।
हम सबको यह जीवन देती।।

—दिव्यांशु दीक्षित

गंगा कल—कल छल बहती है।
कथा त्याग की यह कहती है।
पर अब यह दूषित होती है।
और प्रदूषण पर रोती है।

जो परहित जीवन जीते हैं।
सहज भाव से दुख सहते हैं।
जो उल्टे इनसे होते हैं।
केवल खुद ही सुख लेते हैं।

— शूरवीर सिंह

जो परहित जीवन जीते हैं।
अपने हित को तज देते हैं।
सबने उनको ही जाना है।
हमने उनको ही माना है।

— निमिष दास

गंगा कल—कल छल बहती है।
निर्मल जल हमको देती है।
पावन यह है नदी हमारी।
दुनिया में है सबसे न्यारी।।

चौपाई हम भी लिखते हैं।
लिख लिख कर फिर हम पढ़ते हैं।
सुन्दर फूल सभी खिलते हैं।
हम सब साथ—साथ रहते हैं।

जो परहित जीवन जीते हैं।
और कामना से रीते हैं।
वे ही सज्जन कहलाते हैं।
मानवता को जो रचते हैं।

— गणेश जी ओमर

जो परहित जीवन जीते हैं।
स्वार्थ लोभ को तज देते हैं।
सत्य मार्ग पर वे चलते हैं।
सबके दुख को हर लेते हैं।

— अर्पण श्रीवास्तव

जो परहित जीवन जीते हैं।
पर पीड़ा का विष पीते हैं
सबके कष्टों को हरते हैं।
सदय ह्रदय के वे होते हैं ।

चौपाई हम भी लिखते हैं।
फिर फूलों जैसे खिलते हैं।
कवियों में हम नाम लिखाएँ।
सब कुछ नया—नया कर जाएँ।

— अनुराग गुप्त

जो परहित जीवन जीते हैं।
अपनी मंजिल खुद चढ़ते हैं।
लोगों का हित ही करते हैं।
सबसे मिलकर वो रहते हैं।

— राजीव प्रताप

परहित जीवन जो जीते हैं।
मानवता में रत रहते हैं।
प्रेम सदा सबसे करते हैं।
स्वार्थ भाव तजते रहते हैं।

हिंदू—हिंदू साथ रहेंगे।
समुदायों में नहीं बटेंगे।
दया धर्म का पाठ पढेंगे।
ऐसा जीवन सदा जियेंगे।।

मानवता का पाठ पढ़ाता।
प्रेम सदा हमको सिखलाता।
दया सभी पर दिखलाता हैं।
श्रेष्ठ धाम मम कहलाता है।

—आदर्श तिवारी

जो परहित जीवन जीते हैं।
दर्द पीड़ितों का पीते हैं।
दुर्गम राहों पर चलते हैं।
जीवन न्यौछार करते हैं।

—गुलशन कमार

हिंदू–हिंदू सदा रहेंगे ।
कथा शौर्य की सदा कहेंगे।
नहीं किसी से घबरायेंगे।
सबसे आगे बढ़ जायेंगे।

गंगा कल–कल छल बहती है।
हम सबको यह जल देती है।
दुर्गम राहों में चलती है।
दुःख कष्टों को यह हरती है।।

–शोभित त्रिपाठी

चौपाई हम भी लिखते हैं।
फिर कवियों जैसे बनते हैं।
मीरा से भावुक बनते हैं।
रोम–रोम मेरे खिलते हैं।

–शूरवीर सिंह

शूर के दोहे

झूठ कभी बोलो नहीं, सच की होती जीत।
अपयश से बचना अगर, बनो सत्य के मीत।।

❖

परहित करता रह सदा, इसकी होती जीत।
प्यासे को दो जल सदा, यह मानव की रीत।।

❖

पुण्य सदा करते रहो, इससे मिलता ईश।
पाप कभी करना नहीं,नहीं झुकेगा शीश।।

–शूरवीर सिंह

परीक्षा साफल्य चूर्ण

– निखिल श्रीवास्तव
नवम 'क'

*चि० निखिल श्रीवास्तव नवम 'क' कक्षा के एक मेधावी छात्र हैं। 'अनुत्तीर्ण' रोग के लिए उन्होंने एक औषध तैयार की है जो सभी विद्यार्थियों को लेनी चाहिए। आइये देखें यह औषध क्या है ? – **सम्पादक***

परीक्षा में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होना कौन नहीं चाहता ? हर विद्यार्थी की यह चाह होती है कि वह येन–केन प्रकारेण परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त कर सके। अब परीक्षार्थियों को गलत तरीकों से अंक प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं क्योंकि अब उनके पास एक ऐसा नुस्खा है जिसके प्रयोग से मूर्ख विद्यार्थी भी अच्छे अंक प्राप्त कर सकता है। इस नुस्खे का नाम **"परीक्षा साफल्य चूर्ण"** है।

परन्तु यह चूर्ण बाजार में रेडीमेड नहीं मिलता, इसे स्वयं घर पर अपने शुभ–चिन्तकों के मार्गदर्शन में बनाया जा सकता है। इसको बनाने की विधि कुछ इस प्रकार है –

एकाग्र चिंतन की जड़ें	–	**३५० ग्राम**
नियमित अभ्यास का रस	–	**२५० ग्राम**
गृहकार्य का डण्ठल	–	**१०० ग्राम**
वाद–विवाद का मसाला	–	**१०० ग्राम**
आत्मविश्वास का बुरादा	–	**२०० ग्राम**

इन सबको उचित मात्रा में मिलाकर मस्तिष्क के खरल में घोंटें तथा बाद में बुद्धि से छानकर स्मृति की शीशी में भर लें फिर गुरु के मक्खन के साथ सेवन करें, सफलता निश्चित मिलेगी।

परहेज :– चापलूसी की चिकनाई, आलस्य की मिठाई तथा कोचिंग जैसी ठण्डी चीजों से दूर रहें, इनका सेवन न करें।

अन्तरिक्ष विज्ञान

– पीयूष त्रिवेदी
नवम 'क'

- भारतीय अन्तरिक्ष कार्यक्रम किस वर्ष शुरू हुआ ? *१९६२ ई० में*
- अंतरिक्ष में जाने वाली प्रथम भारतीय मूल की महिला थी। *कल्पना चावला (१९९५)*
- अन्तरिक्ष में जाने वाले प्रथम एशियाई ? *फाम तुआन (वियतनाम)*
- सर्वाधिक छः बार अन्तरिक्ष यात्रा करने वाला प्रथम व्यक्ति कौन था ? *जान यंग (अमेरिका)*
- भारत के प्रथम स्वदेशी अन्तरिक्ष यान का नाम है। *एस०एल०वी० III*
- उपग्रह के प्रक्षेपण के लिए किस इंजन की आवश्यकता होती है ? *क्रायोजेनिक इंजन*
- अन्तरिक्ष में सर्वप्रथम उपग्रह भेजने वाला देश है। *सोवियत संघ (स्पूतनिक सैटेलाइट)*
- प्रथम संचार उपग्रह का नाम। *टेलस्टार*
- भारत के प्रथम दूर संवेदी उपग्रह का नाम है। *आई०आर०एस०-1 (ए)*
- किस ग्रह को मार्निंग स्टार कहते हैं ? *शुक्र*
- सबसे अधिक उपग्रह किस ग्रह के हैं। *शनि*
- अमेरिका के प्रथम स्पेस शटल का नाम। *कोलम्बिया*
- रेडियो नेटवर्क का प्रसारण होता है : *इन्सेट-1D व इन्सेट - 2A से*
- सबसे अधिक पलायन वेग किस ग्रह का है ? *बृहस्पति*
- अमरीका व सोवियत संघ के अंतरिक्ष यानों का प्रथम अपोलो–सोयुज सम्मेलन हुआ – *१७ जुलाई १९७५*
- किस ग्रह को ब्लू स्टार कहते हैं ? *पृथ्वी*
- पाथपाइण्डर नामक अंतरिक्ष यान किस ग्रह की खोज पर गया था। *मंगल*
- भारत में अंतरिक्ष अनुसंधान की शुरुआत का श्रेय किसको दिया जाता है ? *विक्रम साराभाई*

होने लगा प्रकाश

– अर्पण श्रीवास्तव
सप्तम 'क'

भारत माँ के श्री चरणों में सब कुछ कर दें अर्पण
स्वार्थ लोभ और अहंकार का हम कर देंगे तर्पण।
उसकी भाव भंगिमा का हम नित्य करे अर्चन अभ्यर्चन
उसकी पावन शोभा का हम आओ करे अभिनन्दन।
यज्ञ धूम्र से पूत–पवित्र, निर्मल है आकाश है
है दिगन्त में स्वर्णिम आभा, होने लगा प्रकाश।

संस्मरण

दीनदयाल जी की उदारता

– अनुराग मिश्र
नवम 'क'

बात उस समय की है जब पं० जी काशी विश्वविद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने जा रहे थे कि तभी मार्ग में उन्हें एक लड़का मिला। प्रश्न पूछने पर पं० जी को जवाब मिला कि "मैं वी०एस०एस०डी० कालेज में प्रवेश लेने जा रहा हूँ, परन्तु मेरे साथ कोई अभिभावक नहीं है" तो पं० जी ने उस लड़के की चिन्ता की और उसका दाखिला उस कॉलेज में करवा दिया तथा शिक्षकों के आग्रह पर खुद भी दाखिल हो गए। समय बीता पं० जी स्वयंसेवक बने और उनके खिलाफ सरकार ने वारंट जारी किया जब पं० जी को यह पता लगा तो वे खुद थाने गए और दरोगा से बोले कि "मैं हूँ पं० दीनदयाल मुझे गिरफ्तार कीजिए।" इस पर दारोगा उनके वेश को देखकर बोला "तुम जानते हो कि दीनदयाल कितनी महान् हस्ती हैं और तुम इन कपड़ों में आकर अपने आपको दीनदयाल कहते हो, भाग जाओ यहाँ से नहीं तो लाठी मार के सिर फोड़ दूँगा।" प्रतिउत्तर में पं० जी बोले "ठीक है आप कहते हो तो मैं चला जाता हूँ परन्तु दीनदयाल मैं ही हूँ।

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

बात उस समय की है जब पं० दीनदयालजी स्वयंसेवक थे। उनका जीवन सादा तथा वेश शुद्ध भारतीय था। उनके बारे में ज्यादा लोग नहीं जानते थे। एक बार पं० जी यूँ ही कहीं जा रहे थे कि तभी उनके एक मित्र ने आकर उनसे पूछा कि "भई पं० जी यह बताओ कि तुम खाते क्या हो ?" तो पं० जी सहज भाव से मुस्करा दिए। एक दिन किसी व्यक्ति ने चोरी–छुपे उन्हें भोजन करते देखा लिया और उसने कुछ इस प्रकार बताया कि "पं० जी ने अपने एक रुमाल में थोड़े से मुट्ठी भर चने बाँधकर नहर के किनारे डालकर कील गाड़ देते। शाम को संघ की शाखा के बाद थोड़े से नमक के साथ उन्हें खा लेते और नहर का पानी पी लेते।"

इस प्रकार वह संन्यासी अपना जीवन–यापन करता था परन्तु देश के कुछ गद्दारों ने उन्हें इस कदर मारा जैसे वह कोई अपराधी हों।

पं० जी को अपना आदर्श बनाकर हमें उनके पदचिह्नों पर चलकर उनके स्वप्न को साकार करना होगा तभी उनका यह बलिदान सार्थक सिद्ध होगा अन्यथा उनका बलिदान व्यर्थ होगा, व्यर्थ होगा।

माँगे घटत रहीम पद, कितौ करौ बड़ि काम।
तीन पैर वसुधा करी, तऊ बावनै नाम।।

बड़े बड़ाई न करैं, बड़ो न बोलैं बोल।
रहिमन हीरा कब कहै, लाख टका मेरो मोल।।

भारत प्यारा देश हमारा

— आलोक शुक्ल
अष्टम 'क'

अष्टम के चि० आलोक का यह गीत देशभक्ति की भावना से हरा-भरा है। यह चौपाई छन्द में है तथा इसकी बिम्ब-योजना भी उत्तम है।
— सम्पादक

भारत प्यारा देश हमारा।
हमको प्राणों से भी प्यारा।।
हम इसकी सन्तान निराली।
करनी है इसकी रखवाली।।
प्रेमसुधा बरसाने वाला।
'जगतगुरु' कहलाने वाला।।
इसकी शान सभी से न्यारी।
'विश्व-बंधु' की उक्ति हमारी।।
रत्नाकर ने रूप सँवारा।
शैलराज सच्चा रखवारा।।
झाँसी वीरों का गलियारा।
ऐसा प्यारा देश हमारा।।
राम-कृष्ण-गौतम की धरती।
पाप-क्लेश यह सबके हरती।।
गंगा-यमुना इसमें बहतीं।
देशमान की महिमा कहतीं।।
गोदावरी-ताप्ती रेवा।
करती साथ-साथ सब सेवा।।
विध्याचल ने रूप बिखेरा।
अरुणालय में हुआ सवेरा।।
जितने दर्शन राहें उतनी।
चिंतन की चाहें हैं कितनी।
इसका आँचल हरा-भरा है।
बलिदानी यह पुण्य धरा है।।

भारत की महिमा गायेंगे

—शशांक सुनार
नवम 'क'

शशांक नवम 'क' कक्षा के विद्यार्थी हैं और इस कक्षा के अनेक विद्यार्थियों ने छन्दबद्ध रचनाएँ, छन्द को समझने के बाद लिखी हैं। प्रस्तुत कविता चौपाई छन्द में है जिसमें लय, गति और प्रवाह तो है ही; भावों का औदात्य भी है।
— सम्पादक

कविता करना सीख रहे हैं।
पक्षी उड़ना सीख रहे हैं।
कदम बढ़ाना सीख रहे हैं।
नभ में उड़ना सीख रहे हैं।

हम बलवान महान प्रतापी।
मार गिरायें सारे पापी।
नभमंडल यह बड़ा विशाला।
'दीनबन्धु' हम बनें निराला'।

हम सारे बंधन तोड़ेंगे।
तूफानों की गति मोडेंगे।
नील गगन में उड़ जायेंगे।
क्षितिज चूमकर आ जायेंगे।
हम ऐसा कुछ कर जायेंगे।
दुनिया में पूजे जायेंगे।
नील गगन के पार उडेंगे।
दुखियों का उद्धार करेंगे।

भारत की महिमा गायेंगे।
सर्वोदय फिर से लायेंगे।
आओ ऐसा दीप जलायें।
भारत का दुर्भाग्य मिटायें।

नीति के नवीन दोहे

— दिलीप कुमार
नवम 'ग'

आज—आज के समय में कविता से 'गीति' तत्त्व समाप्त होता जा रहा है और कविता—अकविता जैसी होती जा रही है। सन् १९६० के बाद प्रमुख राष्ट्रीय कवियों में त्रिलोचन ने ही दोहा, सोरठा और बरबै छन्दों पर कलम चलाई। मैंने अष्टम और नवम कक्षाओं में दोहा लिखना सिखाया और परिणामस्वरूप कई छात्रों ने दोहे लिखे। चिं० दिलीप के ये दोहे मात्रिक दृष्टि से तो शुद्ध हैं ही, उनका भाव भी प्रशंस्य है। **—संपादक**

गुणवानों की बुद्धि में, गुण हैं भरे अपार ।
जैसे भीतर कूप के, जल का है भंडार।।

दुखी किसी को मत करो, सबको अपना जान।
पिता बराबर है बड़ा, छोटा बन्धु समान।।

करना नहीं कुसंग तुम, करना तुम सत्संग ।
संत भला करते सदा, होते दुष्ट भुजंग।।

चींटी सतत प्रयास कर, चढ़ जाए दीवार।
करने वाला अथक श्रम, हो जाए उस पार।।

सीढ़ी उनको चाहिए, जो छत पर हैं जाएँ।
जाने वाले व्योम पर, सीढ़ी स्वयं बनाएँ।।

झूठ कभी बोलो नहीं, सच की होती जीत।
इसका पालन जो करें, वे ही साँचे मीत ।।

हुआ सुनामी का कहर, सब कुछ दिखता ध्वस्त।
कई व्यक्ति बेघर हुए, कई हो गए त्रस्त।।

✷

**रहिमन नीचन संग बसि, लगत कलंक न काहि।
दूध कलारिन हाथ लखि, मद समुझहिं सब ताहि।।**

दोहे

दोहे के प्रथम तथा द्वितीय चरण अष्टम कक्षा के विद्यार्थियों को दिये गये थे, शेष दो चरण विद्यार्थियों ने स्वयं रचे हैं। – **सम्पादक**

कहर सुनामी का हुआ, सब कुछ दिखता ध्वस्त।
लहरें वारिधि की उठीं, जन–जन है भयग्रस्त।।

– आदर्श बाजपेयी

लहर सुनामी ने किये, सभी हौंसले पस्त।
टूटे रिश्ते कई के, जनजीवन संत्रस्त।।

– सुधांशु श्रीवास्तव

कहर सुनामी का हुआ, सब कुछ दिखता ध्वस्त।
सबके द्वार उजड़ गये, करता सबको त्रस्त।।

– अंकुर श्रीवास्तव

कहर सुनामी का हुआ, सब कुछ दिखता ध्वस्त।
लाशों का अम्बार था, लोग हो गए त्रस्त।।

– उत्कर्ष गुप्त

कहर सुनामी का हुआ, सब कुछ दिखता ध्वस्त।
रहने को है घर नहीं, सभी हुए संत्रस्त।।

– सुयश मधुर

कहर सुनामी का हुआ, सब कुछ दिखता ध्वस्त।
लहरों ने तांडव किया, सभी लोग हैं त्रस्त।।

– आयुष तिवारी

कहर सुनामी का हुआ, सब कुछ दिखता ध्वस्त।
सब कुछ इसमें बह गया, सभी हुए संत्रस्त।।

– अमित तिवारी

कहर सुनामी का हुआ, सब कुछ दिखता ध्वस्त।
बेबस मानव था हुआ, हुए सभी संत्रस्त।।

– शैलेश त्रिवेदी

कहर सुनामी का हुआ, सब कुछ दिखता ध्वस्त।
ईश्वर का है कोप यह, सब हैं इससे त्रस्त।।

– विश्वास गुप्त

कहर सुनामी का हुआ, सब कुछ दिखता ध्वस्त।
लहरें वारिधि की उठीं, हुई व्यवस्था पस्त।।

– आलोक रंजन

चौपाइयाँ

चौपाई एक सममात्रिक छन्द है, जिसमें चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में सोलह मात्राएँ होती हैं तथा अन्त में दो गुरु वर्णों का आना शुभ माना जाता है। ये सभी अष्टम 'क' के छात्र हैं जिन्होंने चौपाइयाँ लिखी हैं। – **सम्पादक**

कविता लिखना सीख रहे हैं।
पक्षी उड़ना सीख रहे हैं।
पीछे नहीं हमें चलना है।
आगे ही हमको बढ़ना है।

– पीयूष कुशवाहा

कविता लिखना सीख रहे हैं।
पक्षी उड़ना सीख रहे हैं।
आगे बढ़ना सीख रहे हैं।
चिंतन करना सीख रहे हैं।

– आशीष पाण्डेय

कविता लिखना सीख रहे हैं,
पक्षी उड़ना सीख रहे हैं।
लालिमा क्षितिज पर छायी है,
नव चिंतन धारा आयी है।।

– अभिषेक शर्मा

कविता लिखना सीख रहे हैं।
पक्षी उड़ना सीख रहे हैं।
पीछे हमें नहीं चलना है
जीवन में कुछ तो करना है।।

– सुधांशु श्रीवास्तव

चिंतन बढ़ा, विचार नया है।
गया पुरातन, समय नया है।।
कलम हमारी, चल जायेगी।
मंजिल हमको, मिल जायेगी।।

– उत्कर्ष गुप्त

कविता लिखना सीख रहे हैं,
पक्षी उड़ना सीख रहे हैं।
रूढ़िवादिता हटा रहे हैं,
युग नवीन हम रचा रहे हैं।।

– अभिनव अग्निहोत्री

हमारा स्काउट शिविर

— रणविजय
अष्टम 'क'

स्काउट आप लोगों के लिए कोई नई चीज नहीं है। इससे आप सभी परिचित हैं। जीवन में तमाम ऐसे मौके आयेंगे जिससे आपको कुछ सीखने को मिलेगा, जो इन मौकों को खोने के बजाय गंभीरता से लेते हैं वे अपने कंटकपूर्ण जीवन के पथ को सहज ही सरल बना उसे आनंददायक, उसमें डूबने और रमने योग्य बना देते हैं। उन्होंने बहुत खोया है जिन्होंने अपने विद्यार्थी जीवन में शिविर का आनंद नहीं लिया। शिविर, यूँ कहें तो जीवन जीने की कला, सामाजिक जीवन का एक प्रारूप और सामूहिक जीवन व्यतीत करने का एक झरोखा है। ब्रह्मचर्य आश्रम को समाप्त कर आप जब गार्हस्थ्य जीवन में प्रवेश करेंगे तो आपको शिविर की महत्ता का ज्ञान होगा। शायद आप अपने ऊपर खीझें भी और पश्चाताप भी करें कि 'काश, मुझे शिविर जीवन जाने का मौका मिलता'। खैर, छोड़िए इन सब बातों को। चलिए मैं भी आपको इस वर्ष आयोजित ''बाल चेतना शिविर'' के संदर्भ में बताता हूँ। यद्यपि यह शिविर हम लोगों ने किसी दुर्गम स्थान पर नहीं लगाया था, फिर भी हम लोगों ने विद्यालय परिसर में ही अलग–अलग स्थानों पर अपने वितान तानकर सैनिक जीवन जीने का अभ्यास किया। इस बार शिविर की विशेषता यह थी कि शिविर अलग–अलग कक्षाओं का अलग–अलग दिन न लगकर एक साथ लगाया गया था। इस बार शिविर का एक अनोखा अंदाज था। वितानों की लम्बी श्रृंखला का दृश्य देखते ही बनता था। मैदान के धावन पथ के चारों ओर एक नगर की भाँति तम्बुओं को स्थापित किया गया था। दिनांक २६/२/०५ का शिविर का कार्यक्रम आयोजित किया गया था।

तम्बू लगने का स्थान पर एक दिन पूर्व ही कुछ प्रमुख छात्रों जिनमें अष्टम के आदर्श, सुमित यादव, रंजन मिश्र, अभिषेक मिश्र, अमित शर्मा, सौरभ दुबे, मानस भारद्वाज, अनूप शुक्ल, सप्तम के रंजन कुमार, तरूण कुमार, हिमांशु भूषण थे, के द्वारा तय कर दिया गया था। प्रातः काल ८:३० से ही मैदान में चहल–पहल शुरू हो गयी थी। सभी टोलियों के सदस्य अपने–अपने असबाबों के साथ अपने नियत स्थान पर पहुँचकर तम्बू लगाना प्रारम्भ कर चुके थे। दो–ढाई घंटे में सभी अपने तम्बुओं के अंदर चले गये थे। एक घंटी के संकेत पर सभी टोली प्रमुख आचार्य जी के समक्ष उपस्थित हो जाते थे।

दोपहर ११:३० के आस–पास प्रधानाचार्य जी ने अपने कुछ सहयोगी आचार्यों के साथ हमारी छावनी का दौरा किया और कुछ कमियों की ओर ध्यान आकर्षित किया। कमियों को दूर करने के बाद एक लम्बी सीटी के संकेत पर हम सभी माधव स्मृति प्रांगण में मंच के समक्ष एकत्रित हो गए। दीप जलाकर तथा झंडा फहराकर प्राचार्य जी ने कार्यक्रम का श्री गणेश किया। इसके बाद विद्यालय प्रार्थना हुई। कुछ निर्देशों को प्राप्त कर हम लोग पुनः अपने वितान में प्रविष्ट हो गए। अन्दर स्काउट आपस में कुछ बातें कर रहे थे। कुछ एक–दूसरे को लतीफे सुना रहे थे, कोई पुस्तक पढ़ रहा था। निरूद्देश्य बैठे होने के कारण कुछ स्काउट शिथिल हो गये थे। परंतु ज्योंही हम लोगों ने मुख्य अतिथि के आगमन की सूचना सुनी, पुनः सभी लोग चुस्ती के साथ काम में लग गए। तत्काल हमने अपने वितान की चादरों तथा डण्डों को व्यवस्थित किया, अन्दर बिछी चादरों को व्यवस्थित किया और टेण्ट से बाहर निकलकर पंक्तिबद्ध होकर खड़े हो गए। मुख्य अतिथि बड़ी सूक्ष्मता से निरीक्षण कर रहे थे साथ में कुछ सवाल–जवाब भी कर रहे थे। काफी इंतजार करने के बाद मुख्य अतिथि महोदय ''कारगिल टोली'' अर्थात् मेरी टोली के पास आए। टोली नायक ने उन्हें स्काउट सलामी देकर उनका अभिवादन किया तथा टोली का परिचय कराया। फिर उन्होंने टोली के नामाकरण के पीछे के कारण को जानने की इच्छा व्यक्त की। हमारे टोली नायक सुमित यादव ने बड़ा ही संतोषजनक उत्तर दिया।

टोली निरीक्षण करने के बाद हम लोग फिर से एकत्रित हुए। श्री योगेन्द्र भार्गव जी हमारे स्काउट शिविर के मुख्य अतिथि थे उन्होंने कहा कि, "हमें किसी काम को छोटा या बड़ा नहीं समझना चाहिए। सभी कामों को पूरे दिल से, लगन से, मेहनत से करना चाहिए। कार्य को गंभीरता से करना चाहिए।" उन्होंने अप्रत्यक्ष रूप से कुछ टोलियों की प्रशंसा की। इसके बाद भोजन का कार्यक्रम हुआ। सामूहिक भोजन करने का आनंद शायद मुझे उसी दिन मिला। आचार्यों के लिए भी उसकी व्यवस्था थी। भोजनोपरांत प्रतियोगिताओं का दौर प्रारंभ हुआ। एक के बाद एक प्रतियोगिताएँ लम्बे समय तक चलीं। गाँठ बाँधने, गीतगायन, त्वरित भाषण, आसन की प्रतियोगिता, कला प्रतियोगिता आदि आयोजित हुईं। कुछ ने पुरस्कार भी प्राप्त किए।

इसके बाद कार्यक्रम की समाप्ति की विधिवत घोषणा आचार्य श्री सुभाष जी ने की। हम लोगों ने अपने तंबुओं को हटाया सामान व्यवस्थित करने के पश्चात्, हम लोग राष्ट्रगीत के लिए एकत्रित हुए। इसके बाद हम लोगों का अवकाश हो गया। सभी अपने घर के लिए प्रस्थान कर गए।

स्काउट जीवन को शब्दों से अलंकृत करने में मैं अपने आपको अक्षम महसूस कर रहा हूँ। अगर आप इसे महसूस करना चाहते हैं तो आप भी कभी किसी शिविर में भाग लीजिए। शिविर में सामूहिक जीवन का आनन्द मिलता है। एक साथ उठना, बैठना, खाना–पीना, सोना एक विशेष आनन्द देता है। शिविर से कम सुविधाओं में तथा प्रतिकूल परिस्थितयों में जीवन जीने का अभ्यास होता है।

परोपकार : प्रकृति और मानव

– घनश्याम सिंह
सप्तम 'क'

परोपकार अर्थात दूसरों का उपकार। परोपकार मनुष्य का सबसे बड़ा धर्म है। परोपकार से व्यक्ति के हृदय में भावनाओं का विस्तार होता है और मनुष्य 'मैं' की परिधि से उठकर दूसरों के बारे में भी विचार करता है। परोपकार के बिना किसी भी व्यक्ति, समाज या राष्ट्र की उन्नति संभव नहीं है। परोपकार की भावना के अभाव में व्यक्ति नाशोन्मुख हो जाता है।

कमलबन्धु नित्य तम को चीर, ज्योति से जग को भरता,
नीर सरिता में बहकर, पथिक को है तृप्त करता।

यदि हम प्रकृति में देखें तो हमें सर्वत्र परोपकार की भावना व्यक्त दिखाई देती है।

सूर्य नित्य तिमिर का ह्रास करके संसार को आलोकित करता है, वह किरणों को कभी गगन में संचित नहीं किये रहता। इसी प्रकार प्रकृति में जल भी परोपकार का परिचय देता है वह नदी में, जलाशयों में अनवरत बहकर व्यक्तियों की प्यास को शांत करता है, नदी कभी भी जल को ठहरने नहीं देती। इस प्रकार प्रकृति परोपकार की भावना का एक अनुपम उदाहरण प्रस्तुत करती है। जब प्रकृति में अटूट परोपकार–भावना उपस्थित है फिर मानव इन भावनाओं को संकुचित क्यों कर रहा है ? मानव जिस प्रकृति को विजित कहता है, उसी प्रकृति से वह परोपकार के क्षेत्र में अत्यधिक पिछड़ा हुआ है। अतः हमें भी अपनी परहित–भावनाओं का विस्तार करना चाहिए और तभी हम प्रकृति को सच्चे अर्थों में विजित कह सकते हैं। परोपकार की भावना का संचार होने से ही मानव का विकास संभव हो सकेगा नहीं तो मानव स्वयं के लिए तो सब कुछ कर लेगा, सम्पत्ति–वैभव प्राप्त कर लेगा लेकिन उसके विचार हीन भावना से इतने भर जाएँगे कि वह अपने बारे में भी गम्भीर निर्णय कभी भी न ले सकेगा तब उसकी भावनाएँ अबोध बच्चे की तरह हो जाएँगी। इस तरह यह बात स्पष्ट होती है कि परोपकार का अभाव व्यक्ति, समाज या राष्ट्र के लिए एक बहुत बड़ा अभिशाप है। अतः परोपकार में ही मानव का हित और सुख निहित है। परोपकार ही मात्र ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा व्यक्ति स्थायी, अनंतकाल तक जानी–जाने वाली ख्याति प्राप्त कर सकता है।

जिन्दगी क्या है ?

– धीरज पाण्डेय
अष्टम 'क'

जीवन यह नाम है जीना
दुःख का घड़ा है पीना
कई जीते हैं जीने के लिए
पर कई मरने के लिए भी जीते हैं।
जिंदगी का यह सफर बड़ा सुहाना है।
इसमें आता मज़ा पर लगता बड़ा पुराना है।

कईयों को मोह होता है
कई वैराग्य ले लेते हैं
कुछ यूँ ही रह जाते हैं,
कुछ पूरी जिन्दगी खो देते हैं।
कुछ आराम में जीते हैं।
कुछ कष्ट में बिता देते हैं।

जिंदगी पूरी होते ही,
अपने को मृत्युशैया पर लिटा लेते हैं।
कई ज्ञान का भण्डार ले लेते हैं,
कई खाली हाथ रह जाते हैं।
कई जीवन को तप से तपाते,
अमरता को पाते हैं।

जो जिंदगी को जीना कठिन हैं मानते
वो ही जिंदगी में कुछ नहीं हैं कर पाते
यदि जिंदगी में कुछ कर है दिखाना
तो दुःख दिल में है छिपाना
एक मोड़ से शुरू होती,
तो दूसरे मोड़ पर खत्म होती यह जिंदगी।

इतने थोड़े से समय में जिंदगी से,
तुम मत करना दिल्लगी।
जिंदगी तो सच्ची साधना है,
जिसमें तप करना जरूरी है
तप चाहे मन से हो या तन से,
इस मन तन में थोड़ी दूरी है

(शेष अगले पृष्ठ पर)

जिंदगी तो सबको सबसे प्यारी है
यह तो लगती बसको सबसे न्यारी है
जिंदगी में कर्म करना पर मत तुम भटकना
इस कर्म अकर्म के दोराहे में तुम मत उलझना
जिंदगी एक टेढ़ी लकीर है,
जिसको सीधी करना जरूरी है।

जिंदगी पूरी करना ख्वाहिश अधूरी है।
जिंदगी को बोझ मत तुम समझना
खिलवाड़ इससे तुम न करना
जिंदगी यदि मिल गई तो फर्ज है तुम्हारा
कि कुछ करना है घर के लिए ही नहीं
देश के लिए भी मरना है।

✳

(हास्य व्यंग्य)

वीर मच्छर

— उत्कर्ष गुप्त
नवम 'ख'

घर बीच चौकड़ी भर–भर कर,
मच्छर फिरता मतवाला था।
ऐसे छोटे से मच्छर से,
पड़ गया हमारा पाला था।
कौशल दिखलाया चालों में,
आ गया हमारे बालों में।
फिर काटा उसने गालों में,
खुजलाहट भर दी खालों में।

है यहीं रहा अब वहाँ नहीं,
थी जगह नहीं जो जहाँ नहीं।
ले महा डंक को साथ–साथ,
करता सेना रखवाली था।

थक गए हाथ मलते – मलते,
सूजा है सारा अंग – अंग।
असहाय भाव से देख रहे,
जालिम मच्छर का अजब ढंग।

✳

नेता का रासायनिक विश्लेषण

— अनिमेष गुप्त
सप्तम 'क'

प्राप्ति स्थान – ये गली मोहल्ले से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक पाये जाते हैं।

भौतिक गुण

अवस्था – चुनाव के समय द्रव अवस्था में इसके अलावा ठोस अवस्था में पाये जाते हैं।

रंग – बाहर से सफेद व अंदर से पूर्णतः काले होते हैं।

गंध – वैसे तो इनकी बातों में देशभक्ति व राष्ट्रसेवा की गंध आती है।

विलेयता – किसी भी दल में विलेय हैं।

क्वथनांक – सामान्य तापक्रम पर भी उबलते रहते हैं।

रासायनिक गुण

वायु का प्रभाव – हवा का रुख देखकर रंग बदल लेते हैं।

जलीय अभिक्रिया – कुर्सी के प्रति अत्यधिक क्रियाशील होते हैं तथा सदैव कुर्सी से चिपके रहना चाहते हैं।

चुम्बकीय गुण – चुनाव के समय जनता की ओर आकर्षित होते हैं और जीतने पर विकर्षित हो जाते हैं। विदेश यात्रा इनके आकर्षण का केन्द्र बिन्दु है।

रेडियो एक्टिविटी – रेडियो के प्रति सक्रिय होते हैं और बार–बार अपना नाम सुनना पसंद करते हैं। आजकल इनमें टी०वी० एक्टिविटी भी आ गई है।

समस्या सक्रियता – समस्याओं से क्रिया करके प्रायः सिर्फ आश्वासन देते हैं वरन उदासीन हो जाते हैं।

चमचों का प्रभाव – यह चमचों के गुरु एवं गुरुओं के चमचे होते हैं।

उपयोग

१. सिफारिशी खत लिखवाने में इनका प्रयोग होता है।

२. उद्घाटन समारोहों में रिबन काटने में इनका प्रयोग होता है।

*अमरबेल बिनु मूल की, प्रतिपालत है ताहि।
रहिमन ऐसे प्रभुहिं तजि, खोजत फिरिये काहि।।*

(हास्य व्यंग्य)

सतयुग का सपना

– दिव्यांश त्रिपाठी
नवम 'ग'

एक रात की बात है श्रीमान,
मेरी आँखों ने देखा सतयुग का सपना महान,
महिलाएँ कहीं–भी निडर होकर घूम रही हैं,
उनके पास सोने के अत्याधुनिक गहने हैं,
पुलिस की वर्दी भी बदल गयी है,
वे सफेद धोती कुर्ता पहने हैं।
उनके हाथ में रूद्राक्ष की माला है,
जो इस बात का प्रतीक है कि वह पुलिस वाला है।
पुलिसवाले अपनी ड्यूटी ईमानदारी से निभाते हैं,
सतयुग है न इसलिए गश्तपर सीटी नहीं बजाते हैं,
'जागते रहो' का परित्याग कर रात में राम–राम चिल्लाते हैं।
मंदिर और मस्जिद भरे पडे हैं,
डिस्को, सिनेमाहाल खाली पड़े हैं,
जिसे देखो सत्कर्म करके पुण्य कमा रहा है,
और राम की बेटी की बेटी की डोली में
रहीम कन्धा लगा रहा है।

घरों के दरवाले खुले पड़े हैं,
चोर चोरी नहीं करना चाहते इसलिए,
सिर झुकाकर चुपचाप खड़े हैं,
आपको विश्वास नहीं होगा, लोगों का ईमान इस कदर जागा है,
कि ताला बनाने की कम्पनी में ताला लगा है।

लोग पुण्य कमाने के लिए भिखारियों को निमंत्रण दे रहे हैं,
निमंत्रण देने वालों की लाइन लगी है, भिखारी दोनों टाइम बुक है।
कोई बाजार में जाकर पूँछे सोने का भाव
दुकानदार बोला – पचास पैसे पाव।
हर आदमी ईमानदारी पर जिन्दा है

इसके बाद भी एक समस्या खड़ी है।
चापलूसी व नेतागिरी खाली पड़ी है
साधारण जीवन स्वीकार कर लिया गया है
और नेताओं द्वारा कुर्सी का बहिष्कार कर दिया गया है।
छोटे नेता अपनी योग्यतानुसार भैंस चरा रहे हैं।
और बड़े नेता ऐसे देश–परिवर्तन पर आँसू बहा रहे हैं।

वाह रे मेरे सपने, सब देश पर जान कुर्बान कर रहे हैं,
और कश्मीरी उग्रवादी, घायल फौजियों के लिए रक्तदान कर रहे हैं।
आप सोच रहे होंगे कि मैं यूँ ही उल्टी सीधी फेंक रहा हूँ
मगर यह सच है भाइयों,
मैं वर्षों से,
यही सपना देख रहा हूँ, यही सपना देख रहा हूँ।

आह्वान

– सुयश मधुर
अष्टम 'क'

*ये सुशय का आह्वान तमस से संघर्ष करने का है। सत्य कहीं पिछड़ न जाए, दानवदल कहीं हावी न हो जाए इसलिए हम सबको द्वंद्व करना है – **संपादक***

अज्ञान की विपदा बड़ी है,
अंध–कूपों की लड़ी है।
आसक्ति बाधा बन खड़ी है
चिंतन मनन की ये घड़ी।।

दम्भ कर दो चूर,
घनघोर काली रात का।
आज हो आगाज,
कुछ तूफान जैसी बात का।

तमस का कद बढ़ गया है,
झूठ सच पर चढ़ गया है।
सत्य घायल क्यों हुआ है,
न्याय विस्मित क्यों हुआ है।।

रात से संघर्ष करिए,
दुंदुभी जयघोष करिये।
द्वन्द्व होना तय हुआ है,
आन को तुमने छुआ है।।

सीख

हम सब समान हैं

– आदेश मिश्र
सप्तम 'ख'

*तथाकथित पंडितों (ब्राह्मणों) की पोंगापंथी तथा छुआछूत इत्यादि बाह्याडम्बरों को गौतम बुद्ध ने ध्वस्त कर दिया था। जिनको मनुष्य शूद्र नाम देते हैं वे कौन से पापी होते हैं ? – और जिनको पंडित कहा जाता है वे किस आधार पर श्रेष्ठता के अधिकारी हैं ? – **संपादक***

एक समय की बात है। भगवान बुद्ध जेतवन में ठहरे हुए थे। एक दिन उनके प्रिय शिष्य भिक्षु आनंद नगर में भिक्षा माँगने गये। रास्ते में उन्हें प्यास लगी। पास में ही एक कुएँ पर कोई लड़की पानी भरते नजर आयी। आनन्द उस कुएँ के पास चले गये। वहाँ उन्होंने उस लड़की से पीने के लिए पानी माँगा। लड़की ने सकुचाते हुए कहा, "चाण्डाल की लड़की हूँ महाराज। मैं अछूत हूँ।" भिक्षु आनंद ने उत्तर दिया – "मैंने तुम्हारी जाति नहीं पूछी ? मैंने पानी माँगा है। लड़की ने खुशी–खुशी भिक्षु आनंद को पानी पिला दिया। बुद्ध को इस घटना का पता चला। उन्होंने चाण्डाल की कन्या को अपने संघ में शामिल कर लिया।" संघ में अछूत लड़की के होने की बात जंगल में आग की तरह फैली। इस पर खूब हो–हल्ला मचा।

धीरे–धीरे यह बात वहाँ के राजा को भी मालूम हुई। उन्हें भी यह अच्छा नहीं लगा। वे भगवान बुद्ध के पास गये। राजा ने भगवान बुद्ध से पूछा – "आपने यह क्यों किया ?"

भगवान बुद्ध ने उत्तर दिया – "ब्राह्मण और चाण्डाल सब माँ की कोख से पैदा होते हैं। ब्राह्मण आकाश से नहीं टपका करते। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र तो केवल नाम हैं जो मनुष्य ने रखे हैं। इससे आदमी–आदमी के बीच अंतर नहीं पैदा हो जाता है। बालक धरती पर खेलते हैं। मिट्टी से तरह–तरह की चीजें बनाते हैं। उनके अलग–अलग नाम रखे जाते हैं। लेकिन मिट्टी तो मिट्टी ही रहती है। इसी तरह मनुष्य चाहे किसी भी जाति का हो, मनुष्य ही रहता है। काले और गोरे का भेद भी बेकार है।

हम सबको भगवान बुद्ध के इस उपदेश से शिक्षा लेनी चाहिए कि हमें छुआछूत के चक्कर से दूर रहना चाहिए और सब लोगों को समान रूप से प्यार करना चाहिए।

✷

प्रेरक प्रसंग

सन्त स्वभाव

– गौरव द्विवेदी
सप्तम 'ख'

एक बार सन्त तुकाराम को उनके किसी मित्र ने बहुत से गन्ने दिये। जब उनकी पत्नी को यह बात पता चली कि उनके पति बहुत से गन्ने लेकर घर आ रहे हैं तब वे खुश हो गईं और अपने पति के आने की प्रतीक्षा करने लगीं। जब सन्त गन्ने लेकर घर आ रहे थे तो रास्ते में उन्हें बहुत बच्चे मिले उन्होंने सबको एक–एक गन्ना बाँट दिया। इस प्रकार घर पहुँचते – पहुँचते उनके पास एक गन्ना बचा। बहुत से गन्नों की आशा लगाए बैठी उनकी पत्नी गुस्से से लाल हो गईं और वह गन्ना उन्होंने सन्त की पीठ पर इतनी जोर से मारा कि वह दो बराबर भागों में बँट गया। इस पर सन्त ने एक भाग पत्नी को देते हुए कहा कि देवी तुमने उचित बँटवारा किया है। हम लोगों को प्रत्येक वस्तु मिल–बाँटकर खानी चाहिए।

निबंध

साहित्य और समाज का परस्पर सम्बन्ध

– अंकुर दीक्षित
षष्ठ 'क'

साहित्य–मर्मज्ञों ने अपने–अपने दृष्टिकोण से साहित्य की परिभाषा की है। साहित्य मानव समाज का मस्तिष्क है। विभिन्न विचारकों के साहित्य के सम्बन्ध में व्यक्त विचारों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है, कि किसी भी मनुष्य के मस्तिष्क में उनके जन्म–जन्मान्तर के संचित विचार, भावनायें, अनुभूतियाँ, सभ्यता, सांस्कृतिक विचारधारायें संग्रहीत रहते हैं, हम तत्कालीन साहित्य के अवलोकन से उससे सम्बन्धित विचारों, भावनाओं, मानव–मन की अनुभूतियों आदि की सुगमता के साथ जानकारी प्राप्त कर लेते हैं।

साहित्य और समाज का आदिकाल से ही अन्योन्याश्रित–घनिष्ठ सम्बन्ध चला आ रहा है। दोनों को एक दूसरे का पूरक कहा जाता है। इसीलिए साहित्य को समाज का प्रतिबिम्ब कहा गया है। एक सभ्य, सुसंस्कृत, उन्नतशील, समाज के लिए एक उच्चकोटि का सम्पन्न एवं समृद्ध साहित्य का होना परमावश्यक है। समाज की प्रगति पर ही पूर्णतः साहित्य का अस्तित्व निर्भर है। साहित्यिक विकास के प्रथम चरण में हमारा देश संघीय सत्ता से पृथक होकर प्रभु–सत्ता सम्पन्न राज्यों में विभक्त हो गया था।

आजादी के लिए कई वर्षों तक संघर्ष के बीच कवियों व लेखकों की स्थिति से यह स्पष्ट हो गया कि कवि और लेखक अपने समय की तत्कालीन राजनीतिक, धार्मिक इत्यादि साहित्य की विभिन्न विधाओं में डालकर साहित्य का सृजन और निर्माण करता है। साहित्यकार एक चित्रकार की भाँति घटित घटनाओं का अवलोकन, अनुभव ग्रहण करते हुए उसी रूप में उनको स्थान देते हैं तथा अपनी सशक्त लेखनी के माध्यम से अपने अमूल्य दार्शनिक विचारों को जन–जन का प्रेरणा स्त्रोत बनाने की भरपूर चेष्टा करते हैं।

किसी कवि का कथन भी पूर्णतः यथार्थ ही है –

"अन्धकार है वहाँ जहाँ आदित्य नहीं है।
मुर्दा है वह देश जहाँ साहित्य नहीं है।।"

✷

जो मंचों पर चढ़ी बहककर गाती है
गा चुकने के बाद लिफाफा पाती है।
वह कविता ही नहीं, महज़ नौटंकी है
कविता सूरा की सीख, मीर की पाती है।

सुनामी में काल-कलवित लोगों की याद में...

तुम हमारे बीच नहीं हो

– अजय सिंह यादव
नवम 'क'

*प्राकृतिक विपदाओं का कारण चाहे आप धरती पर बढ़ता हुआ पाप समझें या फिर भूगर्भ में होने वाली हलचल, लेकिन इतना तो तय है कि इन्सान की जिन्दगी का मालिक कोई और ही है। जब उस सर्वशक्तिमान की भृकुटि भंग होती है तो सब कुछ उथल पुथल हो जाता है। सुनामी लहरों में मारे गये लोगों को अजय की श्रद्धांजलि कविता के रूप में है जिसके प्रारंभिक चरण मैंने परिवर्तित, परिवर्द्धित तथा परिशुद्ध किये हैं। – **संपादक***

जलधि का चित्त आज मचल–मचल,
अमर्यादित उद्धत सागर–जल
पशु–पक्षी सब हैं दुखी विकल
पीड़ित मानव की आह निकल
विक्षुब्ध धरा है क्षुब्ध व्योम
क्रन्दन सुनकर हैं खड़े लोम
दूर, एक पहिए वाला रथी जा रहा,
क्षितिज से मिलने का वादा पूरा करने को।
निशा चली आ रही है, काली चादर उढ़ाने,
सब कुछ हो रहा है, जैसे हो सुनिश्चित।
पर अंतःकरण के एक दुस्तर कोने में,
हो रहा है कुछ अनिश्चित,
क्योंकि तुम हमारे बीच नहीं हो........।

✵

प्राकृतिक आपदा

– सौरभ द्विवेदी,
अष्टम 'ख'

*सुनामी लहरों से भारी संख्या में धन और जन की हानि हुई थी। इस प्राकृतिक आपदा पर अष्टम 'ख' कक्षा के चि० सौरभ द्विवेदी ने ये चार पदों की एक कविता बनाई है जिसके भाव और विचार अच्छे हैं लेकिन छन्द और लय के दोष हैं, यद्यपि तुक मिलते हैं। – **संपादक***

लहरों का था नाम सुनामी,
दिखलाई विध्वंसक काया।
रत्नाकर का रूप देखकर,
मानव थर–थर थर्राया।।

जल जो हमको देता जीवन,
कैसा उसका रूप भयंकर।
गाँव के गाँव उजड़ गए,
लाचार हुए सब नारी नर।।

दुःख तो पीड़ितों को है असीम,
पर हम कर सकते दुःख को कम।
उनको मिलेगी दो वक्त की रोटी,
यदि हम दें अपनी कुछ रकम।।

कभी न आए फिर ऐसी आपदा,
ऐसा करें प्रकृति से अनुरोध।
अब न करें मानव इससे छेड़छाड़,
जिसका ये ले रही प्रतिशोध।।

✵

झूठ बोलने का फल

– रजत शुक्ल,
षष्ठ 'क'

मिथ्या भाषण कभी नहीं करना चाहिये इससे भविष्य में बहुत नुकसान उठाना पड़ता है। पहले–पहल इन मिथ्या वचनों के भ्रम में लोग आ जाते हैं परन्तु शनैः शनैः सभी का विश्वास उठ जाता है। गड़रिया–सुत की कथा तदनन्तर व्यथा हम सभी ने सुनी है वही यहाँ एक कविता के रूप में प्रस्तुत है। **–सम्पादक**

कथा गड़रिये की है एक।
नहीं इरादे उसके नेक।।
भेड़ चराने वह था जाता।
झूठ–मूठ वह था चिल्लाता।
'दौड़ो अरे भेड़िया आया।
उसने मेरी भेड़ उठाया।।
लोग दौड़कर थे जब आते।
उसे मजे से हँसते पाते।।
सचमुच एक दिन भेड़िया आया।
तब वह मूर्ख बहुत चिल्लाया।।
पर उसको सब झूठा जान।
रहे बैठ बिल्कुल चुप ठान।।
भेड़ भेड़िया लेकर भागा।
पछताया वह बाल–अभागा।।
झूठ बोलते हैं जो बच्चे।
लोग न कहते उनको अच्छे।।
हैं खोते सबका विश्वास।
पछताते सब खोकर आस।।

*

तासों ही कछु पाइये, कीजै जाकी आस।
रीते सरवर पर गये, कैसे बुझै पियास।।

जानलेवा हो सकता है मलेरिया

– उत्कर्ष गुप्त
नवम 'ख'

मलेरिया खास तौर पर गर्म प्रदेशों में ज्यादा होता है। यह रोग प्लाजमोडियम वाइवेक्स नामक परजीवी से फैलता है।

इसी तरह मस्तिष्क का मलेरिया प्लाज्मोडियम फाल्सीपेरम परजीवी से फैलता है। इन दोनों बीमारियों को फैलाने का कार्य मादा मच्छर करती है। ये परजीवी मच्छर के शरीर में अपना जीवन चक्र पूरा करते हैं, किंतु मच्छर इनसे प्रभावित नहीं होते। प्लाज्मोडियम वाइवेक्स या फाल्सीपेरम से प्रभावित मादा मच्छर किसी को काटती है, तो उसकी लार में से इस परजीवी के अण्डे शरीर में प्रवेश कर जाते हैं।

लक्षण – बुखार के साथ जाड़ा लगना इस रोग का प्रमुख लक्षण है। मलेरिया का बुखार तेजी से चढ़ता है। यह बुखार कभी–कभी १०३–१०६ फारेनहाइट तक पहुँच जाता है। बदन में खास तौर से आँखों व सिर में बेहद दर्द होता है। आमतौर पर यह बुखार पाँच से सात दिन तक चलता है, बिगड़ने पर और भी अधिक समय ले सकता है।

जाँच – मलेरिया का पता करने के लिये रक्त की जाँच की जाती है। इसके अतिरिक्त हीमोग्लोबिन, प्लेटलेट्स, यकृत के लिये सीरम बीलिरुबिन, सीरम, क्रियेटिनिन, एस०जी०पी०टी० और गुर्दे के लिये सीरम क्रियेटिनिन की जाँच करवाई जाती है।

इलाज – इस रोग के उपचार में क्यूनीन का खास तौर पर प्रयोग किया जाता है। यद्यपि प्लाजमोडियम वाइवेक्स से प्रभावित रोगी तो कुछ ही समय में ठीक हो जाता है किन्तु यदि बुखार का कारण प्लाजमोडियम फाल्सीपेरम है तो स्थिति खतरनाक होती है, क्योंकि यह परजीवी शरीर की रक्त नलिकाओं में घुसकर ऊतकों को जाम करने लगते हैं और नष्ट करने लगते हैं। इस कारण रोगी को साँस लेने में दिक्कत होती है और उसकी सांस तेज चलती है। चूँकि यह परजीवी रक्त कणिकाओं को भी नष्ट करता है, इसलिये रक्त की ऑक्सीजन ग्रहण करने की क्षमता कम हो जाती है। नतीजतन रक्त में ऑक्सीजन की कमी होने से यकृत, गुर्दा, फेफड़े व मस्तिष्क पर कुप्रभाव पड़ता है। ऐसे रोगी को तुरन्त सघन चिकित्सा कक्ष में स्थानांतरित कर दिया जाता है। जहाँ पर उसे वेंटिलेटर पर रखा जाता है। समय रहते मलेरिया का उपचार सम्भव है। बेहतर इलाज के बावजूद इस रोग में मृत्यु दर ५० फीसदी तक होती है। चूँकि यह रोग मच्छर फैलाते हैं, इसलिये "सोते समय मच्छरदानी का प्रयोग करें और अपने आसपास के वातावरण को साफ–सुथरा रखे ताकि मच्छर न पनप सकें।"

कुछ महापुरुषों की महत्वपूर्ण सूक्तियाँ

– अभिनव वर्मा, षष्ठ 'ख'

- बहुत लोगों से मित्रता मत करो। – **पाइथागोरस**
- अशिक्षित रहने से न पैदा होना अच्छा है क्योंकि अज्ञान विपत्तियों का मूल है। – **प्लूटो**
- प्रत्येक व्यक्ति एक महान ग्रन्थ है यदि आप उसे पढ़ना जानते हों। –**चैनिंग**
- आत्मविश्वास जैसा कोई दूसरा दोस्त नहीं है। – **स्वामी विवेकानन्द**
- लक्ष्य ही कर्मशक्ति है। – **स्वामी विवेकानन्द**
- मित्रघात पाप नहीं महापाप है। – **सुदर्शन**
- जीवन का नियम स्पर्धा है सामंजस्य नहीं। –**बोस**
- जीवन का अन्तिम सत्य मृत्यु है। – **स्वामी विवेकानन्द**

ब्लैक होल, जो सब कुछ हजम कर जाते हैं।

– दृश्यमुनि चाकमा
नवम 'ख'

जब सितारा बुझने लगता है तो पहले फैलता है। फिर धीरे धीरे गुरुत्वाकर्षण शक्ति से उसका आयतन घटने लगता है। छोटा होता जाता है। इन्हें सफेद बौने या वामन कहते हैं।

भारतीय वैज्ञानिक चन्द्रशेखर ने पिछली सदी के तीसरे दशक में गणना की थी कि सूर्य से १.४४ गुना द्रव्यमान तक का तारा गुरुत्वाकर्षण शक्ति के सहारे अपने आयतन को बनाये रख सकता है। इसे 'चन्द्रशेखर सीमा कहते हैं।' इस सीमा से कम द्रव्यमान वाले तारे सफेद बौने बन जाते हैं। ऐसा ही एक सफेद बौना आकाश के सबसे चमकीले सितारे लुब्धक (सीरियस) के चारो ओर घूमता रहता है। इस बौने का द्रव्यमान पृथ्वी से करीब साढ़े तीन लाख गुना ज्यादा है, पर आकार करीब तीस गुना यानी यह बहुत ज्यादा सघन है।

सफेद बौने के विपरीत बड़े द्रव्यमान वाले तारे जब बुझते हैं, तब वे खुद को कैसे बचाते हैं। कई बार इनमें विस्फोट होता है और इनका अतिरिक्त पदार्थ टूटकर अंतरिक्ष में बिखर जाता है पर हमेशा ऐसा नहीं होता। इनकी गुरुत्वाकर्षण शक्ति बढ़ती जाती है और इतनी ज्यादा बढ़ जाती है कि रोशनी की किरणें भी इनसे बाहर नहीं निकल पातीं। आप आसमान में गेंद फेंकें तो वह वापस आ जाती है, पर टॉर्च से रोशनी फेंकें तो क्या वह वापस जमीन पर गिरती है। कोई रोशनी हम पर फेंकें तो वह भी टकराकर वापस लौटती है। ब्लैक होल कोई चीज नहीं लौटाते।सब हजम कर जाते हैं।इनमें पदार्थ इतना सघन है कि वह आसपास नहीं, दूर–दूर तक फैले पदार्थों, यहाँ तक कि सितारों तक को अपनी ओर खींचता है। यह ऐसी खाई है, जो भरी होने के बावजूद और भरती जाती है। बताते हैं हमारी आकाशगंगा के बीचोबीच ब्लैक होल है। अंतरिक्ष में ऐसी गहरी खाइयाँ रहस्य का विषय हैं। लाल दैत्यों का जिक्र करते वक्त यह लिख दिया कि हमारा सूर्य करीब पाँच हजार साल बाद लाल दैत्य बन जायेगा। नहीं, इतनी जल्दी नहीं। इसके लिये हमें करीब पाँच हजार अरब साल का इंतजार करना होगा। आपके पास वक्त हो तो जरूर देखना।

रहिमन कोऊ का करै, ज्वारी चोर लबार।
जो पति राखनहार है, माखन चाखन हार।।

सर्दी का असर

—दीपेन्द्र श्रीवास्तव
षष्ठ 'ख'

जाड़े में सभी क्रियाकलाप मन्द पड़ जाते हैं । लोग ठिठुरते हैं और ऊनी वस्त्रों, रजाई इत्यादि की शरण में चले जाते हैं। षष्ठ कक्षा के छात्र चि० दीपेन्द्र कटियार ने सोलह पंक्तियों की एक तुकबन्दी की है, जिसे उनकी आयु को देखते हुये एक ठीक—ठाक प्रयास माना गया है। **—संपादक**

फैली है कोहरे की चादर
सूरज दुबका बैठा ऊपर
हवा चल रही सर—सर, सर—सर
सब काँप रहे हैं थर—थर—थर
प्यारा लगता सबको बिस्तर
कैसे निकले कोई बाहर
हो रही गले में घर—घर—घर
सब काँप रहे हैं थर—थर—थर।।
उड़ रहा गले ऊपर फर—फर
अपना प्यारा—प्यारा मफलर ।।
निकले कंबल स्वेटर
सब काँप रहे हैं थर—थर—थर।।
बस चाय मिले यह लगी फिकर
ऐसा सर्दी का हुआ असर ।।
हैं दाँत बज रहे गिटिर—पिटिर
सब काँप रहे हैं थर—थर—थर ।।

*

रहिमन बहु भेषज करत, व्याधि न छाँड़त साथ।
खग मृग बसत अरोग बन, हरि अनाथ के नाथ।।

भारतीया संस्कृतिः

– अभिजित शुक्ल
सप्तम 'ख'

सम्यक् कृतिः परिष्कृतिः संस्कृतिरिति कथ्यते। एषा संस्कृतिः जनानां दुर्गुणान् दुर्व्यसनानि हृदयेभ्यो निस्सार्य तानि हृदयानि निर्मलानि पूतानि च खलु करोति। भारतीया संस्कृतिः एतद् वैशिष्ट्यं भजते। एषा संस्कतिः सर्वासु संस्कृतिषु श्रेष्ठा ज्येष्ठा चास्ति। अत्र यद् वैशिष्ट्यं विलसति तदन्यत्र नहि। अनया एव भारतीयाः जनाः पुरा किल महतीं प्रतिष्ठां प्रापुः। पुरा भारत देशः 'जगद्गुरुः' आसीत्। अतएव भणति मनुः –

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।।

संस्कृतेः प्रमुखतत्त्वानि धर्मः, दर्शनम्, साहित्यम्, संगीतम्, कलादयश्च सन्ति। एतैगुणैः युक्तः मानवः, मानवः भवति एतैर्विहीनस्तु मानवः मानवः न, अपितु पशुः भवति। कथयति महात्मा भर्तृहरि :–

साहित्यसंगीतकलाविहीनः,
साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः।
तृणं न खादन्नपि जीवमानः,
तद्भागधेयं परमं पशूनाम्।।

अत्र धर्मस्य प्राधान्यंवर्तते। 'यतोऽभ्युदयनिः श्रेयसिद्धिः स धर्मः' इत्येतेनयतः खलु लौकिकं पारलौकिकं च भद्रं नामस्यात्तदेव कर्म करणीयम् अन्यत्र। ये जनाः धर्म विहीनः सन्ति तेषामत्र समादरो न वर्तते। रामायण कथयति वाल्मीकिः – 'रामो विग्रहवान् धर्मः' इति।

आध्यात्मिक भावनायाः सम्यक् समादरोऽत्रविद्यते। एषा समेषां जनानां कल्याणं कामयेत्। अस्याः समुद्घोषोऽयम् अस्ति यत् –

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्।।

अत्र कर्मणः महत्त्वंवर्तते। मानवानां कृते कर्मणोऽपेक्षा वर्तते। मनुष्यः संसारेऽस्मिन् स्वकर्मानुसारं फलं लभेत। गीतायां वदति गोविन्दः – 'नहि कश्चिद् क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत'। अस्याः उदारता तु प्रसिद्धा वर्तते। कथितम् अस्ति –

यावद् म्रियेत जठरं तावत् स्वत्वं हि देहिनाम्।
अधिकं योऽभिमन्येत् स स्तेनो दण्डमर्हति।।

वर्णाश्रम व्यवस्था, पुनर्जन्मवाद, मोक्षः, समन्वय वादिता, श्रुतीनां प्रमाणिता, त्यागः, सत्यनिष्ठता इत्यादयः अनेके गुणाः संस्कृतेः विलसन्ति। अनया विश्वकल्याणं तु सुनिश्चितमेव।

(हास्य कविता)

अटल का अल्टीमेटम

—आलोक कुमार सिंह
नवम 'ख'

अटल कहैं सुनो मियाँ मुशर्रफ,
बक बक झक झक करौ नहीं।
पागल कुत्ता कै माफिक तुम,
अब भौंकि भौंकि के मरौ नहीं।।

हमरी एक कहावत तौ,
सारी दुनियाँ यह जानत है।
लातन केरे भूत कहूँ,
बातन से कबहूँ मानत हैं ?

बातन से समझाय चुकेन,
अब लातन की ही बारी है।
अबकी जड़ से ही मिटा देब,
सुनि लेव कसम हमारी है।।

दुई—दुई बार है उलझि चुकेव ,
फिरहूँ न आई अकल तुमका ।
अबकी सच मा ही मिट जइयो,
न दोष देहेव तुम फिर हमका।।

मूसन की तरह घुसे घर मा,
शेखी बहुत बघारि रहे।
अब निकरि आव मैदान जरा,
भारत के वीर पुकारि रहे।।

कश्मीर की बातन छेड़ेव तुम,
वह भारत देश का रहै सदा।।
तुम जतन करौ चाहे जितना,
न करि पइहौ हमसे जुदा।

तुम इतने रंग हो बदल चुकेव,
कि गिरगिट को भी शर्म आए।
और चालाकी में तुमसे तो,
लोमड़ भी धोखा खा जाए ।।

चालाकी में जनम तुम्हार भवा,
मक्कारी तुम्हरा धरम हवै।
धोखेबाजी के कीड़ा तुम,
गद्दारी तुम्हरा काम हवै।।

तुम राजनीति के चक्कर माँ,
अभी नए—नए हौ पड़े मियाँ।
जानि लेव तुमसे ज्यादा ,
हम देखि चुकेन हैं ये दुनियाँ।।

जितना पायौ उतने में रहौ,
ज्यादा न करौ तुम हाय—हाय
ऐसा न होय कोई लादेन,
तुम्हरे घर माँ बम छोड़ि जाए।।

बुश का चरणोदक पी—पी कै,
न तुम्हरा अब उद्धार होइ।
जब तक हमसे मिल कै रहिहौ,
बस तब तक ही कल्याण होइ।।

लघुकथा

समय-समय की बात

– शिवम श्रीवास्तव
अष्टम 'ख'

समय ही बलवान होता है मनुष्य नहीं होता है। प्रत्येक व्यक्ति के दिन बदल सकते हैं इसलिये न तो अहंकार करना चाहिए न ही किसी को उपेक्षित करना चाहिये। – ***सम्पादक***

एक अमीर बहुत गुस्सैल स्वभाव का था। एक बार एक भिखारी उसके दरवाजे पर आया और फरियाद करने लगा – "बाबा, बहुत गरीब हूँ। कुछ तरस खाओ।"

भिखारी के मुँह से बार–बार यह सुनकर अमीर नाराज हो गया।

भिखारी बोला – "नाराज क्यों होते हैं ? आज मुझे भीख माँगनी पड़ रही है। हो सकता है कल आपके पास भी यह दौलत न रहे।"

यह सुनकर अमीर ने अपने नौकर को हुक्म दिया – "इसे भगा दो।"

काफी दिन बीत गए। अमीर के बुरे दिन आ गए। उसका व्यापार–धंधा बैठ गया। उसकी थैली और हाथ खाली हो गए। जमीन–जायजाद, ऐशो–आराम का सामान सब कुछ बिक गया। उसका नौकर एक दूसरे अमीर के हाथ बिका। उस अमीर को रोटी के भी लाले पड़ गए।

नए अमीर के पास आकर नौकर बहुत खुश था। एक बार रात को एक भिखारी उसके दरवाजे पर आया। उसे देखकर अमीर को दया आ गई। अंदर जाकर अपने नौकर से बोला – "बाहर खड़े भिखारी को भरपेट खाना खिलाओ।"

नौकर खाना लेकर बाहर आया और सामने खड़े भिखारी को दे दिया। भिखारी खाना लेकर चल दिया, पर नौकर ने उसे पहचान लिया। वह तो उसका पुराना मालिक था। इस हालत में पुराने अमीर को देख, उसके होश उड़ गए। वह उसे पुकारते–पुकारते रह गया। वह फूट–फूटकर रोने लगा। मालिक ने नौकर को रोते देखा तो कारण पूछा। वह बोला – "जिस भिखारी को आपने अभी भोजन दिया, वह मेरा पुराना मालिक था। कभी बहुत अमीर था। भरापूरा घर, नौकर–चाकर, जमीन–जायजाद, सोना–चाँदी सभी कुछ उसके पास था। उसकी तकदीर उलट गई।"

यह सुनकर उसका मालिक बोला – "उस पर कोई जुल्म नहीं हुआ। यह वही अमीर है, जो हमेशा घमंड से सिर आसमान में उठाए रखता था। आज मेरा दरवाजा खटखटाना पड़ा। आज यह मेरी जगह आ गया है और मैं इसकी जगह। दुनिया की रीति ही ऐसी है।

जो पुरुषारथ ते कहूँ, सम्पति मिलत रहीम।
पेट लागि बैराट घर, तपत रसोई भीम।।

पक्षी की चाह

– अभय प्रताप सिंह सेंगर
नवम 'क'

पराधीनता किसी को अच्छी नहीं लगती है, फिर पक्षी तो अनन्त आकाश में निर्बन्ध विचरने वाला होता है। पिंजड़ा उसे पीड़ित करता है। इस पीड़ा को और चिड़िया की चाह को अभिव्यक्ति देते चि० अभय प्रशंस्य हैं। **–संपादक**

मैं मस्त, मतवाली हूँ,
सबको चाहने वाली हूँ।
मुझे नहीं रहना है, पिंजड़े में,
मुझे नहीं पड़ना है, झगड़े में।।

मैं रहना चाहती हूँ स्वतंत्र,
फिर कभी न रहूँगी मैं परतंत्र।
मैं घूमूँगी अनन्त आकाश में,
मैं जाऊँगी सबके आवास में।।

नील – गगन में ऊँचा उठकर
मैं उन्मुक्त विहार करूँगी।
मेरा भी एक घोंसला होगा,
उसे बनाने का हौंसला होगा।

चुगूँगी मैं अनार के दाने,
गाऊँगी मैं मतवाले गाने।
यह है मेरा अपना सपना,
हँसी खुशी का ना है नपना।।

✳

समय दसा कुल देखि कै, सबै करत सनमान।
रहिमन दीन अनाथ को, तुम बिन को भगवान।।

सच्चा मनुष्य

– अविनाश अवस्थी
अष्टम 'क'

सच्चा मनुष्य वही कहलाता,
भटके जो राह दिखाता,
प्यासे की जो प्यास बुझाता,
भूखे की जो भूख मिटाता,
बूढ़े की लाठी बन जाता,
जो अनपढ़ हैं उन्हें पढ़ाता।

सच्चा मनुष्य वही कहलाता,
मूकों की वाणी बन जाता,
जो अपंग हैं उन्हें बढ़ाता,
थके राहगीरों की खातिर
जो राहों में वृक्ष लगाता।

सच्चा मनुष्य वही कहलाता,
जो निर्धन को उन्नति पथ पर,
हरदम ही आगे बढ़वाता,
जो समाज में भरी बुराई,
उनको प्रतिदिन दूर भगाता,
सच्चा मनुष्य वही कहलाता।

मंजिल

– अंकुर सचान
सप्तम 'क'

मंजिल पाने के लिये आशा, उत्साह और प्रयास चाहिए। बाधाओं से संघर्ष, मोह–मुक्ति और लक्ष्य पर दृष्टि ही सफलता का मूलमन्त्र है। – **संपादक**

नहीं किसी से घबराऊँगा।
अरियों से भी भिड़ जाऊँगा।।

चाहे रोके पर्वत–घाटी
या फिर रोके अपनी माटी,
मुझको कभी नहीं रुकना है
हर दम आगे ही चलना है।
मृगतृष्णा में नहीं फसूँगा
मैं अपनी मंजिल पाऊँगा।।

बाधाएँ आती हैं आयें
घिरें प्रलय की घोर घटाएँ,
मुझको नहीं कभी डरना है।
नहीं किसी से घबराऊँगा
मैं अपनी मंजिल पाऊँगा।।

मूढ़ मंडली में सुजन, ठहरत नाहिं बिसेखि।
स्याम कचन में सेत ज्यों, दूरि कीजियत देखि।।

कविता पर कविता

— अभय चतुर्वेदी
अष्टम 'ख'

*अष्टम कक्षा के चि० अभय चतुर्वेदी ने कविता पर कविता रची है जो ठीक है। उत्साह, निराशा, प्रेम, भक्ति और निर्वेद की कलात्मक अभिव्यक्ति ही तो कविता है। — **संपादक***

सुख की छाहों में,
दुख की राहों में,
बहती जीवन सरिता।
खुशियों के फूलों से,
मिलकर बने कविता।

सबको है बाँधती यह,
खुशियाँ बिखेरती यह,
रखती है सबमें यह एकता।
विचारों के उदयाचल से,
ममता के आँचल से,
मिलकर बने कविता।

मुश्किल की राह पर,
उड़ने की चाह पर,
खड़ी है आज वनिता।
तरंगों के उद्गम से,
भावों के संगम से,
मिलकर बने कविता।

✷

शान्ति से जीना यहाँ दुश्वार है...

— प्रशान्त गुप्त
नवम 'ग'

*जब चारों तरफ पाप और पापियों का प्रभाव बढ़ा हो तो सच्चाई को अस्तित्व का संघर्ष करना पड़ता है। — **संपादक***

शान्ति से जीना यहाँ दुश्वार है
हर तरफ अपराध की भरमार है
अपहरण उद्योग बनता जा रहा
खून से लथपथ हुआ अखबार है।

झूठ, छल का चल रहा व्यापार है
नेक-नीयती पर करारी मार है
दल बदलुओं को यहाँ गद्दी मिले
उन्हीं के दम पर चले सरकार है।

आजकल लादेन का ही शोर है
हर तरफ आतंक बल का जोर है
विश्व का सरपंच भी घायल हुआ
बहुत लम्बी साजिशों की डोर है।

हम अहिंसा के पुजारी हैं भले
नेत्र शिव का तीसरा लेकर चले
भस्म कर देंगे निशाचर-सभ्यता
हैं बुलंदी पर हमारे हौंसले।

✷

रहिमन राज सराहिये, शशि सम सुखद जो होय।
कहा बापुरो भानु है, तप्यौ तरैयन खोय।।

गुटका खाओ इनाम पाओ

– गौरव शुक्ल, सप्तम 'ख'

खुशखबरी ! खुशखबरी ! खुशखबरी !

आकर्षक इनामी योजना

प्रथम पुरस्कार	–	गले हुए गाल
द्वितीय पुरस्कार	–	कैंसर
तृतीय पुरस्कार	–	आँतों में छेद
चतुर्थ पुरस्कार	–	छोटा मुँह
पंचम पुरस्कार	–	खराब दाँत
षष्ठ पुरस्कार	–	गैस व कब्ज
सांत्वना पुरस्कार	–	मुँह में छाले
बम्पर पुरस्कार	–	मौत

नोट :–पुरस्कार वितरण श्मशान घाट में होगा, जिसमें मुख्य अतिथि यमराज होंगे जो किसी भी समय पधारकर समारोह की शोभा बढ़ायेंगे। अधिक से अधिक संख्या में पधारने का कष्ट करें। हो सकता है कि बम्पर पुरस्कार आपका ही हो।

हमारा संकल्प

– अनुराग श्रीवास्तव

एकादश 'क'

आज समाज संवेदनाशून्य होता जा रहा है। अहंकार और क्रोध जैसे विकारों का कद बढ़ गया है तथा सच्चाई और अच्छाई उपेक्षित हो रही है। ऐसे कठिन दौर में अनुराग श्रीवास्तव का संकल्प देखें। –संपादक

आज चारों ओर द्वेष, घृणा तथा हिंसक प्रवृत्ति के कारण मानवता कराह रही है। सत्ता–लोलुपों के अविवेकपूर्ण कार्यों से जन–भावनाओं पर कुठाराघात हो रहा है। हम संवेदन शून्य बने रहते हैं। संवेदन–शून्यता की यह परिस्थिति भारतीय समाज के लिए अत्यन्त घातक है। आज हमारे समाज के गिरते हुए मानवीय मूल्यों का यह अवमूल्यन हमें कहीं का नहीं छोड़ेगा। गरीब की गरीबी हमें आज रुलाती नहीं है, आततायी के अत्याचार हमारे हृदय में कँपकँपी पैदा नहीं करते, शोषण, अत्याचार हमें दृढ़ता के साथ विरोध करने के लिए प्रेरित नहीं करते, आँसू तो दूर खून बहता देख भी हमारा दिल नहीं पसीजता है, नैतिक मूल्यों की आस्था हाशिये पर सकपकाई खड़ी है, नैतिकता को वनवास मिल चुका है, साधनों, सुविधाओं, छीना–झपटी, लूट–खसोट की आपाधापी ने मन को ऐसा जमा दिया है कि कोई भी ताप उसे पिघला नहीं सकता।

आइए, हम लोग विचार करें कि हम कहीं अशान्ति की ओर तो नहीं बढ़ रहे हैं। समय को आवश्यकता है कि इन सब घिनौने आचरणों से ऊपर उठकर समाज, प्रदेश और देश के हित में कुछ सार्थक सोचें तथा उसे पूर्ण लगन के साथ क्रियान्वित करें।

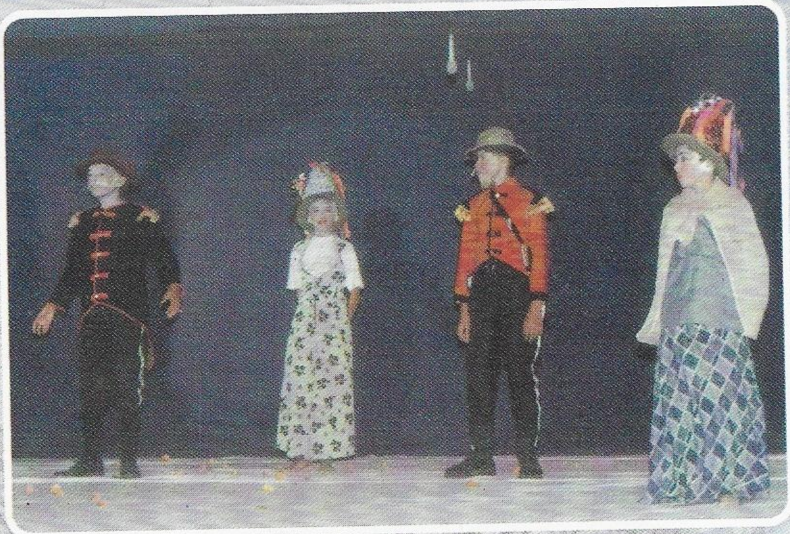

बंगाल विभाजन की भूमिका रखते
हुए लार्ड कर्जन व अन्य
(चि. रणविजय, दिग्विजय, मानस व शिवम)

अंग्रेजों के कहर से पहले
जलियावाला बाग में
आजादी के दीवाने
(चि. अभिजीत, निमिष,
गौरव द्विवेदी व अन्य)

विशाल पात्र संख्या वाले
ओजस्वी नाटक **युगदर्शन**
का पात्र परिचय

रंगमंचीय कार्यक्रमों में मुख्य अतिथि पद्मश्री वचनेश जी, डा. ज्ञान चन्द्र अग्रवाल, मा. श्री वीरेन्द्र जी, पं. रामबालक मिश्र व प्रधानाचार्य जी।

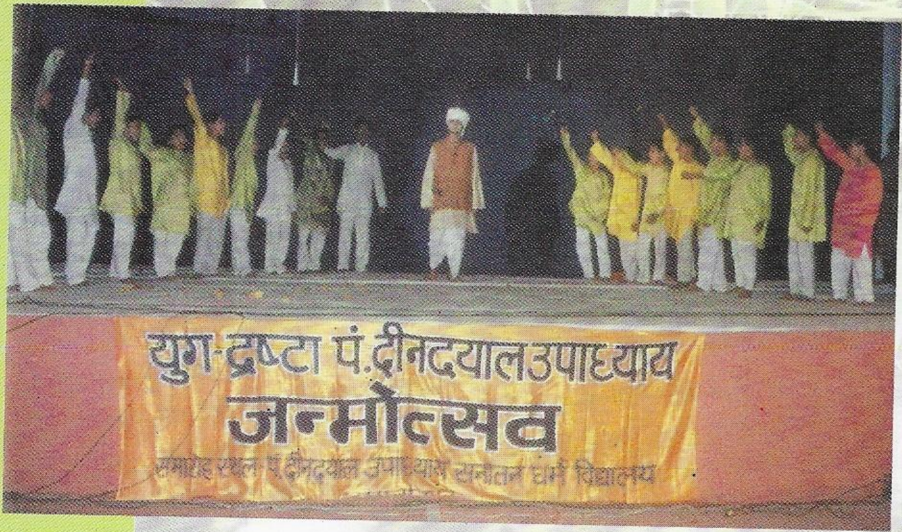

नाटक युगदर्शन में साइमन कमीशन का विरोध करते हुए लाला लाजपत राय (चि. अंकुर गुप्त)

वन्दे मातरम् गाते बंकिम चन्द्र चटर्जी और आजादी के दीवाने (चि. निमिष दास व साथी)

वैज्ञानिकस्य चमत्कारः

— संकल्प त्रिवेदी
नवम 'क'

वर्तमान युगः वैज्ञानिकः युगमासीत् ! अद्य विज्ञान प्रक्त्या रहस्ये प्रकाशे आनयति। विज्ञानस्य अनेकाः शाखाः सन्ति। विज्ञान किम् ? विशिष्ट ज्ञानं क्रमबद्ध ज्ञानं वा विज्ञानं च मन्यते। एतेन साहाय्येन मानवः प्रगतिं करोति। अद्यत्वे वयं विज्ञानेन बिना किंचदपि प्रगतिं करोति। अद्यत्वे वयं विज्ञानेन बिना किंचदपि प्रगति च कर्तुमनशक्तुम। अस्माकं जीवनस्य सर्वक्षेत्रेषु विज्ञानव्यापकं वर्तते। भोजने आच्दादाने, गमने शयने किम् बहुना विचारस्यापि क्षेत्रे विज्ञानमेव दृश्यते। वैज्ञानिकैः अन्वेष्णैः अस्माकं जीवनं सरलं आरामदायकं च भवति।

वर्तमान युगे विज्ञानेन अनेकाः आविष्काराः कृताः येन जीवनं सुविधापूर्णं जातः। वाष्पशटिका, मोटरः, वायुयान, जलयान, हैलीकौप्टरादीनानम् आविष्कारेण दूरतमानि अपि स्थानानि समीपस्यानि इव जातानि। अदानीम् वयं विज्ञानप्रसादेनैव धूम्रयानेन स्थले वेगेन। गच्छामः। पोतेन नः समुद्राश्च तरामः वायुयानेन आकाशे स्वच्छन्दं भ्रमामश्च। विज्ञानेन समस्ता विस्तृता पृथ्वी संचार माध्यमेन, यातायात माध्यमेन एवं नगरं इव निर्मितास्ति। अस्य प्रभावेन मानवेन चन्द्रलोकोऽपि प्रत्यक्षीकृतः।

विद्युतदाविष्कारेण तु महादश्चर्य कृतम्। विद्युतदीनेप घोरे अन्धकारे दैदीप्यमानः प्रकाशः भवति। उद्योगशलासु महान्ति यन्त्राणिअनयैव परिचाालयन्ते। ज्ञानप्रसारेऽपि विज्ञानेन महत् सहायतां कृतम्। मुद्रण यन्त्राणां आविष्कारेण दुर्लभानां ग्रन्थानाम् प्रकाशान अल्पव्ययेन च भवति। येन जनाः सरलतया ज्ञानं लभन्ते। मनोरंजन क्षेत्रे अपि विज्ञान दृष्यते। दूदरदर्शनम् माध्यमेन वयं दूरस्थामपि दृश्यं सम्मुखं स्थितमिव यन्त्रे पश्यमः। एतस्य साहाय्येन नेतृणां दूरदेशे दत्तानि भाषणानि, देरदेश घटिताः घटनाश्च प्रतिदिनं प्रत्यक्षमिव दृश्यन्ते। कम्प्यूटर नामकेन यन्त्रेण गणितस्य टंकणस्य अनेको कार्याणि भवन्ति। रोबोट नामकः यन्त्रमानवः अनुशासन बद्ध आज्ञापितं सर्वं कार्य कर्तु समर्थः।

चिकित्सा क्षेत्रे तु विज्ञानस्य साफल्यं दृष्ट्वा आश्चर्यम भवति। अनेकेषां रोगाणाम् इदानीम् नामापि नास्ति प्रायशः सर्वेषामपि अङगानां परिवर्तन शल्य चिकित्सकैः क्रियते। वस्त्राणां निर्माणमपि विज्ञानेन कृतम्। अल्पव्ययेन, अल्पपरिश्रमेण च मनोहराणि सुख प्रदानि च वस्त्राणि निर्मीयन्ते।

विज्ञानेन अनेकाः हानयश्च जातः। जनाः सौहार्दम् विहाय स्वार्थिका जाताः। अनेकेघा भयंकीणाम् आयुधानां निर्माणेन मानवजीवनस्य अस्तित्वं विषयेऽपि शंका भवति। जना अलस। जाताः।

यत् किमपि भवेत विज्ञानेन अधुना तत्कृतम् यत् अस्माकं पूर्वजानां विचारेऽपि नासीत वयंतु एवं कथयामः

इत्यं विज्ञानं कार्याणां दिङमात्रमिह दर्शितम्।
विस्तरन्तु यथा क्षेत्रं दृश्यतां सार्वलौकिकम्।

सदाचारः एव जीवनः

– संजीव कुमार शुक्ल
सप्तम 'ख'

सदाचारस्य अर्थः यत् "सत्+आचारः"। सदाचारःएव जीवनः। सदाचारस्य जीवने अति प्रयोगः एवं बिना जनः महापुरुषः न भवति। संकट काले सदाचारः एव रक्षयति। यः सदाचारं त्यजति सः शीघ्रं नश्यति। आचारः एव सर्वोत्तमं धनम्। आचारः एवं धर्मः। यः आचारः परहिताय अस्ति सः एव सदाचारः। यः आचारः परपीडाय अस्ति, सः सदाचारः नास्ति।

"अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचन द्वयम्।
परोपकारः पुण्याय, पापाय पर पीडनम्।।

चरित्रैव सः गुणः यः अस्मान् पशोः स्तरेषा उपरि आनयति। चरित्रम एवं मानवस्य आभूषणम्।

"हस्तस्य भूषणं दानं, सत्यं कण्ठस्य भूषणं।
श्रोतस्य भूषणं शास्त्रम्, भूषणैः किं प्रयोजनं।।

सः एवं पुरुषः धन्यः यः सदाचारी, चरित्रवान् च अस्ति। यः मधुराणि वचनानि वदति सः महापुरुषः अस्ति।

"मुखं धन्यं दतेवास्ति, वदति मधुरं सदा।
क्लेशान् हरति दीनानाम, वचनैः रसपूरितैः।।

संसर्गजाः दोष गुणाः भवन्ति। सत्सङ बिना विवेकः न भवति। चरित्र निर्माणे सत्संगत्या अतिमहत्त्वं अस्ति। चरित्र विहीनः मानवः पशुभ्यः अपि निम्नतरः अस्ति। आचारः परमोधर्मः।

"दुराचारो हि पुरुषः, लोके भवति निन्दितः।
दुःख भागी च सततम्, व्याधितोऽल्पायुः एव च।।

हास्य कणिका

– पारस गुप्त
एकादश 'क'

१. जुगुल किशोर – मित्र ! बहुवर्षेभ्यः मम श्वस्नः आवाभ्यां सह निवसति। बहु व्यवधानं करोति। 'इदं मा कुरु' तथा व्यवहर इति वचनानि श्रुत्वा मम तु जीवनाम् एवं व्यर्थता गच्छति अति खिन्नो अहमस्मि।
मित्रम् – अत्र भवतः दोषं पश्यानि। किमर्थं। तां गृहात गन्तु न कथयति?
जुगुल किशोर – तथा वक्तुं कथं शक्नोमि ? अहं स्वपत्न्या सह एवं गृहे निवसामि।

२. अध्यापक – रमेश वृष्टेः लाभद्वयं कथयतु ?
रमेश – श्रीमन्, यदा वृष्टि भवति तदां एकं तु, विद्यालयेऽवकाशोभवति, द्वितीयो लाभोऽयं यद् गृहे माता किंच द्विशिष्ट व्यंजनं पचति।

३. अध्यापकं –सुरेश ! आम्रफलं कदा प्राप्यते खलु ?
सुरेशः – यदा उद्यानरक्षकः तत्र न भवति।

(हास्य कविता)

बंदर और कलंदर

– भारद्वाज विवेक़
सप्तम 'ख'

सड़क किनारे एक कलंदर,
नचा रहा था अपना बंदर।
बोला मैं हूँ मस्त कलंदर,
अब देखो मेरा यह बंदर,
फौरन ही होगा छू–मंतर।
जंतर–मंतर कला–कलंदर,
हरा समंदर गोपी चंदर,
तू है मेरा वीर सिकंदर।
उड़ जा और पहुँच जालंधर।
हनुमान–सा बली धुरंधर।

बंदर बोला – सुनो कलंदर,
माना, मैं हूँ वीर सिकंदर,
हनूमान–सा बली धुरंधर,
पर कैसे पहुँचूँ जालंधर ?
रोटी नहीं पेट के अन्दर।
भरे पेट का जादू मंतर,
खा लूँ यदि दो–चार चुकंदर,
बन जाऊँगा मूँछ–मुछंदर
हो जाऊँगा मैं छू–मंतर।

✱

परिहास

मिठाई भरा पत्र

– शुभंकर रंजन
सप्तम 'ख'

आदरणीय, रसगुल्ला चाचा और जलेबी चाची,

मेरा रस भरा प्रणाम।

मैं यहाँ सकुशल हूँ और आशा है कि आपके ऊपर भी मक्खियाँ भिनभिनाया करती होंगी। आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि मेरी बड़ी बहन बर्फी की शादी लड्डू नगर के प्रसिद्ध मक्खन लाल पेड़ा प्रसाद के सुपुत्र खीर मोहन के भान्जे गुलाबजामुन के साथ होनी निश्चित हुई है। दही–बड़े फूफा और कचौड़ीमल मामाजी को भी निमन्त्रण दे दीजिएगा। समोसे भैया और पापड़ी भाभी को लाना न भूलना। आशा ही नहीं पूरा विश्वास है कि आप लोग उपस्थित होकर वातावरण को चिपचिपा बनाने में सहयोग करेंगे।

आपकी आज्ञाकारिणी भतीजी
इमरती बानो

"विद्याधनं सर्व धनं प्रधानम्"

– तरुण कुमार
सप्तम 'ख'

परमेश्वरेण जगति समुत्पादितेषु विद्यैव सर्वश्रेष्ठं द्रव्यम्। ज्ञानेन बिना यथा पशुः धर्माधर्मयोर्विचारं कर्तुं न शक्नोति तथैव मानवेऽवि विद्यया विहीनः पाप पुण्ययोः कर्तव्य–अकर्तव्योकिर्वचारं कर्तुं न पारयति। विद्याविहीनां मानवोऽन्धः एवं कश्यते।

विद्या धनस्य विशेषता इदमस्ति सत् धनं न कनापि योरयितुं शक्येत। क्रूरोऽपि कोऽपि नरपातिः विद्याधनं हर्तुं न प्रभवति। कोऽपि विद्वान् पण्डितः राजाज्ञया विद्याविहीनः कर्तुम शक्येत। नापिविद्याधनं भ्रातृ भाज्यं भवति। यथा –

न चौरहार्यं न च राजहार्यं,
न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि।
व्यये कृते वर्धत एव नित्यं,
विद्याध्नं सर्वधनं प्रधानम्।।

विद्या विनयं ददाति, विनयेन मानवः पात्रतांयाति,
पात्रत्पात् धनमाप्नोति दतन्तरं सुखं प्राप्नोति।

यथा –

विद्या ददाति विनयं विनयाद् यादि पात्रताम्।
पात्रत्पाद् धनमाप्नोति धनात् धर्मः ततः सुखम्।।

✲

ऐसो को उदार जग माहीं,

बिनु सेवा जो द्रवै दीन पर राम सरिस कोउ नाहीं।।
जो गति जोग विराग जतन करि नहिं पावत मुनि ज्ञानी।।
सो गति देत गधि सबरी कहँ प्रभु न बहुत जिय जानी।।
जो संपति दससीस अपरि करि रावन सिव पहुँ लीन्ही।।
सो संपदा विभीषन कहँ अति सकुच सहित हरि दीन्ही।।
तुलसीदास सब भाँति सकल सुख जो चाहसि मन मेरो।।
तौ भजु राम काम सब पूरन करै कृपानिधि तेरो।।

– संत कवि तुलसी दास

विद्यार्थी जीवनम्

– अंकित झा
नवम 'क'

अस्माकं पूवर्जाः मानवाः मानव जीवनं चतुर्षु भागेषु विभाजितम् अकुर्वन – ब्रह्मचर्यः, गृहस्थः, वानप्रस्थः, सन्यासश्च।

ब्रह्मचर्याश्रमे बालकाः गुरो। समीपे विद्यायाः अध्ययनं कुर्वन्ति। स् एवं कालः विद्यार्थी जीवनं कथ्यते। विद्यार्थी जीवनम् अति सुन्दरं भवति। अस्मिन् जीवने लवणस्य तैलस्य चिन्ता न भवति नापि स्व पालन–पोषणयोः।

प्राचीनकाले विद्यार्थी गुरोः समीपं गत्वा अति सेवां कृत्वा विद्याध्ययनं करोति स्म। गुरवः तं स्व–पुत्रवत् अपालयन्। तस्मै च निःशुल्कं शिक्षां ददाति स्म। छात्राः अपि अति कष्टम् अनुभूय विद्योपाच।नं कृतवन्तः। ते विद्यार्थिनः सदा गर्वशून्याः बाह्याडम्बर पूर्ण मस्ति। ते यथा कथंचित् परीक्षां समुत्तीर्य कुत्राऽपि भृत्य पदं प्राप्य उदरपूरणाय स्व–अध्ययनस्य कृतार्थतां मन्यन्ते।

आधुनिक विद्यार्थी जीवने संशोधनम् आवश्यकम् अस्ति। विद्यार्थिनः गुरुभक्ताः भवेयुः, बाह्याडम्बर रहिताः च स्युः स्व–विषयं दत्तावधानं पठेयुः। यदा शरीर सुखं परित्यज्य विद्याध्ययनं करिष्यन्ति तर्हि नूनमेव विद्वांस भविष्यन्ति। यतो हि सुखार्थिमि विद्या दुष्प्राप्या तथा चोक्तम् –

सुखार्थिनः कुतो विद्या विद्यार्थिनः कुतः सुखम्।
सुखार्थीवात्यजेद् विद्यां विद्यार्थीवा त्यजेत सुखम।।

यदा विद्यार्थिनः सद्विधाम् अधीत्य, सद्विद्यायाः आचरणं कृत्वा सद्विद्या मेवालम्ब्य स्वस्य स्वपरिवारस्य, समाजस्य, राष्ट्रस्य, विश्वस्य च कल्याणकराः भवेयुः, तदेव तेषां विद्यार्थी जीवनम् आदर्शभूतं, सफलं च भविष्यति।

✳

निर्बल के बलराम

जाऊँ कहाँ तजि चरन तुम्हारे ?
काको नाम पतित पावन जग? केहि अति दीन पियारे ?
कौन देव बराय बिरद्–हित हठि–हठि अधम उधारे।
खग, मृग, ब्याध, पखान, बिटप जड़ जवन कवन सुत तारे ?
देव, दनुज, मुनि, नाग, मनुज भव माया बिबस विचारे।
तिनके हाथ दास तुलसी प्रभु कहा अपनपौ हारे ?

– तुलसीदास

जो मिटा दे धरा का अँधेरा

– अभय सिंह
सप्तम 'क'

जो मिटा दे धरा का अँधेरा,
सबसे सुन्दर सितारा वही है।।
देश भारत को जो फिर जगा दे,
भारती का दुलारा वही है।।
क्रांति कश्मीर पंजाब में है,
राष्ट्र हर क्षेत्र में सनसनी है।।
ध्वंसकारी प्रलय की समस्या,
आज जन–जन के घर में बसी है।।
रोक ले जो कठिन इस प्रलय को,
राष्ट्र रक्षक हमारा वही है।।१।।

जो मिटा दे धरा का अँधेरा,
सबसे सुन्दर सितारा वही है।।
धर्म–ध्वज, धर्म की आड़ लेकर,
खेलते रक्त की आज होली।।
जो कि पोषक बने थे हमारे,
आज दागे हैं सीने पे गोली।।
ये जो विप्लव घटा को हटा दे,
कोटि जन–जन को प्यारा वही है।।२।।

जो मिटा दे धरा का अँधेरा,
सबसे सुन्दर सितारा वही है।।

✵

परिश्रम ही सफलता की कुंजी है

– सुयश मधुर
अष्टम 'क'

इस कविता की प्रत्येक पंक्ति के पहले अक्षर को मिलाकर यदि पढ़ें तो मिलेगा कि "परिश्रम ही सफलता की कुंजी है। **– संपादक**

परिश्रम

प – पहले जाग हाथ मुँह धोओ
रि – रिश्ता सुबह नींद से तोड़ो
श्र – श्रम की पारस मणि से अपना
म – महलों का संसार बनाओ

ही – हीन भावना छोड़ – छाड़कर

सफलता –

स – सदा सत्य का पथ अपनाओ
फ – फल की इच्छा कभी न लाओ
ल – लगन लगाकर काम करो तुम
ता – तारा बन नभ पर छा जाओ

की – कीर्ति बढ़ेगी सदा तुम्हारी

कुञ्जी –

कु – कुकर्मों को छोड़–छाड़कर
न् – न्याय पाठ सिखलाओ जग को
जी – जियो और जीने दो सबको

है – है जीवन का सार इसी में
तन–मन–धन संसार इसी से।

✵

संस्कृत में व्यवहार के शब्द

— संजीव कुमार शुक्ल
सप्तम 'ख'

	अँग्रेजी शब्द		संस्कृत शब्द
१.	गुड मार्निंग	१.	सुप्रभातम्
२.	हेलो ! हाऊ आर यू ?	२.	कथय कुशलम्
३.	क्वाइट वेल	३.	सर्व कुशलम्
४.	ओ. के.	४.	युक्तम्
५.	सॉरी	५.	कष्टम्
६.	एक्सक्यूज मी	६.	क्षमस्वमे
७.	टा.टा	७.	मंगलम्
८.	गुडबाय	८.	शुभम्
६.	गुडनाइट	६.	शुभ–रात्रि
१०.	सर !	१०.	श्रीमन्
११.	यस सर	११.	आम् श्रीमन्

देनहार कोउ और है

अकबर के दरबारी कवि 'गंग' के एक छन्द पर प्रसन्न होकर कविवर रहीम ने गंग को ३६ लाख रुपये दे दिये थे।

इस दानशीलता पर मुग्ध तथा कृतज्ञ होकर गंग ने तुरन्त यह दोहा कहा –

"सीखे कहाँ नवाब जू, ऐसी देनी दैन
ज्यों ज्यों कर ऊँचे उठै, त्यों त्यो नीचे नैन। — *गंग*

रहीम बड़े प्रातिभ थे। उन्होंने तत्क्षण गंग को एक दोहे में जवाब दिया –

देनहार कोउ और है, भेजत है दिन–रैन
लोग भरम हम पै धरैं, याते नीचे नैन।। — *रहीम*

रहीम प्रकृत्या बड़े दानी थे। कहा जाता है कि वे वर्ष में एक दिन अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति दान कर देते थे।

अपना - अपना भाग्य

भग्नाशस्य करण्ड पिण्डित तनो म्लानेन्द्रियस्य क्षुधा
कृत्वाऽऽखुर्विवरं स्वयं निपतितोनक्तं मुखे भोगिनः।
तृप्तः तप्पिशितेन सत्वरमसौ तेनैव यातः पथः
लोकाः पश्यतः दैवमेव हि नृणां वृद्धौक्षये कारणम्।।

आशय – हे मनुष्यों ! देखो, चूहा रात में छिद्र करके निराश, पिटारी में पिण्डीभूत शरीर वाले, भूख से शिथिल इन्द्रियों वाले सर्प के मुख में स्वयं गिर गया। वह सर्प चूहे के मांस से तृप्त होता हुआ उसी मार्ग से शीघ्र निकल गया। इसलिये निश्चित रूप से भाग्य ही मनुष्य के उत्कर्ष और अपकर्ष का कारण होता है।

खल्लवाटो दिवसेश्वरस्य किरणैः संताडितो मस्तके
वाञ्छन् देशमनातपं विधिवशात्तालस्य मूलं गतः।
तत्राप्यस्य महाफलेन पततः भग्नं सशब्दं शिरः
प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितस्तत्रैच यान्त्यापदः।।

आशय – सिर पर सूर्य की किरणों से आहत हुआ एक खल्वाट (गंजा) व्यक्ति छाया वाले स्थान को ढूँढ़ता हुआ संयोग से ताड़ वृक्ष के नीचे पहुँच गया। वहाँ भी एक भारी फल के गिरने से उसका मस्तक आवाज के साथ फट गया। सुस्पष्ट है कि भाग्यहीन व्यक्ति जहाँ जाता है, प्रायः विपत्तियाँ भी वहीं पहुँच जाती हैं।

मृग मीन सज्जानां तृण जल संतोष विहित वृत्तीनाम्।
लुब्धक धीवर पिशुना निष्कारण बैरिणो जगत्।।

आशय – संसार में व्याध, धीवर और दुर्जन – घास, पानी तथा संतोष वृत्ति से स्वजीवन यापन करने वाले क्रमशः हरिण, मछली और सज्जनों के अकारण शत्रु होते हैं।

✵

हरणं च परस्वानां परदाराभिमर्शनम्।
सुहृदश्च परित्यागस्त्रयो दोषाःक्षयावहाः।।

आशय – दूसरों के धन का हरण, दूसरे की स्त्री का संसर्ग तथा सुहृद् मित्र का परित्याग – ये तीनों ही दोष मनुष्य का नाश करने वाले हैं।

मत्तं प्रमत्तं उन्मत्तं, सुप्तं बालं जडं स्त्रियम्।
प्रपन्नं विरथं भीतं, न रिपुं हन्ति धर्मवित्।।

आशय – मतवाले विशेष मतवाले, पागल, सोये हुए बालक, मूर्ख स्त्री, शरणागत, रथरहित, भयभीत शत्रु को धर्मज्ञ नहीं मारते हैं।

पं. दीन दयाल उपाध्याय निबन्ध प्रतियोगिता 2004

परिणाम

बाल वर्ग

नाम	कक्षा	स्थान
१. अभिषेक शुक्ल	अष्टम 'क'	प्रथम स्थान
२. आलोक शुक्ल	अष्टम 'क'	द्वितीय स्थान
३. रणविजय	अष्टम 'क'	तृतीय स्थान

किशोर वर्ग

नाम	कक्षा	स्थान
१. रोहित ओमर	दशम 'क'	प्रथम स्थान
२. दिव्यांशु त्रिपाठी	नवम 'ग'	द्वितीय स्थान
३. मृत्युंजय कटियार	नवम 'क'	तृतीय स्थान

तरुण वर्ग

नाम	कक्षा	स्थान
१. प्रशान्त अवस्थी	द्वादश 'क'	प्रथम स्थान
२. शान्तनु गुप्त	द्वादश 'ख'	द्वितीय स्थान
३. अभिनन्दन तिवारी	द्वादश 'ख'	तृतीय स्थान

विजय

कभी नहीं जो तज सकते हैं, अपना न्योचित अधिकार।
कभी नहीं जो सह सकते हैं, शीश नवाकर अत्याचार।
एक अकेले हों या उनके, साथ खड़ी हो भारी भीड़।
मैं हूँ उनके साथ खड़ी, जो सीधी रखते अपनी रीढ़।।

पं० दीनदयाल उपाध्याय स्मारक निबंध प्रतियोगिता में बाल वर्ग में प्रथम स्थान

पं० दीनदयाल उपाध्याय : एक संघर्षपूर्ण जीवन यात्रा

– **अभिषेक शुक्ल**
अष्टम 'क'

पथ पर चलते–चलते ही वह, राह बन गया
तिल–तिल कर जलते–जलते ही, दाह बन गया
कैसा था वह भक्त स्वयं, भगवान बन गया ?
कुंभकार की कृति होकर, निर्माण बन गया।

दीनदयाल : एक ऐसा नाम जिसका स्मरण आते ही हृदय की वीणा के तार झंकृत हो उठते हैं, आँखों में तेज भर आता है, मन विह्वल हो जाता है और अन्तरात्मा हिल जाती है।

नेतृत्व के अगणित गुणों के धनी। जिनके एक इशारे पर हजारों सहयोगी अपने प्राण तक न्योछावर करने के लिए तैयार हो जाते थे – ऐसा दैदीप्यमान व प्रेरणादायक व्यक्तित्व था – पं० दीन दयाल जी का। ऐसे व्यक्ति जिसने उनको एक बार देखा या उनकी वाणी सुनी बस उनका हो गया। पं० दीनदयाल जी ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन देशमाता की सेवा में व्यतीत कर दिया। वे एक ऐसे दैदीप्यमान सूर्य के समान थे, जिन्होंने अपने तेज से, अपनी साधना के तप से, अपने आचरण से देश की सुप्त जनता को अंधकार से प्रकाश की ओर आकर्षित किया।

मोहतम में पड़े, भारत को उठाया
घोष 'पाञ्चजन्य' का उसको सुनाया
जटिल उलझी विचारों की वीथिका में
सम्हल कर बैठा सदा गुरू पीठिका में।

दीनदयाल जी ने अपने नाम को यथार्थ सिद्ध किया। वे अपने बारे में अत्यधिक सोचते थे। समानता, समरसता, कर्मठता, ज्ञानवत्ता सहिष्णुता आदि गुणों से युक्त होने पर भी उनमें कभी अहं भाव उत्पन्न नहीं हुआ। उनका व्यवहार अत्यंत सरल और विचार उच्च कोटि के थे। उनका अन्तःकरण अत्यंत प्रदीप्त था। उनके ये गुण निम्नलिखित पंक्तियों से परिलक्षित होते हैं –

सादा जीवन, उच्च विचार
नहीं स्वयं का कभी प्रचार।
दीनबंधु थे दीनदयाल
हृदय सिंधु सा बड़ा विशाल।

दीनदयालु तो वे जन्म से ही थे। विधाता ने उन्हें ज़ब अनाथ बना दिया, तो वे कर्मयोगी बन गए। उन्हें विक्षिप्त किया, तो वे समाजसेवी कार्यकर्ता के रूप में सर्वत्यागी संन्यासी बन गए और अन्त में उन्हें लाश की गठरी बनाकर भुलाना चाहा तो वहाँ भी उनकी जीवन–साधना उनकी यशःकाया बनकर कौंध उठी।

आज के युग में ऐसा कुशल संगठन कर्ता, क्रान्तिकारी आर्थिक चिन्तक, महान राजनीतिज्ञ मिलना न केवल दुर्लभ अपितु असंभव सा प्रतीत होता है।

परन्तु इस देश का दुर्भाग्य रहा है कि जब भी कोई सच्चा देशभक्त राष्ट्र दीपक को झंझावातों में भी अडिग होकर सर्वोच्च शिखर पर ले जाने का प्रयास करता है, तो उसे बीच में ही रोक दिया जाता है। उसकी ज्योति बुझा दी जाती है।

बाल्यावस्था में संघर्ष – पं० दीनदयाल जी का जीवन संघर्षों से जूझने वाले उस योद्धा के समान था जो अन्तिम साँस तक रणभूमि में विजय की आशा के लिए लड़ता है।

पं० दीनदयाल जी का जन्म आश्विन मास विक्रम संवत उन्नीस सौ तिहत्तर कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तदनुसार पच्चीस सितंबर उन्नीस सौ सोलह को हुआ।

ऐसे महान व्यक्तित्व को अस्तित्व प्रदान करने वाली उनकी माता का नाम रामप्यारी देवी था। इनके पिता श्री भगवती प्रसाद उपाध्याय जी जलेसर रोड के रेलवे स्टेशन पर स्टेशन मास्टर थे। बचपन में इनका नाम दीनदयाल रखा गया परन्तु लोग उन्हें स्नेह से 'दीना' कहकर पुकारते थे। इनके जन्म के समय सम्पूर्ण विश्व में भारत का, भारत में उत्तर प्रदेश का, उत्तर प्रदेश में मथुरा का और मथुरा में नगलाचन्द्रभान का यश बढ़ा। जब यह दो वर्ष के थे तब माता रामप्यारी ने एक दूसरे पुत्र को जन्म दिया, जिसका नाम शिवदयाल (शिबू) रखा गया।

कहते हैं सोने को गहना बनने से पहले बहुत तपना पड़ता है। ऐसा ही दीनदयाल जी के साथ भी हुआ। भगवान ने इनकी कठिन परीक्षा ली – छोटे भाई के जन्म लेने के एक वर्ष पश्चात् ही इनके पिता की मृत्यु हो गई। दोनों भाइयों के लिए पिता का बिछोह जैसे – जैसे कम होता जा रहा था कि तभी आठ अगस्त उन्नीस सौ चौबीस को वह क्रूर दिन आया जब उनकी माता भी उन दोनों बालकों को अनाथ छोड़कर चल बसीं।

काल किसी के सुख–दुख की चिन्ता नहीं करता जब वह धरती पर अपने चरण रखता है तब धरती रोती है और वह एक न एक को अपने साथे ले जाता है। दोनों बालक माता और पिता के जाने का दुःख बर्दाश्त न कर सके। तब उनके नाना ने दोनों बालकों को उनके मामा के यहाँ रहने की व्यवस्था कराई। पं० दीनदयाल जी ने अपनी पढ़ाई का क्रम सन् उन्नीस सौ पच्चीस से प्रारंभ किया। ''सामान्य परिवार में रहकर असामान्य व्यक्तित्व एवं कृतित्व धारण करना कोई सामान्य कार्य नहीं है।''

कोई चलता पग चिह्नों पर, कोई पग चिह्न बनाता है।
है वही सूरमा इस जग में, जो दुनिया में पूजा जाता है।।

शैक्षिक जीवन में संघर्ष – यहाँ से शुरू होती है पं० दीनदयाल जी के जीवन के संघर्ष की सच्ची कहानी।

मामा राधारमण शुक्ल जी के यहाँ रहकर शिक्षा प्रारंभ करने वाले इस मेधावी बालक ने पाँच मार्च उन्नीस सौ सत्ताईस को कक्षा चतुर्थ में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

उस समय तक गंगापुर में केवल कक्षा चार तक की पढ़ाई होती थी। अतः आगे की पढ़ाई के लिए उन्हें कोटा भेजा गया। वहाँ कक्षा पंचम, षष्ठ, सप्तम में भी वह सर्वप्रथम रहे। कक्षा अष्टम तथा नवम की पढ़ाई उन्होंने राजगढ़ से परीक्षा देते हुए पास की। वहाँ भी वह सर्वप्रथम रहे। पं० दीनदयाल जी इतने मेधावी थे कि जब किसी दशम के छात्र को कोई सवाल नहीं आता तब उनको कक्षा नवम से बुलाया जाता और वह सादर सवाल करके चले जाते थे। उन्होंने सन् उन्नीस चौंतीस में मैट्रिक की परीक्षा सीकर से दी। सम्पूर्ण बोर्ड में उनका प्रथम स्थान रहा। महाराजा सीकर को जब यह ज्ञात हुआ तब उन्होंने दीनदयाल जी को दस रूपए मासिक छात्रवृत्ति, एक स्वर्णपदक तथा प्रारंभ के प्रवेश एवं पुस्तकों आदि के खर्च के लिए दो सौ पचास रुपए प्रदान किए। इसके बाद अजमेर बोर्ड ने भी उन्हें एक स्वर्ण पदक प्रदान किया। दीनदयाल जी ने सन् उन्नीस सौ सैंतीस में इण्टर की परीक्षा बिरला इण्टर कॉलेज से दी। यहाँ भी वह सर्वप्रथम रहे। महाराजा बिरला ने उनको दो सौ पचास रुपए दाखिला करवाने का, एक स्वर्ण पदक तथा दस रुपए मासिक छात्रवृत्ति दी।

दीनदयाल जी की यह विशेषता थी कि उन्होंने इण्टर में गणित में फेल होने वाले छात्रों का एक समूह बनाया। जिसे 'जीरो एसोसिएशन' के नाम से जाना जाता था। इसके अन्तर्गत आने वाले छात्रों को उन्होंने स्वयं पढ़ाया और उन सभी को अच्छे अंक प्राप्त हुए।

दीनदयाल जी का चरित्र एक अनुकरणीय चरित्र था। जब सब सो जाया करते थे तब दीनदयाल जी एक किनारे पर जाकर लालटेन जलाकर पढ़ा करते थे। उन्होंने बी०ए० की परीक्षा कानपुर नवाबगंज स्थित वी०एस०एस०डी० कॉलेज से प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। सन् उन्नीस सौ सैंतीस से उनका सम्पर्क राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से हुआ।

एम० ए० का प्रथम वर्ष उन्होंने आगरा के सेण्ट जॉन्स कॉलेज से अंग्रेजी साहित्य में किया। एम०ए० का द्वितीय वर्ष वह न कर सके क्योंकि उनकी बहन (सगी नही) का स्वास्थ्य खराब हो जाने के कारण उनकी सेवा हेतु दीनदयाल जी को पहाड़ों पर जाना पड़ा।

राजनीति में संघर्ष – राष्ट्र मन्दिर के इस पुजारी ने अपने आप को माँ के चरणों में अर्पित कर दिया। दीनदयाल जी ने जनसंघ के महामंत्री पद रहते हुए जनजागरण का कार्य प्रारंभ किया। कालीकट का अधिवेशन उनके संगठन कर्ता के गुण को दर्शाता है।

पं० दीनदयाल जी ने राष्ट्रधर्म (मासिक), तरुण भारत, स्वदेश प्रेम, पाञ्चजन्य (साप्ताहिक) आदि समाचार पत्रों का सम्पादन कर लोगों में जागृति की लहर पैदा की। उन्होंने समाज को चरैवेति–चरैवेति नामक मंत्र दिया।

उनके द्वारा लिखित शंकराचार्य तथा चन्द्रगुप्त पुस्तकें जहाँ हमारी वैभवशाली सांस्कृतिक चेतना को व्यक्त करती हैं, वहीं दूसरी ओर भारतीय राजनीति एवं विकास की दिशा नाम पुस्तक उनके अर्थनीति को दर्शाती है।

पं० दीनदयाल जी ने संघ के प्रचारक के रूप में भी भारतवासियों को जगाया। लखीमपुर के प्रचारक होने पर उन्होंने प्राध्यापक का पद लेने से मना कर दिया जो उनके निःस्वार्थ सेवा का परिचायक था।

पं० दीनदयाल जी ने एकात्म मानववाद को प्रतिपादित किया। एकात्म मानववाद किसी व्यक्ति के भौतिक, मानसिक और आध्यात्मिक पहलुओं का एकात्म विकास प्राप्त करने की कोशिश है। देश को उनका यह बहुमूल्य उपहार है। उन्होंने खुद को इस विचार के प्रति पूरी तरह से अर्पित कर दिया।

एकात्म मानववाद कोई एक नारे के रूप में विकसित नहीं किया गया था। यह कोई ऐसा नारा नहीं था कि धन और धरती बँटके रहेगी या कमाने वाला खाएगा आदि। यह तो समूचे मानव समाज का एकात्म रूप में दर्शन करने का एक अभिनव प्रयास है।

शरीर के किसी एक अंग का आवश्यकता से अधिक विकास पूरे शरीर का विकास रोक देता है। इसी तरह समाज का कोई वर्ग अगर कष्ट भोगता है और कमजोर रहता है तो सामाजिक विकास असंभव है। इसलिए सबसे पहले कमजोर को मदद मिलनी चाहिए। दीनदयाल जी का आर्थिक दर्शन समाज–जीवन के इस पहलू पर ही केन्द्रित था।

पं० दीनदयाल जी ने राजनीतिक विरोधी दल के कार्यकर्ता के नाते शासनारूढ़ दल के अनेक कार्यों पर, उनकी नीतियों पर उन्होंने टीका–टिप्पणी की है। परन्तु उनके लेखों को हम सहृदयता से देखेंगे तो दिखाई देगा कि टीका टिप्पणी करते समय भी उनके समूचे हृदय में किसी दल और किसी व्यक्ति के प्रति अनादर की और दूरता की भावना नहीं थी।

अखंड कर्मसाधक के रूप में वे अहर्निश प्रवास में रहते थे और उसी तपश्चर्या के, पुण्य फल के रूप में भारतीय जनसंघ का विस्तार भारत के कोने–कोने में संभव हो सका।

उनकी कर्मठता एवं सरलता – कार्यकर्ताओं मे घुल–मिल जाना, उन्हें पहली नजर में ही अपना बना लेना– कोई उनसे सीखे। इन्हीं गुणों से अभिभूत होकर ही तो श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने कहा था कि,

"मुझे दो दीनदयाल मिल जाएँ
तो मैं देश का नक्शा बदल दूँ।"

उनका इतना सरल स्वभाव था कि जिसको हम स्थितिप्रज्ञ कह सकते हैं। वे ऐसे व्यक्ति थे जिनको कहते हैं कि,

विद्याय कामाय न सर्वाणि निस्वयेः।
निर्मोह, निरहंकार सः शान्ति गच्छति।।

जिनको किसी प्रकार की व्यक्तिगत इच्छा नहीं, मान–अपमान की कोई चिंता नहीं और अपना जो कुछ भी कार्य है सो करते रहना।

पश्चिम की तो बात ही क्या थी रात के डेढ़ बजे भी सम्पादकीय लिखते मिल जाते तो कभी स्वयं मशीन

पर खड़े होकर कर्मचारियों की सहायता करते हुए और कुछ भी कहने पर वही मन्द–मन्द मुस्कान आखिर किसका मन न हर ले।

उनके विचार – पं० दीनदयाल जी का कहना था स्वाध्याय का अर्थ होता है 'स्व' 'अध्याय' अर्थात अपने बारे में अध्यापन। उन्होंने कहा कि शिक्षा को किसी भी प्रकार से गृहण करना चाहिए। वे कहते थे कि,

"स्वदेशी को युगानुकूल और विदेशी को
स्वेदशानुकूल बनाकर ग्रहण करना चाहिए।

मृत्यु – फिर रक्त–रंजिता हुई दिशा
दिन में ही छायी निविड़ निशा
कैसा यह वज्र–निपात हुआ ?
वह चला छोड़कर कौन साथ ?
हम लगते हैं, जैसे अनाथ,
कैसा आकस्मिक घात हुआ।

ग्यारह फरवरी उन्नीस सौ अड़सठ को वह क्रूर दिन आया जब मुगलसराय रेलवे स्टेशन पर उनकी हत्या कर दी गई। दीपक बुझा दिया लेकिन यह दीपक न केवल उजाला कर गया अपितु एक नहीं अनेक दीपक जला गया।

किन्तु यह अभागा देश आज तक उस अजातशत्रु के हत्यारों को दण्ड न दे सका – जिसकी कसक आज भी सच्चे देशभक्तों के हृदय में है।

फिर पड़ा काल का क्रूर हाथ, तुम चिरनिंद्रा में लीन हुए।
किस वज्र हृदय से सहन करें, आश्चर्य, क्षुब्ध श्रीहीन हुए।।

समाहार :–

मन समर्पित, तन समर्पित
और यह जीवन समर्पित।
चाहता हूँ इस देश की
धरती तुझे कुछ और भी दूँ।।

ऐसा लगता है कि ये पंक्तियाँ मानो पं० दीनदयाल जी के लिए ही लिखी गई हों। तन, मन, धन सब कुछ माँ के चरणों में अर्पित कर दिया फिर भी मानो यही कहना चाहते हैं कि,

"माँ तुम्हारा ऋण बहुत है
मैं अकिंचन।

ऐसा निःस्वार्थ त्याग, बलिदान की ऐसी भावना, सादगी में बसा ऐसा हृदय अन्यत्र मिलना काफी मुश्किल है।

"दीपक चाहे छोटा हो या बड़ा। सूर्य जब अपना आलोकवाही कर्त्तव्य उसे सौंपकर चुपचाप डूब जाता है। तब जल उठना ही उसके अस्तित्व की शपथ है और वही उसका जाने वाले को प्रणाम है।"

तुम यती, तपस्वी, कर्मवती, वैरागी – त्यागी आप्तकाम ।
हे युगद्रष्टा ! हे युगनिर्माता ! स्वीकार करो युग का प्रणाम।।

✷

पं0 दीनदयाल उपाध्याय स्मारक निबंध प्रतियोगिता में तरुण वर्ग में प्रथम स्थान

एकात्म मानववाद : एक परिपूर्ण जीवन दर्शन

– प्रशान्त अवस्थी
द्वादश 'क'

व्यामोह के युग का दमन कर कृतयुग का उद्घोष करने वाले महामनीषी, युगद्रष्टा पं० दीनदयाल उपाध्याय के कालजयी चिन्तन से उपजी एकात्म मानववाद की अवधारणा एक समस्त जीवन दर्शन का सार है।

पं० दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रणीत एकात्ममानववाद किसी एक विशेष राजनीतिक नारे के रूप में नहीं बँधा है, वरन् यह मानव एवं मानव समाज की मूल प्रकृति पर आधारित एक समग्र जीवन दर्शन है। पं० दीनदयाल जी के मौलिक चिन्तन के दर्पण में इस जीवन दर्शन की झलक देखी जा सकती है। पं० जी के शब्दों में –

"हम एकात्ममानववाद के पुजारी हैं।"

एकात्ममानवाद की कालजयी संकल्पना – पं० दीनदयाल जी का चिन्तन मानव समाज को एक भिन्न नजरिए से देखता है। यह चिन्तन पाश्चात्य दर्शन से उपजी मानसिकता में परिवर्तन का पक्षधर है। पं० जी द्वारा प्रतिपादित एकात्म मानवदर्शन की व्याख्या कुछ इस प्रकार की जा सकती है–

पाश्चात्य दर्शन से इतर एक सनातन संकल्पना – पश्चिम में इकाइयों, संस्थाओं और कल्पनाओं का विचार पृथक–पृथक आधार पर किया गया। व्यक्ति का व्यक्ति के नाते, परिवार का परिवार के नाते, समाज का समाज के नाते तथा मानवता का मानवता के नाते वहाँ विचार किया गया। परन्तु इन सबमें कुछ सम्बन्ध है, इसका विचार नही किया गया। व्यक्ति का विचार करते समय परिवार व समाज के अन्य अवयवों को भुला दिया गया। यही बात परिवार व समाज एवं मानवता के सम्बन्ध में भी हुयी। पश्चिमी प्रकृति है कि वे एक अवयव को देखते हैं। व्यक्ति, परिवार समाज एवं मानवता – यह विचार हमने किया और उन्होंने भी किया परन्तु उनकी रचना में असम्बद्धता दिखाई पड़ती है जबकि हमारे यहाँ दी गयी रचना में एकात्मकता है। पं० जी के शब्दों में –

"अनादि अतीत, अस्थिर वर्तमान एवं चिरन्तन भविष्य की कालजयी सनातन संस्कृति के हम पुजारी हैं।"

जैसे बीज से अंकुर एवं अंकुर से पौधा निकलता है तथा इसमें शाखाएँ, फूल, फल तथा पल्लव निकलते हैं। इन सभी का आकार अलग–अलग है। ऐसा प्रतीत होता है कि ये सभी अराजक स्थिति में हैं परन्तु ये एकात्म हैं। छोटी सी इकाई से लेकर बड़ी इकाई तक इनमें एकात्मकता है। सभी तत्त्व सत्य हैं। यही भारतीय विचार पद्धति है।

एकात्ममानववाद के अनुसार व्यक्ति व समाज की अवधारणा – किसी कालचक्र की भाँति स्वयं को शताब्दियों के आर–पार ले जाने में समर्थ महामनीषी पं० दीनदयाल जी द्वारा प्रतिपादित एकात्म मानव दर्शन, पाश्चात्य दर्शन द्वारा की गयी व्यक्ति की परिभाषा को गलत मानता है। पं० दीनदयाल जी के अनुसार यदि पाश्चात्य दर्शन द्वारा दी गयी व्यक्ति की व्याख्या को अंगीकार किया जाए तो व्यक्ति शारीरिक एषणाओं का पुंज मात्र बनकर रह जाएगा और समाज मनुष्य की दैहिक आवश्यकताओं की पूर्ति का समझौता मात्र।

पं० दीनदयाल जी के अनुसार व्यक्ति केवल शरीर नही है, अपितु व्यक्ति, शरीर, मन, बुद्धि एवं आत्मा का समुच्चय है। व्यक्ति केवल आर्थिक, धार्मिक या राजनैतिक प्राणी नही है वरन् वह समाज रचना का मूल केन्द्र है।

मानव समाज : एक सावयव जीवमान् तत्त्व – मानव समाज क्या है? क्या यह मात्र एक जनसमूह है अथवा कुछ लोगों की एक भीड़ मात्र ? पं० दीनदयाल जी के चिन्तन में मानव समाज एक सावयव जीवमान् तत्त्व

है, इसे हम जड़ में नहीं देख सकते हैं। जिस प्रकार व्यक्ति को हम जीवमान तत्त्व के रूप में देखते हैं उसी प्रकार मानव समाज भी एक गतिमान् एवं जीवमान् संकल्पना है। मानव समाज की अवधारणा में पं० दीनदयाल जी द्वारा दी गयी ''चिति'' की संकल्पना अति महत्त्वपूर्ण है। ''चिति'' ही वह चैतन्य भाव है जो समाज को जीवित रखता है। जिस प्रकार व्यक्ति की आत्मा एक भावात्मक संबोध है उसी प्रकार ''चिति'' भी एक भावात्मक संबोध है जिसे स्थूल रूप में नहीं देखा जा सकता है।

व्यष्टि एवं समष्टि का सम्यक् सम्बन्ध – पं० दीनदयाल जी के शब्दों में –

''जब मनुष्य अपनी आत्मा और विश्वात्मा का अनुभव करता है तो वह स्वभावतः ही संस्कृति की ओर चल पड़ता है।''

इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर पं० दीनदयाल जी ने व्यष्टि और समष्टि के सम्यक् सम्बन्धों की बात कही। पं० दीनदयाल जी के अनुसार व्यष्टि यदि सूक्ष्म है तो समष्टि विराट। व्यष्टि यदि बूँद है तो समष्टि सागर है।

अपने आर्षवचनों की सुधा पिलाकर जनमानस को तृप्त करने वाले युगवेत्ता पं० दीनदयाल जी का एकात्म मानव दर्शन व्यष्टि और समष्टि के सम्बन्धों को स्पष्टतः व्याख्यायित करता है। पं० दीनदयाल जी के चिन्तन में व्यष्टि और समष्टि के मध्य का सम्बन्ध शिक्षा, कर्म, कर्मफल और यज्ञ द्वारा परिभाषित किया जा सकता है।

शिक्षा वह प्रक्रिया है जिससे समाज स्वयं को पुनरूत्पादित करता है, अपने लिए योग्य नागरिक बनाता है। समाज को चाहिए कि वह व्यक्ति को ऐसी शिक्षा दे जिससे व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं का पूरा करने के साथ–साथ समाज के प्रति भी चिन्तनशील बन सके।

पं० दीनदयाल जी कहते हैं कि जब एक शिक्षित नागरिक कर्म करेगा तो उसे कर्मफल प्राप्त होगा और तब व्यक्ति को यज्ञ करना चाहिए। यज्ञ भारतीय संस्कृति का एक तत्त्व है कि हमने समाज से जो लिया उसे वापस करे। यज्ञ का अर्थ है कि हम ऐसा कुछ दान करें जिससे समाज का भण्डारण हो, समाज के स्रोत सूखे नही वरन् शिक्षा, कर्म, कर्मफल के क्रम को समाज सुचारु रूप से चलाता रहे। पं० दीनदयाल जी के शब्दों में –

''जब व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत प्रकृति का विचार न करके समष्टि का ही विचार करता है, व्यक्ति की प्रकृति को समष्टि–प्रकृति अर्थात् समाज विरोधी न मानते हुए चलाता है, तब वास्तव में संस्कृति आती है।''

एकात्म जीवन की महत्ता पर बल – पं० दीनदयाल उपाध्याय जी का एकात्म मानव दर्शन व्यक्ति के व्यक्तित्व के समस्त पहलुओं पर विचार करने का समर्थक है। मनुष्य को मात्र भौतिक प्राणी मानने वाले पाश्चात्य दर्शन के पं० दीनदयाल जी प्रबल विरोधी हैं। पं० दीनदयाल जी के अनुसार भौतिकवादी प्रवृत्ति मनुष्य को लोलुप बनाती है उसका विकास नहीं करती। ईसा मसीह के शब्दों में –

''सम्पूर्ण संसार का साम्राज्य प्राप्त करके भी यदि आत्मा का सुख खो दिया तो क्या लाभ।''

पं० दीनदयाल जी उस सनातन भारतीय संस्कृति के पुजारी हैं जो व्यक्ति को मात्र शरीर नहीं मानती है अपितु एकात्म मानव दर्शन द्वारा दी गयी व्यष्टि और समष्टि की अवधारणा को अंगीकार करती है।

पूँजीवाद एवं समाजवाद का निषेध – पं० दीनदयाल जी पश्चिम की विचार–सरणी से उत्पन्न व्यक्तिवाद के लोकतंत्रीय पक्ष के समर्थक हैं। परन्तु वे पूँजीवाद को व्यक्तिवाद की एक विकृति मानते हैं। उनके शब्दों में–

''पूँजीवादी व्यवस्था सम्यक् जीवन का नियोजन नही करती वरन् समाज के सांस्कृतिक मूल्यों को नष्ट कर उसे उपभोगवाद के दुष्चक्र में फँसाकर लोलुप बनाती है।''

उपभोगवाद व आर्थिक मानव की कल्पनाओं ने आर्थिक जीवन और मानव्य को विभक्त कर दिया है। यंत्र को मानव का सहयोगी न बनाकर, मानव को यन्त्र का पुर्जा बना दिया है।

व्यक्तिवाद के समानान्तर में समाजवाद का विचार भी पश्चिम में ही हुआ। समाजवाद का प्रतिनिधि अन्ततोगत्वा सर्वहारा वाली तानाशाही वाला साम्यवाद बन गया जिसमें औद्योगीकरण, केन्द्रीकरण के साथ–साथ

पूँजीवाद के सभी दोष विद्यमान थे। पं० दीनदयाल जी समाजवाद के समर्थक हैं परन्तु उसकी केन्द्रीकरणवादी नीति के प्रबल विरोधी हैं। उनके शब्दों में –

"केन्द्रीकरण की प्रवृत्ति मनुष्य के कर्त्तव्य भाव को मारती है, उसमें मजदूरी का भाव जगाती है, मजदूरी का भाव मजबूरी का भाव है। इसमें कर्ता को सम्मान एवं कर्त्तव्य का सुख नहीं रहता है।"

पं० दीनदयाल जी के अनुसार समाजवाद में भी पूँजीवाद के समग्र दोषों के साथ–साथ राज्यवादी नौकरशाही का भी दोष विद्यमान है। इसलिए वे दोनों को ही एक साथ नकारते हैं। पं० जी ने एकात्ममानववाद का सिद्धान्त इन्हीं व्यवस्थाओं के विकल्प के रूप में रखा। पं० दीनदयाल जी के शब्दों में –

"समाजवाद का अर्थ यदि सबके लिए रोटी होगा, रोजी रोटी होगा, तब फिर समाजवाद से हमारा विरोध नही है।"

अनियन्त्रित सुखोपभोगों का त्याग –

"न जातुकामः कामानाम् उपभोगेन शाम्यति।"

अर्थात् अग्नि में लकड़ी डालने से वह और धधकती है। इसलिए वासना की भी तृप्ति नही हो सकती है।

"तृष्णा न जीर्णा, व्यंमेव जीर्णाः।।"

अर्थात् भोग–वासना की तृप्ति कभी भी नहीं हो सकती है। इसीलिए पं० दीनदयाल जी ने अपने एकात्ममानव दर्शन में मर्यादित सुखोपभोगों की बात कही है। पं० दीनदयाल जी के अनुसार यद्यपि हमारी भारतीय संस्कृति मे भी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति की बात कही गयी है परन्तु मर्यादित रूप में। गीता के तृतीय अध्याय के ४२वें श्लोक के अनुसार –

"इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः। मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धे परतस्तु सः।।"

धर्माधारित जीवन–रचना – अर्थ और काम यद्यपि व्यक्ति के लिए आवश्यक अनिवार्यताएँ हैं परन्तु इनके भरण–पूरण के साथ–साथ हमारे यहाँ यह विचार किया गया है कि मनुष्य अपने पेट को पालने के साथ–साथ साहित्य, कला इत्यादि के प्रति भी चिन्तनशील हो सके। प्रत्येक व्यक्ति का अर्थ और काम उसके विनाश का कारण न बन सके इस दृष्टि से हमारे यहाँ विचार किया गया। पं० दीनदयाल जी के शब्दों में –

"व्यक्ति को विनाश से बचाने, समाज को विघटन से बचाने और व्यक्ति के चरमोत्कर्ष को प्राप्त कराने में सार्वजनिक एवं सार्वदेशिक नियमों के प्रकाश में जो व्यवस्था की गयी। उसके समुच्चय को ही धर्म कहा।"

इस प्रकार धर्म और मोक्ष के मध्य अर्थ और काम को रखकर चतुर्विध पुरूषार्थों की कल्पना पं० जी ने अपने एकात्म मानव दर्शन में दी।

अर्थायाम – अर्थ समाज की धारणा के लिए उतना ही आवश्यक है जितने मात्र से मनुष्य अपना भरण–पोषण कर सके तथा श्रेष्ठ मूल्यों की प्राप्ति के लिए प्रयास कर सके। पं० दीनदयाल जी के शब्दों में –

"हमें यह मानकर चलना होगा कि अर्थ हमारी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन मात्र है। साध्य नही।"

पं० दीनदयाल जी के शब्दों में जिस प्रकार अर्थायाम शारीरिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है उसी प्रकार सामाजिक स्वास्थ्य के लिए भी आवश्यक है। पं० दीनदयाल जी के शब्दों में –

"समाज से अर्थ के अभाव एवं प्रभाव दोनों को मिटाकर उसकी समुचित व्यवस्था करने का नाम ही अर्थायाम है।"

अर्थायाम उत्पादन एवं उपभोग के मध्य सामंजस्य है। अर्थायाम द्वारा हम निर्धन मानवों की सेवा कर अपनी एकात्मकता का परिचय दे सकते हैं। ऐसा पं० जी का विचार है। दीनदयाल जी के शब्दों में –

"ग्रामों में जहाँ समय अचल खड़ा है, जहाँ माता और पिता अपने बच्चे के भविष्य को बनाने में असमर्थ हैं। जब – तक हम आशा और पुरूषार्थ का संदेश नहीं पहुँचा पाएँगे, तब तक हम राष्ट् के चैतन्य भाव को जागृत

नहीं कर पाएँगे। हमारी श्रद्धा का केन्द्र आराध्य, उपास्य, हमारे पराक्रम और प्रयत्नों का उपकरण एवं उपलब्धियों का मापदण्ड वह मानव होगा जो आज शब्दशः अनिकेत एवं अपरिग्रही है।"

समाहार – पं० दीनदयाल जी का क्रान्तिकारी चिन्तन एवं उनके द्वारा दी गयी एकात्ममानववाद की कालजयी संकल्पना वास्तव में एक समग्र जीवन दर्शन है।

पं० दीनदयाल जी ने मानव समाज की एकात्मकता को इस दर्शन का आधार बनाया। पं० दीनदयाल जी के शब्दों में –

"हिन्द महासागर और हिमालय से परिवेष्टित भारत खण्ड में जब तक एकरसता, कर्मठता, समानता, सम्पन्नता, ज्ञानवत्ता, सुख और शान्ति की सप्तजाह्वी का पुण्य प्रवाह नहीं ला पाते, तब तक हमारा भागीरथी तप पूरा नहीं होगा। विजय का संकल्प है।"

पं० दीनदयाल जी का एकात्म मानव दर्शन सम्पूर्ण विश्व को एकात्मकता का सन्देश देता है। पं० दीनदयाल जी इस एकात्ममानव दर्शन को सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त करना चाहते थे परन्तु समाज का अहित चिन्तन करने वाले कतिपय क्रूर हाथों ने इस दर्शन के प्रणेता को ही निगल लिया। पं० दीनदयाल जी ने कृतयोग का उद्घोष करते हुए कहा –

"जो राह का डर बताकर चलने की सलाह देते हैं। उनकी मत सुनिए। गलत राह पर भी चले तो कुछ नहीं बिगड़ेगा, परन्तु चलने की शक्ति जाती रही तो ठूँठ बनकर रह जाएँगे। और हमें तो अपनी राह बनानी है। जिस ओर हम चलेंगे वही रास्ता होगा।"

✷

यम - नियम

प्रथम अहिंसा सत्य पुनि अपरिग्रह अस्तेय।
ब्रह्मचर्य सबसे प्रमुख पाँचो यम गिनलेय।।
शौच सहित मुनिवर कहें, पाँचो नियम विधान।
स्वाध्याय सन्तोष तप ईश्वर का प्रणिधान।।

यम	नियम
सत्य	शौच
अहिंसा	सन्तोष
ब्रह्मचर्य	तप
अस्तेय	स्वाध्याय
अपरिग्रह	ईश्वर प्रणिधान

पं0 दीनदयाल उपाध्याय स्मारक निबंध प्रतियोगिता में किशोरवर्ग में प्रथम स्थान

भारतीय संस्कृति में अर्थ

– **रोहित ओमर**
दशम 'क'

आर्थिक प्रश्नों के समाधान के हेतु पश्चिम की ओर देखने का एक प्रमुख कारण यह भ्रममूलक धारणा है कि भारतीय संस्कृति तथा धर्म अध्यात्म प्रधान होने के कारण भौतिक जीवन की समस्याओं के प्रति उदासीन हैं। यह भ्रमदूषित प्रचार तथा आध्यात्मिकता का गलत अर्थ करने का परिणाम है। वास्तिवकता तो यह है कि हमारी धर्म की व्याख्या भौतिकता का पूर्ण विचार करके चलती है।

यतोऽभ्युदयानिः श्रेयससिद्धि स धर्मः अर्थात् जिससे ऐहिक तथा पारलौकिक उन्नति प्राप्त हो, वह धर्म है। जिसने इस लोक को छोड़ दिया वह परलोक को नहीं बना सकेगा। भौतिकता और आध्यात्मिकता परस्पर विरोधी अथवा विलग भाव नहीं हैं।

आध्यात्मिकता जीवन का एक दृष्टिकोण है, जिससे हम सभी प्रश्नों की ओर देखते हैं। अध्यात्मवाद यदि विश्व की सही व्याख्या कर सकता है, तो कोई कारण नहीं कि उसके द्वारा हम विश्व की समस्याओं का समाधानकारक हल न कर सकें।

धर्मस्य मूलमर्थ :– भारत ने भौतिक जगत का ही नहीं, अर्थ का भी विचार किया है।. महर्षि चाणक्य ने कहा, *''सुखस्य मूलं धर्मः धर्मस्य मूलमर्थः''* अर्थात् सुख धर्ममूलक है, तो धर्म अर्थमूलक। अर्थ के बिना धर्म नहीं टिक सकता। यहाँ हम धर्म की व्यापक परिभाषा लेंते हैं, वह संकुचित एवं आधुनिक भ्रमपूर्ण अर्थ नहीं जो धर्म को मत, मजहब या रिलीजन समझ लेता है। जिससे समाज की धारणा हो, जो ऐहिक तथा परलौकिक उन्नति में सहायक हो। जिसके कारण मानव के कर्मों का निर्धारण होकर वह कर्त्तव्य की संज्ञा प्राप्त कर ले। जिससे व्यक्ति अपनी सब प्रकार की उन्नति करता हुआ समष्टि के अभ्युत्थान में सहायक हो सके, वह नियम–व्यवस्था तथा उसके मूल्य में निहित भाव धर्म है। यह धर्म अर्थ के अभाव में नहीं टिक सकता है। कहा जाता है कि विश्वामित्र ने क्षुधा से अत्यन्त पीड़ित होने पर रात्रि के समय चोरी करके चाण्डाल के घर से कुत्ते का जूठा माँस खाया। उन्होंने धर्म की अनेक मर्यादाओं को भंग किया। आपात् धर्म की संज्ञा देकर शास्त्रकारों ने इस व्यवहार को उचित ठहराया है। यदि अर्थ के अभाव की यह आपत्ति बराबर बनी रहे, तो फिर आपत् धर्म अर्थात् चोरी ही धर्म बन जाये और यदि यह आपत्ति समष्टिगत हो जाये अथवा समष्टि का बहुतांश इससे व्याप्त हो, तो वे एक–दूसरे की चोरी करके अपने आपत् धर्म का निर्वाह करेंगे किन्तु जहाँ अभाव होगा, वहाँ चोरी भी किसकी होगी ? अर्थात् उस परिस्थिति में समाज नष्ट हो जायेगा।

अर्थ का प्रभाव – अर्थ का अभाव ही नहीं, अर्थ का अत्यधिक प्रभाव भी धर्म का नाश करता है। यह भारत का अपना विशेष दृष्टिकोण है। पश्चिम के लोगों ने अर्थ के प्रभाव का विचार नहीं किया। अर्थ जब अपने में या उसके द्वारा प्राप्त पदार्थों में और उनसे प्राप्त भोग–विलास में संग उत्पन्न कर देता है, तब अर्थ का प्रभाव कहा जाता है। जिसे केवल पैसे की ही धुन लगी रहे, वह देश, धर्म, जीवन का सुख सब कुछ भूल जाता है। इसी प्रकार विषयासक्त मनुष्य पौरुषविहिन होकर स्वयं तथा समाज के नाश का कारण बनता है। प्रथम प्रकार के प्रभाव में अर्थ की साधनता नष्ट होकर वह साध्य बन जाता है। द्वितीय में अर्थ धर्माचरण का साधन न होकर विषय–भोगों का साधन बन जाता है। विषय–तृष्णा की कोई मर्यादा न होने के कारण एक

ओर तो ऐसे व्यक्ति के सम्मुख सदैव अर्थ का अभाव ही बना रहेगा तथा दूसरे पौरुषहानि से उसकी अर्थोपार्जन की क्षमता भी कम होती जायेगी।

जब 'अर्थ' ही समाज के प्रत्येक व्यवहार तथा व्यक्ति की प्रतिष्ठा का मानदण्ड बन जाये, तब भी अर्थ का प्रभाव हो जाता है। ऐसे समाज में *"सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ति"* की उक्ति चरितार्थ होती है। मान–सम्मान, राज–नैतिक अधिकार तथा समाज में स्थान जब केवल धनवान व्यक्तियों को ही प्राप्त हों, तब वहाँ लोगों में धनपरायणता आ जाती है। जब समाज में सभी धनपरायण हो जाये, तो प्रत्येक कार्य के लिये अधिकाधिक धन की आवश्यकता होगी। धन का प्रभाव प्रत्येक के जीवन में अर्थ का अभाव उत्पन्न कर देता है।

जीवन के मानदण्ड – *समाज से अर्थ के प्रभाव तथा अप्रभाव दोनों को मिटाकर उसकी समुचित व्यवस्था करने को 'अर्थायाम' कहा गया है।* आवश्यक है कि समाज के मानदण्ड ऐसे बनाये जायें कि हर वस्तु पैसे से न खरीदी जा सके। निश्चित ही यह कार्य केवल देश की अर्थव्यवस्था के आधार पर नहीं किया जा सकता है। देश के लिये लड़ने वाला सैनिक अपने जीवन की बाजी अर्थ की कामना से नहीं लगाता। अर्थ का लालच उसे देशद्रोह सिखा सकता है, देशभक्ति नहीं। स्त्री के सतीत्व का अपना मूल्य है, उसे अर्थ की कसौटी पर नहीं कसा जा सकता है। वैद्य रोगी की चिकित्सा के बदले में अर्थ किन मूल्यों के आधार पर ले सकेगा ? अध्यापक विद्यादान का मूल्य नहीं लगा सकता। सरकारी कर्मचारी किस आधार पर एक फाइल को आगे सरकाने के लिए मूल्य लेगा ? दुर्बल की रक्षा करने वाली पुलिस जब अपनी सेवाओं का मूल्य माँगे, तब या तो दुर्बल की रक्षा ही नहीं हो पायेगी अथवा शरीर–शक्ति में दुर्बल अपनी बुद्धि का उपयोग कर धूर्तता से धन कमाकर अपनी रक्षा का मूल्य चुकायेगा। श्रम का, शारीरिक ओर मानसिक, फिर उनका उपयोग चाहें दृश्य वस्तुओं के उत्पादन अथवा सेवओं में हुआ हो, रुपये पैसे में मूल्य आँकना असम्भव है और फिर रुपया भी तो स्थिर मूल्य नहीं है। श्रम तथा पारिश्रमिक, दोनों का अर्थशास्त्र के क्षेत्र में घनिष्ठ सम्बन्ध होने पर भी व्यवहार–जगत के लिये सर्वमान्य एवं सर्वकष मूल्य– सिद्धान्त निश्चित करना न तो सरल है और न ही उपादेय है। वास्तव में दोनों का मूल्यांकन पृथक मानदण्डों से होता है। *श्रम की प्रतिष्ठा उससे मिलने वाले अर्थ के कारण नहीं अपितु उसके धर्मत्व से है। इसी प्रकार किसी भी व्यक्ति को दिया गया पारिश्रमिक उसके द्वारा किये गए श्रम का प्रतिपादन नहीं बल्कि उसके योगक्षेम की व्यवस्था है।* इसलिये श्रीमद्भागवत में कर्म तथा फल दोनों को अलग–अलग रखा गया है। श्रीकृष्ण जी ने नवें अध्याय में कहा है –

'यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत्।
यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरूष्व मदर्पणम्।।'

हे अर्जुन ! तुम जो कुछ करते हो, खाते हो, हवन करते हो, देते हो और जो तप करते हों वह सब मुझे अर्पण कर दो। हमारे कर्म का लक्ष्य भगवदाराधन ही हो सकता है। उसी अध्याय में वे कहते हैं –

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।।

जो अनन्य भाव से मेरी उपासना करते हैं, उन नित्य कर्मयोगियों के योगक्षेम का मैं विचार करता हूँ।

गीतोक्त उक्त सिद्धान्त के अनुसार कर्म की मूल प्रेरणा अनियन्त्रित प्रतियोगिता या लाभ की वृत्ति नहीं हो सकती है। पाश्चात्य अर्थशास्त्र की ये मान्यताएँ भारत के जीवन–दर्शन से मेल नहीं खाती हैं। यह उचित नहीं है कि हमारे दर्शन एवं व्यवहार में भारी अन्तर है। वास्तव में समाज में आज भी अधिकांश व्यक्ति अपने व्यवसाय तथा वृत्ति में कर्त्तव्यभाव से लगे हैं।

पाश्चात्य अर्थशास्त्र की मान्यताओं की सीमाएँ – पाश्चात्य अर्थशास्त्र ने जिन सामान्य मान्यताओं के आधार पर अपना विश्लेषण प्रस्तुत किया है, वह एकांगी तथा अपूर्ण है। उसकी मान्यता है –

१– राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था मुख्यतः वैयक्तिक है, जिसका अलग से कोई सामाजिक पहलू नहीं है।

२– व्यक्तियों की निर्बाध तथा असीम प्रतिस्पर्धा ही सामाजिक जीवन की स्वाभाविक एवं सुरक्षापूर्ण नियामक है।

३– राजकीय एवं प्रथा द्वारा लागू नियमन सभी स्वाभाविक स्वतन्त्रता का अतिक्रमण करते हैं। उपर्युक्त मान्यताएँ सत्य से बहुत दूर हैं। आज राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के अस्तित्व एवं आवश्यकता से कोई इन्कार नहीं कर सकता। यदि राष्ट्र की अपनी कोई इकाई है और वह केवल व्यक्तियों के समुच्चय से भिन्न जीव मान निकाय है, तो उसकी अभिव्यक्ति जीवन के प्रत्येक व्यवहार में अपनी विशिष्टताओं के साथ होनी चाहिये। यदि इन अदृश्य विशेषताओं को अपनी आँख से ओझल भी कर दें, तो भी आज प्रत्येक राष्ट्र दूसरे राष्ट्रों के साथ अपने सभी आर्थिक सम्बन्धों का निर्धारण एक पृथक इकाई के आधार पर कर रहा है। संयुक्त–राष्ट्र के अनेक संघटन तथा विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय अभिसमय इसके उदाहरण हैं।

व्यक्तियों की निर्बाध तथा असीम प्रतिस्पर्धा को न तो सामाजिक नियामक मान सकते हैं तथा न ही सुरक्षापूर्ण। अर्थशास्त्र की यह मान्यता मात्स्य न्याय का प्रतिपादन करने वाली है। पश्चिम में भी इसकी प्रतिक्रिया हुई है किन्तु उन्होंने प्रतिस्पर्धा को समाप्त करने के लिये वर्गों की भयंकर प्रतिस्पर्धा पैदा कर एक वर्ग के द्वारा दूसरे के विनाश का मार्ग अपनाया है। प्रतिस्पर्धा का भाव केवल आर्थिक क्षेत्र में नहीं, अन्य क्षेत्रों में भी रह सकता है। प्रतिस्पर्धी वर्ग दूसरे आधार पर उत्पन्न होकर मात्स्य न्यायालय को चलाते रहते हैं।

तीसरा सिद्धान्त यद्यपि मूलतः सत्य है किन्तु समाज में मानव की कुछ स्वतन्त्रताओं पर मर्यादाएँ आवश्यक होती हैं। *अनियन्त्रित स्वतन्त्रता केवल कल्पना की वस्तु है।* –शिक्षा और संस्कार, दर्शन और आदर्शवाद व्यवहार में मनुष्य को आत्मनियन्त्रण सिखाते हैं। इसी प्रकार समाज की प्रथाएँ एक व्यवस्था बनाकर मनुष्य का कार्य सरल बना देती है।

चार पुरुषार्थ – मनुष्य की विभिन्न प्रवृत्तियों का चार मोटे भागों मे वर्गीकृत करके उन सबकी संतृप्ति को ही पुरुषार्थ बताया। ये चार पुरुषार्थ हैं – धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष। चारों एक–दूसरे के पूरक है। जो कर्म इन सबको प्राप्त कराने वाला हो वही श्रेष्ठ है।

इन चारों में से सबको समान मान्यता दी गयी है। वैसे मोक्ष को परम पुरुषार्थ कहा गया है क्योंकि इसके बाद कुछ भी शेष नहीं बच रहता है। महर्षि वेदव्यास ने कहा, 'धर्मादर्थश्चकामश्च।' अर्थात् धर्म से अर्थ तथा काम की प्राप्ति होती है।

चार विद्याएँ – इन चारों पुरुषार्थों को प्राप्त कराने वाली विद्या के सम्बन्ध में कौटिल्य ने लिखा है, *आन्वीक्षकी त्रयी वार्ता दण्डनीतिश्चेति विद्या।* इसके पूर्वाचार्यों ने इनमें से एक, दो या तीन को विद्या माना किन्तु कौटिल्य ने चारों को मान्यता दी। उन्होंने लिखा –

चतस्र एवं विद्या इति कौटिल्यः।
तामिधर्मार्थार्याद्विद्यातद्विद्यानां विद्यात्वम्।

मनुष्य के जीवन का यह सर्वांगपूर्ण विचार ऐसी कोई भी अर्थरचना को बनाने में सफल नहीं हो सकता, जिसमें नैतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों की प्रतिष्ठापना किये बिना ही मनुष्य को सुखी बनाया जा सके।

सर्वांगीण दृष्टिकोण की आवश्यकता – पाश्चात्य अर्थशास्त्र के जितने भी नियम हैं, वे अर्थपरायण व्यक्ति की कल्पना करके चलते हैं। यह अर्थमापी व्यक्ति जीवन में कहीं नहीं मिलता। जे० स्टु० मिल ने माना है, कोई भी व्यावहारिक प्रश्न ऐसा नहीं होता जिसका निर्णय आर्थिक सीमाओं के अन्दर दिया जा सके।

✵

स्वामी विवेकानन्द का समाज-दर्शन

रोहित कुमार सिंह
सप्तम 'क'

स्वामी विवेकानन्द का आध्यत्मिक समाजवाद –

भारतवर्ष में सदैव से ही यह विश्वास किया जाता रहा है कि जब भी अधर्म और अराजकता की परिस्थितियाँ समाज को आक्रान्त करने लगती हैं, तब परिस्थिति के संतुलन–निर्माण के लिए किसी महान आत्मा का प्रादुर्भाव होता है। यह विश्वास उन्नीसवीं शताब्दी के भारत की अवनत परिस्थिति में स्वामी विवेकानन्द के ''आविर्भाव'' द्वारा सत्य प्रमाणित हो गया।

स्वामी विवेकानन्द का आविर्भाव (जन्म) –

व्यापारियों के रूप में भारत आए अंग्रेज, यहाँ के शासक बन बैठे। भारत की राष्ट्रीय सम्पदा को उन्होंने अनेक प्रकार से लूटा। अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उन्होंने यहाँ की शिक्षा–प्रणाली का रूप परिवर्तित किया और इसी कारण शिक्षा–प्रणाली का देश की वास्तविकता से संबंध–विच्छेद हो गया। हमारे शिल्प और कलाओं को हतोत्साहित किया गया। कृषि, जो भारतीय ग्रामीण सम्पन्नता का मुख्य आधार थी, अपना महत्व खो बैठी। राष्ट्रीय स्वाभिमान का पूर्णहास हुआ। निर्धनता और अकाल ये जुड़वाँ बहनें वीभत्स रूप से प्रकट हुईं और बड़ी जनसंख्या को निगल गयीं।

अपनी तंद्रा से जागे हुए शिक्षित भारतीयों ने उद्वेलित होकर राष्ट्र को उसकी प्राचीन, गौरवपूर्ण स्थिति में ले जाने के लिए विचार करना प्रारंभ किया। ऐसे समय में विवेकानंद का आविर्भाव हुआ। वे राष्ट्र की परंपरा पर गर्व करने वाले, उत्साही और सच्चे भारतीय थे, जो राष्ट्र के भावी लक्ष्यों और उस कार्य मे अपनी भूमिका से पूर्णतया परिचित थे।

कला, इतिहास, दर्शन, विज्ञान अथवा धर्म, कोई ऐसा विषय नहीं था, जिसमें युवा विवेकानंद ने दक्षता न प्राप्त की हो। उनका श्री रामकृष्ण परमहंस से घनिष्ठ सान्निध्य भी दैवी–योजना का परिणाम था, अन्यथा एक अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त, ईश्वर के अस्तित्व को साहसिक चुनौती देने वाला, संदेहवादी, जिज्ञासु युवक श्री रामकृष्ण के समान काली मंदिर के सामान्य पुजारी के निकट क्यों कर पहुँचता ?

श्री रामकृष्ण का प्रभाव –

स्वामी विवेकानन्द द्वारा ज्ञान, भक्ति और कर्म में जो अद्वितीय सामंजस्य स्थापित किया गया है, उसे समझने के लिए हमें १८८४ ई० की उस घटना का स्मरण करना होगा जब नरेन्द्र (विवेकानंद) की उपस्थिति में श्री रामकृष्ण अपने शिष्यों से वैष्णव धर्म के विषय में चर्चा कर रहे थे, ''यह धर्म अपने अनुयायियों को तीन कार्य करने का आदेश देता है – ईश्वर के नाम–स्मरण में आनन्द की अनुभूति, सभी प्राणियों के प्रति करुणा का भाव तथा ईश्वर–भक्तों, वैष्णवों की सेवा।'' कुछ देर बाद श्री रामकृष्ण अपने आप से बात करने लगे,''प्राणियों के प्रति करुणा ! तुम दूसरों के प्रति करुणा प्रदर्शित करोगे ? तुम कौन हो करुणा प्रदर्शित करने वाले? नहीं, यह नहीं हो सकता। वास्तविक रूप मानते हुए उनकी सेवा का भाव।''

परमहंस देव के इस उद्‌गार ने मानो नरेन्द्र के दिव्य चक्षु खोल दिये। उन्होंने श्री रामकृष्ण के इन शब्दों को केवल सुना ही नहीं था, उनका वास्तविक अर्थ भी समझ लिया था। उन्होंने इस उद्‌गार की व्याख्या भी की है।

लेकिन नरेन्द्र शीघ्र ही इस ज्ञान–बोध को भूल गए। कुछ वर्षों के उपरान्त यह संदेश नरेन्द्र के मानस–पटल पर पुनः आलोकित हुआ और एक ऐसा बोध बना जिसने उनके भावी जीवन के लक्ष्य को निर्धारित कर दिया। सम्भवतः इस अवधारणा को आत्मसात् करने के लिए उन्हें स्वयं को और अधिक परिपक्व बनाने की

आवश्यकता थी और फिर अपने गुरू भाइयों को भी उसे स्वीकार कराना था। ईश्वरीय विधान को पहले से कौन जान सकता है ?

परिव्राजक नरेन्द्र –

अपने गुरू रामकृष्ण की महासमाधि के पश्चात् नरेन्द्र का पहला कार्य उनके संदेश का प्रचार–प्रसार करने के उद्देश्य से अपने गुरुभाइयों को संगठित करना था। साथ ही वे संन्यास–धर्म के पारंपरिक नियमों का पालन करते हुए परिव्राजक के रूप में भ्रमण करते हुए आत्म–साक्षात्कार करना चाहते थे।

अतः वे यात्रा पर निकल पड़े। यात्रा के आरम्भ से ही यह स्पष्ट हो गया था कि वे अन्य संन्यासियों से भिन्न हैं। सामान्यतः ईश्वर–प्राप्ति की इच्छा रखने वाले साधक उत्तर मे हिमालय जाने की इच्छा रखते हैं परन्तु स्वामी विवेकानंद ने उत्तर से दक्षिण का मार्ग पकड़ा और उनकी यात्रा, भारत की पहचान का, उसकी शक्ति और दुर्बलता तथा उसकी अनुपम आध्यात्मिक संपदा की खोज का अभियान बनी। अन्त में वे कन्याकुमारी पहुँचे, जहाँ कहा जाता है कि देवी स्वयं भगवान की प्राप्ति के लिए चिर तपस्या में लीन है। कन्याकुमारी के मंदिर में उपासना के पश्चात् वे समुद्र के बीच उस विशाल शिलाखंड तक तैरकर गए, जहाँ अभी भी देवी के चरण–चिह्न विद्यमान हैं। वहाँ वे तीन दिन और रात अनवरत ध्यानमग्न रहे।

आत्म–बोध –

स्वामी विवेकानन्द ने गहरी आंतरिक भावना के साथ श्री रामकृष्ण के उपदेशों और आचार का स्मरण किया। उन्होंने अनुभव किया कि परमात्मा ही एकमात्र सार्वभौमिक सत्ता है। संसार में होने वाली समस्त प्रक्रियाएँ, जीव–निर्जीव, मनुष्य या पशु, बुद्धि, आत्मा सभी कुछ उसकी अभिव्यक्ति है। अतः मनुष्य–मनुष्य में कोई आधारभूत अंतर नहीं है और इसी कारण प्रत्येक मनुष्य को दूसरे मनुष्य के प्रति वैसी ही भावना रखनी चाहिए और वैसा ही व्यवहार करना चाहिए जैसा वह दूसरों से अपने साथ चाहता है। मनुष्य, परमात्मा और सृष्टि की वास्तविक प्रकृति का ज्ञान मनुष्य को 'माया' के आवरण के कारण नहीं हो पाता और वेदान्त दर्शन का लक्ष्य यही है कि मनुष्य इस आवरण को चीरकर अपने वास्तविक रूप की अनुभूति कर सके।

वेदान्ती समाजवाद –

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार धर्म वस्तुतः जीवन से अभिन्न है और उसका प्रभाव मनुष्य के सामाजिक और आर्थिक आदर्शो तथा उनके दैनिक व्यवहार और क्रियाकलापों पर पड़ना चाहिए। उन्होंने कहा था, ''कोई सिद्धांत चाहे जितना अच्छा हो यदि वह अव्यावहारिक है तो उसका मूल्य बौद्धिक व्यायाम के अतिरिक्त और कुछ नहीं होगा।'' इसलिए उन्होंने अपने धर्म संबंधी विचारों को ''व्यावहारिक वेदान्त'' की संज्ञा दी थी।

''व्यावहारिक वेदान्त'' अनेक अंशों मे उस विचारधारा का पर्याय है जिसको हम सामजवाद के नाम से पुकारते हैं। गाँधीवादी समाजवाद की अवधारणा ने स्वामी विवेकानन्द के ''व्यावहारिक वेदान्त'' से कुछ ग्रहण किया है।

महिलाएँ –

स्वामी विवेकानन्द समाज में महिलाओं को उचित स्थान प्रदान किए जाने के प्रबल पक्षधर थे। उन्होंने कहा था, ''यदि तुम महिलाओं की, जो दिव्य मातृशक्ति की अभिव्यक्ति है, उन्नति नहीं करते, तो यह न समझो कि तुम्हारी उन्नति का कोई अन्य मार्ग भी है।'' वे चाहते थे कि महिलाओं को भी पुरुषों के समान शिक्षा के अवसर प्राप्त हों। ''एक बार जब वह शिक्षित हो जाएँगी तो जीवन में अपनी भूमिका स्वयं चुन सकेंगी तथा इसके लिए पुरुषों पर निर्भर नहीं रहेंगी।'' एक अन्य स्थान पर स्वामी जी का कथन है, ''पहले महिलाओं की शिक्षित करो और उन्हें अपने संबंध में निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र छोड़ दो तभी वे यह बताएँगी की उनके हित में कौन से सुधार आवश्यक हैं ? ''कोई पुरुष किसी महिला को और कोई महिला किसी पुरुष को निर्देश न दे, प्रत्येक स्वतंत्र है। महिलाएँ स्वयं अपना भविष्य उस भविष्य से कहीं अधिक बेहतर बनाएँगी जो पुरुष उनके लिए तय कर सकते हैं। संपूर्ण समस्या इसी कारण हुई है क्योंकि पुरुष

महिलाओं की निर्यात का निर्धारण करना चाहते हैं।''

स्वामी जी के व्यावहारिक वेदान्त में महिलाओं की जो सामाजिक स्थिति है, वह समाजवाद में उन्हें दिए गए स्थान से कहीं अधिक है।

शिक्षा –

शिक्षा संबंधी चर्चाओं में स्वामी जी ने पुस्तकीय ज्ञान और रटन्त पर अनावश्यक बल देने पर उपहास किया है। ''शिक्षा का अर्थ मस्तिष्क में ऐसी सूचनाएँ जमा करना नहीं है जो अव्यवस्था उत्पन्न करती हैं और जीवन भर बिना पचे ही रह जाती हैं। यह आवश्यक है कि विचार इस प्रकार समाहित किए जाएँ कि वे जीवन–निर्माण, मनुष्य–निर्माण और चरित्र–निर्माण के लिए उपयोगी हों। यदि शिक्षा और सूचना का तात्पर्य एक ही है तो हमें पुस्तकालय और विश्वकोश को संसार के सबसे महान ऋषि और विद्वान स्वीकार करना होगा।''

निष्कर्ष –

स्वामी विवेकानंद का समाजवाद, किसी प्रकार की राजनीतिक संकल्पना नहीं है। यह व्यक्तिगत तपस्या और करोड़ों देशवासियों से संपर्क के बाद उत्पन्न एकात्मता का गहरा भाव है। श्री रामकृष्ण परमहंस के उपदेशों से उनकी इस भावना का परिष्कार हुआ। इसके अतिरिक्त इसमें वास्तविक धर्म का तत्व भी जुड़ा हुआ है। यह प्रत्येक जाति, प्रत्येक देश और प्रत्येक काल में उपयोगी और व्यवहार्य है। यही मनुष्य की मुक्ति का एकमात्र मार्ग है। वस्तुतः यही वह मार्ग है जिस पर चलकर व्यक्ति ईश्वर से तादात्म्य स्थापित कर लेता है। इस तादात्मय का माध्यम व्यक्ति से परस्पर संबंध है क्योंकि सभी एक ही ईश्वर की संतान हैं। अब यह हमारा उत्तरदायित्व है कि हम जिन्हें स्वामी विवेकानंद के देशवासी होने का गर्व प्राप्त है, उनके उपदेशों का अनुसरण करें और राष्ट्रकुल में अपने देश को उसका उचित स्थान दिलाने में सहायता करें।

चिंतन, चरित्र और व्यवहार-व्यक्तित्व के तीन आयाम

– श्वेतांक सिंह
षष्ठ 'ख'

चिन्तन, चरित्र और व्यवहार – इन तीनों आयामों में पहला चिंतन है। चिंतन वह है जो हम सोचते हैं, जो हमारी कल्पनाओं एवं विचारों में उमड़ता है। चिंतन की यही निरंतरता और प्रागढ़ता हमारे चरित्र का निर्माण करती है।

चिंतन से ही चरित्र का निर्माण होता है और चरित्र निर्माण का यह क्रम बड़े धीरे–धीरे होता है, क्योंकि चरित्र का आधार अचेतन की गहराई में जमे हुए संस्कार एवं प्रवृत्तियाँ हैं। जब तक चिंतन की प्रगाढ़ता इस लायक नहीं होती है कि वह संस्कारों का परिष्कार कर सके, तब तक चरित्र सर्वथा अप्रभावित रहता है।

चिंतन एवं चरित्र की यह समग्रता ही व्यवहार में प्रकट होती है इसीलिए यदि व्यक्तित्व को सही ढंग से परिष्कृत एवं प्रकाशित करना है तो निश्चित ही उसके त्रिआयामी स्वरूप को नए सिरे से गढ़ना और ढालना होगा।

रही बात व्यवहार की तो वह निष्कपट चरित्र की ही भाँति पूर्णतः निष्कपट होना चाहिए। फिर भले ही इसके लिए कितने ही कष्ट एवं संकटों का सामना करना पड़े।

संयुक्त राष्ट्रसंघ की प्रासंगिकता पर प्रश्न चिह्न

– महेन्द्र कुमार
एकादश 'क'

*संयुक्त राष्ट्रसंघ की स्थापना इसलिये हुई थी कि विश्व में लोकतांत्रिक व्यवस्था कायम रहे। कोई देश किसी देश पर आक्रमण न करे और शांति रहे साथ ही विकास और स्वास्थ्य की योजनाएँ भी प्रोत्साहित हों, परन्तु धनपति अमेरिका की मुट्ठी में आ चुका ये संघ बड़ा लाचार है। – **संपादक***

यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि द्वितीय विश्व युद्ध (१६३६–१६४५) की विभीषिका के मद्देनजर अन्तरर्राष्ट्रीय शान्ति एवं सद्भाव बनाए रखने के लिए एक ऐसी विश्वव्यापी संस्था की आवश्यकता महसूस हुई जो पूरी दुनिया के सर्वांगीण विकास के लिए काम करें, फलतः २४ अक्टूबर १६४५ को संयुक्त राष्ट्र संघ का आविर्भाव हुआ जिसका बुनियादी तत्व था "भविष्य में कोई युद्ध नहीं और एक – दूसरे की सम्प्रभुता का सम्मान" लेकिन विडम्बना देखिए कि प्रसवकाल से लेकर ५७–५८ वर्षों के बाद भी इस विश्व संगठन की प्रासंगिकता संदिग्ध बनी हुई है वस्तु स्थिति यह है कि धनी और विकसित देश, अमेरिका ने राष्ट्र संघ को लगभग हाइजैक कर लिया है क्योंकि –

१– तथाकठित एक ध्रुवीय राष्ट्र अमरीका ने इराक पर बमों और मिसाइलों से ताबड़तोड हमला करके न सिर्फ राष्ट्रसंघ के चार्टर १४४१ व अनुच्छेद–२ का खुल्लम खुल्ला उल्लंघन कर १६१ सदस्यीय इस विश्व संगठन की प्रासंगिकता व अस्तित्व पर प्रश्नवाचक चिह्न जड़ा है, अपितु "समरथ को नहिं दोष गोंसाई" वाली कहावत को चरितार्थ किया गया है।

२– संयुक्त राष्ट्र संघ की प्रासंगिकता संदिग्ध इस मामले में भी है कि जब यू. एस. ए. को लगता है कि राष्ट्र संघ में कोई प्रस्ताव उसके हितों के विरुद्ध जा रहा है तो वह "वीटो पावर" का इस्तेमाल करके राह में रोड़ा अटकाता है। चाहे इजरायली प्रधानमन्त्री एरियल शेरोन द्वारा यासर अराफात को मिली धमकी के बाद राष्ट्रसंघ में उसकी सुरक्षा का मामला हो या क्यूबा पर से आर्थिक पाबन्दी हटाने का; हर जगह अमरीकी दादागीरी ही हावी दिखी।

३– "शुद्ध शुभ लाभ पर आज टिके हर संबंधों के दौर में राष्ट्र संघ की प्रासंगिकता पर प्रश्नचिंह का एक कारण यह भी है कि इसके कुल बजटीय खर्च का ८०–८५ प्रतिशत स्वयं अमरीका वहन करता है। १४ प्रतिशत अन्य विकसित मुल्क एवं ०.०१ प्रतिशत विकासशील राष्ट्र, ऐसे मे भला यह उम्मीद कैसे की जा सकती है कि राष्ट्रसंघ और उसकी यह संस्थाओं की नीति निर्माण व कियान्वयन स्वतन्त्र, निष्पक्ष, व अमरीकी दबाव मुक्त रहती होगी धन निवेश, हित सिद्ध से जुड़ी रहती है।

४– यू. एन. ओ की महत्ता में ह्रास का एक स्पष्ट कारण यह भी है कि धनी और विकसित देशों में कभी भी लोकतांत्रिक स्वरूप ग्रहण करने नहीं दिया फलस्वरूप राष्ट्रसंघ के अन्य अंगों के साथ महत्वपूर्ण अंग सुरक्षा परिषद पर बतौर "अमरीकन पुलिस। खुफिया एजेन्सी" के रूप में कार्य करने के आरोप लगते हैं। स्मरणीय है, कि यू०एन०ओ० के महासचिव डॉ० बुतरस धाली से लेकर कोफी अन्नान तक ने कहा कि विश्व संगठन शिख से लेकर नख तक अमरीकी दबाव में है। चाहे १६६०–६१ का इराकी विनाश (अमरीकी द्वारा) हो १६६३–६४ का सोमालिया मिशन १६६५–६६ का बोस्निया शान्ति मिशन २००३ का अमरीकी कहर इराक पर या १६६६–६७ में सी०टी०बी०टी० प्रस्ताव पर भारतीय प्रधानमंत्री द्वारा अमरीकी दबाव में हस्ताक्षर न करने के कारण सुरक्षा परिषद की सदस्यता से, तमाम शर्तों को पूरा करने के बावजूद वंचित करना हो, सब जगह अमरीकी कुचाल व प्रभुत्व ही सिद्ध हुआ है जो कि दुखद और दुर्भाग्यपूर्ण है।

५– राष्ट्रसंघ, दुनिया में मौजूद विषमताओं, अशिक्षा, गरीबी, अशान्ति उन्मूलन हेतु तथा मानवधिकारी पर्यावरण जागरूकता हेतु सम्मेलन समय–समय पर आयोजित करता है, वहाँ भी यू० एस० अपनी हरकतों से बाज नहीं आता है। चाहे नस्लवाद पर आहूत डरबन सम्मेलन हो या पर्यावरण पर मान्ट्रियल कान्फ्रेंस, हर जगह राष्ट्र संघ की भूमिका अमरीकी प्रभाव तले दबी दिखाई देती है।

सारांश यह है कि जिन पवित्र उद्देश्यों व इरादों को लेकर राष्ट्र संघ की स्थापना हुयी थी, आज ५८ वर्षों बाद भी वे अपने उद्देश्यों को शिखर तक पहुँचाने में असफल रहा है।

मेरी मान्यता है कि कोई भी जागरूक व अन्तरर्राष्ट्रीय मामलों में दिलचस्पी रखने वाले नागरिक को यह कहने में संकोच नहीं होना चाहिए कि अमरीका ने अपनी रणनीतिक और सामरिक जरूरतों के अनुसार वीटो का दुरूपयोग कर संयुक्त राष्ट्र संघ को "नख दंत विहीन शेर" बना दिया है जिसकी प्रासंगिकता न जंगल में है और न ही शहर के चिड़ियाघरों में होती है। हमें इस कड़वे सच को स्वीकार करना होगा और राष्ट्र संघ को प्रासंगिकता हेतु कुछ बुनियादी व सर्वहितैषी परिवर्तन करने होंगे।

✻

क्षमा

– पीयूष त्रिवेदी
नवम 'क'

*धर्म के दस लक्षणों में क्षमा भी एक है। दूसरों के क्रोध या अपराध पर क्रोध करना प्रतिशोध है और कल्याण करना क्षमा है। 'द्रौपदी' – का एक दृष्टान्त देकर 'क्षमा' के गुण पर प्रकाश डाल रहे हैं चि० पीयूष त्रिवेदी। – **संपादक***

धृतिः क्षमादमोस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्।।

मनुस्मृति में बताए गए ये धर्म के १० लक्षण हैं। क्षमा इनमें से एक है। समर्थ होने पर भी शत्रु को उसके दुराचार के लिए दण्ड न देना, उसके कल्याण की कामना करना ही क्षमा है। बुराई के बदले बुरा करना प्रतिशोध है व बुराई के बदले कल्याण करना क्षमा है। क्षमा से समाज के संघर्ष का दुष्चक्र समाप्त हो जाता है व शान्ति का उदय होता है।

एक प्रसिद्ध कथानक है कि अश्वत्थामा ने सैन्य शिविर में जाकर पाण्डव पुत्रों की हत्या कर दी थी, पकड़कर उसे द्रौपदी के सामने लाया गया। उसने सोचा यदि अश्वत्थामा का वध किया जाता है माता कृपी को भी उतना कष्ट होगा जितना मुझे हो रहा है। दयार्द्र द्रौपदी के मुःख से ये शब्द निकले "मैं पुत्र शोक से दग्ध हो रही हूँ। मुझे पुत्र शोक का प्रत्यक्ष ज्ञान हो रहा है। मैं नहीं चाहती कि अश्वत्थामा के वध के बाद निरपराध कृपी भी ऐसी शोकाग्नि में दग्ध होती रहे।" द्रौपदी के क्षमाभाव से अश्वत्थामा को जीवनदान मिला। इस संदर्भ में रहीमदास का एक दोहा प्रचलित हैः

क्षमा बड़न को चाहिए, छोटन के उत्पात।
का रहीम हरि को घट्यो, जो भृगु मारी लात।।

लघुकथा

कर्मशीलता का वरदान

– अंशुमान प्रकाश
सप्तम 'क'

एक समय की बात है कि एक बहुत ही आलसी व्यक्ति रामू श्यामगढ़ नामक गाँव मे निवास करता था। उसकी पत्नी गीता थी। वह बहुत मेहनती थी। वह एक सेठ के घर पर काम करती थी। रामू दिन भर या तो बैठा रहता था या ताश खेलता था या फिर सोता था। गीता जब भी उसे काम करने के लिए कुछ कहती रामू उसे मार–पीट कर कोठरी में बंद कर देता था। थोड़ी देर बाद वह स्वयं आ कर कोठरी खोल देता था। इसमें भी उसका स्वार्थ छिपा था। यदि वह गीता को कोठरी से बाहर नहीं निकालता तो वह सेठ के घर काम करने नहीं जा पाती। जिससे रात में घर का चूल्हा न जल पाता और उसे भूखे पेट सोना पड़ता।

एक दिन फिर गीता ने उसे कुछ काम करने को कहा। उस बात पर रामू ने गीता को फिर मारा–पीटा और कोठरी में बन्द कर दिया। गीता कोठरी में सो गई। सोते वक्त उसने सपना देखा कि पूरे कमरे में उजाला हो गया है। यह उजाला एक दिव्य पुरुष के मुख से तेज से हुआ। उस दिव्य पुरुष ने कहा – "मैं तुम्हारी परेशानी को जानता हूँ। तुम्हारी सारी परेशानियों को मैं दूर कर दूँगा। इतना कहकर वह पुरुष अदृश्य हो गया। अब गीता प्रसन्न हो गई। तब तक रामू ने दरवाज़ा खोला। रामू गीता को प्रसन्न देखकर आश्चर्यचकित हो गया। शाम को लौटते वक्त गीता सेठानी से थोड़ा सा घी माँग लाई। शाम को उसने बढ़िया भोजन बनाया। रामू को फिर आश्चर्य हुआ। क्योंकि अन्य दिन वह उसे रूखा–सूखा भोजन दिया करती थी। रामू ने पूछा कि आज क्या बात है ? गीता ने सारी सपनों वाली बात बता दी। रामू झुंझलाकर रह गया। अगले दिन जब वह चौपाल गया तो वहाँ एक दिव्य पुरुष देखा। दिव्य पुरुष ने उसे अपने पीछे आने का इशारा किया। आगे–आगे साधू पीछे–पीछे रामू। दोनों को चलते–चलते आधा घंटा हो गया। रामू ने पहली बार इतनी मेहनत की थी। वह थक कर जैसे ही लौटने को हुआ उस साधू के मुठ्ठी से एक सोने की अशर्फी गिर गई। रामू ने लपक कर उसे उठा लिया। प्रति दिन यही क्रम चलता था। धीरे–धीरे वह कर्मशील हो गया। एक दिन चलते–चलते शाम हो गई तो रामू ने साधू को रोक कर उससे पूछा आप मुझे प्रति दिन अशर्फियाँ क्यों देते हैं? यदि आपको देना ही है तो एक समय में सारी अशर्फियाँ एक बार में ही क्यों नही देते ? साधू ने कहा "मैने तुम्हे अशर्फियों के अलावा एक और अनमोल वस्तु दी है, वह है मेहनत जिसके सहारे तुम हजारों अशर्फियाँ प्राप्त कर सको।

इसके बाद रामू ने साधू द्वारा दी गयी अशर्फियों से जमीन खरीदी और उस पर खेती करने लगा। धीरे–धीरे रामू भी एक धनाढ्य व्यक्ति बन गया।

✵

भाग्यवाद आवरण पाप का
और शस्त्र शोषण का
जिससे रखता दबा एक जन
भाग दूसरे जन का।।

– दिनकर

हास्य – व्यंग्य

अवांछित अतिथि से मुक्ति की युक्ति

– अंशुमान प्रकाश

सप्तम 'क'

आजकल पग – पग पर ऐसे महानुभावों से पाला पड़ता है जो पल भर में अच्छे दोस्त बन जाते है परन्तु क्षणों में ही लड़ाई करके शत्रु बन जाते हैं। विद्यालयों मे विद्यार्थी ऐसे मित्रों से परेशान हो जाते हैं। एक बार मेरे साथ एक घटना घटी। मेरे एक मित्र जो ऐसे स्वभाव के हैं मेरे घर आए। मुझे उन्हें घर से भगाने की एक युक्ति सूझी।

मैने पूछा – ''खायेंगें या पियेंगें।''

उन्होने कहा – ''पी लूँगा।''

मैंने पूछा – ''ठण्डा या गरम।''

उन्होने कहा – ''ठण्डा ही सही।''

''शर्बत या पेप्सी'' मैंने पूछा

''शर्बत'' महाशय बोले।

''गुलाब या सन्तरे का''

''सन्तरे का''

''किसान का होगा या रेम्स का''

''किसान का''

''कप में पियेंगें या गिलास में''

''गिलास में''

''गिलास काँच का होगा या स्टील का।''

मित्र तंग आकर बोला – ''मुझे बाहर जाने का रास्ता बता सकते हैं।''

मैंने झट से पूछा – ''बस का या टैक्सी का।''

उन्होंने कहा – ''बस का।''

''बस रोडवेज की हो या प्राइवेट''

परन्तु जवाब पाने के लिए पीछे मुड़ कर देखा तो महाशय बेहोश पड़े थे। पानी के छींटे मारने के बाद जब उन्हे होश आया तो मैंने पूछा –

''डाक्टर को बुलाऊँ या हकीम को''

''डाक्टर को'' महाशय बोले।

''डाक्टर एलोपैथ का होगा या आयुर्वेद का''

इसे सुन कर महाशय फिर बेहोश हो गए और अब इन महाशय के दर्शन कम ही होते हैं।

ऐतिहासिक कहानी

जैसी करनी वैसी भरनी

– अभिनव अग्निहोत्री
अष्टम 'क'

आमतौर पर माना जाता है कि बहुत ज्यादा भोजन करने वाले दो–चार किलो माँस खा जाते हैं लेकिन ईसा से छह शताब्दी पूर्व ओलंपिक खेलों में भाग लेने वाला एक पहलवान पूरा का पूरा साँड़ खा जाता था। प्राचीनकाल में ओलंपिक खेलों में भाग लेने के लिए अजीब तरह के खिलाड़ी आते थे। ईसा से छह शताब्दी पूर्व एक बार खेल में क्रोटोन का एक खूंखार पहलवान आया।

वह एकदम शैतान की तरह विशालकाय था। मीलो नामक वह पहलवान सचमुच कुंभकरण का अवतार था। वह पशुओं से भी ज्यादा माँस खाता था। एक बार ओलंपिक खेल के मैदान में एक साँड़ आ गया। मीलो भूखा था और उसने साँड़ को ऐसा पकड लिया जैसे कोई शेर अपने शिकार को पकड़ता है। मीलो ने हाथ से ही झटका देकर साँड का सिर धड़ से अलग कर दिया और साँड का खून पीने लगा। दर्शक बुरी तरह डर गए लेकिन तभी मीलो के साथ आए एक व्यक्ति ने कहा कि मीलो पागल नहीं हुआ है। उसे जोर से भूख लगी है। इसलिए वह भोजन करने जा रहा है। इसके बाद लोग कौतूहल से उसे देखने लगे। मीलो ने साँड को कच्चा ही चबाना शुरू कर दिया और देखते ही देखते पूरा का पूरा साँड ही खा गया। दर्शक मुँह खोले उस महामाँसभक्षी को देखते रह गए। मीलो केवल खाने में ही होशियार नहीं था वह गजब की कुश्ती भी लड़ता था। इसी कारण वह लगातार छह बार ओलंपिक में कुश्ती चैंपियन रहा। मीलो अपने हर प्रतिद्वंद्वी को इतना मारता था कि वह बेदम होकर अखाड़े में गिर जाता था। बताया जाता है कि कई–कई प्रतिद्वंद्वियों को तो हार मानने के बाद भी पीटता रहता था और बेचारा विरोधी असहाय होकर चिल्लाता रहता था। उस जमाने में मीलो से भिड़ने वाला पहलवान फिर कभी कुश्ती लड़ने के लायक नहीं रह पाता था। मीनो वैसे भी अक्सर अजीब–अजीब तरह की हरकतें करता रहता था। ओलंपिया पर जब मीलो की आदमकद प्रतिमा स्थापित करने का निर्णय लिया गया तब मीलो खुद अपनी भारी – भरकम प्रतिमा को अपने कंधे पर लाद कर ले गया था। मीलो को अपनी शक्ति पर बड़ा अभिमान था। वह कभी बड़ी थाली में तेल लगाकर खड़ा हो जाता था और लोगों के धक्का देने के बाद भी वह टस से मस नहीं होता था। मीलो अपनी ताकत के बल पर लोगों पर रोब झाड़ता था। ऐसा लगता था मानो उसे अनेक लोगों की बददुआएँ लग गई थीं। इसी कारण मीलो का अंत बहुत भयानक हुआ और जंगली हुआ जंगली जानवर जीते जी उसका माँस नोच–नोच कर खा गए। दरअसल हुआ यह कि मीलो एक जंगल से गुजर रहा था, रास्ते में उसने एक पेड़ देखा जो बीच से कटा हुआ था। लेकिन लकड़हारे ने सहारा देकर पेड़ के दोनों हिस्सों के बीच एक कीलनुमा चीज लगा दी थी जिससे दोनों फिर से न सट जाएँ और अगले दिन दोनों को अलग करने में असुविधा न हो। मीलो को पेड़ देखते ही जोश चढ़ गया और उसने एक जोरदार प्रहार से उस कीलनुमा वस्तु को दोनों भारी – भरकम पेड़ों से बाहर निकाल दिया। कीलनुमा वस्तु तो बाहर निकल गई लेकिन मीलो का हाथ दोनों हिस्सों के बीच फँस गया। उसने लाख कोशिश की लेकिन वह अपने हाथ पेड़ के दोनों टुकड़ों के बीच से नहीं निकल सका। वह चिल्लाया लेकिन उसकी सहायता के लिए कोई आगे नहीं आया। उसी समय जंगली जानवरों का एक झुण्ड वहाँ पहुँचा और मीलो के माँस को उसी तरह नोचकर खाना शुरू कर दिया जिस तरह वह पशुओं के माँस खाता था। मीलों चिल्लाता रहा और जंगली जानवर उसका माँस नोचते रहे। थोड़ी ही देर में वह ठंडा पड़ गया। दो दिन बाद लकड़हारे वहाँ गए तो उन्हें विशालयकाय अस्थि पंजर मिला। लोगों ने मान लिया कि मीलो को जंगली जानवर खा गए। मीलो के इस भयानक अंत से कुछ लोगों को कष्ट हुआ लेकिन जिन्हें वह अक्सर परेशान करता था उन लोगों ने उसकी मौत से राहत की साँस ली।

दीनदयाल जी एवं वर्तमान राजनीति

– पद्म जी ओमर
नवम 'ख'

भाजपा के लिए सदैव आदर्श बने रहने वाले पंडित दीनदयाल उपाध्याय शुचितापूर्ण आचरण, पारदर्शितापूर्ण सार्वजानिक जीवन और प्रतिबद्धतापूर्ण आस्था के प्रतीक थे। उन्होंने कथनी और करनी में एकरूपता का श्रेष्ठ एवं अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया था। यद्यपि वे एक राजनीतिक संगठन से जुड़े हुए थे तथापि किसी भी अवसर पर केवल उस संगठन को ही केन्द्र बिंदु मानकर उन्होंने अभिव्यक्ति नहीं की। सामाजिक जीवन, राजनीतिक आचरण और प्रशासनिक व्यवस्था के बारे में उन्होंने सार्वभौमिकता की भावना ही प्रदर्शित की। वे अपने कथन से अधिक आचरण से प्रेरणा देते थे। उन्हें हमारे बीच से गए अब ३६ वर्ष हो गए हैं।

महज ५२ वर्ष की अवस्था में उनकी हत्या हो गई थी जो आज तक रहस्य बनी हुई है। तब उन्हें जनसंघ का अध्यक्ष बने केवल ४३ दिन ही हुए थे। उनसे प्रभावित हजारों लोग आज भी जीवनव्रती बनकर सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में अपना योगदान कर रहे हैं। जिस समय क्रूर काल ने उन्हें हमसे छीन लिया, जनसंघ देश में कांग्रेस के उपरांत दूसरी सबसे बड़ी राजनीतिक संस्था बन चुकी थी। गैर कांग्रेसवाद का बोलबाला था। साम्यवादियों से लेकर स्वतंत्र पार्टी तक के लोग कई राज्यों में गैर कांग्रेसी सरकारों में शामिल हुए थे। दीनदयाल जी इस प्रकार के गठबंधन के विरुद्ध थे। सहयोगियों के आग्रह पर इन गठबंधनों में जनसंघ के शामिल होने पर सहमत होते हुए भी उन्होंने अपने लोगों को चेतावनी दी थी कि जो केवल सत्ता के लिए हमारा साथ ले रहे हैं उनके साथ जाने का नुकसान हमें उठाना पड़ेगा। जनसंघ और उसके बाद भारतीय जनता पार्टी के उतार–चढ़ाव पर दृष्टिपात किया जाये दीनदयाल जी की यह चेतावनी एक बार नहीं बल्कि कई बार सही साबित हुई है। आजकल चाहे सांसद हो या विधान मण्डल, औचित्यपूर्ण जनहितकारी समस्याओं से अधिक भावोत्तेजक तत्कालीन विषय महत्त्व पा जाते हैं तथा चर्चा के बजाय हुड़दंग का सहारा लिया जाना आम बात हो गई है। दीनदयाल जी ने १९६० में कहा था कि "सभात्याग तथा हुल्लड़बाजी की प्रवृत्ति केवल समाचार–पत्रों में प्रकाशन की दृष्टि से रहती है। जनसंघ इसे ठीक नहीं समझता हमारे सदस्य इस प्रवृत्ति से बचें। प्रजातंत्र के प्रति निष्ठा का अर्थ है कि हम संसदीय प्रणाली की परंपराओं का निष्ठा से पालन करें।

आज भाजपा के लोग यह कहते हैं कि हमारे शासन काल में कांग्रेस ने जैसा किया था वैसा ही हम भी कर रहे हैं। यह तो वैसा ही हुआ जैसे किसी ने मेरी थाली में अखाद्य पदार्थ खा लिया तो मैं भी उसकी थाली माँग कर उसमें अखाद्य पदार्थ खाऊँ। संसदीय आचरण के मामले में भाजपा द्वारा कांग्रेस पर जवाबी वार भाजपा को अधिक से अधिक कांग्रेस के समकक्ष साबित कर सकता है उससे श्रेष्ठ नहीं। संसद में आजकल धनबलियों और बाहुबलियों के पहुँचने और प्रभाव की आम चर्चा है। दीनदयाल जी ने १९५६ में स्वतंत्र पार्टी का गठन होने पर इस अवसरवादी राजनीतिक शक्ति से सचेत किया था। दल के नाते वह अधिक प्रभावशाली भले ही दिखाई पड़ने लगा हो, लेकिन उसकी कोई सैद्धांतिक आस्था न होने के कारण तथा दल–बदलुओं का समुदाय बन जाने के फलस्वरूप लोकतंत्र में लोगों के विश्वास को धक्का लगेगा। स्वतंत्र पार्टी अल्पजीवी साबित हुई, लेकिन उसके द्वारा छोड़ा गया कुप्रभाव राजनीति में स्थायी हो गया है। उन्होंने चेतावनी दी थी "दलों में अनुशासन हीनता से जनता में अनास्था पैदा होती है।" उद्योगपतियों एवं धनाढ्यों को चुनाव में उम्मीदवार बनाने के खतरनाक परिणामों से उन्होंने जनसंघ को उस समय सचेत करते हुए क्हा था" दलों की आंतरिक शक्तिहीनता उन्हें अवांछनीय शक्तियों का अवलंबन ग्रहण करने के लिए मजबूर करती है।" उस समय उन्होंने तीन अवांछनीय शक्तियों का उल्लेख किया था – राजा महाराजा, जातिवाद और उद्योगपति। अब तो इनका विस्तार अनेक शाखाओं उपशाखाओं के रूप में हो चुका हैं,

क्योंकि दलीय व्यवस्थाएँ सैद्धांतिक प्रतिबद्धता से हटकर व्यक्तिगत निष्ठाओं जिसे हम चाटुकारिता भी कह सकते हैं, पर पूरी तरह से बनायी जाने लगी हैं।

दीनदयाल जी भारत की एकता के लिए लोकतंत्र को अपरिहार्य मानते थे, लेकिन साथ ही लोकतंत्र की पाश्चात्य अवधारणा अर्थात् बहुमत–अल्पमत पर आधारित निर्णय के पक्षघर नहीं थे। उनकी मान्यता थी कि सत्य यदि एक व्यक्ति के द्वारा भी प्रकट किया जाता है तो उसे स्वीकार करना चाहिए। आज जबकि सरकार में रहते हुए किसी योजना या नीति को चलाने वाले विपक्ष में आने पर उसके विरोध को राजनीतिक धर्म माने चुके हैं तो दीनदयाल जी बात निश्चित रूप से उन्हें हास्यास्पद मालूम पड़ती होगी। वर्तमान राजनीति में संयुक्त मोर्चे की सरकारों को अपरिहार्य माना जा रहा है। उसके फलस्वरूप सरकारें जनहितकारी कदम उठाने के बजाय समझौतावादी होती जा रही हैं। दीनदयाल जी चुनावी गठबंधन को भी अनुचित मानते थे। उनका कहना था" समझौते और गंठबंधन जनता में निषेधात्मक वृत्ति पैदा करते हैं जो उचित नहीं है। कभी इस गंठबंधन और कभी उस गठबंधन में शामिल होने का ताजातरीन उदाहरण वर्तमान संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन है जो न संयुक्त है और न ही प्रगतिशील। गठबंधन में बंधन कोई नहीं है, गाँठ अवश्य पड़ती जा रही है। अवसरवाद आज का मुख्य राजनीतिक कारोबार हो गया है। वाणी से अधिक आचरण के प्रभाव में आस्था रखने वाले दीनदयाल जी पूर्वाग्रह से ग्रसित नहीं थे। मुझे एक घटना का स्मरण है।

उत्तर प्रदेश में १९६७ में बनी संविद सरकार जिसमें जनसंघ भी शामिल था, के मुख्यमंत्री चौधरी चरण सिंह ने खाद्यान्न का संकट देखते हुए किसानों को अपनी उपज का कुछ भाग सरकार द्वारा निर्धारित मूल्य का सीधे उसे बेचने का आदेश लागू किया। सरकार में शामिल जनसंघ के राज्य प्रभारी नाना जी देशमुख को साथ लेकर गाँवों की ओर चल पड़े। उन्होंने किसान से सरकार की इस नीति के बारे में पूछताछ का और लखनऊ आकर नीति को समर्थन देने का ऐलान कर दिया। चुनावी घोषणापत्रों के बारे में उनका कहना था कि वे किसी दल की आकांक्षा प्रतीक होते हैं। सरकार में आने पर उसकी व्यावहारिकता के परीक्षण का अवसर मिलता है। जो व्यावहारिक नहीं है उसें त्यागने में संकोच नहीं करना चाहिए। दीनदयाल जी पूर्वाग्रह से प्रभावित नहीं होते थे। उनका कहना था कि "कोई रूढ़िवादी व सैद्धांतिक दृष्टिकोण अपनाना ठीक नहीं होगा।" वह कहते थे कि सनातन का तात्पर्य सतत से है। जो सतत है वही गतिशील है। हमें स्मरण रखना होगा कि निष्ठा ही अनुशासन और आत्मसमर्पण की भावना उत्पन्न करती है।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम में विद्यमान गुण

– कुश पोरवाल
एकादश 'क'

रघुकुल भूषण भगवान श्री रामचन्द्र के समान मर्यादा रक्षक आज तक दूसरा कोई नहीं हुआ।

श्री राम साक्षात् पूर्ण परमात्मा थे। वे धर्म की रक्षा और लोकों के उद्धार के लिए ही अवतीर्ण हुए थे। उनके आदर्श लीला–चरित्रों के पढ़ने–सुनने और स्मरण करने से हृदय में पवित्र भावों की लहरें उठने लगती हैं और मन मुग्ध हो जाता है श्री राम सद्गुणों के समुद्र थे। सत्य, सौहार्द्र, दया, क्षमा, मृदुता, धीरता, वीरता, गम्भीरता, अस्त्र–शस्त्रों का ज्ञान, पराक्रम, निर्भयता, विनय, शान्ति, तितिक्षा, उपरति संयम, निःस्पृता, तेज, नीति ज्ञान, प्रेम, मर्यादा, संरक्षण, एक पत्नीव्रत, प्रजापालन, ब्राह्मणः भक्ति, मातृ–पितृ भक्ति, गुरू भक्ति, भ्रातृ प्रेम, मैत्री शरणगत वात्सल्य, सरलता, व्यवहार, कुशलता, प्रतिज्ञा–पालन, साधु रक्षण, दुष्ट दलन, लोकप्रियता, अपिशुनता, बहुज्ञता, धर्मज्ञता, धर्मपरायणता, पवित्रता आदि सभी गुण मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम में विद्यमान थे। इसलिए हम उन्हें भगवान श्री राम कहकर पुकारते हैं और सभी कष्टों से मुक्ति पाते हैं।

*

लघुकथा

बिल्ली की भूख

आलोक रंजन
अष्टम 'क'

एक राजा था। उसके पास एक ऐसी बिल्ली थी, जो हमेशा भूखी रहती थी, उसे चाहे जितना खिलाया जाए उसका पेट नहीं भरता था। एक दिन राजा ने अपने मंत्री को पास बुलाया और कहा– "राज्य में यह खबर फैला दो कि जो व्यक्ति इस बिल्ली का पेट भर देगा उसे १०,००० स्वर्ण मुद्राएँ दी जायेंगी।" मंत्री ने ऐसा ही किया सम्पूर्ण राज्य में खबर फैला दी कि राजा की बिल्ली का जो सज्जन पेट भर देगा उसे १०,००० स्वर्ण मुद्राएँ दी जायेंगी। अनेक लोग उस बिल्ली को ले गए परन्तु कोई भी उसका पेट न भर सका। यह खबर एक सज्जन चरवाहे के पास पहुँची। वह भी बिल्ली को ले गया। उसने बिल्ली को अपनी गाय का बहुत सारा दूध पिलाया बिल्ली दूध पीती गई तथा चरवाहा परेशान हो गया। वह निराश रहने लगा परन्तु हिम्मत न हारी। एक दिन वह गाय चराने जा रहा था तभी मार्ग में एक साधु मिले उन्होंने चरवाहे को परेशान देखकर उससे परेशानी का कारण पूछा। तब चरवाहे ने सारी कहानी सुना दी, सारी कहानी सुनने के बाद साधु ने चरवाहे से कहा – "तुम बिल्ली के समक्ष गर्म दूध रखना, जब बिल्ली दूध पियेगी तो जल जायेगी। ऐसा करने से एक सप्ताह में वह दूध पीना छोड़ देगी।"

चरवाहे ने यह कार्य शुरू कर दिया। वह दूध गरमाता, गर्म करके वह दूध को बिल्ली के समक्ष रखता जैसे ही बिल्ली दूध पीने आती तो वह जल जाती अतः दूध न पी पाती। इस प्रकार बिल्ली ने कुछ ही दिनों में दूध पीना छोड़ दियां। यह देखकर चरवाहे की खुशी का ठिकाना न रहा। एक दिन चरवाहा राजा के पास गया और कहा कि "बिल्ली की भूख मर गई।" इस पर राजा को विश्वास न हुआ। उसने एक बटुआ भर दूध मँगाया और बिल्ली के सामने रखा। बिल्ली ने दूध देखा और मुँह दूसरी ओर घुमा लिया। राजा ने समझा कि 'बिल्ली की भूख मर गई है। अतः उसने चरवाहे को १०,००० स्वर्ण मुद्राएँ दे दीं।

✻

परिहास

अजीब पंखा

वरूण कुमार
सप्तम 'ख'

एक लड़का बाजार में पंखा (हाथ का) बेच रहा था और जोर–जोर से बोल रहा था, मात्र दो रूपये का पंखा जो कभी नहीं टूटेगा। टूटने पर रूपया वापस।

एक आदमी आया और पंखे को खरीदकर उसने दो रूपये दे दिए और बोला पंखा टूट गया तो वापस कर देंगे। लड़का बोला ठीक है। आदमी पंखा लेकर चला गया।

कुछ दिन के बाद पंखा टूट गया तो वह आदमी उसे वापस करने आया और रूपये वापस करने को कहा। लड़का बोला तुम पंखे को किस प्रकार हिलाया करते थे, तो आदमी पंखे को हाथ में लेकर चेहरे के पास हिलाने लगा। यह देखकर लड़का बोला हम रूपये वापस नहीं करेंगे क्योंकि पंखे को सामने रखकर सिर हिलाना था।

राजनीति : एक मखौल

रवीन्द्र प्रताप सिंह
एकादश 'ख'

यद्यपि मेरी राजनीति में कोई विशेष रूचि नहीं है परन्तु चूँकि यह राजनीति ही शासन का एक महत्त्वपूर्ण अंग है इसलिए इसकी भ्रष्ट होती स्थिति के कारण मन इस विषय पर लिखने को विवश करता है। हम सभी जानते हैं कि हमारे देश में लोकतन्त्रीय शासन प्रणाली है जिसके अन्तर्गत जनता अपने प्रतिनिधियों को चुनकर शासन कार्य सम्पादित करवाती है।

जनता द्वारा निर्वाचित ये प्रतिनिधि ही चाहे वे केन्द्र स्तर पर हो या राज्य स्तर पर, देश की शासन व्यवस्था को सम्पादित करने में माध्यम का कार्य करते हैं। भूमि, जनसंख्या, सम्प्रभुता और सरकार इन चार तत्वों से किसी देश का निर्माण होता है। इन चारों की स्थिति किसी कार के चार पहिए में ज्यादा हवा भरी होने के कारण फट जाने का खतरा मँडरा रहा है, वहीं सरकार रूपी पहिये की हवा लीक होने के कारण उसके दुर्घटनाग्रस्त होने की आशंका है।

आज की राजनीति एक मखौल बनकर रह गयी है। केवल पैसे वाले बेईमान, झूठे, चरित्रभ्रष्ट व्यक्ति ही राजनीति में न केवल अपना स्थान सुनिश्चित करते हैं बल्कि उस ओहदे का, जहाँ तक सम्भव होता है, अनुचित रूप से लाभ उठाते हैं।

अशिक्षित, चरित्रहीन व्यक्तियों का राजनीति में बोलबाला है, एक–दूसरे पर निम्न–स्तरीय आरोपण–प्रत्यारोपण, सत्ता प्राप्ति के लिए किसी भी हद से गुजर जाना–ये सभी तथ्य एक निम्न स्तरीय राजनीति के द्योतक है। जिनके लिए काफी हद तक हम स्वयं उत्तरदायी हैं। क्योंकि हम स्वयं ही ऐसे भ्रष्ट व बेईमान लोगों को तरह–तरह से बढ़ावा देते हैं।

प्रेरक प्रसंग

डा0 जगदीश चन्द्र बसु

मोनित मयंक
नवम 'ग'

एक बार जब डॉ० जगदीश चन्द्र बसु विदेश के कुछ वैज्ञानिकों को बता रहे थे कि पौधों में भी जीवन होता है। तब वहाँ उपस्थित वैज्ञानिकों ने कहा इस बात का प्रमाण क्या है। तब जगदीश चन्द्र बसु ने एक जहर की शीशी निकाली और कहां जिस प्रकार यह जहर मानव को प्रभावित करता है उसी प्रकार यह पेड़–पौधों को भी प्रभावित करेगा। इसके लिए उन्होंने एक इन्जेक्शन पौधे में लगा दिया। इन्जेक्शन लगाने के बाद भी पौधा उसी प्रकार था जिस प्रकार वह पहले था। वहाँ उपस्थित वैज्ञानिक उनके प्रति तरह–तरह की बातें करने लगे। डॉ० जगदीश चन्द्र बोस ने सोचा कि अगर यह जहर मानव को प्रभावित करात है तो पौधे को भी प्रभावित करना चाहिए लेकिन अगर जहर पौधे को प्रभावित नहीं करता तो यह मनुष्य को भी नहीं करेगा। इसके लिए उन्होंने जहर को पी लिया। वहाँ उपस्थित वैज्ञानिकों ने कुछ क्षण के लिए सोचा कि यह उन्होंने क्या किया ? जगदीश चन्द्र बोस बोले कि मुझे कुछ नहीं हुआ। यह जहर नहीं था। जाँच के बाद पता चल गया कि यह जहर नहीं था। उसके बाद उन्होंने असली जहर मँगवाया और एक इन्जेक्शन पौधे में लगा दिया। इस बार पौधा मुर्झा गया और मर गया। इस प्रकार उन्होंने अपने इस प्रयोग द्वारा सिद्ध कर दिया की पौधों मे जीवन होता है।

युग–भारती सदस्यों के साथ विद्वान, मनीषी, सुहृदवर श्री गोविन्दाचार्य जी

वार्षिक खेलकूद में छलांग लगाते हुए चि. दृश्यमुनि चाकमा.

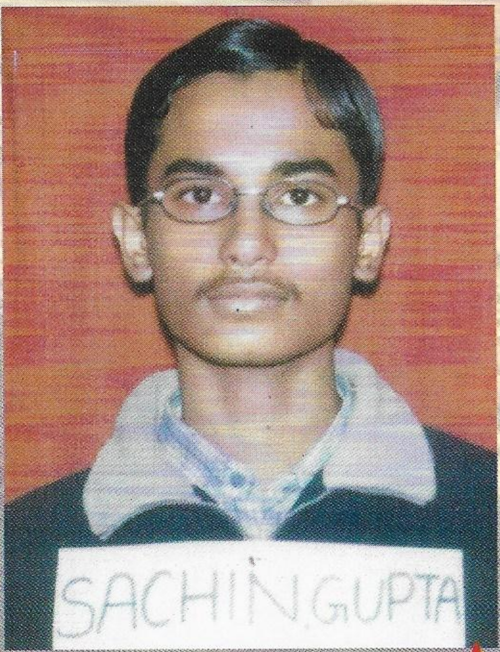

चि. सचिन गुप्त द्वादश 'क' ने क्षेत्रीय गणित ओलम्पियाड में पाँचवाँ स्थान प्राप्त किया।

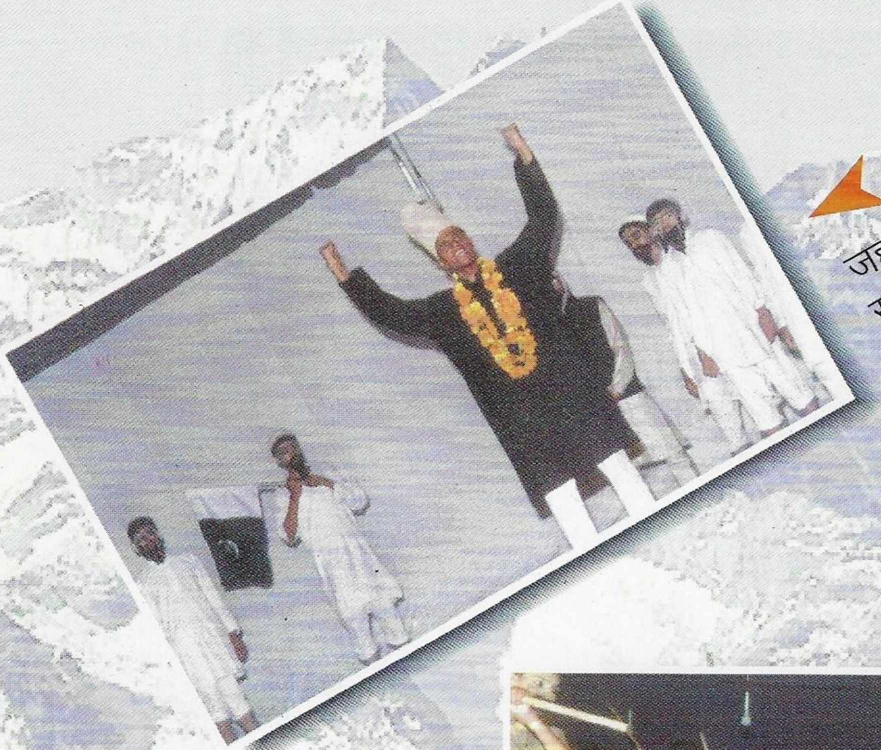

जहर उगलते जिन्ना और
साथी कठमुल्ले
(चि. सुमित व अन्य)

लाला लाजपतराय और आजादी के
दीवानों पर लाठियाँ बरसाते अंग्रेज
(चि. अंकुर, अभिषेक, पंकज, अखिल व अन्य)

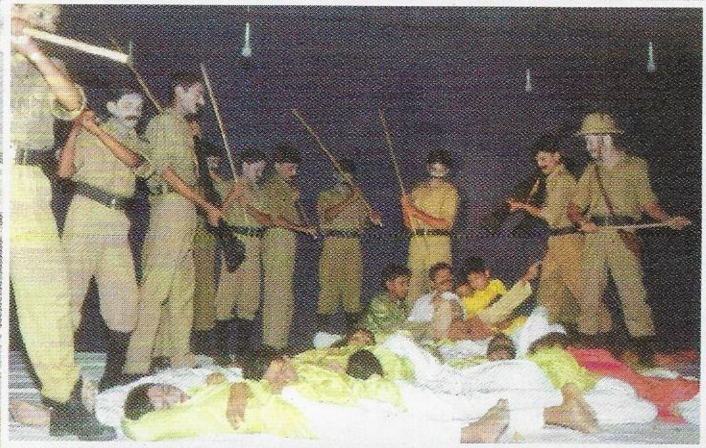

रख दे कोई जरा सी खाक-ए-वतन कफन में

राजगुरु, भगतसिंह और सुखदेव को फाँसी
(चि. विवेक, कश्यप, यतीन्द्र त्रिपाठी,
मनीष तिवारी, नन्दराज तथा राहुल कुशवाहा)

सत्संगति

– पीयूष त्रिवेदी
नवम 'क'

सज्जनानां संगतिः सत्संगतिः कथ्यते। संसारेऽस्मिन् अनेके जीवाः सन्ति। परन्तु येषां संसर्गः येन सह भवति ते तादृशाः एव भवन्ति। सर्वेषु जीवेषु मानवः श्रेष्ठः जीवः सामाजिकः च प्राणी अस्ति। तस्य संसर्गः शोभनः भवितव्यः। यतोहि यावत् पर्यन्तम् मानवः ज्ञानवान्, विवेकशीलः गुणवान् च न भविष्यति तावत् पर्यन्तम् तस्य कल्याणं न भविष्यति। यदि वयम् दुर्जनानां संगतिः करिष्यामः तदा वयम् दुर्जनः एव भविष्यामः। दुर्जनानां संगतिः प्रतिक्षणं दुःखदायिका भवति।

यदि वयम् कज्जलगृहे (काजल) गच्छामः तदा अवश्यमेव कज्जलस्य चिह्नानि अस्माकं शरीरे भवन्ति। एषः अपि सत्संगतेः प्रभावः। अतः कथ्यते यत्–संसर्गजाः दोष गुणाः भवन्ति। अतः सज्जनेन सह अस्माभिः सत्संगतिः करणीया। भर्तृहरिः अकथयत् – ''सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम्।

मिस्र (EGYPT) का इतिहास

– क्षितिज मिश्र
अष्टम 'ख'

मिस्र अपनी प्राचीनतम एवं सर्वोत्तम सभ्यता के कारण अफ्रीका के देशों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। नील नदी और उसकी घाटी के निवासियों का सभ्य संसार के साथ उस काल से सम्बन्ध रहा है, जब अफ्रीका के अन्य देशों के विषय में किसी की कोई जानकारी न थी। १६५८ में अफ्रीका के उत्तरी पूर्वी तथा दक्षिणी पश्चिमी के कुछ भागों में मिलकर संयुक्त अरब गणराज्य बना। इसमें सीरिया और मिश्र शामिल थे। १६६१ में सीरिया इससे पृथक हो गया। परन्तु संयुक्त अरब गणराज्य नाम में कोई परिवर्तन नहीं किया गया।

प्राचीन इतिहास के आधार पर स्पष्ट है कि ई०पू० ३२०० वर्ष से सिकन्दर महान के आक्रमण तक ३३२ ई०पू० २७ राजवंशों ने मिस्र पर शासन किया।

प्रथम तीन राजवंशों के शासन काल (३२००–२५६५ ई०पू०) में काला सागर तक मिस्र का व्यापार होता था। सिनाई में ताँबे का उत्खनन किया जाता था। सूर्य की पूजा होती थी और राजाओं के मृत शरीर की ममी बनाई जाने की प्रथा थी, तथा पत्थर के स्मारकों का निर्माण प्रारम्भ हो गया था।

सिकन्दर महान की मृत्यु के उपरान्त सेनानायक पतोलमी ने अपना राजवंश स्थापित किया। (३३२–५८ ई०पू०) इस काल में सिकन्दरिया हेलेनवाद तथा यूनानी सभ्यता एवं संस्कृति का बहुत बड़ा बौद्धिक केन्द्र बना। उसके पश्चात् यहाँ सिकन्दरियों एवं यूनानियों के भयंकर दंगे हुए। यहाँ ७वीं शताब्दी में अरब मुसलमानों के आक्रमण प्रारम्भ हुए। यहाँ ७४६ से ६६६ तक अब्बासिद खिलाफत एवं ६६६ में फातिमिद राजवंशों का शासन रहा। १२५० में अटयूविद राजवंश की स्थापना हुई। २२ फरवरी १६५८ को सीरिया और मिस्र ने मिलकर संयुक्त अरब गणराज्य की स्थापना की। २८ फरवरी १६२२ को मिस्र स्वतन्त्र साम्राज्य बना था। २८ सितम्बर १६६१ को सीरिया इससे पृथक हो गया। २ सितम्बर १६७१ को पुनः इसका नाम मिस्र रख दिया गया।

रामायण व महाभारत के प्रमुख स्त्री पात्र

– अभिजित शुक्ल
सप्तम 'ख'

रामायण

कौशल्या :– दशरथ की सबसे बड़ी महारानी और श्रीराम की माता।
सुमित्रा :– दशरथ की दूसरी रानी और लक्ष्मण और शत्रुघ्न की माता।
कैकेयी :– दशरथ की छोटी रानी और भरत की माता।
सीता :– पृथ्वी से उत्पन्न जनक की पोषिता पुत्री। इनको जानकी और वैदेही भी कहते हैं। यह श्रीराम की पत्नी व लव–कुश की माता थीं।
उर्मिला :– जनक की पुत्री लक्ष्मण की पत्नी।
मांडवी :– जनक के भाई कुशध्वज की पुत्री और भरत की पत्नी।
श्रुतिकीर्ति :– जनक के भाई कुशध्वज की पुत्री और शत्रुघ्न की पत्नी।
मंथरा :– कैकेयी की मुँहलगी दासी जो कुबड़ी थी और स्वभाव से कुटिल थी।
अहल्या :– गौतम ऋषि की पत्नी, इनके साथ इंद्र ने छल किया था। इनके पति ने इन्हें शाप दिया। राम ने इन्हें शापमुक्त कर दिया।
तारा :– बालि की पत्नी।
रुमा :– सुग्रीव की पत्नी।
ताड़का :– राक्षसी जो मिथिला के वनों में रहती थी।
त्रिजटा :– अशोक वाटिका में रहने वाली राक्षसी।
शबरी :– राम की अनन्य भक्त। राम ने बड़े प्रेम से उसके आतिथ्य स्वीकार कर जूठे बेर खाए थे।
शूर्पणखा :– रावण की बहिन। जो विन्ध्य के क्षेत्र में रहती थी।
सिंहिका :– लंका के निकट समुद्र में रहने वाली राक्षसी।

महाभारत

सत्यवती :– धीवर–कन्या, शांतनु की पत्नी। चित्रांगद और विचित्रवीर्य की माता।
कुंती :– यादव नरेश शूरसेन की कन्या पृथा, जिसका पालन–पोषण शूरसेन के फुफेरे भाई कुंतिभोज के यहाँ हुआ। कुंतिभोज के यहाँ आने पर पृथा का नाम कुंती पड़ा। पांडु की पत्नी। युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन की माँ।
माद्री :– मद्र देश की राजकुमारी जिससे नकुल व सहदेव पैदा हुए। पाण्डु की दूसरी रानी।
गान्धारी :– गांधार की राजकुमारी। धृतराष्ट्र की पत्नी। सौ पुत्रों, एक कन्या की माँ। जिसने धृतराष्ट्र के जन्मांध होने के कारण जीवन भर आँखों पर पट्टी बाँधी।
दुःशाला :– सिंधुराज जयद्रथ की पत्नी। गान्धारी व धृतराष्ट्र की पुत्री व दुर्योधन की बहिन।
द्रौपदी :– द्रुपद की कन्या। पाँचों पाण्डवों की पत्नी। अन्य नाम कृष्णा, याज्ञसेनी।
सुभद्रा :– कृष्ण की बहिन, अर्जुन की पत्नी।
उलूपी :– नागकन्या तथा अर्जुन की पत्नी।
चित्रांगदा :– मणिपुर की राजकुमारी, अर्जुन की पत्नी तथा बभ्रुवाहन की माँ।
हिडिंबा :– राक्षस हिडिंब की बहिन, भीम की पत्नी तथा घटोत्कच की माँ।

जागो सृजन के देवता

– अभिषेक शर्मा
अष्टम 'क'

चि० अभिषेक शर्मा अष्टम 'क' कक्षा के एक सज्जन और कम बोलने वाले छात्र हैं और इनका लेख अत्यधिक सुन्दर है।अभिषेक ने मुझे तीन–चार कविताएँ दी थीं जिनमें से प्रस्तुत कविता मैंने चुनी है। सृजन और सत्कर्मों को प्रोत्साहित करने वाली यह कविता लयबद्ध है। – **संपादक**

जागो सृजन के देवता निर्माण के लिए।
जीवन मिला तुम्हें नए विहान के लिए।।

मानव जनम मिला है सौभाग्य बड़े कर्म से।
मनुष्यता वरण करें, चलें स्वधर्म से।।

बल बुद्धि बावरे नहीं गुमान के लिए।
जागो सृजन के देवता निर्माण के लिए।।

जिससे मिलो उसी को, प्यार की मिठास दो।
अपनत्व प्रेम रागिनी भरा हुलास दो।।

जीवन है तेरा सृष्टि का मुस्कान के लिए।
जागो सृजन के देवता निर्माण के लिए।

छू लो जो मृत्तिका को तो स्वर्ण बनाओ।
हर कालिमा तराश कर शुभ ज्योति जलाओ।।

आओ करो सुकर्म उत्थान के लिये।
जागो सृजन के देवता निर्माण के लिए।।

कर से करो सुकर्म तो अम्बार लगा दो।
आलस्य अकर्मण्यता को दूर भगा दो।।

है कर्म योग राष्ट्र के उत्थान के लिये।
जागो सृजन के देवता निर्माण के लिये।।

(हास्य व्यंग्य)

जनता के सेवक

– सुमित कक्कड़
नवम 'ग'

एक हवलदार ने रामू को रोका,
बिन हेलमेट चलने पर टोका।
बोला, महाशय लाइसेंस दिखलाइए।
बिन हेलमेट का कारण बतलाइए।

रामू ने कहा – हेलमेट है टूटा,
लाइसेंस भी घर पर है छूटा।
वो बोला तो तुम क्यों नहीं छूट गये,
तुम से पहले दो लोग हवालात गये।

रामू बोला – "साहब मैं हूँ मजबूर,
घर पर बीबी – बच्चे हैं भरपूर।
ऑफिस देर से पहुँचूँगा अगर गाड़ी न होगी साथ,
बीबी मारेगी डण्डे क्योंकि नौकरी से धुल जाएँगे हाथ।

हवलदार बोले –
साहब हम हैं जनता के सेवक,
सिखाते नहीं किसी को सबक।
दे दो एक सौ का पत्ता,
थाने में हजार देना है पड़ सकता।

रामू तो था एक मजबूर बन्दा,
हवलदार था बड़ा मुश्तण्डा।
नोट थमा रामू ने जान छुड़ायी।
आई बला पैसों से निपटाई।

✵

सुनामी का कहर

– प्रणव त्रिपाठी
षष्ठ 'क'

दैवी आपदा आयी थी पृथ्वी पर
दिन था रविवार दिनांक थी छब्बीस दिसम्बर।
इस दिन डोला हिन्द महासागर
उठीं इसमें सुनामी लहर
इसका हुआ पृथ्वी पर कहर
गाँव–गाँव शहर–शहर
प्रकृति का अनोखा खेल था पृथ्वी पर।
इस आपदा से ढह गये लोगों के झोपड़ी–घर
आया था तबाही का मंजर
जब इस मन्जर से बच निकले
तब गयी परिवार पर नज़र
किसी का गया लाल, कोई हुआ अनाथ।
कोई हुआ विधुर
दैवी आपदा आयी थी पृथ्वी पर
दिन था रविवार दिनांक थी छब्बीस दिसम्बर।
जब सुनी ईश्वर ने लोगों की करुण पुकार
जब बन गए द्वीप शमशान
तब बन्द किया ईश्वर ने दुःख का पहर
गुमनामी का आलम छाया था गाँव–गाँव शहर–शहर।
दैवी आपदा आयी थी पृथ्वी पर
दिन था रविवार दिनांक थी छब्बीस दिसम्बर।
भारत में तीस हजार, इंडोनेशिया में एक लाख
तो श्रीलंका में पचास हजार,
दैवी आपदा आयी थी पृथ्वी पर
दिन था रविवार दिनांक थी छब्बीस दिसम्बर।
पानी के बवण्डर व हवा के दो झोंकों ने
किया लोगों का संहार।
दैवी आपदा आयी थी पृथ्वी पर
दिन था रविवार दिनांक थी छब्बीस दिसम्बर।

कितनी प्यारी है गौरैया

– कपित देव तिवारी
दशम 'क'

गौरैया पर लिखी गयी यह कविता लयात्मक है, इसमें गेयता है और प्रभावी भी है। तुक निर्वाह, गति, यति तथा अंतिम चरण में हुए भावोत्कर्ष के कारण चि० कपिल बधाई के पात्र हैं। **–संपादक**

चुग्गा लेती, फिर उड़ जाती,
आकर लेती खूब बलैया,
कितनी अच्छी है गौरैया।

नन्हें बच्चे चोंच खोलकर,
चीं–चीं, चीं–चीं बोल–बोलकर,
'हमको भूख लगी है' कहते
दिन भर शोर मचाते रहते
यह भी इन प्यारे बच्चों को
कहती होगी कुँवर कन्हैया
कितनी अच्छी है गौरैया।

उठ जाती है, बड़े सवेरे
थकती नहीं, लगाती फेरे
फुरसत नहीं, इसे है रहती
खुश होती है जब–जब आती
कभी फुदक कर नाच नचाती
बन जाती है कभी गवैया
कितनी अच्छी है गौरैया।

बच्चे सीख रहे हैं, उड़ना
उनसे होगा इसे बिछुड़ना
बीता मौसम फिर आएगा
नया घोंसला बन जाएगा
समझ न आती भूल–भुलैया
कितनी अच्छी है गौरैया।

✵

मैं उस देश का बेटा हूँ

– **अर्पित पोरवाल**
अष्टम 'क'

*चि० अर्पित पोरवाल अष्टम कक्षा में पढ़ने वाले एक शारीरिक दृष्टि से दुर्बल छात्र हैं। उन्हें देखकर मुझे निराला की पंक्तियाँ – "बैठा सशरीर दैन्य दुर्बल" ध्यान आती हैं और विनोद में उन्हें मैं "निरीह" का सम्बोधन भी दे दिया करता हूँ, परन्तु उस निरीह बालक में निराकार प्रचण्ड विद्युत भी तरंगित होती है इसका अनुमान तो मुझे तब हुआ जब चि० अर्पित ने मुझे अपनी यह वीररस की कविता सौंपी। मूलतः कविता के द्वितीय चरण के अन्त्यानुप्रास–मरोड़ा और कोड़ा ने ही सम्पादक को प्रभावित किया है परन्तु साथ ही उनका निराला व्यक्तित्व भी इस कविता के छप जाने का कारण है। – **संपादक***

उस देश का बेटा हूँ,
है भारत नाम जिसका।
मैं उस शेर का बेटा हूँ,
है हिन्दुस्तान नाम जिसका।

ओ गद्दारों देश को तुमने,
तोड़ा और मरोड़ा।
अब बरसेगा तुम पर निश्चित,
मेरा निर्दयी कोड़ा।

मैं वीर अभिमन्यु बनकर,
लड़ने तुमसे आऊँगा।
और शिवाजी की नंगी तलवार,
अपने संग लाऊँगा।

गिरेगी कटकर गर्दन नीचे,
अब तुम्हारे धड़ से।
नहीं समझना ऐसा वैसा,
तुम्हें मिटाऊँगा जड़ से।

मैं गद्दारों को नहीं छोड़ने वाला हूँ
देशप्रेम की आज भयंकर
पिये हुए मैं हाला हूँ।

मैं आजाद–भगत का वारिस
देखो कितना मतवाला हूँ।

संकल्प

– शिवम शर्मा
अष्टम 'क'

समाज के पिछड़े वर्ग के प्रति संवेदना का इज़हार करते हुए चि० शिवम शर्मा उस अन्त्यज वर्ग के उत्थान के प्रति संकल्पित दिखते हैं – ***संपादक***

है चाह यही, संकल्प यही,
हम करके कुछ दिखलायेंगे।
मरने वाली दुनिया में हम,
अमरो में नाम लिखायेंगे।

जो लोग गरीब भिखारी हैं,
जिन पर न किसी की छाया है।
हम उनको गले लगाएँगे,
हम उनको सुखी बनायेंगे।

जो लोग पड़े अँधेरे में,
अपनी ही नहीं नजर में हैं।
उनके घर के हर कोने में,
उद्यम का दीप जलायेंगे।

जो लोग हारकर बैठे हैं,
उम्मीद मारकर बैठे हैं।
हम उनके बुझे दिमागों में,
फिर से उत्साह जगायेंगे।

रोको मत, आगे बढने दो,
आजादी के रखवाले हैं।
हम मातृभूमि की सेवा में,
अपना सर्वस्व लुटायेंगे।

हम उन वीरों के बच्चे हैं,
जो धुन के पक्के–सच्चे हैं।
उनका मान बढ़ाकर ही,
हम उनका कर्ज चुकायेंगे।

भारत माँ और भारत बेटा

– कुश पोरवाल
एकादश 'क'

भारत माँ की वेदना को उभारती हुई ये कविता चिन्तन प्रधान है। भारत माता का अपने एक सुपुत्र से संवाद है। हम तभी तक हैं, जब तक देश है इसलिये देश को बचाने का संकल्प लें। – **संपादक**

माँ !
तुम्हारे इस कारुणिक रूप को देखकर
बहुत डर लगता है।
तुम्हारे शरीर पर गहरी खरोंचे
और इससे बूँद – बूँद रिसता लहू।
तुम्हारा झुलसा हुआ काला रंग,
चेहरे पर पड़ी झुर्रियाँ,
आभाहीन पीतवर्ण आँखें,
इक्कीसवीं सदी में प्रवेश कर चुके तन पर
मलिन फटे चीथड़े।
भूख से व्याकुल पेट,
प्यास से तृषित ओंठ
और चिन्ताओं से रेखित ललाट
कितनी कृषकाय हो गयी हो तुम !
क्या हो गया है, कितनी चुप हो !
कुछ तो बोलो माँ !
माँ ने कहा –
बेटे !
तुम कितने अनजान हो,
स्वार्थ के गर्भ से निकल ज्ञान की गोद में जा गिरे हो।
इसलिए तुम्हें कुछ नहीं पता।
तुम्हारे भाइयों ने आपस में मरकट कर
मुझे भी नोचा खसोटा है।
नारी को सती बनाने की साजिश में
मुझे भी झुलसाया है,
मेरे चेहरे पर ये शिकने नहीं
सूखी धरती की दरकनें हैं।
मेरी आँखों में गरीबी की रेखा से नीचे जीते

करोड़ों भूखे प्यासों की आहें हैं।
और कुछ तुम्हारे भाई
चाँदी के चन्द टुकड़ों में नीलाम होकर
अब मुझे भी बेचने पर तुले हैं।
गेट और डंकल प्रस्तावों से खोखले होते
मेरे तन पर
आयोजनों से मंडित वस्त्र पहनाकर
इक्कीसवीं सदी में प्रवेश कर चुके हैं।
आरक्षण में लाकर जातिवाद के बीज बो रहे हैं।
पर समझ लो मेरी ललकार सुन लो –
माँ खो गयी तो तुम कहाँ होगे ?
तुम्हारा कोई अस्तित्व नहीं होगा।
देश जिन्दा है तो तुम जिन्दा हो।
देश छिन गया तो तुम भी छिन जाओगे।
इसलिए नींद से जागो, आँखें खोलो
भोर के सूरज की तरह उगो तुम
और अपनी माँ का रूप बदल डालो।

✳

जो जैसा करता है, वैसा ही पाता है

– प्रियांशु मिश्र,
सप्तम 'ख'

एक विद्वान और जिज्ञासु राजा की सभा में हर समय विद्वानों का जमघट लगा रहता था। एक रात राजा अपन शयन कक्ष में लेटा था। ठीक सामने दीपक जल रहा था। सहसा राजा के मन में एक प्रश्न उठा, दीपक का प्रकाश कितना उजला है। न तेल काला और न ही बाती काली है। फिर यह काजल उगल रहा है, ऐसा क्यों होता है ?

प्रातः होते ही उसने यह समस्या विद्वानों के समझ रखी। विद्वानों ने अपने–अपने विचार रखे पर राजा संतुष्ट न हुआ। अंत में राजा ने राजसभा में एक वृद्ध महात्मा से पूछा, "गुरुवर, जग को प्रकाश देने वाले दीपक के पास सिर्फ कालिमा क्यों रह जाती है ?"

वृद्ध महात्मा बोले, "पहले मेरे इस प्रश्न का उत्तर दें, दीपक क्यों जलाया जाता है ?"

"प्रकाश के लिये" राजा ने उत्तर दिया।

"अर्थात् अंधकार को नष्ट करने के लिए, इसका अर्थ यह भी हुआ कि दीपक अंधकार खाता है। राजन् जो जैसा खाएगा वैसा ही उगलेगा। तभी तो राजन् यह कहा जाता है, जो जैसा करता है बदले में वैसा पाता है। जो देना बंद कर देता है, वह अंततः नाश को प्राप्त होता है।"

✳

आठ सिद्धियाँ क्या हैं ?

– नीराजक

अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता
अस वर दीन जानकी माता।।

हे केसरीनन्दन ! माता श्री जानकी जी ने आपको ऐसा वरदान दिया है जिसके कारण आप किसी भी भक्त को 'आठों सिद्धियाँ' और नौ निधियाँ दे सकते हैं।

आठ सिद्धियाँ इस प्रकार हैं –

१. **अणिमा** – इससे साधक अदृश्य रहता है और कठिन से कठिन पदार्थ में प्रवेश कर जाता है।

२. **महिमा** – इससे योगी स्वयं को बहुत बड़ा बना लेता है।

३. **गरिमा** – इससे साधक स्वयं को भारी से भारी बना सकता है।

४. **लघिमा** – इससे साधक स्वयं को जितना चाहे उतना हल्का बना सकता है।

५. **प्राप्ति** – इससे इच्छित पदार्थ की प्राप्ति होती है।

६. **प्राकाम्य** – इससे इच्छा करने पर वह पृथ्वी में समा सकता है या आकाश में उड़ सकता है।

७. **ईशित्व** – इससे योगी को सभी पर शासन करने की सामर्थ्य प्राप्त हो जाती है।

८. **वशित्व** – इससे दूसरों को वश में किया जा सकता है।

नौ निधियाँ – **१. पद्म** **२. महापद्म** **३. शंख** **४. मकर** **५. कच्छप** **६. मुकुन्द** **७. कुन्द** **८. नील** **९. बर्च्च**

शिक्षाप्रद प्रसंग

– निशान्त सिंह
सप्तम 'क'

एक गाड़ीवान हनुमान जी का बड़ा भक्त था। वह नित्य उनके मन्दिर में दर्शन को जाता था तथा वहीं बैठकर हनुमान चालीसा का पाठ करता था। उसका ईश्वर पर विश्वास था।

एक दिन वह गाड़ी लेकर जा रहा था। रास्ते में कीचड़ में गाड़ी फँस गई। बैल उसे खींच नहीं पा रहे थे। तभी वह हनुमान चालीसा का पाठ करने लगा। पाठ करते देर हो गई, परन्तु हनुमान जी नहीं आए। वह झल्लाने लगा। एक किसान पास के खेत को जोत रहा था। सारा तमाशा देख वह बोला "अरे भाई हनुमान जी तो समुद्र में भी कूद पड़े थे, परन्तु तू तो कीचड़ में उतरने मात्र से ही डर रहा है, तो तू उसका कैसा भक्त है।" उस अंधविश्वासी को चेत हुआ। उसने कीचड़ में उतरकर पहियों पर बल लगाया। फलस्वरूप गाड़ी कीचड़ से पार हो गई। सत्य ही कहा गया है –

'उद्यमेन हि सिद्धयन्ति कार्याणि न मनोरथैः'

परिश्रमी कछुआ और बदमाश बंदर

– दिव्यांशु दीक्षित
सप्तम 'क'

एक दिन कछुआ समुद्र के किनारे धूप सेंक रहा था। उसे समुद्र में एक केले का पेड़ बहता हुआ दिखाई दिया। वह उसे किनारे तक खींच लाया। लेकिन जमीन पर उसे खींचने की ताकत कछुए में न थी। इसलिये वह बंदर के पास गया और बोला देखो मैं यह केले का पेड़ लाया हूँ इसे मेरे बगीचे तक पहुँचाने में मदद कर दो। बन्दर बोला, मैं तभी मदद करूँगा जब तुम मुझे मेरा हिस्सा दोगे। कछुआ तैयार हो गया। दोनों मिलकर उसे बगीचे तक ले आए। बन्दर बोला, अब मेरा हिस्सा दे दो। कछुए ने कहा, पेड़ को जमीन पर लगा देते हैं। जब फल आयेगा, तब हिस्सा ले लेना। लेकिन बन्दर नहीं माना। उसने पेड़ को काट डाला। ऊपर का हिस्सा हरा–भरा था, उसमें पत्तियाँ थीं, नीचे जड़ थी, वह हिस्सा गंदा था। बंदर बोला, मैं ऊपर वाला हिस्सा लूँगा। फिर दोनों ने अपना–अपना हिस्सा जमीन में लगा दिया।

कुछ दिनों में बंदर का पेड़ सूख गया और कछुए का पेड़ बढ़ गया और उसमें फल आ गए। फल पक भी गए लेकिन कछुआ फल तोड़ने में असमर्थ था। इसलिए वह फिर बन्दर के पास गया और बोला, फल तोड़ने में मेरी मदद करो तो मैं तुम्हें कुछ फल दूँगा। बंदर मान गया और पेड़ पर चढ़ गया। वहाँ बैठकर वह फल खाने लगा। कछुआ देखता रहा, फिर बोला – बंदर भाई मुझे भी कुछ फल दे दो। बन्दर बोला कि पहले भी मुझसे धोखा किया था, अच्छा हिस्सा आपने ले लिया था और मुझे खराब वाला हिस्सा दिया था, अब मैं फल खाऊँगा। कछुआ गिड़गिड़ाता रहा परन्तु बंदर ने उसे एक भी केला नहीं दिया और उसने केले के छिलके कछुए पर फेंक दिये। अब कछुए को गुस्सा आ गया, उसने पास से काँटे वाली झाड़ियाँ इकट्ठी की और केले के पेड़ के नीचे जमा दी।

बंदर केले खाकर नीचे उतरा तो काँटे चुभ गए। दर्द से वह चिल्लाने लगा। इस पर कछुए को हँसी आ गयी। इस पर खिसियाकर बन्दर ने उससे कहा, मैं तुझे पीटूँगा। कछुआ बोला, ठीक है चाहे जो कुछ करो, मेरा कुछ नहीं बिगड़ेगा। बस... मुझे पानी में मत डुबोना, नहीं तो मेरी जान निकल जाएगी। यह सुनकर बंदर को मजा आ गया। मुझे पहले क्यों नहीं सूझा। तुझे तो मैं पानी में ही डुबोऊँगा। यह कहकर कछुए को वह पानी में ले गया और उसे पानी में डुबो दिया। कछुआ डूब तो गया लेकिन सतह पर जाकर उतर आया और सिर निकालकर बंदर को चिढ़ाता हुआ बोला– धन्यवाद बंदर भाई, तुम्हें नहीं मालूम, पानी मेरा घर है।

ऐसे थे वीर सावरकर

– शिवम अग्रवाल
नवम 'ग'

जिस समय पराधीन भारत को अंग्रेजों से स्वतंत्र कराने के प्रयास चल रहे थे, उसी समय नासिक जिले के छोटे से ग्राम भगूर में २८ मई ११८३ को दामोदर सावरकर एवं राधाबाई के यहाँ एक बालक 'विनायक' ने जन्म लिया। छत्रपति शिवाजी की तरह इस बालक की माँ राधाबाई ने महाभारत और रामायण की कथाएँ सुनाईं।

साथ हीं राणा प्रताप और शिवाजी की वीरगाथाओं से बालक को शिक्षित किया। यही कारण रहा है कि अपने स्कूली जीवन में बच्चों को संगठित कर 'मित्र–मेला' नामक संस्था का १ जनवरी १६०० को गठन किया। तिलक जी से परिचय होने के बाद उनके अन्दर राष्ट्रीय भावनाओं का और अधिक प्रादुर्भाव हुआ। सन् १६०५ में विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार कर होली जलाई। १६०६ में आपने बी०ए० पास कर लिया। इसी समय आपने 'अभिनव भारत' नामक संस्था का सशस्त्र क्रांति के लिए गठन किया। सावरकर ने 'गणेश पूजा' और 'शिवाजी उत्सव' बड़ी जोर–शोर से मनाने का कार्यक्रम प्रारम्भ किया। विनायक दामोदर सावरकर की लेखन प्रक्रिया चलती रही। चाफेकर बन्धुओं को फाँसी पर चढ़ाने से विनायक सावरकर अत्यन्त प्रभावित हुए।

१ जुलाई १६०६ को लन्दन के जहाँगीर हाल में एक मीटिंग चल रही थी। सावरकर जी इंग्लैण्ड में १३ मार्च १६१० को गिरफ्तार किए गये। उन्हें ८ जुलाई १६१० को 'मोरिया' नामक जहाज से मुकदमा चलाने के लिए भारत लाया जा रहा था तभी सावरकर जहाज से कूद पड़े और तैरते–तैरते फ्रांस जा पहुँचे। लेकिन अंग्रेजों ने उन्हें पुनः गिरफ्तार करके मुकदमा चलने के दौरान आजन्म कारावास की सजा दी गई। इन्होंने जेल में संघर्षपूर्ण जीवन बिताया। वहाँ बैल के स्थान पर विनायक सावरकर से तेल निकलवाने के लिए कोल्हू चलवाया जाता था। इस प्रकार इन्होंने १० वर्ष गुजार दिये। फिर १६२१ को इन्हें कालापानी की सजा काटकर दूसरे जेल में रखा गया। इन्होंने यहाँ 'हिन्दू सभा' की स्थापना की और १० मई १६३७ को जेल से मुक्त हुए। २६ फरवरी १६६६ को ये शरीर के बंधन से मुक्त होकर स्वर्ग सिधार गए।

याद करें कालापानी को
अंग्रेजों की मनमानी को
कोल्हू में जुत तेल पेरते
सावरकर से बलिदानी को।

– श्री अटल बिहारी वाजपेयी

(कहानी)

मनोहर लाल

– अभय प्रताप सिंह सेंगर

नवम 'क'

*मनोहर लाल के माध्यम से चि० अभय प्रताप ने मनुष्य जीवन की ही कथा लिखी है। चिरन्तन सुख की खोज करता हुआ मनुष्य वर्तमान से सदैव असंतुष्ट रहता है तथा भविष्य के सुख के स्वप्न देखता रहता है। शायद यही जीवन है। – **सम्पादक***

मनोहर लाल की जिन्दगी में ऐसे कई मुकाम आए जब वह अपने आपको खत्म कर सकता था। मनोहर लाल जब छोटा था, बहुत एकाकी किस्म का दुबला–पतला सा बच्चा था। उसकी माँ भी दुबली और प्रायः बीमार रहने वाली स्त्री थी। मनोहर लाल अपनी माँ से बहुत प्रेम करता था और जिन दिनों उसकी उम्र **दस साल** थी, वह सोचता था कि जिस दिन उसकी माँ नहीं रहेगी, उसी दिन वह भी मर जाएगा। अपनी माँ को मृत्यु से बचाने हेतु वह अक्सर अपनी माँ के पास रहता था क्योंकि उसका मानना था कि मृत्यु अकेले रहने पर आती है।

मनोहर लाल की **बीस साल** की उम्र में एक नौकरी लगी। नौकरी लगने से पहले वह सोचता था कि अगर उसे वह नौकरी न मिलती तो वह मर जाता।

मनोहर लाल की नौकरी का बंदोबस्त महकमें में था। दफ्तर में उसके जिम्मे जमीनों से सम्बन्धित दस्तावेजों की नकल करके देने का था। मनोहर लाल जोखिम से बचने के लिए एक चपरासी के माध्यम से रिश्वत लेता था। एक बार वह चपरासी रिश्वत लेते हुए पकड़ा गया। संयोग से मनोहर लाल उन दिनों एक सप्ताह की छुट्टी पर था। मनोहर लाल ने चपरासी के रंगे हाथों पकड़े जाने की खबर एक स्थानीय अखबार में पढ़ी और सोचा कि उस चपरासी की जगह वह खुद होता तो जरूर मर जाता। मनोहर लाल उस वक्त **चालीस** का था।

मनोहर लाल की माँ के विपरीत उसके पिता मजबूत कद–काठी के आदमी थे। वे अस्सी बरस जिंदा रहे। अन्तिम पाँच वर्षों में उनका खाना–पीना, मलमूत्र, सब बिस्तर पर ही होता था। वे बोल तक नहीं सकते थे। अपने पिता की ये हालत देखकर मनोहर लाल सोचता था कि यह भी कोई जिन्दगी है, जिस दिन वह खुद बिस्तर से उठने में असमर्थ हो जाएगा, उसी दिन वह मर जाएगा। मनोहर लाल अब **सत्तर** का है।

उसकी माँ, जब वह बारह साल का था, मर गयी। मनोहर लाल की पत्नी फूहड़ और चालाक थी। वह मनोहर लाल के सौतेले भाई से हिली–मिली थी। इसी कारण मनोहर लाल अपना पुश्तैनी मकान छोड़कर किराए के मकान में रहने लगा था। मनोहर लाल इन दिनों बीमार रहता है। उसके बेटे शायद उसी तरह सोचते हैं कि वे मनोहर लाल की जगह होते तो एक भी दिन नहीं रहना चाहेंगे। लेकिन मनोहर लाल को गाजर का हलवा, मूँग की दाल और जाड़े की धूप अच्छी लगती है। जाड़े के मौसम में कटोरी में सरसों का तेल लेकर मनोहर लाल घुटनों पर मलता रहता है और सोचता है कि यदि उसकी आँख का ऑपरेशन हो जाएगा तो जीना आसान हो जाएगा।

यही जीवन है।

✷

कहानी

अजीबो-गरीब किन्तु सत्य

– निशांत सिंह
सप्तम 'क'

- ब्रांज सनबर्ड नामक चिड़िया अपने घोंसले की मजबूती हेतु मकड़ी के जाले का इस्तेमाल करती है।
- एक चिड़िया (कोई भी) २४ घण्टे में अपने वजन के आधे भार के बराबर खाना चट कर जाती है।
- प्याज में सल्फर की उपस्थिति के कारण उसे काटते वक्त आँसू आ जाते हैं।
- कद्दू का अंग्रेजी नाम 'पंपकिन' मूलतः ग्रीक शब्द 'पेपोन' से उद्धृत है, जिसका अर्थ है "सूरज द्वारा पकाया गया"।
- गिलहरी परिवार का सदस्य प्रेयरी डॉग कुत्तों की तरह भौंकता है।
- आस्ट्रेलिया में पायी जाने वाली कुत्तों की प्रजाति 'डिंगो' लगभग १,३५,००० वर्ष पुरानी है।
- केन्या में पाये जाने वाले पाटस बन्दर ५५ किलोमीटर/घण्टा की रफ्तार से भाग सकते हैं।
- सतह पर शनि का ताप १२,००० डिग्री केल्विन है।
- सम्पूर्ण विश्व में किंग वल्चर प्रजाति गिद्धों की सबसे बड़ी प्रजाति है। इनका भार ३.८ कि०ग्रा० तथा लम्बाई ३२ इंच (औसतन) है।
- विश्व का सबसे ऊँचा सड़क पुल टॉर्न नदी पर बना है, जो कि ३० करोड़ डॉलर के खर्चे से बना है। इसकी ऊँचाई २७० मीटर (बिना तार बांधे) है।

✳

संस्मरण

गंगा मेरे लिये ही नहीं बहती

– शैलेश त्रिवेदी
अष्टम 'क'

कांग्रेस कार्यकारिणी की मीटिंग में शामिल होने के लिए एक बार गाँधी जी इलाहाबाद आये और पं० मोती लाल नेहरु के यहाँ आनन्द भवन में ठहरे। सबेरे नित्य कर्म से निवृत्त होकर गाँधी जी मुँह हाथ धो रहे थे और जवाहर लाल नेहरु पास खड़े कुछ बातें कर रहे थे। कुल्ला करने के लिए गाँधीजी जितना पानी लिया करते थे वह समाप्त हो गया तो उन्हें दूसरी बार फिर पानी लेना पड़ा। इस पर गाँधीजी बड़े खिन्न हुए और बातचीत का सिलसिला टूट गया। जवाहर लाल नेहरु ने इसका कारण पूछा तो उन्होंने कहा – "ध्यान न रहने से मैंने पहले पानी अनावश्यक रूप से खर्च कर दिया और अब मुझे दुबारा फिर लेना पड़ रहा है। पं० नेहरु हँस पड़े और कहा – "यहाँ गंगा यमुना दोनों बहती हैं रेगिस्तान की तरह पानी कम थोड़े ही है आप थोड़ा अधिक पानी खर्च कर लें तो क्या चिन्ता की बात है ?" गाँधी जी ने **कहा – गंगा यमुना मेरे लिए ही नहीं बहती।** प्रकृति में कोई चीज कितनी ही मात्रा में उपलब्ध हो, मनुष्य को उतना ही खर्च करना चाहिए जिसका उसके लिए अनिवार्यतः आवश्यक हो। ऐसा न करने से दूसरों के लिए कमी पड़ेगी और वह प्रकृति की एक चोरी मानी जायेगी।

✳

किससे क्या शिक्षा मिलती है ?

– मयंक बाजपेई
सप्तम 'ख'

गाय	–	ममता
चींटी	–	परिश्रम
बया	–	कारीगरी
शेर	–	शक्ति
लोमड़ी	–	चालाकी
जोंक	–	पीछे पड़ जाना
कबूतर	–	शांति
कोयल	–	मीठे बोल
गिरगिट	–	समयानुसार अपने को ढालना
कंगारू	–	संतान के प्रति प्रेम
भेड़	–	अनुशासन
कुत्ता	–	स्वामीभक्ति
मोर	–	सुन्दरता

धन की सीमा

– मयंक बाजपेई
सप्तम 'ख'

पैसा किताब खरीद सकता है, विद्या नहीं।
पैसा कलम खरीद सकता है, सुलेख नहीं।
पैसा संगीत खरीद सकता है, स्वर नहीं।
पैसा डॉक्टर खरीद सकता है, जीवन नहीं।
पैसा मूर्ति खरीद सकता है, भगवान नहीं।
पैसा आराम खरीद सकता है, चैन नहीं।
पैसा सुन्दर वस्तुएँ खरीद सकता है, सौन्दर्य नहीं।
पैसा आदमी खरीद सकता है, प्यार नहीं।

सच बनाम झूठ

– अभिनव अग्निहोत्री
अष्टम 'क'

*लोग कहते हैं कि सच्चाई की जीत होती है लेकिन देखा ये जा रहा है कि अँधेरे उजालों को रौंद रहे हैं। वंचना शिखरस्थ है। चि० अभिनव ने एक क्रिकेट मैच का रूपक देकर इस चिंतनीय 'सच' की सफल अभिव्यक्ति की है। – **संपादक***

'झूठ' के 'बल्ले' से सच की गेंद पर,
आगे बढ़े 'बुराई' टीम के कप्तान
मारा जोर से गेंद को।
गेंद जाकर गिरी सीमा पार
अंपायर ने कहा 'छक्का'
हारी 'अच्छाई' टीम।
ईमान रह गया भौंचक्का
सच रह गया हक्का–बक्का
पूरा कानून बदल गया
झूठ का ताना–बाना बुना गया
भ्रष्टाचारी थे बहुत प्रसन्न
सच्चे थे बिल्कुल सन्न
सोच रहे थे अब क्या होगा
इतिहास बदलेगा कुछ भी अच्छा न होगा
आये 'बुराई' टीम के कप्तान,
लिया अपना ईनाम
सुनाई सजा अच्छों को
उबालो गर्म तेल में इनको
और कहा साथ में भून डालो आयोजक व अंपायर को
और फिर सरेआम
'अच्छाई टीम' को मारकर
खौलते तेल में डाला गया
आयोजक और अम्पायर को भी भूना गया
फिर 'बुराई टीम' का
पैशाचिक जश्न हुआ
और पूरा समाज
सिर्फ दर्शक बना रहा

गायत्री महिमा

– मयंक मिश्र
सप्तम 'ख'

एक गाँव में कैलाश नामक एक ११ साल का लड़का रहता था। वह बहुत मोटी बुद्धि का था, इसलिए वह आत्महत्या करने के उद्देश्य से पानी में कूद गया, किन्तु कुछ बालक नदी में स्नान कर रहे थे जो कैलाश को जानते थे, उन्होंने कैलाश को बचा लिया। एक दिन कैलाश दुखी मन से खड़ा था। उसे देखकर एक सन्त ने उससे पूछा – "बेटा, तुम दुखी क्यों हो ?" कैलाश ने कहा – "मेरी बुद्धि बड़ी मोटी है इसलिए मैं दुखी हूँ।" सन्त ने कहा – "बेटा, तुम नित्य सुबह उठकर गायत्री महामन्त्र का जाप करो इससे तुम्हारे सभी दुख दूर होंगे।" उस सन्त के कथनानुसार कैलाश ने लगभग दो माह तक गायत्री महामंत्र का जाप किया। लेकिन उसे किसी भी फल की प्राप्ति नहीं हुई। इसलिए वह पुनः दुखी रहने लगा। इसी बीच उससे एक आदमी ने कहा कि – "तुम भूतों के राजा कालभैरव की उपासना करो उससे तुम्हें मनचाहे फल की प्राप्ति होगी।" कैलाश ने एक माह तक काल–भैरव की उपासना की।

एक दिन जब वह उपासना कर रहा था तभी उसे एक आवाज सुनाई पड़ी – "बेटा कैलाश मैं तुम्हारी उपासना से प्रसन्न हूँ। तुम इच्छित फल माँग लो।" कैलाश ने कहा–"पहले आप मेरे सामने आइए।" आवाज आई– "मैं तुम्हारे सामने नहीं आ सकता क्योंकि गायत्री महामंत्र का जाप करने के कारण तुम्हारे भीतर एक ऐसी शक्ति आ गई है जिससे यदि मैं तुम्हारे सामने आऊँगा तो मैं जलकर भस्म हो जाऊँगा।" यह सुनते ही कैलाश की आँखें खुल गईं और वह पहले की भाँति ही गायत्री महामंत्र का जाप करने लगा। गायत्री जाप के कारण उसकी बुद्धि निर्मल तथा तीव्र हो गई।

"गायत्री के महामन्त्र से जीवन के सब पाप हरो।
सुन्दर सुखी बनेगा जीवन गायत्री का जाप करो।।"

बरगद और बेल

राजीव प्रताप सिंह सेंगर
सप्तम 'क'

बरगद का एक पुराना पेड़ था। उसके नीचे नन्हीं–सी बेल उठी और वह तीन महीने में ही बरगद की ऊँचाई तक चढ़ गई। अतः एक दिन बेल ने पूछा – "वृक्षराज ! आपकी आयु कितनी है ? पेड़ ने जवाब दिया–तीन सौ वर्ष।" यह सुनकर लता तेजी से हँसने लगी और बोली, "मुझे देखिए ! तीन महीने में ही आपके बराबर बड़ी हो गई हूँ। एक आप हैं जो तीन सौ वर्षों से यहीं पर अटके हैं।"

वृक्ष ने मंद हँसी में कहा, "बच्ची ! तुम्हारा अभी आँधी और तूफानों से पाला नहीं पड़ा है। तीन सौ वर्षों में शायद तुम तीन सौवी बेल हो जो ऐसी ही कतार लगाकर हर साल अतीत के गर्त में विलीन हो जाती हो।" यह सुनकर लता कुछ न कह सकी।

शिक्षक, आचार्य, गुरु एवं सद्गुरु

– शशांक तिवारी
नवम 'क'

शिक्षक, आचार्य, गुरु एवं सद्गुरु समाज के दिव्य प्रकाशस्त्रोत होते हैं। वे ज्ञान एवं चेतना की एक अवस्था विशेष के दिव्य प्रतीक–प्रतिनिधि होते हैं। कला सिखाने वाला शिक्षक, जिन्दगी सिखाने वाला आचार्य, चेतना के गहन मर्म से परिचय कराने वाला गुरु एवं शिष्य को अपने में मिला लेने वाला सद्गुरु कहलाता है। ये चारों तत्त्व आपस में घुले–मिले तो हैं, परन्तु एक नहीं हैं।

शिक्षक ज्ञान की कुशलताा का विशेषज्ञ होता है। वह कुशलता के विशेष आयामों को खोलता एवं अनावृत्त करता है। उसे अपने क्षेत्र विशेष का विशेष एवं गंभीर ज्ञान होता है। उसमें विषय विशेष का गंभीर ज्ञान होता है। शिक्षक को अपने विषय का गहरा अनुभव होता है और वह इस अनुभव का स्पर्श विद्यार्थियों को करा देता है। शिक्षक में शिक्षार्थी के भीतर कुशलता को विकसित करने की अपार क्षमता होती है। साधारण से छात्र को अत्यन्त प्रतिभावान शोधार्थी के रूप में गढ़ देने की विशेषज्ञता शिक्षक का दिव्य परिचय है।

शिक्षक आचार्य नहीं होते। आचार्य शिक्षक का पर्याय भी नहीं है और हो भी नहीं सकता, परन्तु आचार्य शिक्षक भी हो सकता है, क्योंकि वह व्यक्तित्व गढ़ने के साथ–साथ कला–कुशलता भी सिखा सकता है। आचार्य को व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों की गहरी समझ एवं बोध होता है और इसी कारण वह व्यक्तित्व को सँवार–निखार सकता है। आचार्य की वाणीभर नहीं बोलती, उसका आचरण उससे भी अधिक मुखर हो बोलता है। आचार्य को सहज अनुभव प्राप्त होता है कि विचार से व्यवहार तक की महायात्रा कितनी कठिन, कितनी दुष्कर और कितनी भीषण होती है।

आचार्य का ज्ञान बड़ा ही पारदर्शी होता है। वह बखूबी जानता है कि कैसे संस्कारों, आदतों, वृत्तियों आदि की दुर्बलताओं को हटाया–मिटाया जाए तथा इनके स्थान पर सदाचार, सद्विचार तथा सद्प्रवृत्ति की स्थापना की जाए। आचार्य को सैद्धान्तिक के साथ–साथ व्यवहारिक ज्ञान होता है।

गुरु देहधारी ईश्वर होता है। गुरु रूप में भगवान मूर्त होते हैं। गुरु के पास बैठने से भगवद्चेतना का दिव्य स्पर्शबोध होता है। इसी कारण रामकृष्ण परमहंस ने गुरु के हृदय को 'भगवान का डाक–बंगला' कहकर उसकी गरिमा को महाभिव्यक्ति दी है। गुरुपद की प्राप्ति इस मर्त्य संसार के लिए महाक्रांति है, क्योंकि गुरु शिष्य को महाबेहोशी से जगा–उठाकर उसे उसके आत्मसाक्षात्कार रूपी महाधिकार से विभूषित करता है।

गुरु शिष्य को बोध कराता है, उसे बोधिसत्व बना देता है, परन्तु सद्गुरु शिष्य को अपने में समाहित कर लेता है। शिष्य की चेतना में वास करने वाला तथा अपनी महाचेतना में शिष्य को डुबो देने वाला सद्गुरु होता है। सूफियों की नजीर में सद्गुरु की बड़ी ही भावप्रवण अभिव्यंजना मिलती है –
"जब जरा गरदन झुकाई, देख ली तस्वीरे यार।"

सद्गुरु विराट होते हैं। सद्गुरु ब्राह्मी चेतना से सर्वथा अभिन्न होने के कारण इस जगत के चरम–परम स्त्रोत होते हैं। यह जगत भी उन्हीं का विस्तार विराट रूप है। वे एक साथ महाबीज भी हैं और महावट भी। ऊपरी और बाहरी तौर पर हर कहीं, सब कहीं कितना भेद–विभेद और विभाजन क्यों न दिखाई दे, सद्गुरु की परम पावन चेतना सभी कुछ अभिन्न और अभेद है।

इस प्रकार शिक्षक, आचार्य, गुरु एवं सद्गुरुरूपी कला, ज्ञान, चेतना और महाचेतना के मूर्त रूप का स्पर्श पाकर भौतिक एवं आत्मिक रूप से जीवन समृद्ध होता है।

समाज के आइने में शिक्षार्थी

– आशीष यादव
अष्टम 'ख'

आज शिक्षा के स्तर में आ रही गिरावट के लिये आखिर जिम्मेदार कौन है ? शिक्षार्थी, शिक्षक, लूली प्रशासनिक व्यवस्था अथवा अन्य घटक–अपघटक। आधुनिक समय के बदलते परिवेश में चरित्र निर्माताओं (शिक्षक) का कोई महत्त्व ही नहीं रह गया।

समाज के आइने में आज शिक्षार्थी की जो तस्वीर बन रही है, उसे धुँधला करने का कार्य कौन कर रहा है ?

समाज में हो रहे विषैले चक्रीय परिवर्तन ने शिक्षार्थियों को चौराहे पर लाकर खड़ा कर दिया है जिससे संतति निर्माता (अभिभावक) अपनी संतति के लिये सही मार्ग नहीं खोज पा रहे हैं। अभिभावक संतति के लिये अच्छे–बुरे के फेर से चकरा रहा है व इस अच्छे बुरे के भँवर से निकलने के लिये छटपटा रहा है।

शिक्षार्थियों के लिये अपने को निखारने के कुछ अहम् बिन्दु तथा वर्तमान में उनका फालतू प्रतीत होना।

१. व्यक्तित्व :– विद्यार्थी का व्यक्तित्व सरल, शांत स्वभाव, एकाग्रचित्त, तीक्ष्ण बुद्धि, सभी के प्रति सम्मान का भाव व मित्र भाव होना चाहिए।

वर्तमान स्थिति :– परन्तु आज कल सब कुछ इसके विपरीत दिखता है। क्लास रूम में energy की बचत कर अन्य ऊलजलूल कार्यों के लिये संरक्षित करना उनका वैज्ञानिक चिंतन है। सड़कों पर खड़े होकर गपशप करना, उनकी योग्यता का तकाजा है। व्यक्तित्व इतना विषैला हो गया है कि तुच्छ बातों पर शिक्षक या कि राह में चलते मुसाफिर पर अपनी झड़क दिखा दें।

२. स्फूर्ति :– विद्यार्थी को सुबह जल्दी जागने व रात में ठीक समय पर सोना चाहिये। अपने कार्य को निपुणता से करना चाहिये। रोज समय पर स्कूल जाना चाहिये।

वर्तमान स्थिति :– 'लेट टू राइज एण्ड अर्ली टू बेड' का सिद्धान्त प्रतिपादित करते हुए कुम्भकरण की भाँति क्लास रूम में खर्राटे भरना तथा बीच–बीच में शिक्षक की लकड़ी के बल पर दीर्घसूत्रता में कापी–कलम उठाकर कापी पर चींटे की टाँगें बनाना उनकी कर्तव्यनिष्ठा है। क्लासरूम की दीवारों व सीटों के नीचे थूँककर पेंटिंग करना तथा बैक्टीरिया एवं वाइरस की नई नस्लों को जन्म देना उनकी क्रियाशीलता है।

३. बुद्धि :– बुद्धि तीक्ष्ण व सार्थक कार्यों में प्रयुक्त होनी चाहिये।

वर्तमान स्थिति :– हमारा आईक्यू विलोटेन है फिर भी इसे मैंटेन करने व आगे बढ़ने के लिये लक्ष्मी जी के वाहन उल्लू पर आरूढ़ होना ठीक नहीं है। पठन–लेखन जैसे कार्यों में रुचि न लेना चतुराई समझते हैं। इस चतुराई के सिद्धान्त पर अभिभावक व अध्यापक को उलटा सीधा बताकर अपने को तीसमारखाँ समझते हैं।

नोट :– अभिभावक को छात्र के कार्यों पर विशेष रूप से ध्यान देना चाहिये और छात्रों को वर्तमान की स्थिति को एक किनारे कर अपने आप को अच्छे कार्यों की ओर देखना चाहिये।

✵

सफलता के सिद्धान्त

– अंकित झा
नवम 'क'

प्रथम सिद्धान्त –

कर्म :– जिस प्रकार से नदी का जल निरन्तर गति के कारण स्वच्छ, तरोताजा तथा पीने योग्य बना रहता है, इसके विपरीत तालाब का जल जड़ता के कारण गंदा, बदबूदार हो जाता है। अतः नदी की नीति का अनुसरण करना ही श्रेष्ठ है। कर्म, निरन्तर कार्य, अटूट कार्य ही सफलता का प्रथम सिद्धान्त है।

द्वितीय सिद्धान्त –

आत्मत्याग :– जिस प्रकार से श्वेत वस्त्र प्रकाश के समस्त रंगों को परिवर्तित कर देता है अपने में कोई रंग अवशोषित नहीं करता है। इस प्राकृतिक क्रिया का अनुसरण करके हमने जो कुछ पाया है दूसरों को ही दे दें। हम जितना अधिक वितरण करते हैं उतना ही अधिक पाने के अधिकारी बनते हैं।

तृतीय सिद्धान्त –

आत्म विस्मृति :– कार्य करते हुए अपने क्षुद्र अहं को भूल जाओ, उसमें अपने आप को पूर्णतया डुबो दो तब हम निश्चय ही सफल होंगे। अर्थात् कार्य करते – करते सफलता की इच्छा भर जाये तथा सफलता तुम्हारे सम्मुख खड़ी हो।

चतुर्थ सिद्धान्त –

सार्वभौमिक प्रेम :– जिसे हम लोग सहयोग कहते हैं, वही इस प्रेम का बाह्य रूपान्तर है। सभी से प्रेम करो लोग तुमसे प्रेम करेंगे, तुम स्वयं प्रेम बन जाओ तो सफलता बनी बनायी है।

पंचम सिद्धान्त –

प्रसन्नता :– पूर्ण प्रसन्नता के साथ अपने कर्त्तव्य कर्म में जुट जाओ। सफलता के लिये जिन–जिन वस्तुओं की आवश्यकता पड़ेगी वे सब अपने आप उपस्थित हो जाएँगी। अपने परिश्रम के फल के लिये कभी चिन्ता मत करो। भविष्य की चिन्ता मत करो। भय को हृदय में स्थान मत दो। न सफलता की बात सोचो न असफलता की।

षष्ठ सिद्धान्त –

निर्भीकता :– निराशा कमजोरी है, उससे बचो। निर्भीकता ही शील पुंज है।

सप्तम सिद्धान्त –

आत्मनिर्भरता एवं आत्म विश्वास :– सफल जीवन का नैसर्गिक सिद्धान्त तथा सफलता की मुख्य कुंजी है आत्म निर्भरता एवं आत्म विश्वास। निश्चय से, पूर्ण निश्चय से अपने ऊपर निर्भर रहो और फिर जगत में तुम्हें कुछ भी दुर्लभ नहीं। तुम्हारे लिये संसार में कुछ भी असम्भव नहीं।

नारद का प्रश्न

सबसे महान कौन ?

– कुशाग्र कृष्णन
नवम 'क'

एक बार देवर्षि नारद के मन में यह जानने की इच्छा हुई कि सबसे महान कौन है? वे बैकुण्ठ गए और उन्होंने प्रभु से यही प्रश्न किया।

प्रभु ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया, "नारद जी ! सबसे बड़ी यह पृथ्वी दिखती है, इसलिये हम पृथ्वी को 'सबसे बड़ी' की संज्ञा दे सकते हैं, मगर समुद्र ने उसे घेर रखा है। इस कारण समुद्र उससे भी बड़ा रहा। किन्तु इस समुद्र को भी अगस्त्य मुनि ने पी लिया था, इस कारण समुद्र कैसे बड़ा हो सकता है ? तब तो अगस्त्य मुनि सबसे बड़े हुए। मगर उनका वास कहाँ है? अनन्त आकाश के एक सीमित, सूचिका सदृश्य भाग में वे मात्र एक जुगनू की भाँति चमक रहे हैं, इसलिये आकाश उनसे बड़ा हुआ। लेकिन वामनावतार में भगवान विष्णु ने इस आकाश को एक ही पग में नाप लिया था इस कारण विष्णु ही सर्वोपरि महान सिद्ध होते हैं। फिर भी नारद विष्णु भी सर्वाधिक महान नहीं हैं क्योंकि के वे तुम्हारे हृदय में अंगुष्ठमात्र स्थल में ही सर्वदा अवरुद्ध देखे जाते हैं, इसलिये वास्तव में सबसे महान तो तुम ही सिद्ध हुए।

✳

लघुकथा

सफलता का रहस्य

– निमिष दास
सप्तम 'क'

बच्चों की इस छोटी सी लघु कथा के माध्यम से नन्हें कहानीकार ने यह संदेश दिया है कि हमको भावी संकटों से निपटने के लिये पहले से तैयारी करनी चाहिये। ***– संपादक***

एक बार एक जंगली सुअर अपने दाँत पैने कर रहा था। तभी वहाँ पर एक लोमड़ी आई। लोमड़ी ने पूछा – "तुम अपने दाँत क्यों पैने कर रहे हो ?" तब सुअर ने उत्तर दिया– "मैं शत्रु का सामना करने की तैयारी कर रहा हूँ।" लोमड़ी पल भर के लिए आश्चर्य चकित हो जाती है और पूछती है – "सुअर दादा ! मुझे तो कोई शत्रु नहीं दिखाई पड़ रहा है ?" तब सुअर का उत्तर था – "क्या मुझे उस समय दाँत पैने करने का समय मिलेगा, जब शत्रु मुझ पर धावा बोल देगा ? मैं शत्रु का सामना करने के लिये पहले से ही तैयार रहता हूँ। यही मेरी सफलता का रहस्य है।

आधुनिक शब्दावली

– कुशाग्र कृष्णन, राज गौरव कटियार
नवम 'क'

१. **टाई :** एक मुलायम फाँसी, जिससे आकर्षक दिखने का भ्रम होता है।

२. **बैंक में जमा धन :** ट्यूब में बन्द टूथपेस्ट, जिसे बाहर निकालना तो सरल है परन्तु वापस डालना कठिन है।

३. **हाइड्रोजन बम :** एक ऐसा आविष्कार, जो अन्य आविष्कारों को समाप्त कर सकता हैं।

४. **सिगरेट :** कागज के खाल में लिपटी चुटकी भर तम्बाकू, जिसके एक सिरे पर तो तम्बाकू जल रहा है और दूसरे सिरे पर एक बेवकूफ के फेफड़े जल रहे हैं।

५. **गुस्सा :** वह मानसिक अवस्था, जिसमें जीभ मस्तिष्क से भी तेज चलती है और विवेक नष्ट कर देती है।

६. **जीवन बीमा :** ऐसा अनुबन्ध, जो जीवन भर आपको गरीब रखता है ताकि आपके मरने के बाद आपके आश्रित अमीर हो सकें।

७. **अस्पताल :** ऐसा स्थान, जहाँ आपको नर्स सोते हुए इसलिये जगाती है ताकि आपको नींद की दवा दे सके।

शिक्षाप्रद लघुकथा

– निशान्त सिंह
सप्तम 'क'

एक घर के आंगन में मिट्टी के दो घड़े रखे थे। एक का मुँह आसमान की ओर था तथा दूसरे का धरा की ओर था। वर्षाकाल आया। जिस पात्र का मुख ऊपर था, वह भर गया ; जिसका मुँह नीचे था, वह भरा नहीं। खाली घड़े को बहुत क्रोध आया और उसने अपने पास के भरे घड़े को अपशब्द कहना प्रारम्भ कर दिया।

थोड़ी देर बाद भरे हुए घड़े ने उसे बताया – "भाई ! तुम्हें भी जल की प्राप्ति होती यदि तुम अपना मुँह ऊपर रखते।" उस घड़े ने बात को समझकर अपना मुँह ऊपर कर लिया। अगली वर्षा में वह भी पानी से भर गया।

खोटी अट्ठन्नी

– मोहित मिश्र
नवम 'क'

कविता का स्थाई भाव 'हास' है। तुक – मैत्री है, लय भी है, कहीं – कहीं कुछ लय–भंग भी है और अंत में कविता एक संदेश भी देती है। – संपादक

आओ तुम्हें सुनाएँ अपनी बात बहुत–ही छोटी,
किसी तरह से पास हमारे आई अट्ठनी खोटी।
रहा सोंचता बड़ी देर तक नहीं याद कुछ आया,
किसने दी कैसे यह आयी अच्छा धोखा खाया।
जो हो अब तो चालाकी से होगा इसे चलाना,
किन्तु सहज है नहीं आजकल मूरख बुद्धू पाना।
साग और सब्जी लेने में उसे खूब सटकाया,
कभी सिनेमा की खिड़की पर मैंने उसे चलाया।
कम निगाह वाले बुड्ढे से मैंने चाय खरीदी,
बेफिक्री से मनीबैग से वही अट्ठन्नी दे दी।
किन्तु कहूँ क्या खोटी कहकर सबने ही लौटाई,
बहुत चलाई नहीं चली वह लौट जेब में आई।
एक दिवस जो बीती मुझपर वह भी तुम्हें सुनाऊँ।
एक भला–सा व्यक्ति एक दिन पास हमारे आया,
क्या रुपए के पैसे होंगे रुपया एक बढ़ाया।
मौका अच्छा देख पर्स को मैंने तुरत निकाला,
वही अट्ठन्नी आठ इकन्नी देकर संकट टाला।
मैं खुश था चल गयी अट्ठन्नी कैसा मूर्ख बनाया,
इसी खुशी में मैं तंबोली की दुकान पर आया।
रुपया फेंक कहा मस्ती में अच्छा पान बनाना,
रुपया देख तंबोली बिहँसा उसने मारा ताना।
ठुकराए खोटे सिक्कों को क्या था यहीं चलाना,
मैं गरीब हूँ किसी अन्य को जाकर मूर्ख बनाना।
मूर्ख बनाने चला स्वयं जो वह ही मूर्ख बनेगा,
सच है जो डालेगा छींटे कीचड़ बीच सनेगा।
घातक है प्रत्येक बुराई हो कितनी ही छोटी,
सिखा गयी खरी बात यह मुझे अट्ठन्नी खोटी।।

पंडित जी का आना

– अंकित पटेल

नवम 'ग'

पंडित दीनदयाल जी का आविर्भाव अश्विन मास वि० सं० १९७३ में कृष्णपक्ष की त्रयोदशी तदनुसार २५ सितंबर १९१६ को हुआ था। भारत वर्ष की मिट्टी में युग के अनुरूप महापुरुषों को जन्म देने का अद्भुत गुण है। इस शुभ दिन एक ऐसी आत्मा धरती पर अवतरित हुई जो हमेशा अपने देशोत्थान के लिये सदैव प्रयासरत् रही।

पंडित दीनदयाल का व्यक्तित्व उस सूरज के समान था जो तह पर तह ढके हुए बादलों को चीरता हुआ निकलता है। दीनदयाल नाम था निराशा के सागर मैं आशा के टापू का। दीनदयाल जी अपने वक्त की बेमिसाल अभिव्यक्ति थे। वे अंधकार में प्रकाश की किरण थे जो समस्त अंधकार को नष्ट कर देता है।

पंडित दीनदयाल जी भारतीय संस्कृति के सच्चे प्रतीक थे। दीनदयाल जी ने "एकात्म मानववाद" का अपना दर्शन एक सामाजिक मिशन के नाते प्रतिपादित किया।

दीनदयाल जी द्वारा प्रतिपादित एकात्म मानववाद व्यक्ति के भौतिक, मानसिक और अध्यत्मिक पहलू का एकात्म विकास करने की कोशिश है।

पंडित दीनदयाल जी एक व्यक्ति मात्र नहीं थे। राष्ट्र एवं समाज के लिये पूर्ण समर्पित व्यक्तित्व थे। व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अद्भुत समन्वय देखना हो तो उनका जीवन इसका अनुपम उदाहरण था।

स्वामी विवेकानंद ने जिस प्रकार पूरी दुनिया में अपने गुरू स्वामी रामकृष्ण के विचारों का डंका बजाया, उसी प्रकार परमपूज्य डा० हेडगेवार द्वारा प्रतिपादित एवं पूज्य गुरुजी द्वारा प्रसारित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की विचारधारा का प्रचार प्रसार दीनदयाल जी ने सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक क्षेत्रों में सफलतापूर्वक किया। उनका जीवन डा० हेडगेवार (जो कि संघ के संस्थापक थे) के जीवन से मिलता–जुलता था।

गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस के लंकाकाण्ड में तीन प्रकार के पुरुषों का उल्लेख किया है–

"संसार महँपुरुष त्रिबिध पाटल, रसाल, पनस समा।"

ज्ञातव्य है कि पाटल केवल फूल देते है, रसाल फल और फूल दोनों देते है और पनस में केवल फूल ही उगते है। दूसरों शब्दों में पुरुषों की एक कोटि वह है जो केवल कहते है, करते नहीं। दूसरी कोटि वह है जो कहते और करते दोनों हैं। तीसरी कोटि में वे पुरुष आते है जो केवल करते हैं, कहते नहीं है। पंडित जी तीसरी कोटि के पुरुष थे। ऐसे पुरुष का हमारे बीच से असमय उठ जाना : निश्चित रूप से मानवता के कोश का खाली हो जाना है।

पंडित जी का जीवन आदर्श और सरलता का प्रतीक था। दीनदयाल जी के जीवन का आदर्श उस प्रकाश के स्रोत के समान है जिसका आलोक इस आलोक रूप संसार में हमारा पथ – प्रदर्शक है। उनकी गुणधर्मिता दीपक से झरते हुए प्रकाश के समान थी। संसार की लीला में सिर्फ वे लोग ही उन्नति कर पाते है जो दूसरों के लिये जीते है। अपने लिये तो सब जीते है, पर कम है वे लोग जो दूसरों के लिये जीते है लेकिन वही श्रेष्ठ हैं। पंडित जी निस्सन्देह एक देव पुरुष थे। उनका यह सिद्धांत हमें जीवन भर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता रहेगा।

ऐसे थे हमारे पंडित जी। ऐसे युग पुरुष को हमारा शत् – शत् नमन।

"चरैवेति – चरैवेति"

संकल्प शक्ति का महत्त्व

– दिव्यांशु त्रिपाठी
नवम 'ग'

किसी भी लक्ष्य को पाने में इच्छाशक्ति की भूमिका ही मुख्य होती है। यह इच्छा शक्ति या संकल्प शक्ति प्रबल रूप में जिसके पास होती है वह परिस्थितियों का दास नहीं होता है। – संपादक

सृष्टि की रचना करने वाले ने मनुष्य के अन्दर वे सब गुण कूट– कूट कर भर दिए हैं जिन्हें जगाने और सदुपयोग करने वाले मनुष्य महामानवों जैसा अनुकरणीय जीवन बिताते हैं। मनुष्य की अनुकूल परिस्थितियाँ और उसका भाग्य सब उनके मन की संकल्प शक्ति से प्रेरित होकर उसके द्वारा किए गये कार्यों से बनते है। मनुष्य अपने लक्ष्यों की प्राप्ति अपनी इच्छा शक्ति से करता है। कहा भी गया है –

"जहाँ चाह वहाँ राह"

यह इच्छा–आकांक्षा, कल्पना, कामना से पूर्ण नहीं बल्कि साहस, विवेक और कर्मनिष्ठा से युक्त होनी चाहिए। हम जिस किसी क्षेत्र में उतरें उसमें यह संकल्प ले लें कि हमें इसमें अव्वल आना है। इसके लिए हमें अपनी नित्य–सिद्ध–शक्ति को पहचानना आवश्यक है। यदि महानता की दिशा में अकेले ही संकल्प शक्ति के साथ चल दें तो सफलता अवश्य ही हमारे कदम चूमेगी –

"न हो साथ कोई अकेले बढ़ो तुम,
सफलता तुम्हारे चरण चूम लेगी।"

प्राणियों में जब–जब जितने परिमाण में आकांक्षाएँ उत्पन्न हुई, तब–तब उतने ही परिमाण में अनुकूलन क्षमता उसके भीतर से विकसित हुई जब विचारपूर्ण दृढ़ निश्चय, कर्मशीलता के साथ जुड़ जाते हैं तो सफलता को प्राप्त करने में अधिक समय नहीं लगता। प्रगति की दिशा में आगे बढ़ने और सफलता प्राप्त करने के लिए हमें छोटे–बड़े सभी कामों को तत्परता और लगन के साथ पूरा करना होगा। संकल्प का तात्पर्य कल्पना की रंगीन उड़ानों से उठकर एक सुनियोजित योजना के द्वारा अपने लक्ष्य को प्राप्त करना है। जब तक हमारे अन्दर संकल्प का बीज नहीं होगा तो क्या हम उस वृक्ष को कभी बना पायेंगें जिसकी छाया में बैठकर हमें सुख प्राप्त हो। मनुष्य सब कुछ कर सकता है –

"धरती की शान तू है मनु की सन्तान,
तेरी मुट्ठियों में बन्द है तूफान।
मनुष्य तू है बड़ा महान भूल मत,
मनुष्य तू है बड़ा महान।।"

नेपोलियन के अनुसार, "प्राणवान संकल्प शक्ति के समक्ष सचमुच असम्भव टिक नहीं सकता"। अतः संकल्प एक व्रत है तथा जिस प्रकार हम अन्य कृत्यों को करते हैं उसी प्रकार हमें 'संकल्प कृत्य' भी करना चाहिए। अतः सफलता के लिए इस संकल्प को जगाना आवश्यक है। वस्तुतः सफलता हेतु अन्य गुण जगाना भी आवश्यक है परन्तु वे धीरे–धीरे स्वयं ही पनप जाते हैं। संकल्प ही हमारे जीवन को अर्थ देने में सक्षम है।

कक्षा नवम व दशम की छात्र संसद

किशोर भारती 2004-05

दिनांक १३–०७–०४ मंगलवार को एक भाषण प्रतियोगिता द्वारा चयनित किये गये किशोर भारती के पदाधिकारियों के नाम निम्नांकित हैं –

क्र.सं.	पद	नाम	कक्षा
१.	अध्यक्ष	श्रेयांश पुरवार	दशम 'क'
२.	उपाध्यक्ष	शुभम दीक्षित	दशम 'ग'
३.	मंत्री	निशांत आनन्द	दशम 'ख'
४.	सहमंत्री	प्रत्यूष प्राञ्जल	नवम 'ख'
५.	अनुशासन प्रमुख	शिवम अवस्थी	दशम 'ख'
	उप अनुशासक	निखिल श्रीवास्तव	नवम 'क'
६.	चिकित्सा प्रमुख	अजय मिश्र	दशम 'ख'
	सहायक	अभिषेक	नवम 'ख'
७.	क्रीड़ा प्रमुख	राकेश कुमार	दशम 'क'
	सहायक	अभिषेक	नवम 'ख'
८.	सांस्कृतिक प्रमुख	आकाश गुप्त	दशम 'क'
	सहायक	शीतान्शु तिवारी	नवम 'क'
९.	पुस्तकालय प्रमुख	शुभम शुक्ल	दशम 'क'
	सहायक	निशान्त	नवम 'ख'
१०.	श्यामपट लेखन प्रमुख	सौरभ दुबे	दशम 'क'
	सहायक	१. सूर्य प्रताप	नवम 'ख'
		२. अनुराग सिंह	नवम 'ख'
११.	सज्जा प्रमुख	निशीत कुमार	दशम 'ख'
	सहायक	अमित मयंक	दशम 'ख'
		संदीप शिवहर	दशम 'ख'
		प्रशान्त कुमार	दशम 'ख'
		पंकज	नवम 'ख'
		सत्येन्द्र पाल सिंह	नवम 'ख'
१२.	बौद्धिक प्रमुख	अंकित गुप्त	दशम 'क'
		संदीप द्विवेदी	नवम 'ग'

कक्षा षष्ठ से अष्टम तक की छात्र संसद

बाल भारती 2004-05

क्र.सं.	पद	नाम	कक्षा
१.	अध्यक्ष	आदर्श कुमार	अष्टम 'क'
२.	उपाध्यक्ष	गुलशन कुमार	सप्तम 'क'
३.	मंत्री	यतीन्द्र त्रिपाठी	अष्टम 'ख'
४.	सहमंत्री	आदर्श तिवारी	सप्तम 'क'
५.	अनुशासक	आयुष तिवारी	अष्टम 'क'
६.	उप अनुशासक	रंजन कुमार	अष्टम 'क'
७.	बौद्धिक प्रमुख	रणविजय	अष्टम 'क'
८.	सज्जा प्रमुख	अभिषेक कुमार	अष्टम 'क'
९.	सज्जा सहायक	केशव देव	अष्टम 'क'
१०.	सांस्कृतिक प्रमुख	नन्दराज	अष्टम 'ख'
११.	सांस्कृतिक उप प्रमुख	अभिजीत शुक्ल	सप्तम 'ख'
१२.	क्रीड़ा प्रमुख	सौरभ द्विवेदी	अष्टम 'ख'
१३.	पत्रिका प्रमुख	सात्विक	अष्टम 'ख'
१४.	विशालकक्ष व्यवस्था प्रमुख	सारांश अग्रवाल	अष्टम 'क'
१५.	विशाल कक्ष व्यवस्था सहायक	सौरभ दुबे	अष्टम 'ख'
१६.	विशाल कक्ष व्यवस्था सहायक	हिमांशु भूषण	सप्तम 'क'
१७.	विशाल कक्ष व्यवस्था सहायक	अंकुर दीक्षित	षष्ठ 'क'
१८.	श्याम पट लेखन प्रमुख	सुयश मधुर	अष्टम 'क'
१९.	गीत – गायन प्रमुख	निमिष दास	सप्तम 'क'
२०.	गीत गायक समिति सदस्य	अर्पण श्रीवास्तव	सप्तम 'क'
२१.	गीत गायक समिति "	अमित शुक्ल	षष्ठ 'ख'
२२.	गीत गायक समिति "	प्रणव त्रिपाठी	षष्ठ 'ख'
२३.	गीत गायक समिति "	विभु पाण्डेय	अष्टम 'ख'
२४.	गीत गायक समिति "	अभिनव मिश्र	सप्तम 'ख'
२५.	कार्यक्रम व्यवस्था प्रमुख	श्वेतांक सिंह	षष्ठ 'ख'
२६.	श्यामपट लेखन सहायक	मृदुल बाजपेयी	अष्टम 'ख'
२७.	चिकित्सा प्रमुख	विभास मिश्र	अष्टम 'ख'
२८.	चिकित्सा उप प्रमुख	दीप सिंह	षष्ठ 'ख'

इस नये सवेरे की लाली को देखो तो . . . . .

(छात्रावास की नयी कार्यकारिणी)

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी छात्रावास के छात्र पदाधिकारियों की घोषणा की गयी। ये पदभार छात्रों को सौंपने का उद्देश्य छात्रों को छात्रावास की व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने के साथ–साथ उनके द्वारा भविष्य में अनेक पदभारों के प्रतिनिधित्व की क्षमता का विकास करना है।

सन् २००४–२००५ के छात्रावास के छात्र पदाधिकारी निम्नलिखित हैं तथा उनकी घोषणा दिनांक १५–०७–०४, गुरुवार को सायंकालीन पूजा में माननीय प्रधानाचार्यजी द्वारा की गयी।

पद	छात्र का नाम
छात्रावास प्रमुख	रघुनाथ सिंह
छात्रावास उपप्रमुख	कुन्दन कुमार
व्यवस्था प्रमुख	सिद्धार्थ सौरभ
व्यवस्था उप प्रमुख	सर्वेश कुमार
अध्ययन प्रमुख	शान्तनु गुप्त
अध्ययन उप प्रमुख	नितिन प्रताप
अध्ययन उप प्रमुख	जीत सिंह आर्य
अनुशासन प्रमुख	विवेक कश्यप
अनुशासन उप प्रमुख	सुमित शुक्ल
पूजा प्रमुख	अंकुर गुप्त
पूजा उप प्रमुख	प्रतीक पाण्डेय
भोजन प्रमुख	अंशुल तिवारी
भोजन उप प्रमुख	निशित कुमार
क्रीड़ा प्रमुख	विमल यादव
क्रीड़ा उप प्रमुख	ईशान अग्रवाल
क्रीड़ा उप प्रमुख	राकेश कुमार
सांस्कृतिक प्रमुख	अभिनन्दन तिवारी
सांस्कृतिक उप प्रमुख	सौरभ सिंह
चिकित्सा प्रमुख	सौरभ त्रिपाठी
डाक प्रमुख	आदर्श अवस्थी
डाक उप प्रमुख	शिवम तिवारी
प्रक्षालन प्रमुख	आराध्य देव
अतिथि विभाग प्रमुख	उमंग पुरवार

बहुरंगी संसार

– **दुर्गेश वाजपेयी** (आचार्य)

कौन साथ में सचमुच अपने, कौन दिखावा करता है
बहुरंगी संसार तभी कवि, इसे छलावा कहता है।
सत्य–न्याय का पाठ पढ़ा है।
प्रेमभाव परवान चढ़ा है।
कोई दिल से यदि मिल जाए।
तो सूखी बगिया खिल जाए।
सच्चाई को थार मरुस्थल, झूठा रथ पर चढ़ता है
न्याय बिक रहा बाजारों में और देवता सोता है।
कौन साथ में सचमुच अपने . . .

निष्ठाएँ जिनकी व्यभिचारी।
मति–कृति है जिनकी संसारी।
ये तो भ्रम को भी भरमायें।
गिरगिट भी जिनसे शरमायें।
अब हम किसको अर्घ्य चढ़ायें, सूरज रंग बदलता है
सुबह शांत तो दोपहरी को, भीषण आग उगलता है।
कौन साथ में सचमुच अपने . . .

एक उजेरा, एक अँधेरा।
एक रात है एक सबेरा।
अंधेरे को दूर हटायें।
और प्रात को गले लगायें।
लेकिन ऐसा नहीं हुआ है, भोर सुबकता रहता है
अंधेरों पर ताज किरन का, हृदय सुलगता रहता है।
कौन साथ में सचमुच अपने . . .

अब शासन है मक्कारी का।
जुल्म–सितम का बेकारी का।
सत्यनिष्ठ लाचार हो गये।
सम्मानित मक्कार हो गये।
अन्यायी को मेवा मिसरी, न्यायी भूखा मरता है
इसीलिये हम हुए दिलजले, हृदय बगावत करता है।
कौन साथ में सचमुच अपने . . .

English Section

EDITORIAL

Dear Readers,

Welcome to the new issue of Neerajan. We have received letters of appreciation from our learned readers and we hope that our current issue too receives your blessings. The previous year witnessed a number of national upheavals in the political and social fields. With the ouster of the NDA govt. the nation once again saw the emergence of the Congress era. The nation was gifted with a very able economist Dr. Man Mohan Singh as our Prime Minister but unfortunately the remote control lies with Sonia Gandhi an alien completely cut off from the Indian values and traditions with a facade of being a great sacrifiser of the coveted seat of P.M.

With the Values in Indian politics reaching its Nadir, the nation was shocked by the "Tsunami Tragedy" that rendered lakhs of people homeless, thousands dead and a similar number emotionally depleted . As always the nation rose to the occasion to wipe off the tears of our suffering countrymen. The children, the young and the old, the rich and the poor contributed generously for the rehabilitation of the victims. The relief measures were taken on a war-footing and are still in progress as the nation is gradually recovering from the shock of the tragedy. The bygone year also witnessed the sacred seat of Shankaracharya being brought under suspicion. The judicial proceedings against the Seer has left several baffling questions before us. The matter is sub-judice but the faith of the innocent people in the great Mutt has been terribly shaken. As I write these lines the nation is witnessing the political drama in Jharkhand. The governor has played a puppet into the hands of the Central government and openly violated the constitutional norms. Is this not because democracy has been gifted to us or rather thrust upon us undeservedly ? Did a nation like India which has more than half of its population illiterate deserve democratic form of government ? Did we really fight for our right of Franchise ? The answer is a big NO - Perhaps for this reason we Indians do not really know the value of 'Democracy' which has indeed become 'mobocracy'.

Well, I am optimistic that as always there shall he a 'resurrection' after a decline. There shall be an awakening. India is waiting for another 'Vivekananda' - and of course another 'Renaissance' ..

SHARDA RAO

"THE VALUE OF TIME"

—**Mayank Shashi**
7 'B'

Time is the most valuable thing in the world. We can get back the money that we lose. But the time that is lost is lost for ever. Anything can wait but time does not wait for anyone. So, we must try to make the best use of time. If we utilise time in a proper way. We can get success in all walks of life. A student who uses his time well fares well at the examination. Time is more important than money. If the train runs late thousands of passengers waste their time. If time is wasted, all the plans and projects get delayed and the nation has to suffer. We often hear the phrase 'Indian time'. We should hang our head in shame because even hours have no meaning for us. Let us understand the value of time and get what we really deserve. In fact, time is important to money.

*

LEO TOLSTOY

—**Jogendra Singh**
8 'B'

Leo Tolstoy was a great Russian writer and ranks among the greatest novelists in world literature. Being dissatisfied with living among the high society of Moscow, he volunteered for the Russian Army and retired from military service in 1856. His happy married life became troubled in later years and during this period he wrote 'War and Peace' (1869) and 'Anna Karenina' (1875-77), his greatest works. Later, there came a spiritual up heaval in his life. He believed that God is within us and through self examination one could reform one self. He renounced all his estate and properties and lived a life of a peasant. Thereafter he started writing mostly on moral themes.

*

SUCCESS ALPHABET

—Ankit Patel
Ninth- C

A → Always be prompt.
B → Believe in common sense.
C → Consider well before deciding.
D → Dare to do right.
E → Express yourself better.
F → Fear to do wrong.
G → Go for the goal.
H → Honesty is the best policy.
I → Innovate new ideas.
J → Judge your actions.
K → Keep cool even in adverse situation.
L → Learn to co-operate.
M → Main tain discipline.
N → Never try to appear what you are not.
O → Observe good manners.
P → Pray regularly.
Q → Quest for knowledge.
R → Respect the counsel of your parents.
S → Serve the society.
T → Trust your memory.
U → Utilize time properly.
V → Verify your information.
W → Watch other actions.
X → X also has a value.
Y → Yearn for the common good.
Z → Zeal for the best.

*

DECLINE OF CIVILIZATION

—Saurabh Katiyar

XI- 'A'

Five killed and six injured
the news in the headlines left me disturbed;
What was the fault of these innocents
Why did they become prey to militants ?
A women killed by her in laws far dowry
A symbol of love and affection
Killed so brutally;
Politicians arrested for selling their
honesty and character
Where will the nation go in the hands
of such traitors ?
The fight for religion is on its verge
Credulous people searching far a nest of peace;
Ozone hole enlarging day by day
life will be seen as whisked off in a Sway
'hunger' gulping millions every year
All teens full of sadness or fear
Such was today's newspaper that I read
I wonder if it is possible to change such deadly trend ....
But still in one corner lives a small life
& pigeons of hope will fly for peace and repose .....
I repeat repose ....

*

QUALITY

—Sudhanshu Kishore

XI 'B'

D.	Decorous	U.	Upright
E.	Efficient	P.	Prudent
E.	Enthusiast	A.	Assiduous
N.	Noble	D.	Daring
D.	Demigod	H.	Hard Headed
A.	Affable	Y.	Youthful
Y.	Yearning for knowledge	A.	Admirable
A.	Amiable	Y.	Young
L.	Loving	A.	Apprehensive

*

RABINDRA NATH TAGORE'S POETRY

—**Vibhu Pandey**

8th B

Rabindranath Tagore, Asia's first Nobel Laureate was a poet, song writer. Fiction writer dramatist, painter, educationist political, thinker, philosopher of science, not surprisingly, he advocated the universal man.

In appearance with his long. flowing white beard he was like a figure out of a mystical vision. For Over six decades Tagore gave the world some 2,500 songs, more that 2,000 paintings and drawings, 28 volumes of poetry. Dramas, opera, short stories, novels essays diaries and a vast number of letters. The enormity and sheer emotional power of his out put have made Tagore the Asian writer whose work is widely known outside the region, and whose reputation has endured for most of the century.

Tagore's most sustained endeavour was "Shantiniketan" the school and university which he founded in rural Bengal. It would combine the best of Indian and western learning, with a strong emphasis on the arts. After his death it slid rapidly downhill, but before it failed, it educated among others the most famous Indira Gandhi, Amartya sen and Satya Jit Ray. Tagore's ideal was universal man "Patriotism can not find spiritual shelter, my refuges is humanity" he wrote.

Tagore himself played a somewhat amused part in this "boom and bust" accepting the massive praise with much surprise as well as pleasure and then receiving the denunciations with even greater surprise and barely concealed pain. He had a deep respect for western intellectual circles but he did think that in the Indian cultural traditions, there was wisdom of real importance, including universalism, toleration and the need for directness in seeking God. Rabindranath saw him self primarily as a poet. To a great extent that is also, how others saw him, the citation for his Nobel prize focussed on his poetry the most astonishing aspect of the standard image of Tagore.

Tagore's illustration of the role of adults in child life, in his poetry is unique Elders have inevitable place in a childs life; similarly a child's presence is of paramount importance in the life of adults Children are so influenced and impressed by their adults that they try to identify with them and according to that they set role models, ideals and goals before them. The conduct of elders, cultivates moral values and principles in children A Child's personality nurtures and grooms up under the proper guidance of adults.

The element of child psychology in the poetry of Tagore has been handled in a very brilliant and mature manner he has dealt with the different aspects of child psyche with great ability, profound finesse and intense perception.

*

MY SCHOOL

—**Abhay Chaturvedi**
VIII - B

Pt. Deen Dayal Upadhyay is my school.
Its environment is good, pure and cool;
Very interesting, very entertaining, its story,
Very fascinating, very attracting is its glory.

Building is very large, students are sincere,
Big ground and highly educated, teachers are here;
To develop the society, is its mission,
Here everybody panted, to get admission.

This school is unique, based on Indian culture,
It contains mercy for God's each creature;
Here teachers and students both are regular'
My school is very eager in doing new adventures.

It is very popular, very famous, very reputed,
On one member's success, all members are gloated,
Teachers preach us and about courtesy they mention
We all should always, try for its protection.

PLEDGE

—**Nikhil Tripathi,** 9th 'A'

We stand as one family,
bound to each other with love and respect,
We serve as a family,
Courageous and disciplined,
ever-ready to fight against,
all low tendencies and false values
within and without us
We live honestly,
the noble life of sacrifice and service,
producing more than what we consume,
and giving more than what we take.

*

MY GOAL IN LIFE

—**Indrajeet Vishwakarma.** XI 'B'

All people in the world have a desire to be successful only those people who are devoted to their goals and do their work with sincerity can get their goal and make their fortunes. Because every man is an architect of his own fortune. My goal in life is to be an engineer and to work in a very big company of the world and by this I can give comfort and much happiness to my family because every parent suffers and gives all things to his child. I want to serve my motherland and our people.

Steps which will take me to my goal-first step is hardwork because without hard work no one can get his choice of someone wants to make his fortune he should forget his comfort his friends his relations and he should remember his goals all the time. Teachers and elders help to achieve our goals. I want to be an engineer so I should be very serious I have to earn knowledge which can help me and can give results according to me. I want to get marks above 85% in U.P. Board examination. And then admission in I.I.T. and take a subject which I like or my family likes.

Difficulties : There are many difficulties in the way so I have to get over these problems or I have to accept the challenges which are given to me I should be successful is every examination of life. I have to make myself very sharp, Television, their serials and movies everyone wants to watch but I have to keep away from it. Many family problems and local problems can stop your way but you have to break all the obstactes in your way.

Conclusion : To dream is simple but it is not easy to realise them. Only hard work and devotion to your goal can make you successful.

GEOGRAPHICAL EPITHETS

—**Brjesh Shukla,** VI 'A'

Dark Continent	→	Africa
Land of midnight Sun	→	Norway
Sugar bowl of the world	→	Cuba
Yellow river	→	Hwang- HO (China)
Windy city	→	Chicago
Empire city	→	New York
Eternal city	→	Rome
Forbidden city	→	Lhasa
Cockpit of Europe	→	Belgium
Blue mountain	→	Nilgiri hills
City of seven hills	→	Rome

*

ATRI AND HINDUTVA

—**Prashant Mishra**
XI 'A'

Gone are those great golden days when in deep, dense forests used to be hermitages of our saints, sages, seers perceivers who congregated as often as they could get time from their meditations, in the evenings at the place of some elder amongst them to discuss the intricacies of faith, religion, duties and guidelines. The subject of eternal truth and its implications has been intricate since the very beginning of vedic age, thousands of years ago and every visionary, every perceiver had his own experiences and theories. There views were thrashed out in discussions and since then the system of 'question and answer' was started and we find it in all of our religious texts. Sage 'Soot', 'Sukadev', even Vyas asking and replying to questions. This system has two advantages, it removes the monotony of discussion and thrashes out the subject under discussion threadbare. In such a sitting one fine evening that significant incident happened which started the much needed literature, in bundles explaing, elucidating and exposition of the wisdom of Vedas. A sage had two wives, one on Aryan and the other a non Aryan. Conjugal relationship with non-Aryans was not favourably looked upon in that period. The sage under reference had two sons one from each wife, almost of the same age. One evening at the residence of this sage discussions were going on when both the sons of the same age also came and sat down to listen to the discourse. The sage was anxious to avoid any enquiry about his sons and to admit his relationship with a non-Aryan and therefore he asked his son Mahidas to go and play. This intelligent boy felt offended by this command and went to complain to his mother. "I am as much, if not more, learned than my brother but why was I asked to leave the assembly ? When he learnt from his mother that this was because he was the offspring of a non-Aryan, who is not entitled to study Vedas, his father had sent him away to avoid any enquiry from his colleagues. The boy felt so disgusted with this revelation that he immediately left the Ashram and performed 'tapasya' rigourously, pleased the goddess of learning submitted himself at the feet of other masters and became an exceptionally learned man. He returned to his father's place, refused to live with him, took this mother to another place, had his own 'Asram' and produced the first upnisad 'Aitereya' named ofter mother 'ltara' and thus he was the father of the great school of Upnisads, with out that rich treasure Hindu faith would not have achieved that glory which it enjoys. Aitereya upnishad forcefully announces that 'the door of Vedas is being opened for 'Aryans, non-Aryans, people of all class and colour'. This is the first proclamation in the world of equality of Man in the creation, no distinction in any walk of life. Those who criticise Hinduism for its present lapses and socio-economics evils, which have entered in its body shadowing its glory are neither acquainted with its tenets, its great value, nor its inimitable lessons for proper conduct of life.

*

The ABC'S of Happiness

—Ravi Bhushan Singh, XI 'A'

Aspire to reach your potential.
Believe in yourself.
Create a good life.
Draw about what you might become.
Exercise frequently.
Forgive honest mistakes.
Glorify the creative spirit.
Humour yourself and others.
Imagine great things.
Joyfully live each day.
Kindly help others.
Love one another.
Meditate daily.
Nurture the environment.
Organize for harmonious action.
Praise performance well done.
Question most things.
Regulate your own behaviour.
Smile often.
Think rationally.
Understand yourself.
Value life
Work for the common good.
X-ray and carefully examine problems.
Yearn to improve.
Zestfully pursue happiness.

HUMILITY

—Kushagra Krishnan, 9th 'A'

If you want to be popular, be humble. Proud people are not liked. Humble people are liked by everybody. God blesses the humble.

One may feel pride after achieving some success. He should not feel pride. He should think humbly of what higher steps he can take. You may pass examination. Remain humble. There are many more examinations to be passed. You have to keep on learning throughout your life. There is no end to knowledge. Therefore, be humble.

To err is human. We are bound to make mistakes. As soon as we come to realize our mistake, we should try humbly to rectify it. Humility lies in admitting one's mistakes and in trying to avoid them.

If you meet your superiors. Show your humility by bowing before them and obeying them. If you meet your equals. Show your humility by giving them a friendly treatment. If you meet your youngsters, show your humility by blessing them and guiding them.

*

TSUNAMI OF 2004

—Anil Kumar, 10 'C'

It was great anger of nature
Which changed men's future
The person could not see Sun again,
They lost what they had gained
Boys lost their beautiful childhood,
Many could not take again food.
The earth changed in a grave,
It was a great earth wave.
They could not complete their talk,
Boys could not again walk.
Many could not see child on his feet,
Some could not give food again to eat.
They were waiting for a new year,
This did not give time to bear.
They could not send their regard,
It is also act of the God.

*

"THE NEED OF LEISURE"

—Himanshu Bhushan, 7th 'A'

Life without leisure is no life. We work like machines most of the time. But we can't work all day and all night like this. We need some free time. We need leisure to regain mental and physical energy. In the past, people did not know the importance of leisure. They worked for longer hours. Now we cut down the working hours in shops and factories in offices and on farms. So, leisure is very necessary. And every sunday is a holiday. We feed fresh on this day. We have relief from work We can do much work after this. Leisure gives us joys and health. A proper use of leisure makes our life longer and happier. So, we need leisure also in life.

*

VALUE OF CHARACTER

—Amit Gautam
9 'A'

Someone has rightly said,

"If wealth is lost, nothing is lost
If health is lost, something is lost.
But if character is lost, everything is lost

Character is an essential quality of a person. Character is nothing but attaining virtuous habits and qualities. We learn character related values from this society. In fact, training of character starts from cradle and ends in the grave. A man of character becomes a great man. A man of character is a source of strength to others.

So be a person of character, the world will regard you as their light house.

*

AN IDEAL TEACHER

—Amit Gautam
9 'A'

An Ideal Teacher
is a part of life.
He helps a lot
To make our future.
There are times
when we feel sad.
He gives us knowledge
Like a preacher.
The blessing of God
An uncommon creature
He is none, but
Teacher, Teacher and Teacher.

*

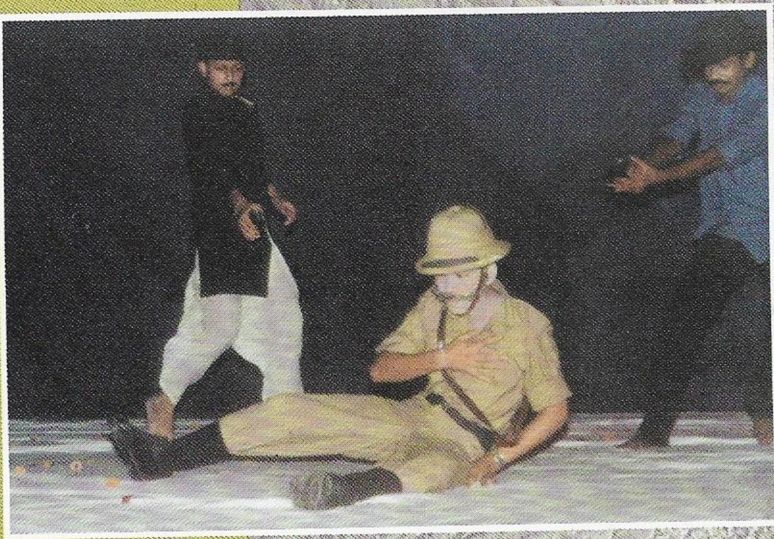

फिरंगी अत्याचारी साण्डर्स का वध करते राजगुरु और भगत सिंह (चि. दृश्यमुनि चाकमा, यतीन्द्र और विवेक कश्यप)

दुर्गा स्तुति में दुर्गा जी की वन्दना करते भगवान शंकर, ब्रह्मा और विष्णु साथ में अन्य देवता (चि. क्षितिज, विभाष व अलौकिक)

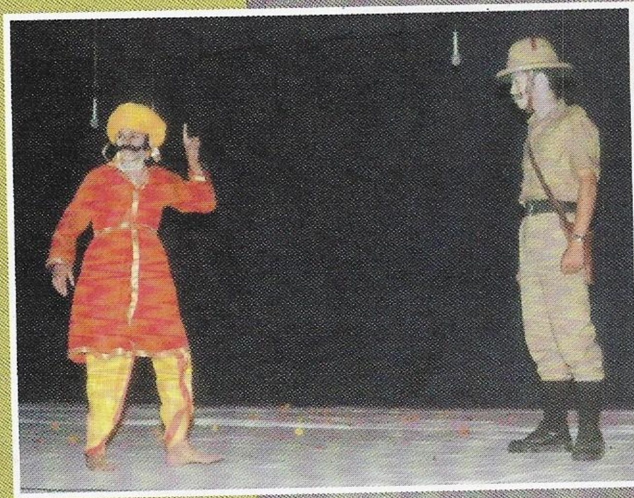

युगदर्शन नाटक में सूत्रधार की भूमिका में सारांश अग्रवाल और अंग्रेज के रूप में दृश्यमुनि चाकमा

असेम्बली बम काण्ड की सुनवाई करते हुए
लाहौर सेशन कोर्ट के न्यायाधीश
(चि. सौरभ त्रिपाठी, मानस भरद्वाज,
अभिषेक और सन्तमणि)

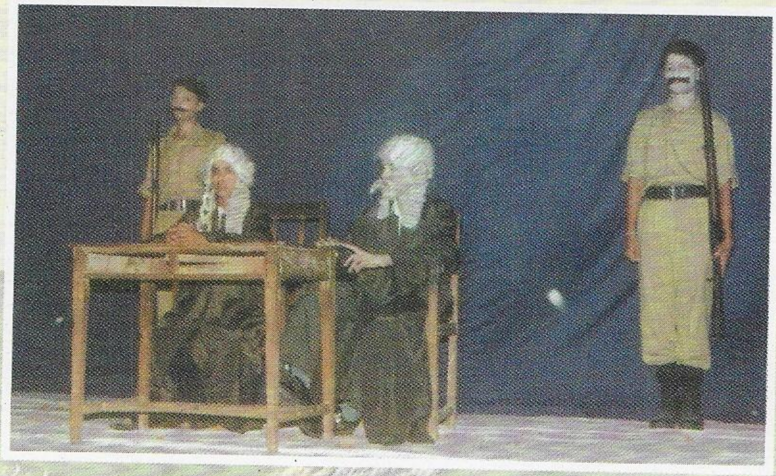

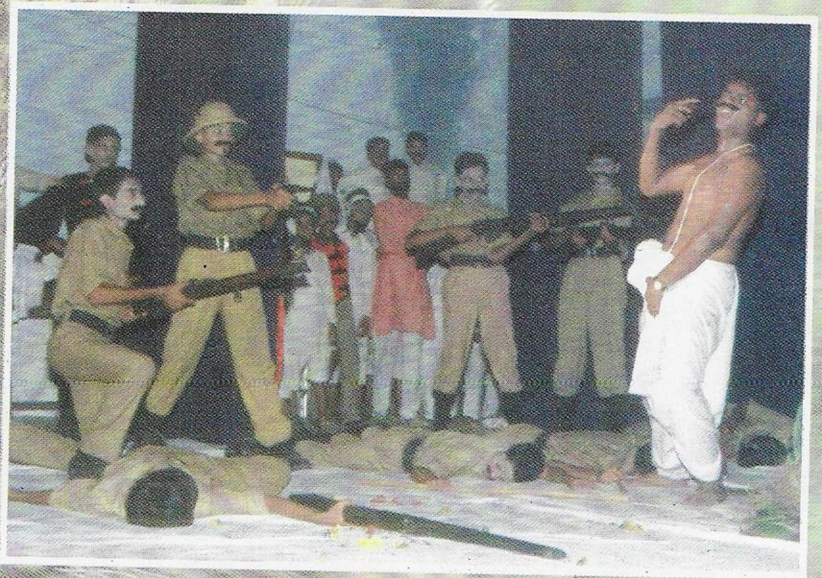

अंग्रेजों से लोहा लेने के बाद कनपटी पर
पिस्तौल लगाकर खुद को शहीद
करते हुए चन्द्रशेखर आजाद
(चि. प्रत्यूष, आनन्दराज, अखिल मिश्र व अन्य)

नाना साहब पेशवा और
तात्या टोपे की भूमिका में
चि. नीरज और अनुराग मिश्र.

DEFINITION OF FRIENDSHIP

—Sumit Kakkar

9th 'C'

Friendship is a SIM card which
has no activation charges, free
incoming, roaming for everywhere
and its validity never expires.

LIFE IS LIKE

Our Life is like a movie. We are characters of it. Our teachers and parents are directors of it. God is writer of it because he writes our destiny. When we die, our film (life) reaches climax. And then God will see our whole film and make it a hit and we find a thing called "Moksh".

*

HISTORY

—Padam Jee Omar

IX - 'A'

History and its importance :-

Can you ever imagine what happened thousands and thousands years ago ? In fact it is very difficult for you to even think of such times. It is for this reason the study of history is necessary. History tells us the life story of man from the earliest times to the present day. It tells us when the first man appeared on earth, how he lived through the ages and from an uncivilised creature became a civilised man. Its study tells us about people, their lives, their thoughts, about what they did to earn their livlihood etc. In fact without the study of history it would be very difficult for us to know about our ancestors. Therefore, history is a carefully written record of the past events. It is the story of man's progress.

The study of history has a social importance

First - It helps us to know our past. It tells about our ancestors and their struggle for existence.

Secondly - It tells stories not only about kings and emperor, their battles and victories.

Thirdly- History helps us understand and appreciate our past.

*

The 'powerhouse' of India : Rashtrapati Bhavan

—Ayush Mishra
9th B

The present day Rashtrapati Bhavan was the erst while residence of the British viceroy. Its architect was Edwin Landseer Lutyens. The decision to build a residence in New Delhi for the British viceroy was taken after it was decided in the Delhi Durbar of 1911 that the capital of India would be shifted from Calcutta to Delhi in the same year. This building gave the impression, in the words of a critic, the setting of a perpetual Durbar. On 26th January 1950 when Dr. Rajendra Prasad became the first president of India and occupied this building to preserve, pro-tect and defend the constitution of India. It was from that day that this building was renamed as Rashtrapati Bhavan the President's House.

Construction of the building - Apart from Edwin Lutyens, the chief architect and Chief Engineer Hugh keeling there were many Indian contractors who were involved in the construction of this building. The sanctioned amount for the building was earmarked at Rs. 400,00. However the long span of seventeen years required for the construction of the building raised its cost to Rs. 12.8 million.

About the building - This vast mansion has got four floors and 340 rooms with a floor area of 200,000 square feet it is built by using 700 million bricks and three million cubic feet of stone. It is visible from a distance and the most eye-catching round roof with a circular base in the heart of Delhi. While Lutyens ostensibly acknowledged the design of the dome to the pantheon of the Rome, it is very strongly believed by informed analysts that the dome was structured in the pattern of the great stupa at Sanchi. In fact the whole of Rashtrapati Bhavan embodies in it Indian architectural patterns such as Buddhist railings, Chhajjas, Chatris and jaalis.

Chhajjas are stone slabs which are fixed below the roof of a building and are designed for the purpose of preventing the sun's rays from falling on the windows and protecting the walls from the rains in the monsoon.

The might and authority of the people of India, which pervades this Republic is represented by the president of the country, whose official residence is the Rashtrapati Bhavan and the architecture of which fascinates as much the ardent architects as the common people across the globe.

*

CHARACTER

—**Ankur Katiyar.** 9th 'B'

Character plays a very important role in our life. There is an old proverb, "If wealth is lost nothing is lost, if health is lost something is lost but if character is lost everything is lost." Loss of wealth can be compensated by dint of hard labour Health can be recouped by rich dict but loss of character is an irreparable loss. The stigma on characters can not be blotted out for generations. It brings our reputation to naught and a slur on fair name. However hard we may try to wash it off but the result will be failure. It is essential to safeguard it at all costs. It matters little if death results for its protection.

Moral : Good character carves a good name and makes a man immortal.

*

"WHERE THERE IS A WILL, THERE'S A WAY"

—**Ankur Katiyar,** 9th 'B'

"The Key to happiness is having dreams but, the key to success is making them come true."

Everybody has dreams
and aspirations to achieve success in life.
But only a few possess what it takes to
fulfill them

What matters the most is the 'Will'.
The will to see beyond limits
and the will to achieve those dreams
We believe in having this 'Will'.
We create our own destiny by initiating
the will towards revolutionalising the
way things work.

Because we believe
Where there is a will there's way.

The will to fulfill your dreams.
The will to overcome all challenges.
The will to move ahead against all odds

*

THE INTERNET

—**Rohit Katiyar**

XI 'A'

Internet is the best utility provided by computers and has become very popular now-a-days. You can send e-mails to your relatives or even "chat" through internet, or you can find some material related to your studies or connect yourself to the world through internet. Internet is sometimes misunderstood with wwwWorld wide Web) or Website. But website is not internet but infact www is one of the services provided by internet.

Now a formal definition : The internet is a huge network of computers, which links many different types of computers all over the world. It is a network of networks.

Internet was first establised in 1970s by ARPA agency of U.S.A. for defense works. It now interconnects more than 30,000 networks, allowing more than 10 million computers, and more than 50 million computer users in more than 150 countries around the world to communicate with each other.

The basic services provided by internet are E-mail, FTP, Telnet, Usenet news, www etc. Everyone is familiar with e-mail and www. The electronic mail service allows an internet user to send a mail (message) to another internet user in any part of the world. www(world wide web) most commonly used is a facility to place any text, Graphic or Vedio on a location in the internet known as websites (or just sites).

Uses of Internet :

1. We can mail to our relatives and 'CHAT' with them ('Chat' means online conversation).
2. One can place an advertisement for one's products and others can buy them through internet (e-shopping).
3. We can play games over internet.
4. A student can find matter for his studies on internet and consult his teachers through e-mail.
5. A man in Brazil found his lost family with the help of internet.
6. Internet is very useful in data transforming and communication.

Internet is full of information but some crimes (knowns as cyber crimes) are too being conducted with its help. This is a disdvantage of this application. Yet Internet is a powerful tool which we should use frequently.

*

WHO IS TO BE BLAMED FOR THE PRESENT CONDITION OF INDIA ?

—Ravindra Pratap Singh, XI 'B'

Of course India is an up coming and developing country and that day is also not for away when our country will be one of the developed countries. We have made so much progress in economic, social, technical and educational fields in last 50-60 years.

Then what's the reason that corruption, terrorism, pollution and inferior politics are not only in existence but ruling over India. When a project is granted why is it not started in reasonable time with proper material and labour ? Even if that is a country level scheme or a village level. Various types of bottlenecks seem to open in every kind of product or scheme.

Who are responsible for these turmoils- ministers who never pay attention to the granted schemes; officers - who never care for government orders; or public itself who give opportunity to the corrupt persons to get a place in the goverment.

In fact nobody wants to work selflessly and with honesty in the modern age-neither ministers, officers nor public. It people wish, they can get the irresponsible leaders and selfish officers removed from their duty.

Government is one of the parts that construct a country. If it is not the best, it cannot co-operate in the development of the country.

In this way only leaders are not the obstructing elements in progress of India but officers and public is also responsible for it.

LIFE

—Ankur Kushwaha, 11th A

Life is not as it seems. But actually it depends upon you. How you think about the Life. What is your thought it matters. Life is full of ups and downs. It is Like a game and a thing of fun for those who dare to fight against the conditions of life. On the contrary it can be a nightmare for those who are losers and do not want to face any problem. A happy man is he who feels well in all conditions and never loses his temper. In short I want to tell that don't carry the life like a heavy weight life is full of colours, wonders, love so enjoy it with a great pleasure. You are so fortunate that you are a living human being. So you have to be proud of it.

Every one thinks that he is the centre of all problems. And he is Victimised by the "Moving time". He always thinks that he is the wronged person. But it is totally wrong. There are many people who are more pitiable. So don't be gloomy and always keep your spirits and motto high.

Finally I want to say life is a challenge meet it. Life is a game play it, life is a drama see it life is a song sing it.

*

VALUE OF TIME

—**Abhay Singh Sengar,** IX 'A'

To realise the value of one year.
Ask a student who has failed his exams.
To realise the value of one month.
Ask a mother who has given birth to a premature.
To realise the value of one day.
Ask a daily wage labour.
To realise the value of one hour.
Ask the friends who are waiting to meet.
To realise the value of one minute.
Ask a person who has missed the train.
To realise the value of one second.
Ask a person who has survived an accident.
To realise the value of one milli-second.
Ask a person who has won a silver medal in olympics.
To realise the value of one nano-second.
Ask a hardware design engineer.

✻

HOSTEL LIFE

- —**Jeet Singh Arya,** XI B

In order to pursue my studies I had to live in the hostel away from my home. I joined Deen Dayal Vidyalaya and because the inmate of a spacious hostel. Hostel life is disciplined and set according to a routine. We have to live according to a fixed schedule and take care of our studies. This life helps us in adjusting to the various challenges of life. We can build a good rapport with other students and learn a lot from them. It gives us confidence and helps us in becoming self reliant. We have certain duties to perform. The environment helps us to inculcate the good qualities of head and heart. Team spirit helps us to work together keeping in view the temperament of others. I feel everyone should spend some time in the hostel. It helps us in moulding us for a better future in this competitive world.

✻

INDISCIPLINE AMONG THE STUDENT

—Vivek Kumar Sharma

Seventh B

- The main virtue in the students is discipline. The parents usually have no time to see that their children are properly trained in the art of discipline. The whole responsibility, therefore falls on the shoulders of the teacher, he is not only to teach but has also to maintain discipline among students.
- The last few years have witnessed students unrest on an unprecedented scale in large parts of the country. It has drawn the attention of teachers, educationsits, politicians and social reformers a like.
- The first cause of students' unrest is that the present system of education has outlived its utility.
- The second cause of students unrest is the moral degredation of the society as a whole after independence.
- The third cause is that most of the educational institutions are ill staffed. They run more classes than the number which they can teach. This naturally gives rise to grievances of the students.
- Another potent cause of students unrest is that there is no close contact between the teacher and the taught.
- An empty mind is the devils "workshop" also applies to students, they do not have enough of creative activity to utilize all their time and energy.
- However it is to be realised that all the aforesaid causes of students unrest can not be removed over-night.
- Indiscipline is the bane of society an indisciplined nation soon destroys itself. Nations that have made the greatest progress have been those which were best disciplined.
- The imposition of emergency helped us in restoring discipline among the students. It then greatly improved the working of educational institutions. The examinations then were held as per schedule and there was no mass copying. But it was due to external terror. Such conditions are to be developed internally.

*

SUMMER JOBS

—**Abhay Chaturvedi**

VIII-D

Summer jobs are a good source of using our time in a better way. When the youngsters get summer vacations in the middle of their studies, they should use them in doing jobs. There are so many jobs available for young ones, today. And these jobs become the base of their future career.

Today, so many youngsters are seen doing jobs in summer vacations. So, don't feel strange on finding someone wearing smart T-shirt working at the petrol-pump or someone welcoming the guests in the restaurant near you. You may feel strange when your neighbour's son will come to your home to give the delivery of the products you have ordered. But there is nothing to feel strange. Now, doing small works by young generation is not an indication that the people doing these jobs are in odd conditions. This is a process of learning which will help a lot for young ones in this age of competition.

As the results of doing these jobs, young ones learn to present themselves in front of others and to make mental balance in the moments of pressure. For example if you get a chance to work in a restaurant, you besides learning the work of kitchen and other works of restaurant also learn the way of welcoming the guests. You will also know what the people who comes into the restaurant expects from the workers and management of the restaurant. Do they get the whole recovery of their money or not ? You will also learn to tackle the knotty problems of daily life and how to manage the industry through the experience of this job. Only you need to open your eyes and to understand everything attentively. Then you will see how this job will change your world.

By doing jobs in holidays you will know about your virtues and arts about which even you are unaware yet. And you will learn public dealing, to arrange the news and you will become very expert in learning new things by leaps and bounds. The experience of these works will be very helpful for you at the time of choosing career sales representative is also a good job from which we can learn so many things like art of speaking etc.

During these jobs, you will learn about some more type of arts of which there is a great use in other fields of the life. By these jobs besides learning about the responsibilities a great passion for work will also he created inside you. By which your self-confidence will increase. In place of being irritated on small matters, you

will learn to use patience and your discretion in handling these matters you will know about your capacity perfectly.

If there is any plan to do job in these summer vacations in your mind, start thinking seriously about this from now and also start trying for this. If doing the work of a salesman going from house to house is not possible for you, you can also accept the institutional selling. If you want to develop new abilities in you, choose the works from the fields like commercial syllabus etc. near you, which will give new direction to your talent. Poetry, writing, swimming, car driving, computer operation etc. all are available for you. Only you have to decide firmly once.

All of us know that Patience is the key to success. So, before doing anything, think peacefully that what will be the best thing for you to learn. Then try to achieve your goal.

Benefits from Summer Jobs

- You learn so many things which are essential for a good profession. Like how to talk on telephone, how to treat your customers on clients etc.
- You learn to differentiate between the environment of college or school and of working areas.
- Your contacts increase.
- You know about the different sides of work.
- When you do a job anywhere, a worker report is provided which is helpful for your future career.
- You get the experience of job.
- You will know about so many qualities of you. about which even you didn't know.

So friends, use your time of summer vacations by doing jobs. Don't infer about the standard of job and salary. No, work is big or small. You have to move ahead on the first step of your career only once and if you are able. Capable and optimistic, no one can make you stop. You will go ahead continuously and you will see an unexpected change in you and your life. Success is yours, only yours.

*

A POEM OF GRAMMAR

—Akhil Kumar Tripathi
XI - A

A Noun is the name of anything,
Like a boy, school, tree or king.

In place of noun, Pronouns stand,
His eyes, your nose and her husband.

Verbs tell of everything done,
Read, Carry, Come or Won.

How things are done Adverbs tell,
As slowly, quickly, or well.

Conjunction joins the words together,
As love and beloved, winds and weather.

Qualifier of first two is Adjective,
Like good and bad and sharp and active.

Nouns, Pronouns have preposition before,
As on the chair or through the door.

Interjection always shows surprise,
Oh ! How beautiful ! Ah ! How wise !

There are articles only three,
Indefinite 'A' ? 'An', definite 'The'.

*

A TEACHER'S WORDS CAN CHANGE ONE'S LIFE

—Ankur Kushwaha

11th 'A'

Are you too stupid to do anything right ? These words are said by a woman to a little boy who was evidently her son, were spoken because he had walked out from her. And they were said at a volume high enough that all the strangers in the vicinity could hear. Punished, the boy returned quietly to the woman's side, his eyes down cast.

Not a big moment, perhaps. Yet small moments sometimes last a very long time. And a few words- though they mean little at the time to the people who say them - can have enormous power "Are you too stupid to do anything right ?" Words like that can echo.

I recently read a story about a man named 'Malcolm Dalk off'. He is 48, for the last 24 years he has been a professional writer, mostly in advertising. As a boy, Dalk off was terribly insecure and shy. He had few friends and no confidence. Then one day in October 1965, his high school English teacher, Ruth Brausch, gave the class an assignment. The students had been reading 'To Kill A Mockingbird'. Now they were to write their own chapter that would follow the last chapter of the novel.

Dalk off wrote his chapter and turned it in. Today he cannot recall anything about the chapter he wrote or what grade Mrs. Brausch gave him. What he does remember - What he will never forget are the four words Mrs. Brausch wrote in the margin of the paper. "This is good writing." Four words. They changed his life. Until he read those words, he had no idea of who he was or what he was going to be. After reading her note he went home and wrote a short story. Something he had always dreamed of doing but never believed he could do.

over the rest of that year in school, he wrote many stories and always brought them to school for Mrs. Brausch to evaluate. She was tough, encouraging and honest. "She was just what he needed". He was named co-editor of high school newspaper. His confidence grew, his horizons broadened, he started off on a successful, fulfilling life. Dalk off was convinced that none of them would have happened had that teacher not written those four words in the margin of his paper.

After a long time Dalk off visited Mrs. Brausch, who had retired. He told her what her four words had done for him. Because of giving him the confidence he had been able to pass that confidence on to the woman who became a writer herself. He told that a young woman in his office who was working in the evenings towards a high school equivalency diploma, had come to him for advice and assistance. She respected him because he was a writer- that is why she turned to him.

At that moment he thought and realised that Mrs. Brausch had cast an incredibly long shadow.

"Are you so stupid to do anything ?"

"This is good writing."

few words. They can change everything.

*

MATHEMATICS

Though I am student of Mathematics I am trying here to put the general opinion of students about Maths. To all students it seems like -

"Alpha (- -), Beta () and Gama (---)
All are playing drama
Addition, Subtraction, multiplication and division
All these have no limitation
There are also derivatives and integration
Which need more practice and revision.
3 - dimensions and co-ordinates are bore
but needs practice more and more.
Trigno and Algebra are like fixtures.
Both are full of formulae mixtures.
Nothing is fix in it
It is full of risk & risk.
Yes my dear it is Mathematics
But wait, wait, wait
Don't get hurt
Be careful and alert.
With some labour and good effort
You can be the master of it
Yes my dear, it is Mathematics."

MATHEMATICS (Full Name)

M - memory, essential for the study of the subject.
A - Attention to be paid during study.
T - Test which succeeds when knowledge fails.
H - Hord work, which deals with the mental process.
E - Enthusiam, which will not let you be depressed if the problems remain unsolved

M - Mental power, which is tested in studying.
A - Accuracy, its a must for students.
T - Talent which is necessary to prove your worth.
I - Intelligence important factor dealing with problems
C - Cleverness, plays an important role in solving problems.
S - Success, when the milestone is achieved.

× × × ×

BOOKS

Books, Books, Books
Nobody at them wants to take a Look
Some Love them.
Some hate them.
Some keep them near their heart
Some keep themselves from them apart
Some want to keep them in their
mind's store.
Some feel that it is a bone
Some learn them to become "something".
Some keep them to become "Nothing".
Books are really full of mystery
Some love Physics, Chemistry and History.
But then also books are full
of morals and lights
So we should learn something
From them and stop all the fight
So have them with a great joy
and make your future bright.

✻

HISTORY AND IMPORTANCE OF ENGLISH

—Abhay Chaturvedi
VIIIth- B

History of English

Every language has a history. English has also its own history. It has evolved some 800 years ago. There were two languages popular in England. They were Latin and French. People of England thought that they should have their mother language. So, they chose four dialects. They were (1) Northumbrian, (2) Kentish (3) East Midland, (4) Wessex. And out of the combination of these dialects they made a new language. They titled this language 'English'. This work was done by the people of England under the leadership of Chaucer. That's why 'Chaucer' is known as 'Father of English'. The english went in every part of the world. The people of the world accepted their language English and English became very popular all over the world. Now, English is spoken by most of the people of the world. The script of English language is Roman.

"From the position of a beggar maid, English became the reigning queen."

Importance of English

Today, English is one of the widely spoken languages of the world. According to the myth of orthodox people English language is a symbol of foreign rule. The english have gone from India and left their symbol in the form of their language English. So, orthodox people don't accept English language. But we should not forget that it is the English language and culture that has made us civilised and cultivated. It, is the English culture that has provided us democracy, Western culture and views and so many other things. Today, English has became part and parcel of a successful person. If anyone wants to fly in colurs he must have a good knowledge of English in this modern age. One can not be successful without having the knowledge of English.

So, we must not overlook or avoid English language because if we ignore English, we Indians will lag behind and we will go on the way of decadence. We will grudge from the experience of success because today, every competitive exams, interviews, group discussions (G.D.) etc. all are based on english. So, to run with the modern age we have to change our thoughts and accept English genially.

*

THE TSUNAMI - A TRAGEDY MOST CRUEL

"THEY LIVED BY THE SEA, AND DIED BY IT"

—Mahendra Kumar
Eleventh - B

The Tremors came first. They were mild many people were still in bed. Few felt them. Fewer paid heed Tremors like this had come before and gone.

Then the waves came fast, furious and devastating, Hundreds of Fishing hamlets along the Tamil Nadu coastline were swept away fishing nets, catamarans, huts and families were all swallowed by the sea. The fishermen never feared the sea. Cyclones had come and gone but the sea had been their friend, their provider. Each day they would tame miles and miles of the sea in their catamarans and small fishing boats, while their children would crash into the shores thousands of time every day. But one wave they knew nothing about changed all that.

As news of the Tsunami attack spread panic struck- Survivors ran away from the sea leaving behind everything. "The sea is going to swallow all of us," they kept on repeating as if in a trance- Even people in fishing villages that escaped the wrath of Sea ran away dreadfully. Many paused to gather their most precious belongings within hours, most of Roads leading away from the beach were flooded with people carrying suitcase, television sets, bags etc.

Soon rumours had penetrated the city far deeper than the waves "Chennai is going to be submerged today". People cried Television cameras zoomed in on the unfolding tragedy. As the sea Calmed down deadbodies came a Float in waters stirring on lookers into action. Many stood still and stared Shocked.

As the shock wore away, tears started flowing-Heart wrenching screams of anguish continued well past the night. Survivors cursed the sea for washing their families away they even cursed it for sparing them. How could they continue to live by the sea that had suddenly turned so cruel ? but they must. They waves have now receded to reveal the ruins on the shores. These devastated people must go back to the death grounds of their families. They must tame the sea again. They must feed off it for that is the only living they know. They are fisherman.

*

DON'T DEPEND ON FATE

—**Shantanu Gupta**

XII 'B'

There is nothing which cannot be obtained in this world, provided man makes a proper and ernest effort. If a person, prompted by the desire to get a thing, honestly makes an attempt he will be certainly successful in his venture. Let a peson desire to obtain something in life, let him constantly strive to get it, sooner or later he is going to succeed. But he should go on in his path, unflinchingly and without hesitation.

So many people in this world have risen from the very depths of distress and poverty to the heights of good fortune. People who overcome difficult and dangerous situations are those intelligent people who rely on their own effort, and not those who placed their meaningless trust in good luck.

Fate is an unnecessary concept, for wherever we cast our eyes, we see the result of industry and effort, not of inaction. Nobody has heard of anything happening in a dead body, which is a perfect example of the nonexistance of will. Fate does not do anything. It exists only and only in our imagination. It doesn't have any existence of its own.

Fate is nothing but the good or bad fruit of the actions that we have already done. That, which is with in man's reach, is the self-effort, what others will eventually term Luck. Success ultimately depends upon the individuals effort.

*

INDIAS REMOTE SATELLITE PROGRAMME

—**Shobhit Khare**

XII - B

Now we are living in an age of information technology. The base of this technology is sattellite. They work by solar energy. There are many kinds of satellite that have been invented in world.

So years Ago, we were dependent on countries like America and Russia for our basic communication & searching new fields of ores, oils etc. The satellite, informed us about 'Jhoom Kheti' in Assam & Arunachal Pradesh.

In 1989 we invented I^{st} Indian Remote sensing satellite i.e. I.R.S. 1A. In the same year our satellite IRS- 1B failed.

Now we have developed many Remote sensing satellites.

The main difference between normal satellite and remote sensing satellite is that normal satellite only work for communication by waves but R.S.S. send waves in different areas & gives us information about them. We know about remains of Ram Setu in Rameshwaram by Remote sensing satellite.

*

A TRUE FRIEND

—Shwetank Dixit
12th B

A True friend never walks away,
A True friend will always stay
A true friend looks out for you

A True friend will guard your secrets
Like a precious gift
A True friend is there for you
To give you a helpful life

A true friend tries to make you smile
Tries to replace that frown
They may not always succeed
But they rarely let you down

His arms for you are open
His heart for you does care
And when I think you need me
I will try to always be there

I will listen to your fears
I promise not to laugh
Comfort your falling tears
I will make this friendship last

I will keep you near my heart
I will always hold you dear
Even when we are miles apart
Even when you are here

I hope I am to you
Everything you are to me,
For the freindship we have is a special one indeed.

*

BLESSINGS OF POETRY

—G.P. Verma

Since the time immemorial man has been worshipping poetry as a diety. It is the creation of God himself. It is a beautiful and lofty gift of God to human beings. It is very difficult to define poetry in words. It is a spontaneous over flow of our feelings and emotions. It is the expression of our heartfelt desires and profound thoughts. Whenever a person finds himself in despair and destitution, he seeks relief and consolation in poetry. It reveals what is true, delineates what is beautiful and does what is noble and good.

Functions of poetry are manifold. It thrills our heart, broadens our mind and enlivens our senses. It provides us with peace, pleasure and solace. It inspires us to rise, to contrive and to live. It is like a torch bearer that shows light to those who have lost their way in the darkness of ignorance. It relieves the pain of sorrow stricken hearts. At the moments of disappointment we go in the shelter of poetry and it soothes us. We can share our joys and sorrows with poetry. In this sense it is a boon to us.

Poetry is the embodiment of truth (Satyam), Goodness (Shivam) and beauty (Sundaram). It has a power to bring a miracle in the life of man. Real poetry is not sensual but spiritual. It is a perennial fountain of inspiration and mirth. It is not limited to a period and place. It is ever lasting, ever fresh and ever green. It is like a tree that blossoms and bears fruits in all seasons. It makes no difference between the rich and poor, high and low. It blesses all irrespective of caste, colour and creed.

Matter of poetry remains incomplete untill we mention something about the poets. The poet is the priest of poetry. The poet devotes himself to poetic works. He make a great Sacrifice. He is sad so that others may smile, he suffers so that other may evade suffering. The poet attracts our mind towards the snow covered mountains and dark clouds, with beautiful rainbow is the sky. It diverts our attention towards the green trees laden with fruits and flowers with pretty birds and butterflies flying about them. Who can better portray than poets the waves of the sea dashing against its shores and rivers racing towards the ocean to meet it. Thus poet and poetry are complement to each other. Poetry is immortal and it keeps the poet alive even after his death by his name and fame. We cherish the sweet memories of great poets in our hearts. Who can forget the names of Tulsi, Sur, Kabir, Pant, Prasad and Nirala. Like wise the names of Milton, Wordsworth, Shelley and Keats etc are worth remembering.

Poetry teaches us the art of living. It laughs away the bitterness of life. We can bear and face the adversities of life through poetry. A great Scholar has rightly said, Sweetest are the Song that tell of the Saddest thoughts." The great poet and dramatist Shakespeare's popular saying 'Sweet are the uses of adversity" points out the same philosophy of life. Thus we find that the welfare of mankind lies in poetry and it can save him from extinction.

*

Unification of India and Pakistan a dream or a necessity ?

—Sharda Rao

For lakhs of people like me who trace their origin to West Punjab which is now a part of Pakistan; the unification of the two countries would be a dream come true. The very thought that one day I will be able to visit my ancestral place in Lahore and Peshawar fills me with great ecstasy. Post independance era has been marked by the growing hatred between the two countries that were once one. The partition was the result of the tricky and dirty politics to which our so-called great and far-sighted leaders fell an easy prey. The British were successful in finalling dividing us on the basis of religion. The partition left our ancient traditions of tolerance and peaceful Co-existance shattered and our mother India has not yet recovered from the wounds resulting from this brutal laceration.

The people who were rendered homeless in Punjab, Sindh and Baluchistan did not even have an inkling as to what lay in store for them. I have grown up hearing the blood-curdling descriptions of the scenes of hatred and violence that swept the beautiful areas of undivided India.

My grandparents lost several of their relatives in the riots. They have been full of fond memories of their youthful days in Bhaun, Rawalpindi and Lahore. They often recalled the lush green fields, the lassi, the Makkhan with Makki di Roti and Sarson Ka Sag and the simple folk that inhabited our ancestral places. Hindus and Muslims, lived together in hormony and helped the other community in festivals. During weddings the muslims got special food prepared for the Hindu, brethren. The food was cooked by Brahmans. The Hindus were deeply revered. But after 1930 communal hatred began to sweep, across the villages. There were incidents of violence and riots but good sense prevailed.

Even in 1947, several muslims forewarned the Hindus and helped their safe departure to Hindu majorty lands. But there is a dismal side to the picture as well. In some villages the communal violence forced the young maidens to end their lives by jumping into the wells. One of my grand aunts was burnt alive with hundreds of other women in a Gurudwara in a bid to protect her honour.

However, no one could gauge the evil plans of partition and its after math people were so innocent that they looked upon the partition as a foolish game and thought that after a few moths mormalcy would return and they would come back to their homes. Many left their valuables in the custody of their friends or neighbour never to return.

Post-independance generations have been suffering the pain that they inherited from their ancestors. But we look forward to the day when the two nations shall unite. It is strategically a necessity in the Indian Sub-continent. India and Pakistan camplement each other in many ways. The wall created by hatred will definately be destroyed by people who want to unite. The matches that were played between Pakistan and India in Pakistan, resulted in hundreds of Indians flocking to Pakistan. The warm welcome accorded to us there speaks volumes about the deep anguish in the hearts of the people on the other side to unite. The recent series played in India presented similar scenes of the people of Pak flocking to India to visit their ancestral places. There were scenes marked by intense emotional outbursts Lakhs of people on both the sides of the border have spent decades of their lives nursing the dream of unification of India and Pakistan. The future generations of the victims of partition have a great desire to visit their ancestral places. If East and West Germany could unite after years of hatred and Violence, why can't History repeat itself in India? The "Akhand Bharat" is not a myth. It lives in our hearts and I am sure that in my life time I shall see my nation once again united. Perhaps, then the souls of our ancestors and those of the martyrs who gave their lives for the freedom of undivided India, shall rest in peace. We must never forget that our freedom fighters sacrifised their lives for the freedom of "Akhand-Bharat" and not for the freedom of a country that was brutally divided into three parts - East Pakistan (now Bangladesh) : West Pakistan (Now Pakistan) and India.

Let us pledge to make our sincere efforts for the Reunion of India, Pakistan and Bangladesh. It might appear a dream but Dreams too turn into reality someday.

*

PHILATELY

—**Vibhas Mishra**
VIII-B

→ What is 'Philately' ?

→ Collection of stamps is called 'Philately'. This name was given by a french named M.Y. Herpin.

→ Philately the king of Hobbies - Collection of stamps is one of the oldest hobbies which is still very popular often called king of hobbies and hobby of king, this art is not for the affluent only. It is one hobby which cuts across age group and could be taken up by anyone and everyone.

→ How did the collection of stamps begin ? In the 19th Century a lady in Europe used to stick stamps on the walls of her dressing room. Suddenly one day she started collecting the stamps and in 1841 she gave the news in London Times to give her stamps used by the people. Slowly the collection of stamps began in the whole world.

→ How to collect the stamps ? Stamps could be collected by

→ Taking stamps from the mail we recieve.

→ Exchanging stamps from friends and neighbours.

→ Buying from stamp Vendors.

→ Standing Order with Philatelic Bureau.

→ Where we should keep the stamps -

→ We should keep the stamps in an Album. Many types of Albums are availaible in the market.

→ Some words used in Philately

- Albino block of stamp
- Cached
- Cancellation
- Commemorative stamp
- Definitive Issues
- Mint
- Perforation
- Water Mark
- Vignetle

*

हाईस्कूल परीक्षा 2005 में प्रविष्ट छात्र

अनुक्रमांक	छात्र का नाम
1145276	अभय प्रताप सिंह राठौर
1145277	अभिजीत गुप्त
1145278	अभिनय दीक्षित
1145279	अभिषेक चतुर्वेदी
1145280	अभिषेक कुमार सिंह यादव
1145281	अभिषेक सिंह भदौरिया
1145282	अभिषेक सिंह चौहान
1145283	अभिषेक सिंह
1145284	अभिषेक यादव
1145285	अभिषेक वर्मा
1145286	अद्भुत सिंह
1145287	आदित्य प्रताप सिंह
1145288	अजय मिश्र
1145289	आकाश गुप्त
1145290	आकाश गुप्त
1145291	अक्षय यादव
1145292	आकाश अग्निहोत्री
1145293	अक्षय गुप्त
1145294	अक्षय मिश्र
1145295	अमित मयंक
1145296	अमित कुमार पाण्डेय
1145297	अमित सिंह बिशेन
1145298	अमित आनंद पाण्डेय
1145299	अमोल अग्निहोत्री
1145300	अनल्प कीर्ति शुक्ल (अनुपस्थित)
1145301	अनिल कुमार
1145302	अनिमेष द्विवेदी
1145303	अंकित गुप्त
1145304	अंकित कटियार
1145305	अंकित पुरवार
1145306	अंकित सिंह
1145307	अंकित श्रीवास्तव

अनुक्रमांक	छात्र का नाम
1145308	अंकुर अग्निहोत्री
1145309	अंकुर कटियार
1145310	अंकुर मिश्र
1145311	अनूप कुमार तिवारी
1145312	अनुज शर्मा
1145313	अनुराग सिंह सेंगर
1145314	अनुराग तिवारी
1145315	अर्पित सोनकर
1145316	आशीष कुमार तिवारी
1145317	आशुतोष सिंह राजवत
1145318	आशुतोष सिंह यादव
1145319	अविजित दुबे
1145320	आयुष कटियार
1145321	चन्दन शुक्ल
1145322	दीपक पाल
1145323	दीपक दीक्षित
1145324	दिलीप कुमार गुप्त
1145325	गौरव कुमार पाल
1145326	गौरव मिश्र
1145327	हर्षित कुमार मिश्र
1145328	हर्षित सिंह
1145329	ज्योतिर्मय कौशिक
1145330	कपिल देव तिवारी
1145331	मनीष गुप्त
1145332	मंयक कटियार
1145333	मोहित वाजपेई
1145334	मुकेश पटेल
1145335	निखिल कुमार निगम
1145336	निशान्त आनंद
1145337	निशान्त चन्द्र
1145338	निशान्त मिश्र
1145339	निशित कुमार

अनुक्रमांक	छात्र का नाम	अनुक्रमांक	छात्र का नाम
1145340	प्रवीण कुमार ओमर	1145375	सौरभ पाण्डेय
1145341	प्रफुल्ल शुक्ल	1145376	सौरभ वर्मा
1145342	प्रमोद कुमार	1145377	सौरभ मिश्र
1145343	प्रशान्त कुमार	1145378	शैलेन्द्र कुमार दुबे
1145344	प्रशान्त कुमार सिंह सेंगर	1145379	शैलेश सिंह
1145345	प्रशान्त पाण्डेय	1145380	शशांक यादव
1145346	प्रतीक भारद्वाज	1145381	शशांक दीक्षित
1145347	प्रतीक पाण्डेय	1145382	शशांक शेखर यादव
1145348	प्रवीण अवस्थी	1145383	शीतांशु गुप्त
1145349	प्रवीण सिंह	1145384	शिवम अवस्थी
1145350	प्रियम सचान	1145385	शिवम द्विवेदी
1145351	पुनीत पाण्डेय	1145386	शिवम दीक्षित
1145352	रचित श्रीवास्तव	1145387	शिवम कटियार
1145353	राहुल झा	1145388	शिवम त्रिपाठी
1145354	राहुल तिवारी	1145389	शिवांशु राजपूत
1145355	राकेश कुमार	1145390	श्रीयांश पुरवार
1145356	रवि कुमार	1145391	शुभम दीक्षित
1145357	रवि कुमार	1145392	शुभम शुक्ल
1145358	रवि मिश्र	1145393	सिद्धार्थ निगम
1145359	रवीन्द्र सिंह सचान	1145394	स्नेहाशीष मुखर्जी
1145360	रिपुंजय कुमार	1145395	सुमित सिंहल
1145361	ऋषभ गुप्त	1145396	सूरज पटेल
1145362	ऋषभ किशोर सूर्यवंशी	1145397	तुषार श्रीवास्तव
1145363	ऋषभ मिश्र	1145398	उदित अग्निहोत्री
1145364	ऋषभ रमन	1145399	उपेन्द्र नाथ त्रिपाठी
1145365	ऋषि कुमार द्विवेदी	1145400	विभेन्द्र सिंह
1145366	रोहित ओमर	1145401	विभोर कुमार श्रीवास्तव
1145367	रोशन कुमार झा	1145402	विधुनाथ त्रिवेदी
1145368	रूपांश सचान	1145403	विजयेन्द्र
1145369	सचिन सचान	1145404	विनय कुमार दीक्षित
1145370	समीर दुबे	1145405	विपुल मिश्र
1145371	सन्दीप शिवहरे	1145406	विष्णु प्रताप सिंह
1145372	संजय यादव (अनुपस्थित)	1145407	विवेक कुमार सिंह
1145373	सत्यम गुप्त	1145408	योगेश कुमार वर्मा
1145374	सौरभ दुबे		

*

इण्टरमीडिएट परीक्षा 2005 में प्रविष्ट छात्र

अनुक्रमांक	छात्र का नाम	अनुक्रमांक	छात्र का नाम
0459442	अभिनन्दन तिवारी	0459472	अरविन्द सिंह
0459443	अभिनव मिश्र	0459473	आशीष तिवारी
0459444	अभिनव सिंह	0459474	आशीष वर्मा
0459445	अभिषेक तिवारी	0459475	आशुतोष पाण्डेय
0459446	अभिषेक खरे	0459476	अविराग शुक्ल
0459447	अभिषेक कुमार	0459477	आयुष सिंह
0459448	अभिषेक ओमर	0459478	ब्रज किशोर यादव
0459449	अभिषेक त्रिपाठी	0459479	दीपक पाण्डेय
0459450	आदर्श अवस्थी (अस्वस्थ)	0459480	दिव्यांशु द्विवेदी
0459451	आदित्य नारायण मिश्र	0459481	दुर्गेश सिंह
0459452	अजीत सिंह	0459482	गौरव कुमार सिंह
0459453	अजीत सिंह	0459483	गौरव पाण्डेय
0459454	आलोक शुक्ला	0459484	गौरव सचान
0459455	अमित कुमार वर्मा	0459485	गौरव श्रीवास्तव
0459456	आनन्द अवस्थी	0459486	गौरव उमराव
0459457	आनन्द ओझा	0459487	गोपाल दास
0459458	अनिकेत निगम	0459488	हिमांशु गुप्त
0459459	अंकित कुदेशिया	0459489	हिमांशु सिंह
0459460	अंकित मिश्र	0459490	जयवर्धन
0459461	अंकुर श्रीवास्तव	0459491	जयंत यादव
0459462	अंशुल तिवारी	0459492	ज्योतिरादित्य
0459463	अंशुमान सिंह सेंगर	0459493	कीर्तिमान मिश्र
0459464	अनुभव टीहर	0459494	कुमार गौरव
0459465	अनुराग तिवारी	0459495	मनीष कार्तिकेय तिवारी
0459466	अनुराज गुप्त	0459496	मिहिर अवस्थी
0459467	आराध्य देव मिश्र	0459497	मृदुल मिश्र
0459468	अर्जुन दीक्षित	0459498	मुदित निगम
0459469	अर्पित बर्नवाल	0459499	नीरज कुमार
0459470	अर्पित श्रीवास्तव	0459500	पंकज तिवारी
0459471	अरुण राजपूत	0459501	पंकज यादव

अनुक्रमांक	छात्र का नाम	अनुक्रमांक	छात्र का नाम
0459502	पीयूष पयासी	0459533	शैलेन्द्र पी०वी० सिंह
0459503	प्रभाकर सचान	0459534	शैवाल चौधरी
0459504	प्रभात सक्सेना	0459535	शान्तनु गुप्त
0459505	प्रखर कुमार दुबे	0459536	शशांक पाठक
0459506	प्रखर मैनी	0459537	शशांक पुरवार
0459507	प्रखर वर्धन	0459538	शशांक सिंह
0459508	प्रशांत पाल	0459539	शशांक त्रिपाठी
0459509	प्रशांत अवस्थी	0459540	शिखर दीक्षित
0459510	प्रेम किशोर शुक्ल	0459541	शिखर मिश्र
0459511	प्रियांशु दुबे	0459542	शिवम गुप्त
0459512	पुष्प राज सिंह (अस्वस्थ)	0459543	शिवम मिश्र
0459513	रघुनाथ सिंह	0459544	शिवम शुक्ल
0459514	रमन प्रियदर्शी	0459545	शिवम त्रिपाठी
0459515	रवि गुप्त	0459546	शिवम तिवारी
0459516	रवि प्रकाश	0459547	शिवेन्द्र प्रताप सिंह
0459517	रवि शर्मा	0459548	शोभित खरे
0459518	रविराज सिंह चौहान	0459549	श्वेतांक दीक्षित
0459519	ऋषभ श्रीवास्तव	0459550	सिद्धार्थ सौरभ
0459520	ऋषि कुमार सिंह	0459551	सोहित गुप्त
0459521	ऋतु पाल	0459552	सौम्यशील सिंह
0459522	सचिन गुप्त	0459553	स्वप्रिल जोशी
0459523	संदीप कुमार सिंह	0459554	तरुण अग्रवाल
0459524	संदीप सिंह चौहान (अस्वस्थ)	0459555	उदित रस्तोगी
0459525	सत्यम	0459556	उमंग पुरवार
0459526	सौरभ चन्द्र राय	0459557	विमल कुमार (अस्वस्थ)
0459527	सौरभ कुमार त्रिपाठी (अस्वस्थ)	0459558	विनीत कुमार
0459528	सौरभ सिंह	0459559	विपिन मिश्र
0459529	सौरभ सिंह	0459560	विवेक कश्यप
0459530	सब्य साची मिश्र	0459561	विवेक कुमार श्रीवास्तव
0459531	सेतु गुप्त	0459562	विवेक पाल
0459532	शैलेन्द्र कुमार शुक्ल		

हमारा आचार्य कुल

1.	श्री ओमशंकर त्रिपाठी	एम०ए० (हिन्दी), बी०एड०	प्रधानाचार्य
2.	श्री प्रकाश नारायण वाजपेयी	एम०एस-सी० (जन्तुविज्ञान), बी०एड०	प्रवर आचार्य
3.	श्री राजेश शुक्ल	एम०एस-सी० (रसायन विज्ञान), बी०एड०	प्रवर आचार्य
4.	श्री रामतीर्थ मिश्र	एम०ए० (हिन्दी), बी०एड०	प्रवर आचार्य
5.	श्री हेमन्त शुक्ल	एम०एस-सी० (भौतिकी), बी०एड०	प्रवर आचार्य
6.	श्री बिहारी लाल मिश्र	एम०ए० (अंग्रेजी, अर्थशास्त्र), एल०टी०	प्रवर आचार्य
7.	श्री कैलाश जोशी	एम०एस-सी० (गणित), एम०एड०	प्रवर आचार्य
8.	श्रीमती शारदा राव	एम०ए० (अंग्रेजी), बी०एड०, एल०एल०बी०	प्रवर आचार्या
9.	श्री आनन्द प्रसाद वर्मा	आई०जी०डी० (बॉम्बे)	कला आचार्य
10.	श्री महेश चन्द्र श्रीवास्तव	एम०ए० (गणित, समाजशास्त्र), एल०टी०	आचार्य
11.	श्री दीपक राजे	बी०ए०, बी०एड०	आचार्य
12.	श्री सुभाष चन्द्र शर्मा	एम०ए० (भूगोल), डी०पी०एड०, व्यायाम विशारद	आचार्य
13.	श्री गणेश शंकर वाजपेयी	एम०ए० (संस्कृत), शिक्षाशास्त्री	आचार्य
14.	श्री गया प्रसाद वर्मा	एम०ए० (अंग्रेजी), सी०टी०	आचार्य
15.	श्री सतीश चन्द्र गुप्त	एम०ए० (इतिहास, राजनीति विज्ञान), एम०एड०	आचार्य
16.	डॉ० उमेश चन्द्र तिवारी	एम०एस-सी० (वनस्पति विज्ञान), पी-एच०डी०, एम०एड०	आचार्य
17.	श्री जगपाल सिंह	एम०ए० (भूगोल), बी०एड०	आचार्य
18.	श्री दिनेश भदौरिया	एम०एस-सी० (रसायन विज्ञान), बी०एड०	आचार्य
19.	श्री श्रीप्रकाश ओझा	एम०एस-सी० (भौतिकी), बी०एड०	आचार्य
20.	श्री सुधीर अवस्थी	एम०एस-सी० (रसायन विज्ञान), बी०एड०	आचार्य
21.	डॉ० मनोज शुक्ल	एम०ए० (संस्कृत, हिन्दी), साहित्याचार्य, पी०एच-डी०	आचार्य
22.	श्री दुर्गेश वाजपेयी	एम०ए० (हिन्दी साहित्य), पत्रकारिता परास्नातक (IIMC)	आचार्य
23.	श्री मंजीत सिंह	एम०एस-सी० (गणित)	आचार्य
24.	श्रीमती रेखा निगम	एम०ए० (अंग्रेजी), बी०एड०	आचार्या

विद्यालय प्रबन्ध समिति

अध्यक्ष	डा० ज्ञान चन्द्र अग्रवाल	अ० प्रा० प्राध्यापक	कानपुर
उपाध्यक्ष	श्री कृष्ण गोपाल लाहोटी	व्यवसायी	कानपुर
मंत्री	श्री वीरेन्द्र जीत सिंह	चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट	कानपुर
सहमंत्री	श्री यतीन्द्र जीत सिंह	व्यवसायी	कानपुर
सदस्य	श्री जय गोपाल जी	सामाजिक कार्यकर्ता	लखनऊ
	श्री राम बालक मिश्र	अधिवक्ता	कानपुर
	श्री जग मोहन गर्ग	उद्योगपति	गाजियाबाद
	श्री इन्दु प्रकाश रस्तोगी	अ० प्रा० प्रधानाचार्य	मेरठ
	श्री ओम प्रकाश भार्गव	व्यवसायी	कानपुर
	श्री प्रेम चन्द्र गुप्त	व्यवसायी	कानपुर
	डा० देवेन्दु बहादुर सिंह	अ० प्रा० कर्नल	कानपुर
	श्री तरुण विजय	सम्पादक : पांचजन्य	नई दिल्ली
	श्री ओम शंकर त्रिपाठी	प्रधानाचार्य	कानपुर
	श्री दीपक राजे	(शिक्षक प्रतिनिधि)	कानपुर
	श्री सुभाष चन्द्र शर्मा	(शिक्षक प्रतिनिधि)	कानपुर

अन्तरताना ठिकाना : Website : www.geocities.com/pddusdv
: www.pdduvsd.org
अणुडाक : email - pddusdv@hotmail.com

Designed & Printed by : Naveen Printers, Kanpur
Phone : 2645966

सजल है कितना सवेरा
गहन तम में जो कथा इसकी न भूला
अश्रु उस नभ के चढ़ा शिर फूल फूला
झूम झुक-झुक कह रहा हर श्वाँस तेरा।

— महादेवी वर्मा